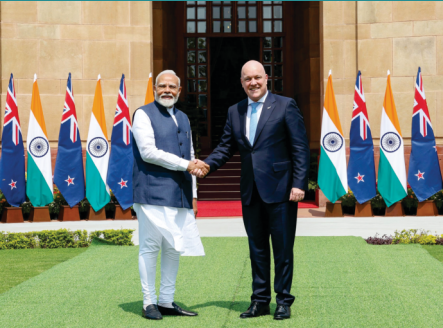


# समासामयिकी

सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा + मुख्य परीक्षा + साक्षात्कार की एकीकृत तैयारी के लिए



विशेष आकर्षण

मार्च

मासिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न



## इसमें शामिल है:

- समाचारों में महत्वपूर्ण शिखर सम्मेलन
- समाचार में प्रमुख व्यक्तित्वों का निधन
- मार्च माह में महत्वपूर्ण दिवस
- समाचारों में महत्वपूर्ण शब्दावली
- समाचारों में चर्चित पुरस्कार

## महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के आलेख

योगना	111
कुरुक्षेत्र	116
डाउन टू अर्थ	121
इकोनामिक एंड पॉलिटिकल वीकली	123
फ्रंटलाइन	7

\*प्रारंभिक परीक्षा के नवीनतम पैटर्न पर आधारित बहुवैकल्पिक अभ्यास प्रश्न

- स्वावलंबिनी
- लेपाक्षी मंदिर
- चंद्रशेखर आज़ाद
- भारत का तटीय संकट
- राष्ट्रीय गोकुल मिशन
- भारत में झुग्गी-झोपड़ियाँ
- वर्ल्ड ऑफ़ डेब्ट रिपोर्ट 2024
- विकसित भारत@2047 के लिए रोडमैप
- केंद्रीय बजट 2025-26: विकास आयाग

- हंटावायरस
- अभ्यास खंजर
- भारतीय ग्रे वुल्फ
- SPHEREx मिशन
- भारत-न्यूजीलैंड संबंध
- भारत की जैव अर्थव्यवस्था
- भारत में गरीबी का अनुमान
- बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA)
- आप्रवास और विदेशियों से संबंधित विधेयक, 2025

# अनुक्रमणिका

## राज्यव्यवस्था एवं शासन ..... 1

संविधानवाद.....	1
न्यायिक अतिक्रमण.....	2
राजनेताओं के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय की कार्यवाही.....	4
लोकलुभावनवाद सुशासन के लिए खतरा.....	4
महिलाओं की गिरफ्तारी और सुरक्षा.....	6
चुनाव फोटो पहचान पत्र (EPIC).....	7
न्याय का डिजिटल रूपांतरण: भारत की न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन में AI का एकीकरण.....	8
बिल ऑफ लैंडिंग बिल, 2025.....	10
आप्रवास और विदेशियों से संबंधित विधेयक, 2025.....	10
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 136: विशेष अनुमति याचिका और इसके निहितार्थ.....	11
भारत में न्यायाधिकरण.....	12
सिनेमा में हिंसा और भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार.....	14

## अंतरराष्ट्रीय संबंध.....16

भारत-यूएई संबंध.....	16
भारत-यूके संबंध.....	17
भारत की अफ्रीका नीति.....	19
भारत-न्यूज़ीलैंड संबंध.....	20
भारत-मॉरीशस संबंध.....	22
संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना (UN Peacekeeping).....	23
एक्ट ईस्ट नीति: पूर्वोत्तर भारत के लिए बढ़ावा.....	24
ऑस्ट्रेलिया के भारत के साथ आर्थिक संबंधों के लिए रोडमैप.....	25
रायसीना संवाद 2025.....	27
आर्मेनिया-अज़रबैजान युद्ध.....	28
बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA).....	28

## अर्थव्यवस्था एवं कृषि..... 30

एनबीएफसी को बैंक ऋणोंका जोखिम भार.....	30
क्रिएटर इकॉनमी को समर्थन देने के लिए एक बिलियन डॉलर का फंड.....	31
भारत में निर्धनता का अनुमान.....	32
आईआरसीटीसी और आईआरएफसी को नवरत्न का दर्जा.....	33
भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था.....	35
मसाला खेल.....	36
कपास की फसल.....	37
पूँजी खाता परिवर्तनीयता.....	38
भारत का व्यापार घाटा.....	39
भारत का कृषि व्यापार.....	41
किसान क्रेडिट कार्ड के खराब ऋणों में वृद्धि.....	42
भारत की जैव अर्थव्यवस्था.....	44

## पर्यावरण एवं भूगोल ..... 46

महासागरीय धाराएँ.....	46
राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड.....	47
प्रोजेक्ट शेर के लिए राष्ट्रीय वन्यजीव रेफरल केंद्र.....	49
बढ़ते खतरों के बीच घड़ियाल संरक्षण.....	50
पवन ऊर्जा.....	51
हरित अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्र.....	52
माधव राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य.....	53
उत्सर्जन तीव्रता.....	55
पार्टिकुलेट मैटर.....	56
गंगा डॉल्फिन.....	57
भारतीय ग्रे वुल्फ.....	58

## विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी.....60

विशेष एनसीडी स्क्रीनिंग अभियान.....	60
रोगाणुरोधी प्रतिरोध और कृत्रिम बुद्धिमत्ता.....	61
SPHEREx मिशन.....	62
भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास.....	63
CAR-T सेल थेरेपी.....	65
हंटावायरस.....	66
माइसीलियम ईट.....	67
स्टारलिंग सैटेलाइट इंटरनेट.....	68
जीएम फसल.....	69
चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र का पहला विस्तृत मानचित्र.....	70
सफेद हाइड्रोजन.....	71
विक्रम और कल्पना.....	72
सुनीता विलियम्स का अनिर्धारित अंतरिक्ष प्रवास.....	73
अंतरिक्ष यानियों के स्वास्थ्य पर अंतरिक्ष यात्रा का प्रभाव.....	74

## रक्षा एवं सुरक्षा..... 75

भारतीय सेना की वायु रक्षा आधुनिकीकरण.....	75
अभ्यास-धर्म रक्षक.....	75
अभ्यास वरुण 2025.....	76
अभ्यास खंजर.....	77
लो-लेवल ट्रांसपॉर्टेबल रडार - अश्विनी.....	77
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल.....	78
बोडो शांति समझौता.....	78

## सामाजिक मुद्दे ..... 80

मोटापा.....	80
क्या कैंसर को अधिसूचित बीमारी होना चाहिए?.....	81

न्यायपालिका में लैंगिक अंतर.....	82	वीर सावरकर.....	106
महिला सशक्तिकरण.....	83	मोरारजी देसाई.....	107
भारत में झुग्गी-झोपड़ियाँ.....	84	जी.बी. पंत.....	108
भारत में भाषाई विविधता.....	86	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस.....	108
<b>इतिहास और संस्कृति..... 88</b>		बीजू पटनायक.....	109
जब मनुष्य ने औजारों का उपयोग करना शुरू किया.....	88	लाला हरदयाल.....	109
लेपाक्षी मंदिर.....	88	नानाजी देशमुख.....	110
गोदावरी पुष्करालु.....	89	<b>‘योजना’ से महत्वपूर्ण आलेख (मार्च 2025)..... 111</b>	
भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य.....	90	भारत में राजकोषीय संघवाद: 2025-26 के केंद्रीय बजट की भूमिका.....	111
अमीर खुसरो.....	91	विकसित भारत@2047 के लिए रोडमैप.....	113
<b>सरकारी योजनाएँ..... 93</b>		<b>‘कुरुक्षेत्र’ से महत्वपूर्ण आलेख (मार्च 2025)..... 116</b>	
प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन (PMSYM) योजना.....	93	आय और खपत बढ़ाते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की पहल.....	116
10,000 एफपीओ का गठन और संवर्धन योजना.....	94	केंद्रीय बजट 2025-26: विकास आयाम.....	118
राष्ट्रीय गोकुल मिशन.....	94	<b>‘डाउन टू अर्थ’ से महत्वपूर्ण आलेख (मार्च 2025)..... 121</b>	
भीम-यूपीआई (BHIM UPI).....	95	जलवायु परिवर्तन के कारण मृदा अपरदन और लवणता में वृद्धि.....	121
जयपुर घोषणापत्र और परिपत्रता के लिए शहर गठबंधन.....	96	भारत का तटीय संकट.....	122
पशु औषधि पहल.....	96	<b>‘इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली’ से महत्वपूर्ण आलेख (मार्च 2025)..... 123</b>	
स्वावलंबिनी.....	97	अनसुलझी बचत और निवेश संबंधी बाधाएं.....	123
सागरमाला.....	97	भेदभाव के विरुद्ध शक्तिहीन एवं अप्रभावी दिशा-निर्देश.....	124
<b>महत्वपूर्ण रिपोर्ट ..... 99</b>		<b>त्वरित पुनरीक्षण (क्विक रिवीजन)..... 126</b>	
भारत @2047: भारत को तकनीक आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने की रिपोर्ट.....	99	मार्च माह के महत्वपूर्ण दिवस.....	126
अमेरिकी टैरिफ अनिश्चितता के बीच भारत की व्यापार लचीलेपन पर SBI रिपोर्ट.....	100	समाचारों में महत्वपूर्ण शिखर सम्मेलन.....	128
भारत: दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक.....	101	समाचारों में चर्चित पुरस्कार.....	130
वर्ल्ड ऑफ़ डेव्लट रिपोर्ट 2024.....	101	समाचारों में महत्वपूर्ण शब्दावली.....	131
राष्ट्रीय आवास बैंक रिपोर्ट.....	102	समाचारों में प्रमुख व्यक्तियों का निधन.....	131
संसदीय पैनल द्वारा कृषि व्यय बढ़ाने और मंत्रालय का नाम बदलने का आग्रह.....	103	<b>मार्च 2025 ‘द हिंदू’ व ‘इंडियन एक्सप्रेस’ से दैनिक अभ्यास प्रश्न..... 132</b>	
राज्य सड़क परिवहन उपक्रमों (SRTUS) की कार्य निष्पादन रिपोर्ट: सड़क परिवहन मंत्रालय.....	104	दैनिक वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्न.....	132
लैंग्वेज मैटर: बहुभाषी शिक्षा पर वैश्विक मार्गदर्शन रिपोर्ट.....	104	उत्तर कुंजी.....	142
<b>समाचारों में चर्चित व्यक्तित्व ..... 106</b>		दैनिक उत्तर-लेखन अभ्यास प्रश्न.....	142
चंद्रशेखर आज़ाद.....	106		

### संविधानवाद

**चर्चा में क्यों:** दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने हाल ही में भारत में आधुनिक संवैधानिकता को आकार देने और विस्तार देने में न्यायपालिका की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। पिछले 75 वर्षों में, भारत के संवैधानिक सिद्धांतों में काफी विकास हुआ है, जिससे लोकतंत्र, न्याय और व्यक्तिगत अधिकारों के लिए एक मजबूत कानूनी आधार सुनिश्चित हुआ है।

### संविधानवाद क्या है?

संविधानवाद वह विचारधारा है जो सरकार की शक्ति को सीमित करती है और यह सुनिश्चित करती है कि वह संविधान के ढांचे के भीतर काम करे। यह इस बात पर जोर देता है कि लोग ही सत्ता के अंतिम स्रोत हैं और सरकार को व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करने और लोकतंत्र और कानून के शासन को बनाए रखने के लिए कानूनी बाधाओं के तहत काम करना चाहिए।

संविधान	संविधानवाद
संविधान एक दस्तावेज है जो राज्य की शक्तियों को सीमित करता है।	संविधानवाद राज्य की शक्तियों को सीमित करने के पीछे की विचारधारा है।
यह एक लिखित दस्तावेज है।	यह अलिखित है और संविधान की आत्मा/दर्शन है।
यह सरकार की संरचना, राजनीतिक प्रक्रियाओं और नागरिक अधिकारों से संबंधित है।	यह राज्य की शक्तियों को सीमित करने और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करने से संबंधित है।
यह समाज में लाभ और बोझ को वितरित करने के लिए नियम और मानक निर्धारित करता है।	यह एक जीवंत विचार है, जो न्याय और समानता प्राप्त करने में कानूनों के अनुप्रयोग पर केंद्रित है।
आवश्यक नहीं कि यह उदार लोकतंत्र से संबंधित हो। उदाहरण के लिए, चीन के पास संविधान तो है, लेकिन वह उदार लोकतंत्र नहीं है।	संविधानवाद उदार लोकतंत्र का अंतर्निहित आधार/सिद्धांत है।

### संविधानवाद के प्रमुख सिद्धांत

#### विधि का शासन:

- कोई भी कानून से ऊपर नहीं है - सार्वजनिक अधिकारियों सहित प्रत्येक नागरिक को कानूनी सिद्धांतों का पालन करना चाहिए।
- सरकारी कार्रवाइयों में कानूनी प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए तथा मनमाने निर्णयों को रोका जाना चाहिए।
- उदाहरण:** भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए असंवैधानिक कानूनों को रद्द करना।

#### सीमित सरकार:

- अधिनायकवाद को रोकने के लिए सत्ता को विभिन्न शाखाओं (कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका) के बीच विभाजित किया गया है।

- विकेंद्रीकरण राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर शासन सुनिश्चित करता है।
- उदाहरण:** भारतीय संविधान राज्य की स्वायत्तता की रक्षा करते हुए केंद्र सरकार को सीमित शक्तियां प्रदान करता है।

#### शक्तियों का पृथक्करण:

- सत्ता के संकेन्द्रण से बचने के लिए विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच शक्तियों का वितरण किया जाता है।
- प्रत्येक शाखा नियंत्रण और संतुलन बनाए रखने के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करती है।
- उदाहरण:** न्यायपालिका विधानमंडल द्वारा पारित कानूनों की समीक्षा कर सकती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप हैं।

#### नियंत्रण और संतुलन:

- यह सुनिश्चित करना कि कोई भी एक शाखा शासन पर हावी न हो।
- प्रत्येक शाखा में जवाबदेही बनाए रखने के लिए अन्य शाखाओं पर निगरानी तंत्र मौजूद है।
- उदाहरण:** राष्ट्रपति की वीटो शक्ति, संसद की राष्ट्रपति पर महाभियोग चलाने की क्षमता और सर्वोच्च न्यायालय की न्यायिक समीक्षा की शक्ति।

#### व्यक्तिगत अधिकारों का संरक्षण:

- संविधानवाद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म और समानता जैसे मौलिक अधिकारों की रक्षा करता है।
- नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता में सरकार के हस्तक्षेप को रोकता है।
- उदाहरण:** सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय कि निजता का अधिकार एक मौलिक अधिकार है (2017, पुट्टस्वामी केस)।

#### लोकतांत्रिक सिद्धांत:

- लोकप्रिय संप्रभुता पर आधारित है - सत्ता अंततः लोगों के पास रहती है।
- नियमित चुनाव, बहुमत का शासन और अल्पसंख्यक अधिकारों की सुरक्षा को कायम रखता है।
- उदाहरण:** भारत में चुनाव आयोग की देखरेख में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव।

#### संविधानवाद क्यों आवश्यक है?

##### 1. मनमाने शासन को रोकना:

- यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी कार्य कानूनों के अनुरूप हों, जिससे तानाशाही का खतरा कम हो।
- राजनीतिक प्राधिकारियों द्वारा सत्ता के दुरुपयोग से बचाता है।
- **उदाहरण:** भारत में न्यायिक समीक्षा असंवैधानिक कानूनों को लागू होने से रोकती है।

##### 2. व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा:

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म और समानता जैसे मौलिक अधिकारों को शामिल किया गया है।

- अल्पसंख्यकों और कमजोर वर्गों के खिलाफ राज्य द्वारा सत्ता के दुरुपयोग को रोकता है ।
- उदाहरण: अनुच्छेद 21 (जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार) यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी व्यक्ति को उचित कानूनी प्रक्रिया के बिना जीवन से वंचित नहीं किया जाएगा ।
- 3. विधि का शासन सुनिश्चित करना:
  - पारदर्शी, निष्पक्ष और सुसंगत कानूनी प्रणालियों की गारंटी देता है ।
  - कानून के तहत सरकारी अधिकारियों सहित सभी लोग जवाबदेह हैं ।
  - उदाहरण: सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आईटी अधिनियम (2015) की धारा 66ए को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन मानते हुए रद्द कर दिया जाना ।
- 4. लोकतांत्रिक शासन को बनाए रखना:
  - जवाबदेही, स्वतंत्र चुनाव और सार्वजनिक भागीदारी के लिए तंत्र स्थापित करता है ।
  - यह सुनिश्चित करता है कि नेता चुनाव और निरीक्षण के माध्यम से लोगों के प्रति जवाबदेह हों ।
  - उदाहरण: सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम (2005) शासन में पारदर्शिता बढ़ाता है ।
- 5. पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना:
  - संवैधानिक ढांचे में स्वतंत्र न्यायपालिका और विधायी जांच जैसे निरीक्षण तंत्र उपलब्ध हैं ।
  - उदाहरण: नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी धन का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाए ।
- 6. शक्ति संतुलन:
  - सत्तावादी शासन को रोकने के लिए विभिन्न शाखाओं के बीच सत्ता का विभाजन किया जाता है ।
  - केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच अधिकारों का वितरण करके संघवाद को मजबूत करता है ।
  - उदाहरण: राज्य की स्वायत्तता बनाए रखने के लिए अनुच्छेद 356 (राष्ट्रपति शासन) का सावधानीपूर्वक प्रयोग किया जाता है ।
- 7. स्थिरता और निरंतरता प्रदान करना:
  - संविधानवाद एक संरचित कानूनी ढांचे के माध्यम से राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करता है ।
  - सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण को प्रोत्साहित करता है ।
  - उदाहरण: भारत के लोकतंत्र में प्रधानमंत्री पद का सुचारु परिवर्तन, टकराव से बचना ।
- 8. शांतिपूर्ण परिवर्तन को सुगम बनाना:
  - समाज के विकास के अनुसार संविधान में संशोधन की कानूनी व्यवस्था करता है ।
  - संघर्ष के बिना सामाजिक और राजनीतिक प्रगति सुनिश्चित करता है ।
  - उदाहरण: 73वें और 74वें संविधान संशोधन (1992) ने स्थानीय स्वशासन को मजबूत किया ।
- 9. अल्पसंख्यकों और हाशिए पर पड़े समूहों की सुरक्षा:
  - अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करके बहुसंख्यक शासन के विरुद्ध सुरक्षा ।

- उदाहरण: अनुच्छेद 15 धर्म, जाति या लिंग के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है ।
- 10. सुशासन को बढ़ावा देना:
  - विभिन्न सरकारी संस्थाओं की भूमिका और जिम्मेदारियों को परिभाषित करता है ।
  - यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी कार्य सार्वजनिक कल्याण के अनुरूप हों ।
  - उदाहरण: राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत (डीपीएसपी), सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में कानूनों का मार्गदर्शन करते हैं ।

#### निष्कर्ष:

- संविधान और संविधानवाद मिलकर लोकतांत्रिक मूल्यों को कायम रखते हैं, सामाजिक न्याय सुनिश्चित करते हैं और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करते हैं । भारत के संवैधानिक ढांचे ने न्यायपूर्ण, समावेशी और प्रगतिशील समाज को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।
- जैसे - जैसे भारत आगे बढ़ेगा, लोकतंत्र की रक्षा, जवाबदेही सुनिश्चित करने और राष्ट्रीय प्रगति को बढ़ावा देने में संविधानवाद आवश्यक बना रहेगा ।
- “संविधान महज वकीलों का दस्तावेज़ नहीं है; यह जीवन का माध्यम है, और इसकी आत्मा हमेशा युग की आत्मा होती है।” - डॉ. बी.आर. अंबेडकर

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: संविधानवाद के प्रमुख सिद्धांतों और विचारधारा के रूप में इसकी आवश्यकता पर चर्चा करें। संविधानवाद और संविधान के बीच अंतरों पर प्रकाश डालें। [250 शब्द] [15 अंक]

#### न्यायिक अतिक्रमण

**चर्चा में क्यों:** भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) के निदेशक को कथित रूप से गलत तरीके से जेल में बंद एक व्यक्ति को मुआवजे के रूप में 5 लाख रुपये का भुगतान करने का निर्देश दिया गया था ।

##### मुख्य विवरण:

- इस मामले ने न्यायिक अतिक्रमण पर चर्चा को फिर से शुरू कर दिया है, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया है कि उच्च न्यायालय ने कानूनी अधिकार के बिना मुआवजा देकर अपने अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण किया है ।

#### केस अवलोकन: एनसीबी बनाम इलाहाबाद उच्च न्यायालय का निर्णय

##### मामले की पृष्ठभूमि:

- एनसीबी जब्ती: नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने दो व्यक्तियों - मान सिंह वर्मा और अमन सिंह से 1,280 ग्राम ब्राउन पाउडर जब्त किया, जिसके हेरोइन होने का संदेह है ।
- कानूनी कार्रवाई: वर्मा के खिलाफ नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेस (एनडीपीएस) अधिनियम, 1985 की धारा 8 (सी), 21 और 29 के तहत मामला दर्ज किया गया । लैब टेस्ट के नतीजों का इंतजार करते हुए उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया ।

- जमानत अर्जी: हिरासत में रहते हुए वर्मा ने जमानत के लिए अर्जी दी, लेकिन बाराबंकी की विशेष एनडीपीएस कोर्ट ने उनकी याचिका खारिज कर दी। इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया।

#### प्रकटीकरण और रिहाई:

- लैब रिपोर्ट: प्रयोगशाला ने जब्त पदार्थ का परीक्षण किया और पाया कि उसमें हेरोइन या कोई भी मादक पदार्थ नहीं था।
- एनसीबी क्लोजर रिपोर्ट: इस निष्कर्ष के आधार पर, एनसीबी ने एक क्लोजर रिपोर्ट दायर की, और वर्मा को जेल से रिहा कर दिया गया।

#### इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला:

- क्लोजर रिपोर्ट के बावजूद, उच्च न्यायालय ने वर्मा की जमानत याचिका पर फैसला सुनाया और कहा कि उन्हें गलत तरीके से चार महीने तक कैद में रखा गया था।
- मुआवज़ा आदेश: उच्च न्यायालय ने एनसीबी के निदेशक को वर्मा की कथित गलत हिरासत के लिए 5 लाख रुपये का मुआवज़ा देने का निर्देश दिया।

#### सर्वोच्च न्यायालय का फैसला:

- सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालय के फैसले को पलटते हुए कहा कि:
  - चूंकि आरोपी को पहले ही रिहा कर दिया गया था, इसलिए मुआवज़ा देने का आदेश उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से बाहर था।
  - मुआवज़ा कानूनी अधिकार के आधार पर दिया जाना चाहिए, न्यायिक विवेक के आधार पर नहीं।
  - उच्च न्यायालय का निर्णय न्यायिक अतिक्रमण के समान था, क्योंकि यह उसके वैध दायरे से बाहर था।

### भारत में न्यायिक समीक्षा, सक्रियता और अतिक्रमण

#### न्यायिक समीक्षा: संविधान को कायम रखने की शक्ति

- न्यायपालिका के पास कानूनों और सरकारी कार्यों की समीक्षा करने की शक्ति है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे भारत के संविधान के अनुरूप हैं।
- यह शक्ति असंवैधानिक कानूनों को रद्द करने और मौलिक अधिकारों की रक्षा करने में मदद करती है।
- ऐतिहासिक मामलों में शामिल हैं:
  - **ए.के. गोपालन केस (1950):** निवारक निरोध कानूनों की वैधता पर विचार किया गया।
  - **गोलकनाथ केस (1967):** इसमें कहा गया कि मौलिक अधिकारों में संसद द्वारा संशोधन नहीं किया जा सकता।

#### न्यायिक सक्रियता: अधिकारों के संरक्षक के रूप में न्यायपालिका

- न्यायिक सक्रियता अदालतों को उस स्थिति में हस्तक्षेप करने की अनुमति देती है जब विधायिका या कार्यपालिका नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने में विफल रहती है।
- स्वप्रेरणा से की गई कार्रवाई और जनहित याचिका (पीआईएल) जैसी प्रणालियाँ न्यायपालिका को जनता की शिकायतों का समाधान करने में सक्षम बनाती हैं।

#### ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- **1893 इलाहाबाद उच्च न्यायालय मामला:** भारत में न्यायिक सक्रियता का पहला उदाहरण।
- **1960 और 70 के दशक के बाद:** शासन में न्यायिक हस्तक्षेप में वृद्धि।

#### न्यायिक सक्रियता का महत्व:

- हाशिए पर पड़े समुदायों की रक्षा करता है।
- सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
- आवश्यकता पड़ने पर कानून में अंतराल को पाटना।

#### न्यायिक अतिक्रमण: जब सक्रियता अपनी सीमा पार कर जाती है

- न्यायिक अतिक्रमण तब होता है जब न्यायालय अपने अधिकार का अतिक्रमण करते हैं तथा विधायी या कार्यपालिका के क्षेत्र में हस्तक्षेप करते हैं।

#### भारत में न्यायिक अतिक्रमण के उदाहरण

- **राष्ट्रगान मामला:** सर्वोच्च न्यायालय ने सिनेमा हॉल में राष्ट्रगान बजाने को अनिवार्य कर दिया, लेकिन बाद में आलोचना के बाद अपने रुख में संशोधन किया।
- **बीसीसीआई के लिए लोढ़ा समिति के सुधार:** न्यायपालिका ने क्रिकेट प्रशासन में हस्तक्षेप किया, जिससे एक स्वायत्त खेल संस्था प्रभावित हुई।
- **एनजेएसी निर्णय (2015):** सर्वोच्च न्यायालय ने संसद द्वारा पारित संवैधानिक संशोधन को दरकिनार करते हुए राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (एनजेएसी) अधिनियम को रद्द कर दिया।

#### न्यायिक अतिक्रमण की आलोचना:

- शक्तियों के पृथक्करण का उल्लंघन: न्यायालयों को कानूनों की व्याख्या करनी चाहिए, न कि उन्हें बनाना या लागू करना चाहिए।
- न्यायपालिका बनाम सरकार के बीच तनाव पैदा करता है: संसद के अधिकार को कमजोर करता है।
- जवाबदेही का अभाव: न्यायाधीशों के पास शासन संबंधी मुद्दों के प्रबंधन के लिए तकनीकी विशेषज्ञता नहीं हो सकती है।

भारतीय न्यायपालिका लोकतंत्र को कायम रखने, मौलिक अधिकारों की रक्षा करने तथा कार्यपालिका और विधायिका की जवाबदेही सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- असंवैधानिक कानूनों को रद्द करने के लिए न्यायिक समीक्षा आवश्यक है।
- न्यायिक सक्रियता तब लाभदायक होती है जब सरकार जनहित में कार्य करने में विफल रहती है।
- हालाँकि, न्यायिक अतिक्रमण शक्ति संतुलन को बाधित करता है और शासन को प्रभावित करता है।

न्यायिक सक्रियता और संयम के बीच संतुलन बनाना भारत के संवैधानिक लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: भारत में संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने में न्यायिक समीक्षा और न्यायिक सक्रियता की भूमिका का विश्लेषण करें। प्रासंगिक मामलों का हवाला देते हुए चर्चा करें कि न्यायिक अतिक्रमण किस प्रकार राज्य के अंगों के बीच शक्ति संतुलन को बाधित कर सकता है। [250 शब्द] [15 अंक]

## राजनेताओं के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय की कार्यवाही

**चर्चा में क्यों:** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पिछले एक दशक में राजनेताओं के खिलाफ धन शोधन विरोधी कानूनों के तहत 193 मामले दर्ज किए हैं। हालांकि, अब तक केवल दो मामलों में ही दोषसिद्धि हो पाई है, जिससे भारत में वित्तीय अपराध जांच की प्रभावशीलता और चुनौतियों के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।

### मुख्य विवरण:

- अप्रैल 2015 से फरवरी 2025 के बीच, ईडी ने मौजूदा और पूर्व सांसदों और विधानसभा सदस्यों (एमएलए) सहित राजनेताओं के खिलाफ 193 मामले दर्ज किए।
- कई मामले दर्ज किए जाने के बावजूद, अब तक केवल दो लोगों को दोषी ठहराया गया है, जबकि एक भी व्यक्ति बरी नहीं हुआ है।
- दो दोषियों में झारखंड के पूर्व मंत्री अनोश एक्का और हरि नारायण राय शामिल हैं, जिन्हें धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के तहत सात साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी।
- एक वित्तीय वर्ष में सबसे अधिक मामले 2022-23 में दर्ज किए गए, जिसमें 32 मामले दर्ज किए गए।

### प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के बारे में:

- भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग के अधीन कार्यरत एक विशेष वित्तीय जांच एजेंसी है। 1956 में स्थापित, ईडी मुख्य रूप से देश में वित्तीय और धन शोधन विरोधी कानूनों को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।

### ईडी द्वारा लागू किए जाने वाले प्रमुख कानून:

- धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002: धन शोधन, अपराध की आय की जब्ती और वित्तीय धोखाधड़ी को लक्षित करता है।
- विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा), 1999: बाहरी व्यापार, विदेशी भुगतान और सीमा पार वित्तीय लेनदेन को नियंत्रित करता है।

### प्रवर्तन निदेशालय के प्रमुख कार्य

#### 1. मनी लॉन्ड्रिंग जांच:

- ईडी पीएमएलए, 2002 के तहत वित्तीय अपराधों की जांच करता है, धन शोधन नेटवर्क की पहचान करता है और अपराधियों पर मुकदमा चलाता है।
- उदाहरण: ईडी ने पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) धोखाधड़ी मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, धोखाधड़ी वाले लेनदेन का पता लगाया और घोटाले से जुड़ी संपत्तियों को बरामद किया।

#### 2. फेमा विनियमों का प्रवर्तन:

- ईडी अवैध वित्तीय गतिविधियों को रोकने के लिए विदेशी मुद्रा लेनदेन को विनियमित करने वाले FEMA, 1999 के अनुपालन को सुनिश्चित करता है।
- उदाहरण: ईडी ने FEMA के तहत कथित विदेशी मुद्रा उल्लंघन के लिए NDTV समूह की जांच की।

#### 3. संपत्तियों की कुर्की और जब्ती:

- ईडी के पास अवैध वित्तीय गतिविधियों से अर्जित संपत्तियों को कुर्क करने और जब्त करने का अधिकार है।
- उदाहरण: एजेंसी ने पीएमएलए के तहत विजय माल्या जैसे भगोड़े अपराधियों की संपत्ति जब्त कर ली, जिससे उन्हें अवैध धन से लाभ उठाने से रोका जा सके।

#### 4. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ समन्वय:

- सीमा पार वित्तीय अपराधों पर निगरानी रखने और उन पर अंकुश लगाने के लिए ईडी इंटरपोल, सीबीआई और दुनिया भर की वित्तीय खुफिया इकाइयों सहित विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ सहयोग करता है।

#### 5. पीएमएलए के तहत अभियोजन:

- एजेंसी आरोपपत्र दाखिल करती है और विशेष पीएमएलए अदालतों में अपराधियों पर मुकदमा चलाती है, जिससे वित्तीय कदाचार के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही सुनिश्चित होती है।
- उदाहरण: प्रवर्तन निदेशालय ने वित्तीय अनियमितताओं और मनी लॉन्ड्रिंग के लिए सहारा समूह के खिलाफ कानूनी कार्यवाही शुरू की।

#### 6. वित्तीय जागरूकता और अनुपालन को बढ़ावा देना:

- ईडी वित्तीय संस्थाओं और व्यवसायों को धन शोधन विरोधी कानूनों के अनुपालन के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, जागरूकता अभियान और कार्यशालाएं आयोजित करता है।

### निष्कर्ष:

प्रवर्तन निदेशालय वित्तीय अपराधों, मनी लॉन्ड्रिंग और विदेशी मुद्रा उल्लंघनों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजनेताओं के खिलाफ इसकी जांच भ्रष्टाचार और अवैध वित्तीय गतिविधियों पर अंकुश लगाने पर बढ़ते फोकस को दर्शाती है। हालांकि, कम सजा दर मजबूत कानूनी ढांचे, तेज न्यायिक प्रक्रियाओं और बेहतर जांच तंत्र की आवश्यकता को रेखांकित करती है। प्रवर्तन को मजबूत करने से भारत के वित्तीय और राजनीतिक परिदृश्य में अधिक जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की भूमिका के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. ईडी धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) और भगोड़े आर्थिक अपराधी अधिनियम (एफईओए) के तहत वित्तीय अपराधों की जांच करता है।
2. प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) बिना न्यायिक समीक्षा के व्यक्तियों को सीधे दोषी ठहरा सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

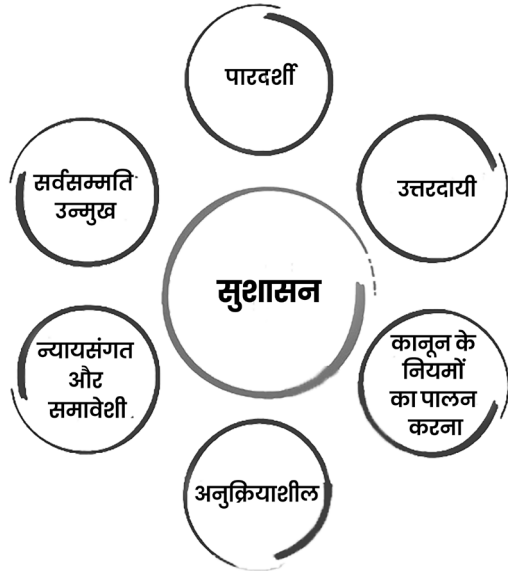
(B) : 2025

### लोकलुभावनवाद सुशासन के लिए खतरा

**चर्चा में क्यों:** भारत के उपराष्ट्रपति ने हाल ही में प्रभावी शासन पर लोकलुभावनवाद के प्रतिकूल प्रभाव पर प्रकाश डाला। मुंबई में 'मुरली देवड़ा मेमोरियल डायलॉग्स' के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए, उन्होंने लोकतांत्रिक उपायों के रूप में प्रच्छन्न भावना-चालित नीतियों के प्रति आगाह किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ऐसी नीतियां लोकतांत्रिक सिद्धांतों को कमजोर कर सकती हैं, राजकोषीय अनुशासन को बाधित कर सकती हैं और दीर्घकालिक विकास में बाधा डाल सकती हैं।

#### सुशासन को समझना:

सुशासन से तात्पर्य प्रशासन की ऐसी प्रणाली से है, जिसमें निर्णय पारदर्शी, जवाबदेह, कुशल और समावेशी तरीके से लिए जाते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि सभी नागरिकों के हितों की सेवा के लिए राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक शक्ति का जिम्मेदारी से प्रयोग किया जाए। सुशासन पारदर्शिता, जवाबदेही, दक्षता, भागीदारी और कानून के शासन जैसे प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है।



## सुशासन का महत्व

### 1. जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है:

- सार्वजनिक अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाया जाता है, जिससे भ्रष्टाचार कम होता है और नागरिकों का सरकार पर विश्वास बढ़ता है।
- **उदाहरण:** सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम, 2005 के कार्यान्वयन से नागरिकों को सरकार से संबंधित जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

### 2. सेवा वितरण में सुधार:

- स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और बुनियादी ढांचे जैसी आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं तक समय पर और कुशल पहुंच सुनिश्चित करता है।
- **उदाहरण:** प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) ने बिचौलियों को समाप्त करके और लीकेज को कम करके कल्याणकारी योजनाओं को सुव्यवस्थित किया है।

### 3. आर्थिक विकास को बढ़ावा:

- एक सुशासित अर्थव्यवस्था निवेश आकर्षित करती है, उद्यमशीलता को बढ़ावा देती है, तथा रोजगार के अवसर पैदा करती है।
- **उदाहरण:** 'कारोबार में आसानी' सुधारों ने नियमों को सरल बना दिया है, जिससे भारत निवेशकों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बन गया है।

### 4. लोकतंत्र को मजबूत बनाता है:

- नागरिकों के अधिकारों को कायम रखता है, समान भागीदारी को बढ़ावा देता है, तथा एक समावेशी समाज का निर्माण करता है जहां सभी की आवाज सुनी जाती है।
- **उदाहरण:** चुनाव सुधार, जैसे वोटर वेरिफिबल पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपीएटी) की शुरुआत, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करती है।

### 5. सतत विकास को बढ़ावा देता है:

- आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आवश्यकताओं में संतुलन के लिए जिम्मेदार संसाधन प्रबंधन और दीर्घकालिक योजना को प्रोत्साहित करता है।
- **उदाहरण:** सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) ढांचा सरकारी नीतियों को वैश्विक विकास उद्देश्यों के साथ संरेखित करता है।

## सुशासन की चुनौतियाँ

### 1. लोकलुभावनवाद और भावना-चालित नीतियां:

- सार्वजनिक समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से बनाई गई अल्पकालिक नीतियां अक्सर वित्तीय अस्थिरता का कारण बनती हैं और दीर्घकालिक विकास योजनाएं पटरी से उतर जाती हैं।
- **उदाहरण:** अनियोजित सब्सिडी और ऋण माफी संरचनात्मक आर्थिक मुद्दों का समाधान किए बिना सरकारी वित्त पर दबाव डालती है।

### 2. भ्रष्टाचार:

- निजी लाभ के लिए सार्वजनिक शक्ति का दुरुपयोग विकास में बाधा डालता है और संस्थाओं में नागरिकों का विश्वास खत्म करता है।
- **उदाहरण:** लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013 सार्वजनिक अधिकारियों से जुड़े भ्रष्टाचार के मामलों की जांच के लिए लागू किया गया था।

### 3. नौकरशाही लालफीताशाही:

- बोझिल प्रशासनिक प्रक्रियाएं निर्णय लेने की प्रक्रिया को धीमा कर देती हैं और परियोजना कार्यान्वयन में देरी करती हैं।
- **उदाहरण:** 'प्रगति' (प्रो-एक्टिव गवर्नेंस एंड टाइमली इम्प्लीमेंटेशन) प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने से परियोजना अनुमोदन में तेजी आई है।

### 4. डिजिटल विभाजन:

- डिजिटल सेवाओं तक असमान पहुंच शासन में भागीदारी को सीमित करती है और हाशिए पर पड़े समुदायों को ई-गवर्नेंस पहलों से लाभान्वित होने से रोकती है।
- **उदाहरण:** डिजिटल इंडिया मिशन का उद्देश्य डिजिटल बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी को बढ़ाकर इस अंतर को पाटना है।

## आगे की राह: सुशासन को मजबूत करना

### 1. राजकोषीय विवेक:

- सरकारों को अल्पकालिक लोकलुभावन उपायों की तुलना में संघारणीय वित्तीय नीतियों को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **उदाहरण:** राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (एफआरबीएम) अधिनियम राजकोषीय घाटे को कम करने और वित्तीय अनुशासन में सुधार के लिए लक्ष्य निर्धारित करता है।

### 2. ई-गवर्नेंस विस्तार:

- डिजिटल प्लेटफॉर्म का लाभ उठाने से सेवा वितरण में वृद्धि हो सकती है, भ्रष्टाचार कम हो सकता है और पारदर्शिता में सुधार हो सकता है।
- **उदाहरण:** आधार-सक्षम प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) प्रणाली ने सब्सिडी वितरण में धोखाधड़ी के दावों को न्यूनतम कर दिया है।

### 3. जवाबदेही तंत्र को मजबूत बनाना:

- ◆ पारदर्शिता और भ्रष्टाचार विरोधी उपायों को सुनिश्चित करने वाले कानूनों का सख्त कार्यान्वयन आवश्यक है।
- **उदाहरण:** व्हिसल ब्लोअर्स संरक्षण अधिनियम, 2014 नागरिकों को भ्रष्टाचार और कदाचार की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

### 4. लोक सेवकों की क्षमता निर्माण:

- सिविल सेवकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम दक्षता और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार ला सकते हैं।

- **उदाहरण:** मिशन कर्मयोगी नौकरशाहों के कौशल को बढ़ाने और शासन परिणामों में सुधार करने की एक पहल है।

#### 5. नागरिक भागीदारी और नीतिगत सहभागिता

- शासन में जनता की भागीदारी को प्रोत्साहित करने से अधिक समावेशी और प्रभावी नीतियां बनाई जा सकती हैं।
- **उदाहरण:** MyGov प्लेटफॉर्म नागरिकों को सरकारी नीतियों पर प्रतिक्रिया देने और राष्ट्रीय विकास के लिए विचारों का योगदान करने में सक्षम बनाता है।

#### शासन में सुधार के लिए प्रमुख सरकारी पहल:

- **डिजिटल इंडिया:** डिजिटल बुनियादी ढांचे को बढ़ाता है और ऑनलाइन शासन सेवाओं को बढ़ावा देता है।
- **सूचना का अधिकार अधिनियम (2005):** सरकारी कामकाज में पारदर्शिता सुनिश्चित करके नागरिकों को सशक्त बनाता है।
- **मिशन कर्मयोगी:** इसका उद्देश्य प्रशासन में दक्षता में सुधार के लिए सिविल सेवकों के कौशल को बढ़ाना है।
- **प्रगति प्लेटफॉर्म:** समय पर कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सरकारी परियोजनाओं की वास्तविक समय निगरानी की सुविधा प्रदान करता है।
- **लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम (2013):** सार्वजनिक कार्यालयों में कदाचार की जांच के लिए स्वतंत्र भ्रष्टाचार विरोधी निकायों की स्थापना करता है।

सुशासन एक मजबूत, समावेशी और संधारणीय लोकतंत्र की नींव है। जबकि लोकलुभावनवाद, भ्रष्टाचार और नौकरशाही की अक्षमता जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं, रणनीतिक सुधार और सार्वजनिक भागीदारी उन्हें दूर करने में मदद कर सकती है। पारदर्शिता, जवाबदेही और दक्षता को बढ़ावा देकर, भारत दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित कर सकता है और लोकतंत्र की सच्ची भावना को बनाए रख सकता है।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. सतत विकास में सुशासन के महत्व पर चर्चा करें। भारत में सुशासन के लिए प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं, तथा उन्हें दूर करने के उपाय सुझाएँ? [150 शब्द] [10 अंक]

#### महिलाओं की गिरफ्तारी और सुरक्षा

**चर्चा में क्यों:** मद्रास उच्च न्यायालय ने हाल ही में फैसला सुनाया कि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), 2023 के तहत सूर्यास्त के बाद और सूर्योदय से पहले महिलाओं की गिरफ्तारी को प्रतिबंधित करने वाला कानूनी प्रावधान निर्देशात्मक है और अनिवार्य नहीं है। इसका अर्थ यह है कि प्रावधान एक दिशानिर्देश के रूप में कार्य करता है, लेकिन इसका पालन न करने से गिरफ्तारी स्वचालित रूप से अवैध नहीं हो जाती है।

#### गिरफ्तारी के विरुद्ध महिलाओं के लिए सुरक्षा उपायों को समझना:

- भारतीय कानून महिलाओं को गिरफ्तारी के दौरान मनमाने या कठोर व्यवहार से बचाने के लिए विशिष्ट सुरक्षा उपाय प्रदान करता है। ये सुरक्षा उपाय मुख्य रूप से BNSS की धारा 5)43) में निहित हैं, जो CrPC की धारा 4)46) के अनुरूप है।

#### बीएनएसएस की धारा 43(5) के तहत प्रमुख प्रावधान

- गिरफ्तारी पर समय प्रतिबंध:

- किसी महिला को सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच गिरफ्तार नहीं किया जा सकता, जब तक कि कोई असाधारण परिस्थिति न हो।
- असाधारण परिस्थितियों में भी, गिरफ्तार करने वाले अधिकारी को क्षेत्राधिकार प्राप्त मजिस्ट्रेट से पूर्व लिखित अनुमति लेनी होगी।

#### ‘असाधारण परिस्थितियों’ पर स्पष्टता का अभाव:

- कानून में यह परिभाषित नहीं किया गया है कि असाधारण स्थिति क्या होगी, जिससे पुलिस और अदालतों द्वारा व्याख्या करने की गुंजाइश बनी रहती है।
- **महिला संदिग्धों से निपटने के लिए दिशानिर्देश:**
  - सीआरपीसी की धारा 46(1) में कहा गया है कि जब भी संभव हो, गिरफ्तारी महिला पुलिस अधिकारी द्वारा की जानी चाहिए।
  - यदि किसी पुरुष अधिकारी को किसी महिला को गिरफ्तार करना ही है तो वह उसे तब तक नहीं छू सकता जब तक कि परिस्थिति के कारण ऐसा करना अत्यंत आवश्यक न हो।

**नोट:** भारतीय विधि आयोग ने अपनी 135वीं और 154वीं रिपोर्ट में महिलाओं के लिए सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के लिए 2005 में सीआरपीसी में धारा 46(4) जोड़ने की सिफारिश की थी।

#### हालिया निर्णय:

- **मद्रास उच्च न्यायालय** ने कहा कि सीआरपीसी की धारा 4)46) में प्रावधान का अनुपालन न करने के परिणाम का उल्लेख नहीं है।
- न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया कि ऐसी स्थिति हो सकती है कि कोई महिला रात्रि में कोई जघन्य अपराध कर दे और मजिस्ट्रेट अनुमति प्राप्त करने के लिए उपलब्ध न हो।
- ऐसी स्थिति में आरोपी महिला बच सकती है। इसलिए प्रक्रिया का ऐसा यांत्रिक पालन जनहित को नुकसान पहुंचा सकता है।
- न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा है कि सीआरपीसी की धारा 5)43)/(4)46) को निर्देशात्मक तथा अनिवार्य न मानते हुए भी पुलिस द्वारा इस प्रावधान को निरर्थक नहीं ठहराया जा सकता।
- न्यायालय ने पुलिस को दिशानिर्देश जारी करने का निर्देश दिया, जिसमें स्पष्ट किया गया कि असाधारण परिस्थितियां क्या होती हैं।

#### भारत में गिरफ्तार महिला के अधिकार

निष्पक्ष व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए, कानून महिलाओं को गिरफ्तारी के दौरान और उसके बाद कई अधिकार प्रदान करता है।

#### निःशुल्क कानूनी सहायता का अधिकार:

- संविधान का अनुच्छेद 39A उन लोगों को मुफ्त कानूनी सहायता की गारंटी देता है जो कानूनी प्रतिनिधित्व का खर्च वहन नहीं कर सकते।
- **बीएनएसएस की धारा 304 यह सुनिश्चित करती है कि:**
  - राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण अनुवाद, दस्तावेज़ीकरण और वकील की फीस सहित कानूनी खर्चों को वहन करेगा।
  - किसी भी अपराध के आरोपी महिला को निष्पक्ष सुनवाई के लिए मुफ्त कानूनी प्रतिनिधित्व का अधिकार है।

#### गिरफ्तारी और जमानत के बारे में सूचित किए जाने का अधिकार

- **बीएनएसएस की धारा 1)50):**
  - प्रत्येक गिरफ्तार व्यक्ति को अपनी गिरफ्तारी का कारण जानने का अधिकार है।

- बीएनएसएस की धारा 2)50):
  - यदि किसी महिला को जमानती अपराध के लिए बिना वारंट के गिरफ्तार किया जाता है, तो उसे जमानत मांगने के उसके अधिकार के बारे में अवश्य बताया जाना चाहिए।
  - पुलिस को उसे जमानत के लिए जमानत की व्यवस्था करने की सलाह देनी चाहिए।

#### दुर्व्यवहार और हथकड़ी लगाने के विरुद्ध अधिकार:

- बीएनएसएस की धारा 46(1) कहती है कि एक महिला गिरफ्तारी की मौखिक सूचना पर हिरासत में आ जाती है।
- कोई पुरुष अधिकारी किसी महिला को तब तक नहीं छू सकता या शारीरिक रूप से रोक नहीं सकता जब तक कि:
  - वह सक्रिय रूप से गिरफ्तारी का विरोध करती है, या
  - असाधारण परिस्थितियों में बल प्रयोग उचित है।

#### हिरासत के दौरान अधिकार:

- कोई भी पुलिस अधिकारी किसी गिरफ्तार व्यक्ति को मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किये बिना 24 घंटे से अधिक समय तक हिरासत में नहीं रख सकता।
- महिलाओं को पुरुष कैदियों के साथ एक ही लॉकअप में नहीं रखा जाना चाहिए।
- प्राधिकारियों को हर समय हिरासत में ली गई महिला की गरिमा और सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: क्या मद्रास उच्च न्यायालय का हालिया फैसला महिला की गिरफ्तारी से सुरक्षा के प्रावधानों को कमजोर करता है? विश्लेषण करें। [150 शब्द] [10 अंक]

#### चुनाव फोटो पहचान पत्र (EPIC)

**चर्चा में क्यों:** कई मतदाता पहचान पत्रों में डुप्लिकेट EPIC नंबर पाए जाने के कारण भारतीय चुनाव आयोग (ECI) की विश्वसनीयता जांच के दायरे में आ गई है। तृणमूल कांग्रेस (TMC) के एक प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही में भारतीय चुनाव आयोग (ECI) से मुलाकात कर इस तरह के दोहराव के सबूत पेश किए, जिसमें मतदाता सूची की अखंडता और संभावित मतदाता सूची में हेराफेरी पर चिंता जताई गई।

#### मुख्य विवरण:

- यह विवाद ECI की निष्पक्षता और विश्वसनीयता पर चल रही बहस को और बढ़ाता है, खासकर चुनावों से पहले। प्रतिक्रिया में, ECI ने स्वीकार किया कि EPIC नंबर जारी करने की पहले की विकेंद्रीकृत प्रणाली के कारण दोहराव की समस्या उत्पन्न हुई थी, जिसे बाद में चुनावी डेटाबेस को ईआरओएनईटी प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित करके ठीक कर दिया गया है।

#### EPIC क्या है?

EPIC (इलेक्टर्स फोटो आइडेंटिफिकेशन कार्ड) भारत के चुनाव आयोग (ECI) द्वारा प्रत्येक पंजीकृत मतदाता को सौंपी गई अद्वितीय मतदाता पहचान संख्या है। यह इस प्रकार कार्य करता है:

- 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के भारतीय नागरिकों के लिए आधिकारिक पहचान प्रमाण।

- सभी स्तरों पर चुनावों में मतदान के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ - लोकसभा, राज्य विधानसभाएँ और स्थानीय निकाय।
- यह प्रत्येक मतदाता के लिए एक विशिष्ट पहचान पत्र सुनिश्चित करके चुनावी धोखाधड़ी को रोकने का एक साधन है।

#### अपना EPIC नंबर कैसे खोजें?

- मतदाता राष्ट्रीय मतदाता सेवा पोर्टल (एनवीएसपी) पर जाकर अपना नाम, जन्मतिथि और निर्वाचन क्षेत्र की जानकारी जैसे व्यक्तिगत विवरण दर्ज करके अपना EPIC नंबर देख सकते हैं।

वेबसाइट : [www.nvsp.in](http://www.nvsp.in)

#### EPIC नंबर का उपयोग

EPIC नंबर की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जानिए कैसे:

- चुनावी सेवाओं तक पहुंच:
  - मतदाता EPIC नंबर का उपयोग करके अपनी पंजीकरण स्थिति की जांच कर सकते हैं, नए मतदाता पहचान पत्र के लिए आवेदन कर सकते हैं, या जानकारी अपडेट कर सकते हैं (जैसे पते में परिवर्तन या नाम में सुधार)।
- चुनावी धोखाधड़ी की रोकथाम:
  - चूंकि प्रत्येक EPIC संख्या अद्वितीय होती है, इसलिए यह फर्जी मतदान, डुप्लिकेट मतदाता पहचान पत्र और पहचान धोखाधड़ी को रोकने में मदद करती है।
- पंजीकृत मतदाताओं का सत्यापन:
  - EPIC नंबर रखने से यह पुष्टि होती है कि व्यक्ति आधिकारिक रूप से पंजीकृत मतदाता है।
  - चुनाव अधिकारी इसका उपयोग मतदाता सूची में मतदाता विवरण खोजने के लिए करते हैं।
- चुनाव प्रक्रिया में भागीदारी:
  - EPIC संख्या राज्य और केंद्रीय चुनाव निकायों द्वारा बनाए गए मतदाता सूची विवरण को निर्धारित करने में मदद करती है।
  - यह मतदाता सूचियों में त्रुटियों को न्यूनतम करके निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित करता है।

#### EPIC दोहराव की समस्या क्यों उत्पन्न हुई?

- ECI ने स्पष्ट किया कि सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) के ईआरओनेट पर स्थानांतरित होने से पहले मतदाता पहचान पत्र जारी करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले विकेंद्रीकृत मैनुअल तंत्र के कारण डुप्लिकेट EPIC नंबर तैयार किए गए थे।

#### दोहराव के मुख्य कारण:

- मैनुअल प्रविष्टि त्रुटियाँ: चूंकि राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) मतदाता पहचान-पत्र पंजीकरण का काम अलग-अलग करते हैं, इसलिए कुछ राज्यों में एक ही EPIC संख्या श्रृंखला का उपयोग किया जाता है, जिसके कारण विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में ओवरलैपिंग हो जाती है।
- केंद्रीकृत डेटाबेस का अभाव: ईआरओनेट से पहले, प्रत्येक राज्य अपना स्वयं का रिकार्ड रखता था, जिससे मतदाता पहचान पत्र बनाने में विसंगतियां उत्पन्न होती थीं।
- मतदाताओं का अंतर्राज्यीय प्रवास: राज्य बदलने वाले लोगों के पास कभी-कभी दो अलग-अलग मतदाता पहचान-पत्र होते हैं (एक पिछले राज्य का और दूसरा नए राज्य का)।

- ERONET एक उन्नत डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसे मतदाता पंजीकरण को मानकीकृत करने, डुप्लिकेट प्रविष्टियों का पता लगाने और एक सटीक मतदाता सूची बनाए रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसे चुनावी प्रणाली में बेहतर पारदर्शिता, जवाबदेही और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए पेश किया गया था।

#### ERONET की मुख्य विशेषताएं:

- एकीकृत राष्ट्रीय डेटाबेस: सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए एक केंद्रीकृत डेटाबेस बनाए रखता है, जिससे दोहराव का जोखिम समाप्त हो जाता है।
- अनेक भाषाओं और लिपियों का समर्थन करता है: समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए 14 भाषाओं और 11 लिपियों में उपलब्ध है।
- स्वचालित फॉर्म प्रसंस्करण: मतदाता पहचान पत्र पंजीकरण, सुधार और विलोपन के लिए आवेदनों को ट्रैक करने में मदद करता है।
- डुप्लिकेट प्रविष्टि का पता लगाना: पता लगाने के लिए AI-आधारित तकनीक का उपयोग करता है:
  - पीएसई (फोटो समान प्रविष्टियाँ): चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग करके डुप्लिकेट मतदाता पहचान पत्रों की पहचान करता है।
  - डीएसई (जनसांख्यिकीय समान प्रविष्टियाँ): एक ही व्यक्ति के एकाधिक पंजीकरणों को हटाने के लिए मतदाता डेटा (नाम, आयु, पता, आदि) का मिलान करता है।
- प्रदर्शन निगरानी और डेटा विश्लेषण: चुनाव अधिकारियों की दक्षता पर निगरानी रखने और निर्णय लेने में सुधार करने के लिए रिपोर्ट तैयार करता है।

EPIC दोहराव के मुद्दे ने भारतीय चुनाव आयोग (ECI) की विश्वसनीयता के बारे में गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं। हालाँकि यह समस्या पिछली मैन्युअल प्रणाली से उत्पन्न हुई थी, लेकिन ERONET का कार्यान्वयन चुनावी पारदर्शिता और सटीकता में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आगे बढ़ते हुए, भारतीय चुनावों की अखंडता को बनाए रखने के लिए एक मजबूत मतदाता सत्यापन प्रक्रिया, AI-संचालित निगरानी और ERONET को निरंतर अपडेट करना आवश्यक होगा। इन चिंताओं को सक्रिय रूप से संबोधित करने से चुनाव आयोग में जनता का विश्वास बहाल होगा और देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित होंगे।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: हाल ही में चर्चा में रहा 'ERONET' किससे संबंधित है?

- सैटेलाइट इंटरनेट सिस्टम
- इसरो द्वारा प्रक्षेपित उपग्रह
- टीकाकरण के लिए एक वेब-आधारित समाधान
- चुनावी आंकड़ों का एक एकीकृत डेटाबेस

(P) : 2024

## न्याय का डिजिटल रूपांतरण: भारत की न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन में AI का एकीकरण

### परिचय:

भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का एकीकरण कानूनी प्रक्रियाओं को आधुनिक बनाने, दक्षता में सुधार लाने और न्याय प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हालाँकि, यह गोपनीयता, पूर्वाग्रह, जवाबदेही और पारदर्शिता से संबंधित चुनौतियाँ भी लाता है, जिन्हें सावधानीपूर्वक विनियमित करने की आवश्यकता है।

यह लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार AI भारत की न्यायपालिका और कानून प्रवर्तन को बदल रहा है, इसके संभावित जोखिम क्या हैं, तथा नैतिक और प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सुरक्षा उपाय क्या हैं।

### भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली (सीजेएस) को समझना:

भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली (सीजेएस) तीन नए अधिनियमित कानूनों के तहत काम करती है:

- भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), 2023: भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की जगह, वास्तविक आपराधिक कानून को नियंत्रित करता है।
- भारतीयनागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस), 2023: आपराधिक कानून के प्रक्रियात्मक पहलुओं से संबंधित है, यह दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) का स्थान लेता है।
- भारतीयसाक्ष्यअधिनियम (बीएसए), 2023: साक्ष्य के नियमों को नियंत्रित करता है, भारतीय साक्ष्य अधिनियम का स्थान लेता है।

### आपराधिक न्याय प्रणाली में प्रमुख संस्थाएँ:

- पुलिस बल: अपराध पीड़ितों के लिए संपर्क का पहला बिंदु; जांच और अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए जिम्मेदार।
- न्यायालय: अभियोजन, परीक्षण और मामलों के न्यायनिर्णयन का काम संभालते हैं।
- सुधारात्मक सुविधाएँ (कारागार): दोषी व्यक्तियों का पुनर्वास और पुनः एकीकरण सुनिश्चित करना।

### आपराधिक न्याय प्रक्रिया के चार प्रमुख घटक:

- पुलिस जांच: अधिकारी साक्ष्य एकत्र करते हैं, संदिग्धों से पूछताछ करते हैं, और बीएनएस प्रावधानों के अनुसार बयान दर्ज करते हैं।
- अभियोजन: कानूनी पेशेवर औपचारिक रूप से संदिग्धों पर आरोप लगाते हैं और अदालत में सबूत पेश करते हैं।
- न्यायिक निर्णय: न्यायालय आपराधिक इतिहास और पुनर्वास क्षमता जैसे कारकों पर विचार करते हुए साक्ष्य के आधार पर दोष का निर्धारण करते हैं।
- सुधारात्मक प्रणाली: जेल शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और पुनर्वास कार्यक्रमों के माध्यम से कैदियों के सुधार पर ध्यान केंद्रित करती है।

### भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में AI की भूमिका:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में केस प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने, कानूनी अनुसंधान में सुधार करने और अपराध रोकथाम प्रयासों को बढ़ाने के माध्यम से भारत के कानूनी और कानून प्रवर्तन ढांचे में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता है।

## आपराधिक न्याय प्रणाली में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

- **स्वचालित केस प्रबंधन:** AI-संचालित उपकरणों का उपयोग स्मार्ट शेड्यूलिंग, केस प्राथमिकता और सक्रिय बैकलॉग कमी के लिए किया जा सकता है।
- **कानूनी अनुसंधान और दस्तावेज़ीकरण में AI:** परिष्कृत AI-संचालित प्रौद्योगिकियों द्वारा कानूनी अनुसंधान को सरल बनाना, प्रासंगिक मामले के उदाहरणों को ढूँढना, तथा निर्णयों का सारांश तैयार करना, सभी कार्य न्यायाधीशों और वकीलों के लिए आसान हो गए हैं।
- **AI-सहायता प्राप्त फाइलिंग और न्यायालय प्रक्रियाएं:** ये प्रौद्योगिकियाँ न्यायालय के दस्तावेजों की फाइलिंग को स्वचालित बनाती हैं, जिससे तेजी से प्रसंस्करण सुनिश्चित होता है और दस्तावेज़ीकरण प्रक्रिया में मैनुअल त्रुटियों में कमी आती है।
- **उपयोगकर्ता सहायता और चैटबॉट के लिए AI:** AI-संचालित आभासी कानूनी सहायक और चैटबॉट मुकदमे की स्थिति, प्रक्रियात्मक मार्गदर्शन और आवश्यक कानूनी अपडेट के बारे में वादियों को वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करने के लिए उपलब्ध हैं।
- **मामले के परिणामों में पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण के लिए AI:** AI मॉडल संभावित मामले के परिणामों और जोखिम मूल्यांकन के लिए पूर्वानुमान प्रदान करने के लिए पिछले फैसलों और मामले की जानकारी की जांच करते हैं।
- **कानूनी अनुवाद और भाषा के लिए AI:** कानूनी दस्तावेजों और निर्णयों को गैर-अंग्रेजी भाषाओं में सुलभ बनाने के लिए AI-संचालित कानूनी अनुवाद उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है।
- **कानून प्रवर्तन और अपराध रोकथाम में AI:** अपराध का पता लगाने, निगरानी और आपराधिक जांच में सुधार के लिए, पुलिस और कानून प्रवर्तन में AI का उपयोग किया जा रहा है।
- **पूर्वानुमानात्मक पुलिसिंग:** AI एल्गोरिदम आपराधिक गतिविधि, उच्च जोखिम वाले स्थानों और अपराध प्रवृत्तियों की जांच करते हैं, ताकि कानून प्रवर्तन को निवारक कार्रवाई करने में मदद मिल सके।
- **एफआईआर दर्ज करने और न्यायिक कार्यवाही में AI:** AI-संचालित स्पीच-टू-टेक्स्ट उपकरण वास्तविक समय में एफआईआर दर्ज करने और केस दस्तावेज़ीकरण में सहायता करते हैं।

## आपराधिक न्याय के साथ AI के एकीकरण की चुनौतियाँ:

- **गोपनीयता संबंधी चिंताएँ और निगरानी:** निगरानी और डेटा संग्रह में AI का उपयोग गंभीर गोपनीयता जोखिम पैदा करता है, खासकर भारत जैसे देश में, जहाँ व्यापक डेटा सुरक्षा कानून अभी भी अपने प्रारंभिक चरण में है। उचित निगरानी के बिना, कानून प्रवर्तन एजेंसियाँ राजनीतिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों या अल्पसंख्यक समुदायों की निगरानी के लिए AI उपकरणों का उपयोग कर सकती हैं, जिससे नागरिक स्वतंत्रता का उल्लंघन हो सकता है।
- **साइबर हमले:** AI प्रणालियों द्वारा विशाल मात्रा में व्यक्तिगत डेटा का संग्रह और भंडारण, डेटा उल्लंघन और अनधिकृत पहुंच का एक महत्वपूर्ण जोखिम प्रस्तुत करता है।
- **पूर्वाग्रह और भेदभाव:** AI सिस्टम केवल उतने ही अच्छे होते हैं, जितने अच्छे डेटा पर उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है, और यदि वह डेटा सामाजिक पूर्वाग्रहों को दर्शाता है - जैसे कि जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक-आर्थिक स्थिति से संबंधित पूर्वाग्रह - तो AI सिस्टम उन पूर्वाग्रहों को दोहरा सकता है और उन्हें मजबूत कर सकता है। उदाहरण के लिए, पूर्वानुमानित पुलिसिंग के संदर्भ में, ऐतिहासिक अपराध डेटा पर प्रशिक्षित AI एल्गोरिदम हाशिप पर पड़े समुदायों को असंगत रूप से लक्षित कर सकते हैं यदि डेटा उनके खिलाफ पक्षपाती है।

- **पारदर्शिता और जवाबदेही का अभाव:** AI एल्गोरिदम, विशेष रूप से मशीन लर्निंग पर आधारित, अक्सर «ब्लैक बॉक्स» के रूप में कार्य करते हैं, जिससे यह समझना मुश्किल हो जाता है कि वे कुछ निर्णयों या भविष्यवाणियों पर कैसे पहुंचते हैं। यह अस्पष्टता आपराधिक न्याय के संदर्भ में समस्याग्रस्त हो सकती है, जहां AI पर आधारित निर्णय व्यक्तियों के जीवन और स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं।
- **उत्तरदायित्व का मुद्दा:** जब AI प्रणालियाँ त्रुटिपूर्ण या पक्षपातपूर्ण निर्णय लेती हैं, तो यह निर्धारित करना कठिन हो सकता है कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है - चाहे वह AI प्रणाली के डेवलपर्स हों, उसे लागू करने वाली सरकारी एजेंसी हो, या वे व्यक्तिगत अधिकारी या न्यायाधीश हों जिन्होंने प्रणाली की सिफारिशों पर भरोसा किया हो।
- **मानव गरिमा को कमजोर करना:** पूर्वानुमानित पुलिसिंग या जोखिम मूल्यांकन के लिए AI का उपयोग व्यक्तियों को मात्र डेटा बिंदुओं तक सीमित कर सकता है, तथा उस व्यापक सामाजिक और व्यक्तिगत संदर्भ को नजरअंदाज कर सकता है जिसमें वे काम करते हैं।

## आगे की राह:

- **इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य का प्रमाणीकरण:** AI-जनित साक्ष्य की विश्वसनीयता और अखंडता स्थापित करना कानूनी कार्यवाही में महत्वपूर्ण होगा, जिससे निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित होगी।
- **विशेषज्ञ की राय साक्ष्य:** AI सिस्टम, विशेष रूप से मशीन लर्निंग एल्गोरिदम से जुड़े सिस्टम, विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ राय दे सकते हैं। हालाँकि, इस बारे में विशिष्ट दिशा-निर्देशों की आवश्यकता है कि अदालतों को AI सिस्टम द्वारा दी गई राय को कैसे मानना चाहिए।
- **डेटा गोपनीयता और स्वीकार्यता:** डेटा गोपनीयता और AI प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त साक्ष्य की स्वीकार्यता से संबंधित मुद्दों को कानूनी ढांचे के भीतर और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो सकती है। व्यक्तिगत गोपनीयता अधिकारों की रक्षा के बढ़ते महत्व को देखते हुए यह विशेष रूप से प्रासंगिक है।
- **आपराधिक प्रोफाइलिंग और पूर्वाग्रह: प्राधिकारियों को AI एल्गोरिदम में संभावित पूर्वाग्रहों को संबोधित करने वाले प्रावधानों को शामिल करने की आवश्यकता है और यह सुनिश्चित करना होगा कि AI प्रणालियों से प्राप्त कोई भी साक्ष्य निष्पक्ष और गैर-भेदभावपूर्ण हो।**
- **कानूनी पेशेवरों को शिक्षित करना:** AI की तकनीकी प्रकृति को देखते हुए, न्यायाधीशों और वकीलों सहित कानूनी पेशेवरों को AI की कार्यप्रणाली और सीमाओं के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता हो सकती है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाएँ:** अन्य देशों के AI विनियमों और ढाँचों से सीख लेकर भारत को एक संतुलित और प्रभावी AI-संचालित आपराधिक न्याय प्रणाली विकसित करने में मदद मिल सकती है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

- प्रश्न 1. भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली में AI के उपयोग में चुनौतियाँ और अवसरों का आलोचनात्मक विश्लेषण करें। इसके नैतिक और प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के उपाय सुझाएँ। [250 शब्द] [15 अंक]

## बिल ऑफ लैडिंग बिल, 2025

### चर्चा में क्यों?

लोकसभा ने हाल ही में बिल ऑफ लैडिंग बिल, 2025 पारित किया, जो 169 साल पुराने भारतीय बिल ऑफ लैडिंग एक्ट, 1856 की जगह लेगा। इस विधायी कदम का उद्देश्य भारत में शिपिंग कानूनों को आधुनिक बनाना और उन्हें समकालीन वैश्विक व्यापार प्रथाओं के साथ संरेखित करना है।

### विधेयक की मुख्य विशेषताएं:

- **भारतीय बिल ऑफ लैडिंग एक्ट, 1856 को निरस्त करता है:** 1856 के अधिनियम ने शिपिंग उद्योग में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़, बिल ऑफ लैडिंग जारी करने के लिए कानूनी ढांचा प्रदान किया। नए विधेयक में आधुनिक प्रथाओं को शामिल करते हुए मूल प्रावधानों को बरकरार रखा गया है।

### बिल ऑफ लैडिंग क्या है?

बिल ऑफ लैडिंग एक कानूनी रूप से बाध्यकारी दस्तावेज़ है जो मालवाहक द्वारा शिपर को जारी किया जाता है। यह कई उद्देश्यों को पूरा करता है, जिनमें शामिल हैं:

- एक रसीद जिसमें यह स्वीकार किया जाता है कि माल जहाज पर लाद दिया गया है।
- शिपर और वाहक के बीच एक अनुबंध, जिसमें परिवहन की शर्तों का उल्लेख होता है।
- एक शीर्षक दस्तावेज़ जो माल के स्वामित्व को किसी तीसरे पक्ष को हस्तांतरित करने की अनुमति देता है।
- इसमें महत्वपूर्ण जानकारी शामिल है, जैसे:
  - परिवहन किए जा रहे माल का प्रकार
  - माल की माला और स्थिति
  - शिपमेंट का गंतव्य

### विधेयक के प्रमुख प्रावधान:

- **बिल ऑफ लैडिंग को निर्णायक साक्ष्य के रूप में मान्यता देना:**
  - विधेयक में कहा गया है कि बिल ऑफ लैडिंग, जहाज पर माल की शिपमेंट के निर्णायक साक्ष्य के रूप में कार्य करता है।
- **कानूनी अधिकार एवं दायित्व:**
  - बिल में निर्दिष्ट किया गया है कि **माल से संबंधित सभी कानूनी अधिकार और दायित्व** निम्नलिखित को हस्तांतरित किए जाएंगे:
    - ◆ बिल ऑफ लैडिंग में उल्लिखित प्राप्तकर्ता।
    - ◆ कोई भी तीसरा पक्ष जिसे प्राप्तकर्ता माल का स्वामित्व हस्तांतरित करता है।
- **केन्द्रीय सरकार की शक्तियाँ:**
  - यह विधेयक केन्द्र सरकार को इसके प्रावधानों के उचित कार्यान्वयन के लिए निर्देश जारी करने का अधिकार देता है।

### बिल ऑफ लैडिंग बिल, 2025 का महत्व:

- **सुव्यवस्थित व्यावसायिक प्रक्रियाएं:** पुराने औपनिवेशिक युग के कानून को अद्यतन करके, यह विधेयक शिपिंग लेनदेन को सरल बनाता है, प्रणाली को अधिक कुशल बनाता है और प्रशासनिक बाधाओं को कम करता है।
- **मुकदमेबाजी जोखिम में कमी:** स्पष्ट कानूनी ढांचे से शिपिंग कंपनियों, शिपर्स और माल प्राप्तकर्ताओं के बीच विवाद कम हो जाएंगे, जिससे लंबी मुकदमेबाजी की आवश्यकता कम हो जाएगी।

- **अधिक पारदर्शिता और कानूनी स्पष्टता:** यह विधेयक माल के वाहकों, शिपमेंटर्स और वैध धारकों के लिए बेहतर परिभाषित कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है, तथा यह सुनिश्चित करता है कि जिम्मेदारियों और अधिकारों को स्पष्ट रूप से बताया गया है।
- **भारत के वैश्विक व्यापार को बढ़ावा:**
  - भारत वैश्विक वाणिज्य में तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
  - यह आधुनिक कानून व्यापार प्रक्रियाओं को सुचारू बनाकर अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग उद्योग में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है।
  - यह भारत के नौवहन विनियमों को वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप बनाता है, जिससे समुद्री व्यापार में अधिक निवेश आकर्षित होता है।
- **शिपिंग में डिजिटलीकरण का समर्थन:**
  - नये विधेयक से इलेक्ट्रॉनिक बिल ऑफ लैडिंग को बढ़ावा मिलने की संभावना है, जिससे तीव्र, अधिक सुरक्षित और लागत प्रभावी व्यापार लेनदेन संभव होगा।
  - लॉजिस्टिक्स और व्यापार में डिजिटल परिवर्तन की दिशा में भारत के प्रयास के अनुरूप है।

बिल ऑफ लैडिंग बिल, 2025 भारत के शिपिंग कानूनों को आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पुराने 1856 अधिनियम को प्रतिस्थापित करके, यह पारदर्शिता बढ़ाता है, कानूनी सुरक्षा को मजबूत करता है, और एक अधिक कुशल शिपिंग पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देता है। यह सुधार न केवल व्यापार प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करेगा, बल्कि वैश्विक समुद्री केंद्र के रूप में भारत की स्थिति को भी मजबूत करेगा, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य में अग्रणी बनने की इसकी आकांक्षाओं को समर्थन मिलेगा।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: बिल ऑफ लैडिंग का प्राथमिक कार्य क्या है?

- यह वाहक को दिए गए माल की रसीद के रूप में कार्य करता है।
- यह शिपर और वाहक के बीच परिवहन अनुबंध का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह स्वामित्व के दस्तावेज़ के रूप में कार्य करता है, जिससे माल के स्वामित्व का हस्तांतरण संभव होता है।
- उपर्युक्त सभी

(P) : 21E

### आप्रवास और विदेशियों से संबंधित विधेयक, 2025

**चर्चा में क्यों:** केंद्र सरकार ने हाल ही में लोकसभा में आप्रवास और विदेशियों से संबंधित विधेयक, 2025 पेश किया। इस प्रस्तावित कानून का उद्देश्य भारत में विदेशियों के आप्रवास, प्रवेश, ठहरने और बाहर निकलने के नियमन को सुव्यवस्थित करना है, तथा कई पुराने कानूनों को एक व्यापक ढांचे के साथ बदलना है।

#### विधेयक द्वारा निरस्त किये गए कानून:

विधेयक निम्नलिखित चार मौजूदा अधिनियमों को निरस्त कर उन्हें एक कानून में समाहित कर देता है:

- पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) अधिनियम, 1920

- विदेशियों का पंजीकरण अधिनियम, 1939
- विदेशी अधिनियम, 1946
- आप्रवास (वाहक दायित्व) अधिनियम, 2000

### विधेयक के प्रमुख प्रावधान

#### आप्रवास विनियम:

- भारत में प्रवेश करने के लिए विदेशियों के पास वैध पासपोर्ट और वीजा होना चाहिए।
- केन्द्र सरकार प्रवेश और निकास के लिए विशिष्ट आप्रवास चौकियां निर्धारित कर सकती है।
- आप्रवासन ब्यूरो की स्थापना:
  - वीजा जारी करना और प्रवेश को विनियमित करना।
  - विदेशियों के पारगमन, ठहरने, आवागमन और प्रस्थान की देखरेख करना।

#### विदेशियों का पंजीकरण:

- विदेशियों को आगमन पर पंजीकरण अधिकारी के पास पंजीकरण कराना होगा।
- विदेशी नागरिकों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए ट्रैकिंग तंत्र को मजबूत किया गया।

#### संस्थाओं के लिए रिपोर्टिंग दायित्व:

- एयरलाइंस, शिपिंग कंपनियां और ट्रांसपोर्टर:
  - आप्रवास अधिकारियों को विदेशी यात्रियों और चालक दल के सदस्यों का विवरण उपलब्ध कराना होगा।
- शिक्षण संस्थानों:
  - प्रवेशित विदेशी छात्रों का विवरण पंजीकरण अधिकारी को अवश्य देना होगा।
- चिकित्सा संस्थान:
  - अस्पताल में उपचार प्राप्त कर रहे विदेशी मरीजों का विवरण देना होगा।

#### वाहकों की विस्तारित परिभाषा:

‘वाहक’ की परिभाषा में अब निम्नलिखित शामिल हैं:

- एयरलाइंस, शिपिंग कंपनियां, और भूमि परिवहन ऑपरेटर।
- यात्रियों या माल के परिवहन में शामिल कोई भी इकाई।

#### प्रस्थान के लिए अनिवार्य मंजूरी:

- किसी भी परिवहन को आप्रवास अधिकारी से मंजूरी लेनी होगी।

#### गिरफ्तारी की बढ़ी हुई शक्ति:

- **वर्तमान कानून:** उप-निरीक्षक या उससे ऊपर के रैंक के पुलिस अधिकारी वैध पासपोर्ट के बिना व्यक्तियों को गिरफ्तार कर सकते हैं।
- **नया प्रावधान:** हेड कांस्टेबल या उच्च रैंक के अधिकारी अब बिना वारंट के गिरफ्तारी कर सकते हैं।

#### आप्रवास अपराधों के लिए कठोर दंड:

- सभी चार अधिनियमों में विभिन्न प्रावधानों के उल्लंघन पर दंड लगाने का प्रावधान है।
- विधेयक में कुछ अपराधों के लिए दंड में बदलाव करने का प्रावधान है। पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) अधिनियम, 1920 के तहत वैध पासपोर्ट के बिना प्रवेश करने पर पांच साल तक की कैद, 50,000 रुपये तक का जुर्माना या दोनों हो सकते हैं।

- विधेयक में वैध पासपोर्ट या अन्य यात्रा दस्तावेजों के बिना प्रवेश करने वाले विदेशियों को पांच वर्ष तक के कारावास, 5 लाख रुपये तक के जुर्माने या दोनों का प्रावधान है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: आप्रवास और विदेशियों से संबंधित विधेयक, 2025 निम्नलिखित में से किस अधिनियम को निरस्त करता है:

1. पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) अधिनियम, 1920
2. विदेशियों का पंजीकरण अधिनियम, 1939
3. विदेशी अधिनियम, 1946
4. आप्रवास (वाहक दायित्व) अधिनियम, 2000

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1 और 2                      (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1, 2 और 3                (d) उपर्युक्त सभी

(P) 2025

### भारतीय संविधान का अनुच्छेद 136: विशेष अनुमति याचिका और इसके निहितार्थ

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में भारत के उपराष्ट्रपति ने इस बढ़ती चिंता को उजागर किया कि अनुच्छेद 136 का व्यापक अनुप्रयोग भारत में मध्यस्थता प्रक्रिया को कमजोर कर रहा है।

#### मुख्य विवरण:

- इंडिया इंटरनेशनल आर्बिट्रेशन सेंटर द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता: भारतीय परिप्रेक्ष्य संगोष्ठी में बोलते हुए उन्होंने बताया कि यह प्रावधान, जो मूल रूप से एक संकीर्ण अपवाद के रूप में था, अब व्यापक रूप से प्रयोग किया जा रहा है, जिससे मध्यस्थता की दक्षता प्रभावित हो रही है।
- उपराष्ट्रपति ने भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ की इस टिप्पणी का भी उल्लेख किया कि भारत में मध्यस्थता एक «पुराने लोगों का क्लब» बन गई है, तथा उन्होंने मध्यस्थता कार्यवाही में क्षेप के विशेषज्ञों की अधिक भागीदारी की आवश्यकता पर बल दिया।

#### अनुच्छेद 136:

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 136 सर्वोच्च न्यायालय को भारत में किसी भी न्यायालय या न्यायाधिकरण द्वारा पारित किसी भी निर्णय, डिक्री, निर्धारण, सजा या आदेश के विरुद्ध अपील करने के लिए विशेष अनुमति देने की विवेकाधीन शक्ति प्रदान करता है।

#### अनुच्छेद 136 की मुख्य विशेषताएं:

- यह अपील करने का पूर्ण अधिकार नहीं प्रदान करता है, बल्कि विशेष अनुमति के लिए आवेदन करने का अधिकार प्रदान करता है।
- सर्वोच्च न्यायालय को याचिका स्वीकार करने या अस्वीकार करने का पूर्ण विवेकाधिकार है।

- यह सभी प्रकार के मामलों पर लागू होता है, चाहे वे सिविल, आपराधिक या संवैधानिक हों।
- इसमें अंतिम निर्णय और अंतरिम आदेश दोनों शामिल हैं।
- हालाँकि, यह सैन्य अदालतों या कोर्ट-मार्शल (यूके संविधान से प्राप्त एक अपवाद) द्वारा तय मामलों पर लागू नहीं होता है।

#### विशेष अनुमति याचिका (एसएलपी) क्या है?

- विशेष अनुमति याचिका एक कानूनी तंत्र है जो पीड़ित पक्ष को अधीनस्थ अदालत या न्यायाधिकरण के फैसले के खिलाफ अपील करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय से विशेष अनुमति लेने की अनुमति देता है। यह सुनिश्चित करता है कि महत्वपूर्ण कानूनी महत्व या अन्याय के मामलों की उच्चतम न्यायिक स्तर पर समीक्षा की जा सकती है।

#### ऐतिहासिक संदर्भ:

अपील के लिए विशेष अनुमति की अवधारणा भारत सरकार अधिनियम, 1935 से उधार ली गई थी। यह एक सुरक्षा के रूप में कार्य करता है, जिससे सर्वोच्च न्यायालय को ऐसे मामलों में हस्तक्षेप करने की अनुमति मिलती है जहाँ न्याय में चूक हो सकती है।

#### एसएलपी दाखिल करने की समय सीमा:

- निचली अदालत के फैसले की तारीख से 90 दिनों के भीतर।
- यदि उच्च न्यायालय अनुच्छेद 134A के तहत सर्वोच्च न्यायालय में अपील के लिए उपयुक्तता प्रमाण पत्र देने से इनकार करता है तो 60 दिनों के भीतर।

#### एसएलपी दाखिल करने की आवश्यकताएं:

- याचिका में सभी आवश्यक तथ्य शामिल होने चाहिए ताकि सर्वोच्च न्यायालय एसएलपी मंजूर करने का निर्णय ले सके।
- एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड (एओआर) द्वारा हस्ताक्षर होना चाहिए।
- याचिकाकर्ता को यह घोषित करना होगा कि उसी मामले के लिए उच्च न्यायालय में कोई अन्य याचिका दायर नहीं की गई है।
- संलग्न अनुलग्नक अधीनस्थ अदालतों में प्रस्तुत दलीलों की सत्य प्रतियाँ होनी चाहिए।
- जिस निर्णय के विरुद्ध अपील दायर की जा रही है उसकी एक प्रति अवश्य संलग्न की जानी चाहिए।

#### न्यायाधिकरण और एसएलपी:

हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय एसएलपी देने का प्राथमिक अधिकार रखता है, लेकिन कानून द्वारा मान्यता प्राप्त कुछ न्यायाधिकरण भी विशिष्ट परिस्थितियों में ऐसी अपीलों को संभाल सकते हैं। इन न्यायाधिकरणों के पास न्यायालयों के समान न्यायिक शक्तियाँ होनी चाहिए, जैसे:

- शपथ के तहत गवाहों को बुलाना और उनसे पूछताछ करना।
- साक्ष्य की समीक्षा करना।
- ऐसे आदेश जारी करना जिनके पास कानूनी अधिकार हो।

#### अनुच्छेद 136 के अत्यधिक उपयोग पर चिंताएं:

1. मध्यस्थता पर प्रभाव: एसएलपी के माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बार-बार हस्तक्षेप करने से मध्यस्थता प्रक्रिया की दक्षता कम हो जाती है, जिससे वाणिज्यिक विवाद समाधान के लिए यह कम आकर्षक हो जाती है।
2. न्यायिक बोझ: एसएलपी की बढ़ती संख्या से सर्वोच्च न्यायालय पर अत्यधिक कार्यभार बढ़ रहा है, जिससे गंभीर मामलों में न्याय में देरी हो रही है।

3. न्यायिक अनुशासन की आवश्यकता: विशेषज्ञों का तर्क है कि सर्वोच्च न्यायालय को संयम बरतना चाहिए और केवल महत्वपूर्ण कानूनी प्रश्नों से संबंधित मामलों में ही विशेष अनुमति याचिकाओं को स्वीकार करना चाहिए।

अनुच्छेद 136 भारत के न्यायिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह असाधारण मामलों को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सुनवाई की अनुमति देता है। हालाँकि, इसका अत्यधिक उपयोग न्यायिक अतिक्रमण और मध्यस्थता जैसे वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र की दक्षता के बारे में चिंताएं पैदा कर रहा है। आगे बढ़ते हुए, यह सुनिश्चित करने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है कि विशेष अनुमति याचिकाओं की शक्ति का विवेकपूर्ण तरीके से प्रयोग किया जाए, जिससे भारत में न्यायपालिका और मध्यस्थता प्रक्रिया दोनों की अखंडता बनी रहे।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: विशेष अनुमति याचिका के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों को किसी भी निर्णय के विरुद्ध अपील करने हेतु विशेष अनुमति देने का विवेकाधिकार दिया गया है।
2. विशेष अनुमति याचिका निर्णय की तिथि से 30 दिनों के भीतर दायर की जानी चाहिए।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं:

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

(P) : 25E

#### भारत में न्यायाधिकरण

**चर्चा में क्यों:** भारत के सर्वोच्च न्यायालय (2024) ने न्यायाधिकरणों के कामकाज पर गंभीर चिंता जताई है, जिसमें रिक्तियों, कार्यकारी हस्तक्षेप और मामले के समाधान में देरी जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। न्यायालय ने सुधारों की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि न्यायाधिकरण शीघ्र और विशिष्ट न्याय के अपने इच्छित उद्देश्य को पूरा करें।

#### सर्वोच्च न्यायालय द्वारा उठाए गए प्रमुख मुद्दे:

- रिक्तियाँ और नियुक्तियों में देरी: न्यायाधिकरण में कई पद रिक्त रह जाते हैं, जिससे लंबित मामलों की संख्या बढ़ जाती है।
- कार्यपालिका हस्तक्षेप: नियुक्तियों और कार्यकाल पर अत्यधिक सरकारी नियंत्रण न्यायिक स्वतंत्रता को प्रभावित करता है।
- खराब बुनियादी ढांचा: कई न्यायाधिकरणों में उचित कार्यालय स्थान, स्टाफ और डिजिटल सुविधाओं का अभाव है।
- अकुशल अपील प्रणाली: कई न्यायाधिकरण मामले उच्च न्यायालयों में पहुंचते हैं, जिससे न्यायिक बोझ बढ़ जाता है।

#### न्यायाधिकरणों पर संवैधानिक प्रावधान:

भारत में न्यायाधिकरणों को उनकी कानूनी स्थिति 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 से प्राप्त हुई है, जिसने संविधान में भाग XIV-A (अनुच्छेद 323A और 323B) को शामिल किया।

### अनुच्छेद 323A: लोक सेवा विवादों के लिए न्यायाधिकरण

- संसद को सरकारी सेवा विवादों से संबंधित मामलों के लिए न्यायाधिकरण स्थापित करने का अधिकार है।
- उदाहरण: केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण (कैट), जो सरकारी कर्मचारियों से जुड़े विवादों को संभालता है।

### अनुच्छेद 323B: अन्य मामलों के लिए न्यायाधिकरण

- संसद और राज्य विधानमंडल दोनों ही कराधान, भूमि सुधार, चुनाव, औद्योगिक विवाद और उपभोक्ता अधिकार जैसे मुद्दों के लिए न्यायाधिकरण बना सकते हैं।
- उदाहरण:
  - राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी): पर्यावरण विवादों को संभालता है।
  - दूरसंचार विवाद निपटान और अपीलीय न्यायाधिकरण (टीडीसैट): दूरसंचार क्षेत्र के विवादों को संभालता है।

### भारत में न्यायाधिकरणों के प्रकार:

न्यायाधिकरण विशिष्ट विवादों को कुशलतापूर्वक निपटाने के लिए विशेष न्यायालयों के रूप में कार्य करते हैं। कुछ प्रमुख प्रकारों में शामिल हैं:

#### 1. प्रशासनिक न्यायाधिकरण:

- उद्देश्य: सरकारी कर्मचारियों और सार्वजनिक सेवा मामलों से संबंधित विवादों का समाधान करना।
- उदाहरण: केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण (कैट)।

#### 2. पर्यावरण न्यायाधिकरण:

- उद्देश्य: प्रदूषण नियंत्रण, संरक्षण और पर्यावरण कानूनों से संबंधित मामलों को संभालना।
- उदाहरण: राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) - वन मंजूरी, प्रदूषण नियंत्रण और पर्यावरण उल्लंघन से संबंधित मामलों से निपटता है।

#### 3. नियामक न्यायाधिकरण

- उद्देश्य: दूरसंचार, बैंकिंग और वित्त जैसे क्षेत्रों में विवादों का समाधान करना।
- उदाहरण: दूरसंचार विवाद निपटान और अपीलीय न्यायाधिकरण (टीडीसैट) - दूरसंचार ऑपरेटरों और उपभोक्ताओं के बीच विवादों को संभालता है।

### न्यायाधिकरणों के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

#### रिक्तियाँ और लंबित मामले:

- जनवरी 2024 तक, 250 न्यायाधिकरण पदों में से 160 रिक्त थे (सर्वोच्च न्यायालय अवलोकन)।
- स्थायी समिति की रिपोर्ट (2021): न्यायाधिकरण में केवल 30% पद भरे गए, जिससे लंबित मामलों की संख्या में भारी वृद्धि हुई।
- उदाहरण:
  - न्यायिक सदस्यों की कमी के कारण राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) में 5,000 से अधिक मामले (2023) लंबित हैं।

#### कार्यपालिका हस्तक्षेप और न्यायिक स्वतंत्रता:

- न्यायाधिकरण सुधार अधिनियम, 2021 ने सरकार को नियुक्तियों, कार्यकाल और सेवा शर्तों पर महत्वपूर्ण नियंत्रण दिया।
- सर्वोच्च न्यायालय (2021): अधिनियम को यह कहते हुए रद्द कर दिया कि यह न्यायाधिकरणों को कमजोर करने का प्रयास है।
- केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण (कैट): 75% सदस्य सेवानिवृत्त नौकरशाह हैं, जिससे न्यायिक तटस्थता पर चिंता उत्पन्न होती है (संसदीय रिपोर्ट, 2022)।

### अपर्याप्त बुनियादी ढांचा:

- कई न्यायाधिकरणों में उचित कार्यालय, स्टाफ और डिजिटल प्रणालियों का अभाव है, जिससे मामलों का समाधान अप्रभावी हो जाता है।
- उदाहरण:
  - ऋण वसूली न्यायाधिकरण (डीआरटी): कई न्यायाधिकरण पूर्णकालिक पीठासीन अधिकारियों के बिना काम करते हैं (वित्त मंत्रालय रिपोर्ट, 2023)।
  - एनजीटी की कोलकाता बेंच (2023): कार्यालय स्थान की कमी और कर्मचारियों की कमी के कारण सुनवाई में देरी हुई।
  - कैट चंडीगढ़: केंद्रीय न्यायाधिकरण होने के बावजूद कोई डिजिटल फाइलिंग या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा नहीं (विधि आयोग रिपोर्ट, 2022)।

### क्षेत्राधिकार का अतिव्यापन और अपील प्रक्रिया में उलझन:

- न्यायाधिकरण के फैसले अक्सर उच्च न्यायालयों में पहुंचते हैं, जिससे न्यायिक बोझ बढ़ जाता है।
- उदाहरण:
  - ऋण वसूली अपीलीय न्यायाधिकरण (डीआरएटी) के मामले अभी भी उच्च न्यायालयों में जाते हैं, जिससे विशेष न्यायाधिकरण बनाने का उद्देश्य नकार दिया जाता है (आरबीआई रिपोर्ट, 2023)।
  - सर्वोच्च न्यायालय (2023): यह पाया गया कि न्यायाधिकरणों के %60 मामलों की अपील उच्च न्यायालयों में की जाती है, जिससे वे न्यायिक कार्यभार को कम करने में अप्रभावी हो जाते हैं।

### आगे की राह:

- रिक्तियों को भरना एवं पारदर्शी नियुक्तियाँ:
  - संसदीय समिति (2021) ने 3 महीने के भीतर रिक्तियों को भरने की सिफारिश की, लेकिन देरी जारी है।
  - समाधान: स्वतंत्र भर्ती के लिए एक राष्ट्रीय न्यायाधिकरण आयोग।
- कार्यकारी हस्तक्षेप को कम करना:
  - सर्वोच्च न्यायालय (2022): न्यायाधिकरण नियुक्तियों में न्यायिक निगरानी की सिफारिश की गई।
  - समाधान: नौकरशाही नियंत्रण से मुक्त एक अलग न्यायाधिकरण कैडर।
- बुनियादी ढांचे में सुधार और डिजिटलीकरण:
  - सर्वोच्च न्यायालय की ई-कमेटी (2022): केवल 10% न्यायाधिकरणों में पूर्ण डिजिटल केस प्रबंधन है।
  - समाधान: ई-फाइलिंग, वर्चुअल सुनवाई और बेहतर आईटी प्रणाली लागू करें।
- स्पष्ट अपील संरचना:
  - सर्वोच्च न्यायालय (2023): न्यायाधिकरण से अदालत तक मुकदमेबाजी को कम करने के लिए एकीकृत अपीलीय न्यायाधिकरण की स्थापना का आग्रह किया गया।
  - समाधान: उच्च न्यायालय का बोझ कम करने के लिए एकल अपीलीय तंत्र।

भारत में न्यायाधिकरणों की स्थापना नियमित अदालतों पर बोझ कम करने और त्वरित और विशिष्ट न्याय प्रदान करने के लिए की गई थी। हालाँकि, रिक्तियों, कार्यकारी हस्तक्षेप, खराब बुनियादी ढाँचे और स्पष्ट अपील तंत्र की कमी के कारण, वे प्रभावी रूप से काम करने में विफल हो रहे हैं।



आईटी नियम 2021 में कंटेंट मॉडरेशन अनिवार्य किया गया है, लेकिन इससे अतिक्रमण का जोखिम भी है।

- ऑनलाइन गलत सूचना और घृणास्पद भाषण, मुक्त अभिव्यक्ति और नुकसान के बीच की रेखा को धुंधला कर देते हैं।

### आगे की राह:

- **कानूनी सुधार:**
  - दुरुपयोग (घृणास्पद भाषण, सार्वजनिक व्यवस्था) को रोकने के लिए सेंसरशिप कानूनों में परिभाषा को स्पष्ट करना।
  - वैध आलोचना की रक्षा के लिए राजद्रोह कानून जैसे पुराने कानूनों में सुधार करना।
- **पारदर्शी एवं जवाबदेह तंत्र:**
  - यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सीबीएफसी के निर्णय साक्ष्य-आधारित हों तथा सार्वजनिक जांच के लिए खुले हों।
  - सेंसरशिप विवादों की समीक्षा के लिए स्वतंत्र निरीक्षण निकायों की स्थापना करना।
- **मीडिया साक्षरता को बढ़ावा:**
  - दर्शकों को सिनेमाई हिंसा का आलोचनात्मक विश्लेषण करने और विषय-वस्तु को प्रासंगिक बनाने के लिए शिक्षित करना।
  - उदाहरण: कलात्मक अभिव्यक्ति और हानिकारक प्रचार के बीच अंतर करने के लिए सार्वजनिक अभियान।
- **विविध आवाजों का समर्थन:**
  - हाशिए पर पड़े फिल्म निर्माताओं को सेंसरशिप के डर के बिना अपनी कहानियां साझा करने के लिए मंच प्रदान करना।
  - स्वतंत्र सिनेमा को वित्तपोषित करना जो सामाजिक मुद्दों को जिम्मेदारी से संबोधित करता हो।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:**
  - मुक्त अभिव्यक्ति और हानि की रोकथाम के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए सर्वोत्तम वैश्विक प्रथाओं को अपनाना।

- सामग्री मॉडरेशन के लिए नैतिक AI उपकरण विकसित करने हेतु तकनीकी कंपनियों के साथ सहयोग करना।

### भारत में फिल्म सेंसरशिप और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर ऐतिहासिक निर्णय

- **के.ए. अब्बास बनाम भारत संघ (1970):** सर्वोच्च न्यायालय ने सिनेमैटोग्राफ अधिनियम, 1952 के तहत सार्वजनिक प्रदर्शन पर प्रतिबंधों को बरकरार रखा और अधिनियम की सेंसरशिप शक्तियों को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया।
- **रमेश बनाम भारत संघ (1988):** सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि आईपीसी के सामान्य प्रावधानों और सिनेमैटोग्राफ अधिनियम, 1952 के विशेष प्रावधानों के बीच संतुलन बनाए रखना होगा।

**एस. रंगराजन बनाम पी. जगजीवन राम (1989):** भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के अनुसार, सिनेमा सेंसरशिप के प्रश्न को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने बरकरार रखा था।

सिनेमा में हिंसा पर बहस सिर्फ मनोरंजन के बारे में नहीं है, बल्कि इस बारे में भी है कि मीडिया मन और समाज को किस प्रकार प्रभावित करता है।

यद्यपि अत्यधिक या हानिकारक सामग्री को विनियमित करने की वैध आवश्यकता है, लेकिन ऐसा भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार को कमजोर किए बिना किया जाना चाहिए।

आगे बढ़ते हुए, स्पष्ट कानून, पारदर्शी शासन, सार्वजनिक शिक्षा और रचनात्मक आवाजों के लिए समर्थन आवश्यक है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भारतीय सिनेमा जिम्मेदार और जीवंत बना रहे।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

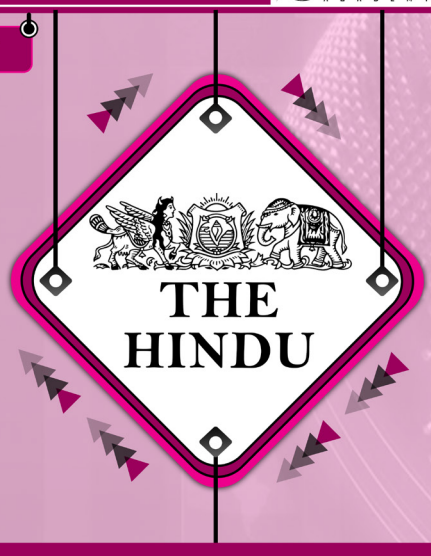
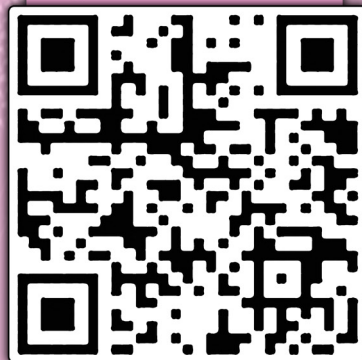
प्रश्न: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सेंसरशिप के बीच संतुलन बनाने में क्या चुनौतियाँ हैं? संतुलन हासिल करने में विभिन्न हितधारकों की भूमिका पर चर्चा करें। [150 शब्द] [10 अंक]

### चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल



'द हिंदू' का एडिटोरियल एनालिसिस

क्यू आर कोड स्कैन करें



### भारत-यूएई संबंध

**चर्चा में क्यों:** भारत-यूएई व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA) ने 18 फरवरी, 2022 को हस्ताक्षर किए जाने के बाद से तीन वर्ष पूरे कर लिए हैं - जो द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

### CEPA समझौते का प्रमुख विवरण:

CEPA समझौते पर 18 फरवरी 2022 को भारत के प्रधानमंत्री और यूएई के राष्ट्रपति के बीच एक वर्चुअल शिखर सम्मेलन के दौरान हस्ताक्षर किए गए थे - जिससे माल, सेवाओं, निवेश और रोजगार क्षेत्रों में आर्थिक संबंधों को मजबूती मिली।

### वस्तु क्षेत्र

#### 1. शुल्क समाप्ति:

- यूएई ने अपनी 97.4% टैरिफ लाइनों पर शुल्क समाप्त कर दिया, जो भारत से आयात का 99% कवर करता है।
- भारत ने अपनी 80% से अधिक टैरिफ लाइनों पर तत्काल शुल्क उन्मूलन हासिल किया, जो भारत के 90% निर्यात (मूल्य के संदर्भ में) का प्रतिनिधित्व करता है।

#### 2. श्रम-प्रधान क्षेत्रों पर फोकस:

यह शुल्क समाप्ति भारत के प्रमुख श्रम-प्रधान क्षेत्रों को लाभ पहुंचाती है, जिनमें शामिल हैं:

- तिलहन एवं खाद्य तेल
- पेय पदार्थ
- कपास
- मछली एवं मछली उत्पाद
- वस्त्र एवं परिधान
- रत्न एवं आभूषण
- चमड़ा एवं जूते
- औषधियाँ
- इंजीनियरिंग उत्पाद

### सेवा क्षेत्र:

- **विस्तृत प्रतिबद्धताएँ:** दोनों देशों ने कई क्षेत्रों और आपूर्ति के तरीकों में व्यापक और गहरी प्रतिबद्धताएँ लीं।
- **भारत का प्रस्ताव:** भारत ने 160 में से 100 सेवा उप-क्षेत्रों तक पहुँच की पेशकश की।
- **यूएई का प्रस्ताव:** यूएई ने 111 सेवा उप-क्षेत्रों की पेशकश की — जिससे भारतीय व्यवसायों के लिए बाजार तक पहुँच का विस्तार हुआ।

### भारत के लिए CEPA का महत्व:

#### 1. द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि:

- **व्यापार वृद्धि:** द्विपक्षीय वस्तु व्यापार लगभग दोगुना हो गया — वित्त वर्ष 2020-21 में \$43.3 बिलियन से बढ़कर वित्त वर्ष 2023-24 में \$83.7 बिलियन हो गया।

#### • वर्तमान वर्ष का प्रदर्शन:

जनवरी 2025 तक व्यापार \$80.5 बिलियन तक पहुँच गया — जो निरंतर गति को दर्शाता है।

#### 2. गैर-तेल व्यापार में वृद्धि:

##### • विविधता:

वित्त वर्ष 2023-24 में गैर-तेल व्यापार \$57.8 बिलियन तक पहुँच गया — जो कुल व्यापार का आधे से अधिक हिस्सा है।

##### • गैर-तेल निर्यात:

वित्त वर्ष 2023-24 में \$27.4 बिलियन तक पहुँचा — CEPA लागू होने के बाद औसतन 25.6% की वृद्धि दर दर्शाता है।

#### 3. निर्यात का विविधीकरण:

- **क्षेत्रीय वृद्धि:** पारंपरिक निर्यात जैसे परिष्कृत कच्चा तेल उत्पाद और रत्न एवं आभूषण के अतिरिक्त, नए क्षेत्रों ने गति पकड़ी:

- विद्युत मशीनरी और उपकरण
- हल्के और मध्यम उच्च-प्रौद्योगिकी उत्पाद (जैसे बॉयलर, जनरेटर, रिएक्टर)
- जैविक और अजैविक रसायन

##### • उत्पाद-स्तर पर सफलता:

स्मार्टफोन एक प्रमुख निर्यात वस्तु के रूप में उभरे — जो भारत की तकनीकी निर्माण क्षमता को दर्शाता है।

#### 4. सहायक पहल: भारत मार्ट

- भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दुबई में उद्घाटित भारत मार्ट वैश्विक स्तर पर भारतीय निर्माताओं के लिए एक ही स्थान पर उत्पाद प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है।
- **उद्देश्य:** MSMEs को सशक्त बनाना, निर्यात को बढ़ावा देना और वैश्विक बाजारों में नए व्यापार अवसर उत्पन्न करना।

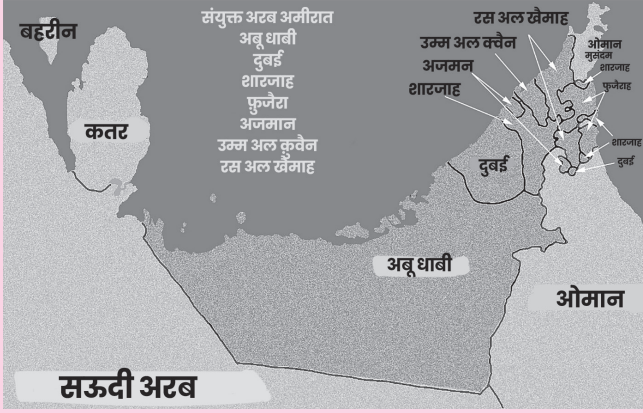
### निष्कर्ष:

भारत-यूएई CEPA ने आर्थिक साझेदारी के एक नए युग की नींव रखी है, जिससे:

- MSMEs को सशक्तिकरण
- रोजगार सृजन
- व्यापार के विविध अवसर
- मजबूत कूटनीतिक एवं आर्थिक संबंध

आगे चलकर, भारत और यूएई इस सहयोग को और गहरा कर सकते हैं — CEPA का लाभ उठाते हुए नई आर्थिक ऊँचाइयों तक पहुँचने और रणनीतिक सहभागिता को व्यापक बनाने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

### संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बारे में



#### राजनीतिक संरचना:

- यूएई सात अमीरातों का एक महासंघ है, जिसकी राजधानी अबू धाबी है।
- अबू धाबी अपनी तेल संपदा के लिए प्रसिद्ध है, जबकि दुबई व्यापार, वित्त और पर्यटन के लिए एक अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में

#### भौगोलिक अवस्थिति:

- सीमाएँ:
  - ओमान (पूर्व और उत्तर-पश्चिम)
  - सऊदी अरब (दक्षिण-पश्चिम)
  - समुद्री सीमाएँ: कतर, ईरान, ओमान (ओमान की खाड़ी और फारस की खाड़ी)

#### जनसांख्यिकी:

- जनसंख्या (2024): 1 करोड़ से अधिक, जिनमें केवल 11% अमीराती नागरिक हैं।
- दुबई — जो सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर है — वैश्विक व्यापार का केंद्र है।

#### भाषा और संस्कृति:

- इस्लाम आधिकारिक धर्म है।
- अरबी आधिकारिक भाषा है, लेकिन अंग्रेज़ी व्यापक रूप से बोली जाती है — विशेषकर व्यापार और पर्यटन क्षेत्रों में।

#### अर्थव्यवस्था:

- तेल और गैस भंडार:

- विश्व में 6वाँ सबसे बड़ा तेल भंडार।
- विश्व में 7वाँ सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भंडार।

हालाँकि, यूएई सक्रिय रूप से अपनी अर्थव्यवस्था में विविधता ला रहा है — जिसमें नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यटन, प्रौद्योगिकी और वित्त पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

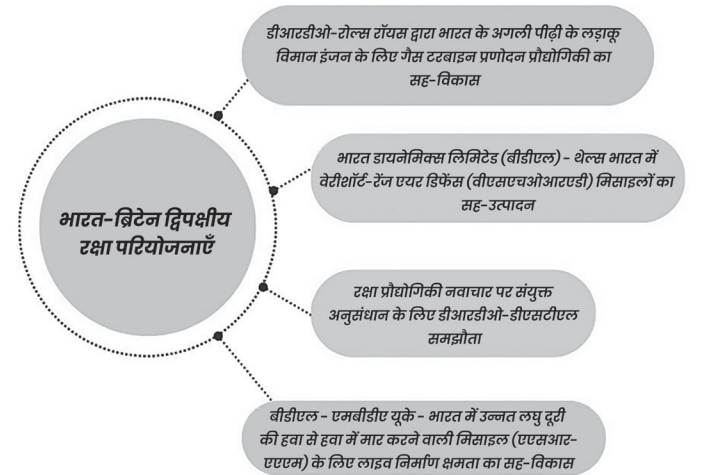
### भारत-यूके संबंध

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपने छह दिवसीय आधिकारिक यूके और आयरलैंड दौरे के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर से मुलाकात की। इस दौरे का उद्देश्य द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देना था, जिसमें व्यापार, प्रौद्योगिकी, गतिशीलता और यूक्रेन संघर्ष जैसे अंतरराष्ट्रीय मुद्दे शामिल थे।

#### भारत-यूके संबंधों का अवलोकन:

- भारत और यूके के बीच संबंध जटिल और सदियों पुराने हैं, जो उपनिवेशवादी इतिहास में निहित हैं।
- दशकों तक आपसी रुचि के बावजूद, इन संबंधों में अपेक्षित गहराई नहीं आई, विशेषकर भारत-अमेरिका या भारत-फ्रांस संबंधों की तुलना में।
- ब्रेजिट (Brexit) के बाद, यूके ने अपने वैश्विक साझेदारी विकल्पों में विविधता लाने को प्राथमिकता दी, जिससे भारत पर नया ध्यान केंद्रित हुआ।
- ब्रिटेन में हालिया राजनीतिक अस्थिरता के बावजूद, द्विपक्षीय संबंध लगातार सुधरे हैं, जो मज़बूत कूटनीतिक और आर्थिक सहयोग से परिलक्षित होता है।

#### सहयोग के प्रमुख क्षेत्र:



#### व्यापार और निवेश:

- द्विपक्षीय व्यापार (2023-24 के अनुसार) 42 बिलियन पाउंड स्टर्लिंग था, जिसमें भारत के पक्ष में व्यापार अधिशेष रहा (यूके का भारत के साथ व्यापार घाटा: 8.3 बिलियन पाउंड)।
- भारत, यूके का 11वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जबकि यूके भारत का 14वाँ।
- एक मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के लिए वार्ता जारी है, जो ब्रेजिट के बाद यूके की आर्थिक विविधता रणनीति का एक प्रमुख हिस्सा है।

- यूके में भारतीय निवेश 95,000 से अधिक नौकरियों का समर्थन करता है, वहीं यूके की कंपनियाँ भारत के सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में मज़बूती से मौजूद हैं।

**सुरक्षा और रक्षा सहयोग:**

- दोनों देशों के हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक हित समान हैं, और वे बढ़ते चीनी प्रभाव का संतुलन स्थापित करना चाहते हैं।

- रक्षा सहयोग में शामिल हैं:
  - संयुक्त सैन्य अभ्यास और हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री अंतरसंचालनीयता (maritime interoperability)।
  - आतंकवाद निरोध, आपदा राहत और समुद्री सुरक्षा में सहयोग
  - यूके गुरुराम में भारतीय नौसेना के IFC-IOR (सूचना संलयन केंद्र - हिंद महासागर क्षेत्र) में शामिल हुआ, जिससे क्षेत्रीय समुद्री जागरूकता बढ़ी।

## संयुक्त सैन्य अभ्यास

### अभ्यास "अजेय वॉरियर"

भारतीय और ब्रिटिश सशस्त्र बलों के बीच संयुक्त द्विवाषिक अभ्यास

### अभ्यास "कोबरा वॉरियर"

भारतीय वायुसेना 2023 में ब्रिटेन में बहुराष्ट्रीय अभ्यास में भाग लिया

### अभ्यास कोंकण

दोनों नौसेनाओं के बीच वार्षिक द्विपक्षीय अभ्यास आयोजित किया गया

### रॉयल नेवी जहाज

एचएमएस लैंकेस्टर और एचएमएस तमर का 2023 में कोच्ची और चेन्नई का दौरा

### भारतीय जहाज

आईएनएसएस तरंगनी ने लोयायन 2022 तैनाती के हिस्से के रूप में यूके और जिब्राल्टर का दौरा किया

### नौसैनिक समूह

ब्रिटेन ने 2024 में आईओआर में लिटोरल रिस्पॉंस ग्रुप तैनात किया, कैरियर स्ट्राइक ग्रुप 2025 में भारतीय नौसेना के साथ प्रशिक्षण लेगा

2022 में, यूके ने भारत को अपना पहला ओपन जनरल एक्सपोर्ट लाइसेंस (OGEL) जारी किया, जिससे सैन्य और दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकियों का तेज़ी से हस्तांतरण संभव हो सकेगा।

**प्रवासी और सांस्कृतिक संबंध:**

- यूके में 1.6 मिलियन से अधिक भारतीय मूल के लोग रहते हैं, जो वहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग 2.5% हैं और ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में 6% से अधिक का योगदान करते हैं।
- यह सक्रिय और जीवंत प्रवासी समुदाय दोनों देशों के बीच एक सांस्कृतिक और आर्थिक सेतु का कार्य करता है।
- भारत और यूके के बीच मज़बूत शैक्षिक संबंध हैं — भारतीय छात्र यूके विश्वविद्यालयों में चीनी छात्रों के बाद दूसरा सबसे बड़ा समूह बनाते हैं।

**भारत-यूके मुक्त व्यापार समझौते से जुड़े विवादास्पद मुद्दे**

**1. ब्रिटेन के साथ एफटीए के संबंध में भारत के मुद्दे:**

- भारत की प्रमुख माँगों में आईटी, स्वास्थ्य सेवा और अन्य क्षेत्रों के कुशल पेशेवरों के लिए अधिक गतिशीलता और उदार वीज़ा नीति शामिल है। इसके अतिरिक्त, भारत चाहता है कि यूके में पढ़ाई करने के इच्छुक भारतीय छात्रों के लिए भी वीज़ा व्यवस्था सरल हो।

**2. भारत के साथ एफटीए के संबंध में ब्रिटेन के मुद्दे:**

- यूके चाहता है कि भारत उसके ऑटोमोबाइल और शराब (विशेष रूप से स्कॉच व्हिस्की) निर्यात पर लगने वाले उच्च शुल्कों को कम करे। वर्तमान में भारत इन क्षेत्रों में 100-150 प्रतिशत तक शुल्क लगाता है क्योंकि उसे स्थानीय उद्योग पर विदेशी प्रतिस्पर्धा का खतरा है।

यूके अपनी सेवा क्षेत्र (जो उसकी अर्थव्यवस्था का लगभग 80% हिस्सा है) के लिए भारत में अधिक पहुँच चाहता है। वहीं भारत अपनी सेवा क्षेत्र (जो उसके सकल घरेलू उत्पाद का 50% से अधिक योगदान करता है) को विदेशी प्रतिस्पर्धा के डर से खोलने के प्रति संकोच कर रहा है।

### आगे की राह:

- भारत-यूके साझेदारी एक आशाजनक मोड़ पर है, जहाँ दोनों देशों के मूल्यों और हितों में महत्वपूर्ण समानताएँ देखने को मिलती हैं।
- वर्ष 2025, भारत-यूके रोडमैप 2030 की मध्यावधि समीक्षा (midpoint review) के रूप में, प्रगति का मूल्यांकन करने और लक्ष्यों को पुनः निर्धारित करने का एक अवसर प्रदान करता है।
- **भविष्य के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम इस प्रकार हैं:**
  - एफटीए (FTA) को समयबद्ध तरीके से पूर्ण करना।
  - हिंद-प्रशांत ढाँचे के तहत रणनीतिक साझेदारी को जारी रखना।
  - प्रवासी समुदाय से जुड़ी संवेदनशीलताओं और ऐतिहासिक मुद्दों का संतुलित प्रबंधन।
  - प्रौद्योगिकी, शिक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, और जलवायु लचीलापन जैसे क्षेत्रों में सहयोग को विस्तार देना।

दो प्रमुख लोकतंत्रों के रूप में, वैश्विक स्तर पर नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाले भारत और यूके के पास भविष्योन्मुखी साझेदारी को आकार देने की असीम संभावनाएँ हैं।

चाहे वह हिंद-प्रशांतक्षेत्र में समुद्री मार्गों की सुरक्षा हो, नवाचार को प्रोत्साहन देना हो, या निष्पक्ष व्यापार को सशक्त बनाना हो — दोनों देशों का सहयोग वैश्विक स्थिरता और समृद्धि का आधार बनने की दिशा में अग्रसर है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. प्रस्तावित भारत-यू.के. मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) किस प्रकार दोनों देशों के बीच विवाद के प्रमुख क्षेत्रों को संबोधित करते हुए द्विपक्षीय संबंधों की पूर्ण क्षमता को अनलॉक करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है? [10 अंक] [150 शब्द]

### भारत की अफ्रीका नीति

**चर्चा में क्यों:** भारत के विदेश मंत्री ने हाल ही में इस बात पर जोर दिया कि अफ्रीका के प्रति देश का दृष्टिकोण पारस्परिक रूप से लाभकारी साझेदारी के निर्माण पर केंद्रित है, न कि जुड़ाव के "निष्कर्षण" मॉडल पर, उन्होंने महाद्वीप पर चीन के बढ़ते प्रभाव के बीच इस अंतर को उजागर किया।

#### मुख्य विवरण:

- जापान-भारत-अफ्रीका व्यापार मंच में विदेश मंत्री ने कहा कि भारत की अफ्रीका के साथ सहभागिता दीर्घकालिक सहयोग पर आधारित है।
- संसाधन निष्कर्षण पर केंद्रित दृष्टिकोणों के विपरीत, भारत क्षमता निर्माण, कौशल विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को प्राथमिकता देता है। यह सुनिश्चित करता है कि अफ्रीकी देशों को केवल निवेश ही नहीं मिलता, बल्कि वे आत्मनिर्भर आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र भी विकसित करते हैं।
- भारत अफ्रीका का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, और द्विपक्षीय व्यापार \$100 बिलियन के करीब पहुंच चुका है और लगातार बढ़ रहा है।

- इसके अतिरिक्त, भारत ने अफ्रीका में 200 से अधिक बुनियादी ढांचे परियोजनाओं का समर्थन करते हुए 12 बिलियन डॉलर से अधिक की रियायती क्रेडिट की प्रतिबद्धता जताई है। ये पहलकदमी रेलवे, बिजली उत्पादन, कृषि और जल आपूर्ति जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में फैली हुई हैं।

### भारत: जापान और अफ्रीका के बीच एक सेतु के रूप में

- **भारत का भू-स्थानिक लाभ:** चूंकि भारत जापान और अफ्रीका के बीच स्थित है, इसलिए यह व्यापार और औद्योगिक गतिविधियों के लिए एक भौतिक और आर्थिक सेतु की भूमिका निभा सकता है।
- **भारत की औद्योगिक शक्ति:** भारत की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था, मज़बूत विनिर्माण आधार और डिजिटल विशेषज्ञता इसे एक विश्वसनीय साझेदार बनाती है।
- **जापान का निवेश:** जापान के पास पूंजी और प्रौद्योगिकी है, लेकिन अफ्रीका में उसकी सीधी उपस्थिति नहीं है। भारत के साथ सहयोग करके जापानी कंपनियाँ अफ्रीकी और पश्चिम एशियाई बाजारों तक अपनी पहुँच को अधिक आसानी से बढ़ा सकती हैं।
- **अफ्रीका की भूमिका:** अफ्रीका प्रतिभा (कुशल कार्यबल) और माँग (विस्तारित होता उपभोक्ता बाजार) प्रदान करता है।

भारत, जापान और अफ्रीका के लिए एक लिपक्षीय लाभकारी साझेदारी — जहाँ भारत औद्योगिक विकास और आपूर्ति शृंखलाओं को सुगम बनाने में सहायता करता है। भारत और जापान का लक्ष्य है कि वे अफ्रीका में मज़बूत आपूर्ति शृंखलाएँ बनाएँ — विशेषकर निर्माण, ऊर्जा और डिजिटल प्रौद्योगिकी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में।

### भारत-अफ्रीका संबंधों का विकास

#### प्रारंभिक संबंध:

- **ऐतिहासिक संबंध:** भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अफ्रीका को प्रसिद्ध रूप से भारत का "सिस्टर कॉन्टिनेंट" कहा था, जिससे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से गहरे संबंधों की मान्यता मिलती है।
- **उच्च-स्तरीय सहभागिता:** 1960 के दशक से भारतीय प्रधानमंत्रियों ने अफ्रीका की 76 बार यात्राएँ की हैं — यह सहभागिता का ऐसा स्तर है जिसे बहुत-से अन्य वैश्विक शक्तियाँ नहीं प्राप्त कर सकीं।
- **औपनिवेशिक संघर्ष:** अफ्रीका के स्वतंत्रता आंदोलनों के दौरान, भारत ने अफ्रीकी देशों को मज़बूत राजनयिक और नैतिक समर्थन प्रदान किया, जिससे राजनीतिक संबंध और सुदृढ़ हुए।
- **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM):** शीत युद्ध के चरम काल में, कई अफ्रीकी देशों ने भारत के साथ गुटनिरपेक्ष आंदोलन में साझेदारी की — जिसकी सह-स्थापना भारत, मिस्र, घाना, इंडोनेशिया और यूगोस्लाविया ने की थी — यह आंदोलन अमेरिका और सोवियत संघ, दोनों गुटों से स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करता था।

#### उपनिवेशवाद और गुटनिरपेक्षता के दौरान सहयोग:

- भारत नवस्वतंत्र अफ्रीकी राष्ट्रों के लिए प्रेरणा का एक केंद्र बन गया, और उपनिवेशवाद के युग में उन्हें राजनीतिक तथा वैचारिक मार्गदर्शन प्रदान किया।
- भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अफ्रीका के हितों की पुरज़ोर वकालत की, आर्थिक संप्रभुता और राजनीतिक स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए।

**पैन अफ्रीका ई-नेटवर्क:**

- वर्ष 2006 में, भारत ने अपनी प्रमुख सहायता पहल — पैन-अफ्रीकी ई-नेटवर्क — का शुभारंभ किया। यह एक 125 मिलियन डॉलर की परियोजना थी, जिसके अंतर्गत 47 अफ्रीकी देशों में उपग्रह और फाइबर-ऑप्टिक कनेक्टिविटी के माध्यम से टेली-शिक्षा और टेली-मेडिसिन सेवाएँ प्रदान की गईं।
- इस पहल ने स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में अंतर को पाटने में सहायता की, जिससे अफ्रीकी छात्रों को भारतीय विश्वविद्यालयों तक और अफ्रीकी मरीजों को भारतीय डॉक्टरों तक पहुँच प्राप्त हुई।

**भारत के लिए अफ्रीका का महत्व**

**रणनीतिक महत्व:**

- **अफ्रीकी संघ (AU)** — एक 55-सदस्यीय महाद्वीपीय संगठन — को सितंबर 2023 में नई दिल्ली शिखर सम्मेलन के दौरान G-20 की पूर्ण सदस्यता प्राप्त हुई, जो अफ्रीका के बढ़ते वैश्विक प्रभाव को दर्शाता है।
- **भारत-अफ्रीका कॉन्क्लेव 2023:** जून 2023 में, अफ्रीकी और भारतीय नेता 18वें भारत-अफ्रीका कॉन्क्लेव के लिए एकत्रित हुए, जिसका आयोजन EXIM बैंक तथा भारत के विदेश और वाणिज्य मंत्रालयों द्वारा किया गया। इसमें व्यापार, निवेश और विकास साझेदारियों पर चर्चा की गई।
- **भारत की प्रेक्षक स्थिति:** भारत को अफ्रीका की प्रमुख आर्थिक समुदायों — पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के लिए सामान्य बाज़ार (COMESA), दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय (SADC), तथा पश्चिम अफ्रीकी राज्यों का आर्थिक समुदाय (ECOWAS) — में प्रेक्षक का दर्जा प्राप्त है, जिससे उसे क्षेत्रीय व्यापार और कूटनीति में प्रभाव मिलता है।

**व्यापार और आर्थिक साझेदारी:**

- भारत-अफ्रीका व्यापार 2011-12 के \$68.5 बिलियन से बढ़कर 2022-23 में \$90.5 बिलियन तक पहुँच गया है।
- भारतीय निवेश अफ्रीका में खनन, दूरसंचार, दवा, कृषि, ऑटोमोबाइल, और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में निरंतर विस्तार कर रहे हैं।

**सांस्कृतिक और जन-सामान्य के बीच संबंध:**

- **भारतीय प्रवासी समुदाय** — जो 46 अफ्रीकी देशों में फैला हुआ है — भारत और अफ्रीका के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की एक महत्वपूर्ण कड़ी बना हुआ है।
- भारतीय समुदाय व्यापार, शिक्षा, और प्रशासन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं, जिससे भारत और अफ्रीका के बीच जन-सामान्य स्तर पर संबंध और सुदृढ़ हो रहे हैं।

**भारत-अफ्रीका संबंधों में चुनौतियाँ**

**प्रमुख शक्तियों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा:**

- अमेरिका, यूरोपीय संघ (EU) और अन्य देश आतंकवाद, प्रवासन, स्वास्थ्य संकट, और संसाधन सुरक्षा जैसी चिंताओं के कारण अफ्रीका में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहे हैं।
- इस प्रतिस्पर्धा के बीच भारत को अपनी रणनीति में विविधता लाकर अलग पहचान बनानी होगी।

**चीन का बढ़ता प्रभाव:**

- चीन की “हर मौसम में मित्र” रणनीति के तहत अफ्रीका में बढ़े पैमाने पर निवेश, बुनियादी ढाँचे की परियोजनाएँ, और आर्थिक सहायता शामिल हैं, जिससे वह अफ्रीकी बाज़ारों में एक प्रभावशाली खिलाड़ी बन गया है।
- 2022-23 में चीन-अफ्रीका व्यापार \$262 बिलियन तक पहुँच गया, जो भारत के वर्तमान आँकड़ों की तुलना में कहीं अधिक है।

- हालाँकि, चीनी परियोजनाओं की बढ़ती आलोचना हो रही है — संसाधनों के दोहन, ऋण जाल, और सामाजिक तनावों को लेकर — जो भारत के लिए एक सीख है जिससे उसे बचना चाहिए।

**राजनीतिक अस्थिरता और शासन से जुड़ी समस्याएँ:**

- कई अफ्रीकी देश आंतरिक संघर्ष, कमज़ोर शासन व्यवस्था, दुर्बल क़ानून प्रवर्तन, और भ्रष्टाचार जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं — जिससे व्यापारिक गतिविधियों और राजनयिक स्थिरता में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।
- भारत को इन क्षेत्रों में शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए राजनयिक प्रयासों और क्षमता निर्माण के बीच संतुलन बनाना होगा।

**आगे की राह**

**दीर्घकालिक, संधारणीय साझेदारियाँ:**

- भारत को प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी सहायता, और व्यापार — इस त्रिकोणीय रणनीति पर बल देना चाहिए, ताकि अफ्रीका की मानव संसाधन क्षमता और औद्योगिक आधार को सशक्त बनाया जा सके।

**अफ्रीका की विविधता को पहचानना:**

- अफ्रीका कोई एक इकाई नहीं है — यह 54 देशों वाला एक महाद्वीप है, जिनकी अपनी-अपनी संस्कृतियाँ, भाषाएँ, अर्थव्यवस्थाएँ, और राजनीतिक परिदृश्य हैं।
- भारत को प्रत्येक देश की विशिष्ट आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप अपनी रणनीति को ढालना होगा।

**चीन के संसाधन-उपयोग आधारित मॉडल से बचाव:**

- चीन की शोषणकारी रणनीति ने कई अफ्रीकी देशों में असंतोष को जन्म दिया है।
- भारत को संधारणीय विकास, स्थानीय रोज़गार सृजन और क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, ताकि वह स्वयं को एक नैतिक और विश्वसनीय साझेदार के रूप में प्रस्तुत कर सके।

**अफ्रीका के विकास में एक हितधारक के रूप में भूमिका निभाना:**

- अफ्रीकी नेता केवल सहायता नहीं चाहते — वे चाहते हैं कि भारत उनके दीर्घकालिक विकास में निवेश करे।
- भारत को बुनियादी ढाँचे, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, और कृषि नवाचारों के सह-निर्माण में सक्रियता से भाग लेना चाहिए — ताकि अफ्रीका को भीतर से सशक्त किया जा सके।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. उत्तर-औपनिवेशिक काल से संबंधों की प्रगति के आलोक में भारत-अफ्रीका संबंधों के महत्व की व्याख्या कीजिए तथा अफ्रीका में भारत के लिए चुनौतियों पर प्रकाश डालिए। [250 शब्द, 15 अंक]

**भारत - न्यूज़ीलैंड संबंध**

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में न्यूज़ीलैंड के प्रधानमंत्री, माननीय क्रिस्टोफर लक्सर (Rt Hon Christopher Luxon) ने भारत की आधिकारिक यात्रा की। यह यात्रा दोनों देशों के बीच बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई, जहाँ दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को और अधिक गहरा करने की प्रतिबद्धता दोहराई।

## याता के प्रमुख निष्कर्ष

### राजनीतिक और रणनीतिक सहभागिता

#### द्विपक्षीय संवाद:

- ◆ भारत-न्यूज़ीलैंड संबंधों को साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और लोगों से लोगों के बीच संबंधों पर आधारित मजबूत करने की प्रतिबद्धता को दोहराया गया।
- ◆ रक्षा, सुरक्षा, व्यापार, शिक्षा, कृषि-प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष और गतिशीलता जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी।

#### हिंद-प्रशांत सहयोग:

- ◆ मुक्त, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति समर्थन पर बल दिया गया, जिसमें UNCLOS (संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि) के सिद्धांतों को बनाए रखने की बात कही गई।
- ◆ न्यूज़ीलैंड ने भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) में शामिल होने में रुचि व्यक्त की।

- बहुपक्षीय सहयोग: न्यूज़ीलैंड ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन किया और बहुपक्षीय मंचों में पारस्परिक समर्थन की संभावनाओं को तलाशने पर सहमति जताई।

#### व्यापार, निवेश और आर्थिक सहयोग

##### मुक्त व्यापार समझौता (FTA) वार्ताएँ:

- ◆ आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने और पारस्परिक चिंताओं को दूर करने के उद्देश्य से एक व्यापक और संतुलित व्यापार समझौते के लिए वार्ताओं की शुरुआत की गई।
- ◆ FTA वार्ताओं के साथ-साथ डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में प्रारंभिक सहयोग की संभावनाओं का अन्वेषण करने पर सहमति बनी।

##### क्षेत्रीय समझौते:

- ◆ विश्वसनीय व्यापारियों के लिए वस्तुओं की आवाजाही को आसान बनाने हेतु “अधिकृत आर्थिक ऑपरेटर पारस्परिक मान्यता व्यवस्था (AEO-MRA)” पर हस्ताक्षर किए गए।
- ◆ बागवानी पर सहयोग ज्ञापन (Memorandum of Cooperation) और वन क्षेत्र पर आशय पत्र (Letter of Intent) पर हस्ताक्षर किए गए, जिनका उद्देश्य अनुसंधान, बुनियादी ढांचे और नीति संवादों को बढ़ावा देना है।

- ◆ पर्यटन और संपर्क: भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच प्रत्यक्ष उड़ानों को प्रोत्साहित करने हेतु एयर सर्विसेज़ एग्रीमेंट को अद्यतन किया गया।

### रक्षा और सुरक्षा

- भारत-न्यूज़ीलैंड रक्षा सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए ताकि नियमित सहभागिता, संयुक्त सैन्य अभ्यास, और नौसेना बंदरगाह यात्राओं को सक्षम बनाया जा सके।
- न्यूज़ीलैंड ने संयुक्त समुद्री बलों (Combined Maritime Forces) में भारत के प्रवेश का स्वागत किया; समुद्री सुरक्षा सहयोग पर चर्चा की गई।

### विज्ञान, प्रौद्योगिकी और जलवायु कार्रवाई

#### जलवायु लचीलापन:

- न्यूज़ीलैंड आपदा लचीला बुनियादी ढांचा गठबंधन (CDRI) में शामिल हुआ।
- ◆ न्यूज़ीलैंड ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) में भारत के नेतृत्व का स्वागत किया।

- भूकंप न्यूनीकरण: भूकंप की तैयारी पर सहयोग के ज्ञापन (Memorandum of Cooperation) पर सहमति बनी, जिसमें आपातकालीन प्रतिक्रिया और क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया।

### क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दे

- मध्य पूर्व में शांति: इज़राइल-फिलिस्तीन के लिए दो-राज्य समाधान का समर्थन किया और 2025 संघर्षविराम समझौते का स्वागत किया।
- यूक्रेन संघर्ष: क्षेत्रीय अखंडता और संयुक्त राष्ट्र चार्टर का सम्मान करते हुए शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन किया।
- परमाणु अप्रसार: न्यूज़ीलैंड ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) में भारत की सदस्यता की दावेदारी को मान्यता दी।

### आर्थिक और व्यापारिक संबंध

#### व्यापार:

- ◆ वर्ष 2023-24 में कुल व्यापार: \$1.75 बिलियन (भारत का आयात - \$840 मिलियन; भारत का निर्यात - \$910 मिलियन)
- ◆ भारत का न्यूज़ीलैंड से आयात: ऊन, लोहा और इस्पात, फल, मेवे, एल्यूमिनियम।
- ◆ भारत का न्यूज़ीलैंड को निर्यात: औषधियाँ, मशीनरी, वस्त्र, कीमती रत्न।
- महत्वपूर्ण समझौते और संवाद:
  - ◆ संयुक्त व्यापार समिति: नवीनतम बैठक (अप्रैल 2024) में कृषि, औषधियाँ और बाज़ार पहुँच पर चर्चा की गई।
  - ◆ सीमा शुल्क सहयोग व्यवस्था: व्यापार को बढ़ावा देने और अंतरराष्ट्रीय अपराध से निपटने के लिए अगस्त 2024 में हस्ताक्षर किए गए।

### शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी

- विद्यार्थी गतिशीलता: लगभग 8,000 भारतीय छात्र न्यूज़ीलैंड में अध्ययनरत (दूसरी सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय संख्या), आईटी, इंजीनियरिंग, हॉस्पिटैलिटी में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
- सहयोगी पहलें:
  - ◆ आईआईटी दिल्ली में न्यूज़ीलैंड केंद्र: कैसर, साइबर सुरक्षा, रोबोटिक्स पर संयुक्त शोध (2020)।
  - ◆ शिक्षा सहयोग: गिफ्ट सिटी और आईआईएम अहमदाबाद के साथ समझौता ज्ञापन (MoUs)।
- प्रौद्योगिकी साझेदारी: न्यूज़ीलैंड की कंपनी Rakon ने भारत के चंद्रयान-3 मिशन हेतु पुर्जे प्रदान किए।

### सांस्कृतिक और जन-जन के बीच संबंध

#### प्रवासी समुदाय:

- ◆ न्यूज़ीलैंड में भारतीय मूल के 2,92,092 लोग, जिनमें 70,000 भारतीय पासपोर्ट धारक हैं।
- ◆ सितंबर 2024 में ऑकलैंड में नया भारतीय वाणिज्य दूतावास खोला गया।

#### सांस्कृतिक उत्सव:

- ◆ दीवाली, होली, बैसाखी एवं अन्य क्षेत्रीय त्योहार न्यूज़ीलैंड में बड़े स्तर पर मनाए जाते हैं।
- ◆ कथक, भरतनाट्यम जैसे भारतीय नृत्य और भारतीय भाषाओं के विद्यालय न्यूज़ीलैंड भर में मौजूद हैं।
- खेल संबंध: क्रिकेट, हॉकी, पर्वतारोहण में सहयोग (सर एडमंड हिलेरी ने भारत में न्यूज़ीलैंड के उच्चायुक्त के रूप में 1985-88 में सेवा दी थी)।

भारत और न्यूजीलैंड लोकतांत्रिक मूल्यों, सांस्कृतिक संबंधों और पूरक आर्थिक हितों से जुड़े स्वाभाविक साझेदार हैं। प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन की हालिया यात्रा ने संबंधों को रणनीतिक उन्नयन प्रदान किया है, जिसमें रक्षा सहयोग, जलवायु लचीलापन, व्यापार उदारीकरण, शिक्षा और प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान दिया गया है। निरंतर राजनयिक संवाद और गहरे जन-सामान्य संबंधों के साथ, भारत-न्यूजीलैंड संबंध हिंद-प्रशांतक्षेत्र और उससे आगे एक मजबूत और अधिक गतिशील भविष्य की ओर अग्रसर हैं।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री की हाल की भारत की आधिकारिक यात्रा ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को कैसे मजबूत किया है? यात्रा के प्रमुख परिणामों का मूल्यांकन करें। [150 शब्द] [10 अंक]

### भारत-मॉरीशस संबंध

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, भारत के प्रधानमंत्री ने मॉरीशस के राष्ट्रीय दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस का दौरा किया, जिससे दोनों देशों के ऐतिहासिक और रणनीतिक संबंधों की पुष्टि हुई। यह यात्रा द्विपक्षीय सहयोग के एक नए चरण की शुरुआत थी, जिसमें कई प्रमुख घोषणाएँ और समझौते किए गए।

#### यात्रा के मुख्य परिणाम

##### उन्नत रणनीतिक साझेदारी का स्थापना:

- भारत और मॉरीशस ने अपने संबंधों को उन्नत रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित किया, जिसका केंद्र क्षेत्रीय सुरक्षा, विकास सहयोग और स्थानीय मुद्दाओं में व्यापार पर था।
- दोनों देशों ने एक मुक्त, खुले और सुरक्षित भारतीय महासागर क्षेत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की, जो भारत के SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) सिद्धांत के अनुरूप है।

##### MAHASAGAR दृष्टिकोण की शुरुआत:

- भारत ने MAHASAGAR पहल (Mutual and Holistic Advancement for Security and Growth Across Regions) की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य था:
  - वैश्विक दक्षिण के साथ भारत की भागीदारी को गहरा करना।
  - प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, क्षमता निर्माण, रियायती ऋण और पारस्परिक सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देना।
- यह पहल SAGAR ढांचे पर आधारित है, जो भारतीय महासागर क्षेत्र और उससे परे सामूहिक प्रगति पर जोर देती है।

##### सुरक्षा और समुद्री सहयोग:

- भारत और मॉरीशस ने सहमति व्यक्त की कि:
  - अगले दशक द्वीप पर नई रनवे और पोर्ट सुविधाओं का उपयोग बढ़ाया जाएगा, जिसे भारतीय सहायता से बनाया गया है।
  - समुद्री सूचना साझा करने के लिए एक क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किया जाएगा, जिससे समुद्री डोमेन जागरूकता को मजबूत किया जाएगा और समुद्री लुटेरों का मुकाबला किया जाएगा।
  - भारतीय नौसेना और मॉरीशस के बीच एक तकनीकी समझौता किया जाएगा, ताकि सफेद शिपिंग जानकारी (गैर-सैन्य वाणिज्यिक शिपिंग डेटा) साझा की जा सके।

- भारत ने मॉरीशस की चागोस द्वीपसमूह पर संप्रभुता को स्वीकार किया, जो भारत की उपनिवेशमुक्ति और अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

##### विकास सहायता और क्षमता निर्माण:

- भारत ने मॉरीशस को पहली बार भारतीय रुपए में दी गई लाइन ऑफ क्रेडिट प्रदान की, ताकि मॉरीशस की जल पाइपलाइन अवसंरचना को फिर से बनाने में सहायता मिल सके।
- भारत निम्नलिखित में भी सहायता करेगा:
  - मॉरीशस में राष्ट्रीय पुलिस अकादमी की स्थापना।
  - भारतीय निधि से स्वास्थ्य और सामुदायिक अवसंरचना परियोजनाओं का विकास।
- यात्रा के दौरान प्रमुख उद्घाटन हुए:
  - अटल बिहारी वाजपेयी सार्वजनिक सेवा और नवाचार संस्थान।
  - एक नई स्वास्थ्य सुविधा।
  - 20 सामुदायिक विकास परियोजनाएँ, जो भारत द्वारा वित्तपोषित हैं।

##### अवसंरचना और प्रतीकात्मक परियोजनाएँ:

- भारत मॉरीशस के लिए एक नया संसद भवन बनाएगा, जिसे «लोकतंत्र की जननी» से एक उपहार के रूप में वर्णित किया गया है—यह भारत की सौम्य शक्ति कूटनीति और सभ्यता संबंध को दर्शाता है।

##### वित्तीय और व्यापार सहयोग:

- भारतीय रिज़र्व बैंक और बैंक ऑफ मॉरीशस के बीच ढांचा समझौता:
  - यह सीमा पार व्यापार और स्थानीय मुद्राओं (भारतीय रुपया और मॉरीशियाई रुपया) में भुगतान की सुविधा प्रदान करता है।
  - तीसरे देशों की मुद्राओं पर निर्भरता को घटाता है और वित्तीय संप्रभुता को बढ़ाता है।
- क्रेडिट सुविधा समझौता:
  - मॉरीशस सरकार और भारतीय स्टेट बैंक के बीच हस्ताक्षरित, यह विकास वित्त को सक्षम बनाता है।
- एमएसएमई (MSME) सहयोग:
  - सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालयों के बीच समझौता पत्र (MoU) हस्ताक्षरित किया गया, जो प्रशिक्षण, इनक्यूबेशन और नीति विनिमय के माध्यम से छोटे व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करता है।

##### भारत-मॉरीशस संबंध:

- लगभग 70% 1.2 मिलियन लोग जो इस द्वीप पर रहते हैं, भारतीय वंश के हैं।
- लगभग आधे मिलियन भारतीयों को 1834 और 20वीं सदी के मोड़ के बीच मॉरीशस में अनुबंध श्रमिक के रूप में भेजा गया था।
- भारतीय धरोहर को संरक्षित करने वाले संस्थान:
  - भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, महात्मा गांधी संस्थान, और विश्व हिंदी सचिवालय सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- पारंपरिक रूप से, भारत ने आपातकालीन परिस्थितियों में मॉरीशस का «पहला प्रतिक्रिया देने वाला» के रूप में कार्य किया है, जैसे हाल ही में कोविड-19 और वाकाशियो तेल फैलाव।
- भारत 2005 से मॉरीशस का एक प्रमुख आर्थिक भागीदार रहा है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए व्यापार का कुल मूल्य 851.13 मिलियन अमेरिकी डॉलर था, जिसमें से 778.03 मिलियन अमेरिकी डॉलर भारत से और 73.10 मिलियन अमेरिकी डॉलर मॉरीशस से था। 2005-06 में 206.76 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2023-24 में 851.13 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक, व्यापार में पिछले 18 वर्षों में वृद्धि हुई है।

- 22 फरवरी, 2021 को मॉरीशस और भारत ने समग्र आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौता (CECPA) पर हस्ताक्षर किए।
- **भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC):** मॉरीशस को प्रत्येक वर्ष 400 प्रशिक्षण स्लॉट मिलते हैं, जो इसे भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC) कार्यक्रम के सबसे बड़े प्राप्तकर्ताओं में से एक बनाता है।

भारत-मॉरीशस संबंध गहरे सभ्यतागत संबंधों, साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, और मजबूत आर्थिक और रणनीतिक सहयोग से चिह्नित हैं।

मॉरीशस अफ्रीका का एक द्वार और भारतीय महासागर में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी होने के नाते, यह संबंध भारत की समुद्री पहुंच, SAGAR सिद्धांत, और वैश्विक दक्षिण नेतृत्व के लिए रणनीतिक महत्व रखता है।

हाल ही में संबंधों को एक संवर्धित रणनीतिक साझेदारी में उन्नत करना और MAHASAGAR दृष्टिकोण की शुरुआत यह सुनिश्चित करेगी कि संबंध आने वाले वर्षों में अधिक व्यापक, भविष्य के अनुरूप और पारस्परिक रूप से लाभकारी बने।

### संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना (UN PEACEKEEPING)

**चर्चा में क्यों:** शांति अभियानों के लिए संयुक्त राष्ट्र के अवर महासचिव जीन-पियरे लैक्रोइक्स के अनुसार, भारत संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना का एक प्रमुख स्तंभ बना हुआ है, जिसमें महिला शांति सैनिक एक अपरिहार्य भूमिका निभा रही हैं।

#### भारत में हाल ही में आयोजित कार्यक्रम:

- 24-25 फरवरी, 2024 को जीन-पियरे लैक्रोइक्स ने एक सम्मेलन के लिए नई दिल्ली का दौरा किया, जिसका शीर्षक था: “शांति स्थापना में महिलाओं की भूमिका को बढ़ाना: एक वैश्विक दक्षिण अनुभव।”
- भारत द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में 50 से अधिक देशों की महिला शांति रक्षकों ने शांति स्थापना की बदलती प्रकृति और शांति एवं सुरक्षा के निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की।

**शांति रक्षक (Peacekeepers) कौन हैं?**

संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षकों में नागरिक, सैन्यकर्मी और पुलिस अधिकारी शामिल हैं जो संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में एक साथ काम करते हैं। उनके कर्तव्य सिर्फ युद्ध विराम बनाए रखने से कहीं आगे बढ़ गए हैं। आज, शांति रक्षक निम्नलिखित कार्यों में शामिल हैं:

- नागरिकों की सुरक्षा
- लड़ाकों को निरस्त्र करना
- मानवाधिकारों को बढ़ावा देना
- कानून के शासन का समर्थन करना
- निष्पक्ष चुनाव की सुविधा प्रदान करना
- बारूदी सुरंगों को हटाना
- संघर्ष के बाद समाजों के पुनर्निर्माण में मदद करना

**संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस**

- हर साल 29 मई को मनाया जाता है

**उद्देश्य:**

- ◆ शहीद शांति सैनिकों का सम्मान करना
- ◆ संयुक्त राष्ट्र मिशनों में सेवा करने वाले सभी पुरुषों और महिलाओं के समर्पण, व्यावसायिकता और साहस को पहचानना।

#### भारत की महिला शांति सैनिक

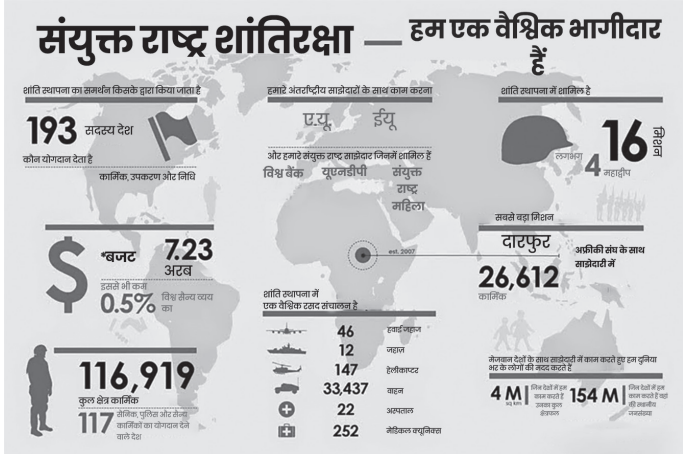
भारत की महिला शांति सैनिकें संयुक्त राष्ट्र मिशनों का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुकी हैं, विशेषकर संघर्ष-प्रभावित क्षेत्रों में। उनका योगदान व्यावहारिक भी है और प्रतीकात्मक भी।

#### वे क्यों महत्वपूर्ण हैं?

- **विश्वास निर्माण:** उनकी उपस्थिति स्थानीय महिलाओं से जुड़ने में मदद करती है, जिससे विश्वास और संवाद बेहतर होता है।
- **सुरक्षा में सुधार:** वे प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, नागरिकों की सुरक्षा और मानवीय सहायता पहुंच को बेहतर बनाती हैं।
- **समुदायों को प्रेरणा देना:** वे स्थानीय महिलाओं और लड़कियों के लिए आदर्श बनती हैं।
- **संस्कृति का सेतु बनना:** वे सहानुभूति और सांस्कृतिक समझ के साथ संवेदनशील परिस्थितियों को संभालती हैं।

#### वास्तविक उदाहरण – अबीएई मिशन (Abyei Mission)

भारतीय महिला शांति सैनिकों ने कमजोर वर्गों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए गश्त के रास्तों में बदलाव किया।



- उन्होंने वंचित समुदायों को लक्षित समर्थन भी प्रदान किया।
- **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत का योगदान**
- **शीर्ष योगदानकर्ता:**
  - सितंबर 2024 तक, भारत के 5,384 कर्मी (जिनमें 153 महिलाएँ शामिल हैं) 10 मिशनों में कार्यरत हैं।
- **महिला भागीदारी में अग्रणी:**
  - वर्ष 2007 में, भारत ने लाइबेरिया में पहली पूर्णतः महिला गठित पुलिस इकाई को तैनात किया।
  - वर्तमान में, भारत के सैन्य पर्यवेक्षकों और स्टाफ अधिकारियों में 20.45% महिलाएँ हैं।

**वैश्विक प्रशिक्षण में अग्रणी:**

- नई दिल्ली स्थित संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केंद्र (Centre for UN Peacekeeping – CUNPK) शांति सैनिकों को प्रशिक्षित करता है और तैनाती से पूर्व तथा विशेष पाठ्यक्रमों में वैश्विक मानक स्थापित करता है।
- भारत भ्रामक जानकारी का मुकाबला करने, प्रशिक्षण को परिष्कृत करने, और जवाबदेही व नेतृत्व संरचनाओं को सुधारने के लिए संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों का सक्रिय रूप से समर्थन करता है।

**भारत का व्यापक प्रभाव**

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत की भूमिका सिर्फ सेना भेजने तक ही सीमित नहीं है। इसमें यह भी शामिल है:

- मिशनों में समावेशन और नेतृत्व को बढ़ावा देता है
- रणनीतिक संप्रेषण को प्रोत्साहित करता है
- नीति सुधारों में योगदान करता है
- नागरिकों की सुरक्षा और सतत शांति निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है

**आगे की राह:**

- **निर्णायक कार्रवाई की आवश्यकता:** जैसे-जैसे संघर्ष अधिक जटिल होते जा रहे हैं, शांति सैनिकों पर हमलों में वृद्धि हुई है। वैश्विक शांति और सुरक्षा में सेवा देने वालों की रक्षा के लिए निर्णायक कार्रवाई आवश्यक हो गई है।
- **उन्नत तकनीक का उपयोग:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित प्रणालियाँ, डेटा विश्लेषण, और साइबर उपकरण खुफिया जानकारी एकल करने, मिशनों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने और शत्रुतापूर्ण वातावरण में सुरक्षा को मजबूत करने में सहायक हो सकते हैं।
- **स्थानीय सहभागिता के माध्यम से खुफिया जानकारी एकल करना:** मजबूत खुफिया साझेदारी और स्थानीय समुदायों के साथ गहन जुड़ाव प्रारंभिक चेतावनी प्रदान कर सकते हैं और जोखिमों को कम कर सकते हैं।
- **विशेष रूप से सैन्य भूमिका में अधिक महिलाओं की आवश्यकता:** संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना प्रमुख ने संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों से आग्रह किया है कि वे वरिष्ठ वर्दीधारी नेतृत्व पदों के लिए महिला उम्मीदवारों को नामित करने के प्रयासों में वृद्धि करें।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न**

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों की गुणवत्ता बढ़ाने में महिला शांति सैनिकों की भूमिका और योगदान पर चर्चा कीजिए, विशेष रूप से भारतीय महिला शांति सैनिकों की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए। साथ ही, संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों को सशक्त बनाने के लिए आगे की दिशा भी सुझाइए। [15 अंक] [250 शब्द]

**एक्ट ईस्ट नीति: पूर्वोत्तर भारत के लिए बढ़ावा**

**चर्चा में क्यों:** भारत के उपराष्ट्रपति ने अरुणाचल प्रदेश की अपनी यात्रा के दौरान भारत की “लुक ईस्ट” नीति को “एक्ट ईस्ट” में बदलने पर जोर दिया। उन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र के तेजी से विकास पर प्रकाश डाला, खासकर कनेक्टिविटी, बिजली उत्पादन और व्यापार के अवसरों में।

**नीति का विकास: ‘लुक ईस्ट’ से ‘एक्ट ईस्ट’ तक**

लुक ईस्ट नीति (1991) - दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए।

लुक ईस्ट नीति (LEP) को 1990 के दशक की शुरुआत में प्रधान मंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव के नेतृत्व में लॉन्च किया गया था। इसका उद्देश्य देश के व्यापक आर्थिक उदारीकरण प्रयासों के हिस्से के रूप में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत की आर्थिक भागीदारी को बढ़ाना था।

**लुक ईस्ट नीति की मुख्य विशेषताएं**

**आर्थिक और व्यापारिक भागीदारी:**

- थाईलैंड, सिंगापुर और मलेशिया जैसे आसियान देशों के साथ विविध व्यापार संबंध।
- भारतीय व्यवसायों के लिए निवेश और बाजार पहुंच को बढ़ावा दिया।

**सांस्कृतिक और रणनीतिक सहयोग:**

- राजनयिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से ऐतिहासिक संबंधों को मजबूत किया।

**क्षेत्रीय एकीकरण:**

- भारत 1992 में क्षेत्रीय वार्ता भागीदार के रूप में आसियान में शामिल हुआ, बाद में 1996 में पूर्ण वार्ता भागीदार के रूप में पदोन्नत हुआ।
- पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) सहित क्षेत्रीय आर्थिक ढांचे पर ध्यान केंद्रित किया।

**एक्ट ईस्ट नीति (2014) – अधिक सक्रिय दृष्टिकोण:**

वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्ट ईस्ट नीति (AEP) की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय मामलों में निष्क्रिय सहभागिता के स्थान पर सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना था। यह नीति दक्षिण-पूर्व एशिया, पूर्वी एशिया और हिंद-प्रशांतक्षेत्र के साथ राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा सहयोग पर केंद्रित है।

**एक्ट ईस्ट नीति की मुख्य विशेषताएं**

**पूर्वोत्तर भारत में बुनियादी ढांचा विकास:**

- भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और कालादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना जैसे प्रमुख प्रोजेक्ट संपर्क सुधार रहे हैं।
- पूर्वोत्तर और ASEAN देशों के बीच सड़क, रेल और वायु संपर्क को सुदृढ़ किया जा रहा है।

**सामरिक और रक्षा सहयोग:**

- आसियान, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के साथ रक्षा और समुद्री साझेदारी में वृद्धि।
- चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए भारत-प्रशांत क्षेत्र में भारत की उपस्थिति को मजबूत करना।

**आर्थिक और व्यापार विस्तार:**

- भारत ने द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने के लिए दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) पर हस्ताक्षर किए हैं।
- औद्योगिक विकास और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए पूर्वोत्तर भारत में निवेश बढ़ाया।

**एक्ट ईस्ट नीति को लागू करने में चुनौतियाँ**

हालाँकि कुछ प्रगति हुई है, लेकिन कई चुनौतियाँ एक्ट ईस्ट नीति की पूर्ण संभावनाओं को साकार करने में बाधा उत्पन्न करती हैं:

**1. भौगोलिक और बुनियादी ढांचे से जुड़ी बाधाएँ:**

- पूर्वोत्तर भारत की कठिन भौगोलिक स्थिति के कारण बुनियादी ढांचे का विकास धीमा और महंगा हो जाता है।

- वर्ष 2024 तक केवल 45% प्रमुख परियोजनाएँ ही पूर्ण हो सकी हैं।
- सिलचर-इम्फाल राजमार्ग जैसी परियोजनाओं में भारी देरी के कारण क्षेत्रीय संपर्क बाधित हुआ है।

## 2. राजनीतिक अस्थिरता और उग्रवाद:

- नागालैंड और मणिपुर जैसे राज्यों में चल रही उग्रवादी गतिविधियाँ विकास कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करती हैं।
- वर्ष 2025 में नागालैंड में हुई हिंसा के कारण भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना में देरी हुई।

## 3. दक्षिण-पूर्व एशिया में चीन का प्रभाव:

- म्यांमार में चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) परियोजना, जिसकी अनुमानित लागत 20 अरब डॉलर है (2024 के WEF रिपोर्ट के अनुसार), भारत की संपर्क परियोजनाओं जैसे कि कालादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना के लिए सीधी चुनौती प्रस्तुत करती है।

## 4. नौकरशाही की देरी:

- लंबी स्वीकृति प्रक्रियाएँ और धीमी कार्यान्वयन गति परियोजनाओं में बाधा उत्पन्न करती हैं।
- 2024 की NEIDMC (नॉर्थईस्ट इंडिया डेवलपमेंट मॉनिटरिंग काउंसिल) रिपोर्ट में कई परियोजनाओं में दो वर्षों की देरी दर्ज की गई है।

## 5. सीमित निजी निवेश:

- राजनीतिक अस्थिरता और सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण पूर्वोत्तर क्षेत्र में कुल राष्ट्रीय निजी निवेश का 10% से भी कम आकर्षित होता है (2025 की FICCI रिपोर्ट के अनुसार)।

## 6. पर्यावरणीय चिंताएँ:

- अनियंत्रित बुनियादी ढांचा विकास से दिबांग घाटी जैसे नाजुक पारिस्थितिकी तंत्रों की जैव विविधता को खतरा उत्पन्न हो रहा है।
- 2024 की IPCC रिपोर्ट संवेदनशील क्षेत्रों में पारिस्थितिक क्षति की चेतावनी देती है।

## एक्ट ईस्ट नीति को सशक्त बनाने हेतु समाधान:

इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत ने कई पहलें और परियोजनाएँ शुरू की हैं:

### 1. तीव्र बुनियादी ढांचा विकास:

- 2024 ब्रह्मपुत्र एक्सप्रेस जलमार्ग परियोजना का उद्देश्य असम और पूर्वोत्तर भारत में व्यापार और संपर्क को बेहतर बनाना है।
- राजमार्ग और रेलवे विस्तार के लिए वित्त पोषण में वृद्धि की गई है ताकि पहुंच को सुधारा जा सके।

### 2. क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करना:

- 2024 पूर्वोत्तर शांति एवं विकास पहल (NPDI) का उद्देश्य समावेशी शासन और रोजगार सृजन के माध्यम से उग्रवाद को 50% तक कम करना है।

### 3. व्यापार और राजनयिक संबंधों को मजबूत बनाना:

- भारत-थाईलैंड और भारत-इंडोनेशिया के साथ 2024 CEPA (समग्र आर्थिक साझेदारी समझौता) का लक्ष्य अगले पाँच वर्षों में ASEAN के साथ व्यापार को 20% तक बढ़ाना है।
- वियतनाम, सिंगापुर और फिलीपींस के साथ नए द्विपक्षीय व्यापार समझौते आर्थिक संबंधों को सशक्त कर रहे हैं।

## 4. रक्षा साझेदारियों का विस्तार:

- 2025 हिंद-प्रशांत डिफेंस समिट के माध्यम से भारत ने जापान, वियतनाम और ऑस्ट्रेलिया के साथ सुरक्षा सहयोग को गहरा किया है, जिससे चीन के बढ़ते प्रभाव का संतुलन बनाया जा सके।

## 5. निजी निवेश को प्रोत्साहित करना:

- 2025 पूर्वोत्तर निवेश संवर्धन योजना (NIPS) पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में विदेशी निवेश को 15% तक बढ़ाने की उम्मीद है।

## 6. सतत विकास को प्राथमिकता देना:

- 2024 पूर्वोत्तर हरित बुनियादी ढांचा नीति पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करते हुए पर्यावरण-अनुकूल बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देती है।
- आर्थिक वृद्धि और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन बनाना दीर्घकालिक सफलता की कुंजी है।

## निष्कर्ष:

भारत की लुक ईस्ट और एक्ट ईस्ट नीतियों ने दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ भारत के संबंधों को सुदृढ़ करने और पूर्वोत्तर भारत की आर्थिक एवं रणनीतिक संभावनाओं को उजागर करने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है।

- संपर्क, व्यापार और रक्षा सहयोग के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।
- फिर भी, भौगोलिक बाधाओं, सुरक्षा संबंधी चिंताओं और चीन के बढ़ते प्रभाव जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।
- आगे का मार्ग तीव्र अवसंरचनात्मक निवेश, ASEAN के साथ मजबूत साझेदारी और सतत विकास पहलों में निहित है।

दक्षिण-पूर्व एशिया से सक्रिय रूप से जुड़कर और पूर्वोत्तर भारत के विकास को प्राथमिकता देकर भारत हिंद-प्रशांतक्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

## यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. दक्षिण पूर्व एशिया और भारत-प्रशांत क्षेत्र के साथ आर्थिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ाने में भारत की एक्ट ईस्ट नीति के महत्व पर चर्चा करें। यह पूर्वोत्तर भारत की विकासात्मक चुनौतियों का समाधान कैसे करता है? [150 शब्द] [10 अंक]

## ऑस्ट्रेलिया के भारत के साथ आर्थिक संबंधों के लिए रोडमैप

**चर्चा में क्यों:** ऑस्ट्रेलिया ने भारत के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को मजबूत करने और विविधता लाने के लिए एक व्यापक आर्थिक रोडमैप का अनावरण किया है। यह योजना स्वच्छ ऊर्जा, शिक्षा, कृषि व्यवसाय, पर्यटन और विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे प्रमुख विकास क्षेत्रों पर केंद्रित है, जो दोनों अर्थव्यवस्थाओं की उभरती जरूरतों और ताकत के साथ संरेखित है। रोडमैप: कार्य योजना

### रोडमैप: कार्य योजना

- **भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक संबंधों का विस्तार और विविधीकरण:**
  - ऑस्ट्रेलिया-भारत व्यापार विनिमय (AIBX) नवीकरणीय ऊर्जा को प्राथमिकता क्षेत्र बनाते हुए, व्यापार-से-व्यापार सहयोग को तीव्र करेगा।
  - पहले मुक्त व्यापार समझौते — ऑस्ट्रेलिया-भारत आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (ECTA) — को लागू करना और बढ़ावा देना, द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार करेगा।

- एक नया ऑस्ट्रेलिया-भारत व्यापार और निवेश संवर्धन कोष (AI-TIAF) ECTA के क्रियान्वयन में सहायता करेगा।
- **नेट ज़ीरो अर्थव्यवस्था की दिशा में प्रयास तेज करना (महत्वपूर्ण खनिजों सहित):**
  - भारत-ऑस्ट्रेलिया नवीकरणीय ऊर्जा साझेदारी, नेट ज़ीरो लक्ष्यों पर द्विपक्षीय सहयोग को मज़बूत करेगी।
  - भारत-ऑस्ट्रेलिया खनिज स्कॉलर नेटवर्क, हरित इस्पात और महत्वपूर्ण खनिजों पर अनुसंधान संस्थानों के बीच साझेदारी बनाएगा, जिसमें नेट ज़ीरो तकनीकों को भी शामिल किया जाएगा।
- **शिक्षा और कौशल साझेदारी को बढ़ावा देना:**
  - मैत्री छात्रवृत्ति और फेलोशिप कार्यक्रम, भारत के सर्वश्रेष्ठ छात्रों को ऑस्ट्रेलिया में अध्ययन का अवसर प्रदान करता है और दोनों देशों के थिंक टैंकों के बीच सतत शोध साझेदारी को बढ़ावा देगा।
  - कौशल, योग्यता और श्रम बाज़ार का मिलान, व्यावसायिक प्रशिक्षण के अवसरों को मज़बूत करेगा ताकि भारत के आर्थिक आधुनिकीकरण में श्रमिकों की भागीदारी सुनिश्चित हो सके।
- **कृषि क्षेत्र में साझेदारी की संभावनाओं को खोलना:**
  - ऑस्ट्रेलियाई प्रदाताओं और प्रांतीय सरकारों के सहयोग से भारत के बढ़ते उपभोक्ता वर्ग को ऑस्ट्रेलियाई कृषि उत्पादों को बढ़ावा देना।
  - अगला मुक्त व्यापार समझौता (CECA) और तकनीकी बाज़ार पहुँच से संबंधित मुद्दों को सुलझा कर, कृषि व्यापार में संभावनाओं का दोहन करना।
  - अनुसंधान और निजी क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने हेतु ज्ञान साझा करना और तकनीकी सहयोग को प्रोत्साहित करना।
- **विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष सहयोग को मज़बूत करना:**
  - ऑस्ट्रेलिया-भारत रणनीतिक और प्रौद्योगिकी नीति पहल (SATPI), विशेष रूप से हिंद-प्रशांतक्षेत्र में, साझा रणनीतिक और तकनीकी हितों को संबोधित करेगी।
  - ऑस्ट्रेलिया-भारत रणनीतिक अनुसंधान कोष (AISRF), 2006 से अब तक \$100 मिलियन से अधिक का निवेश कर चुका है, और कृषि, स्वच्छ ऊर्जा तकनीक तथा समुद्री विज्ञान जैसे प्राथमिक क्षेत्रों में शोध सहयोग जारी रखेगा।
- **पर्यटन, रचनात्मक अर्थव्यवस्था और खेल संबंधों को गहरा करना:**
  - सीधी उड़ानों की संख्या बढ़ाना और भारतीय कंपनियों द्वारा ऑस्ट्रेलियाई उच्च-स्तरीय होटल विकास में निवेश को प्रोत्साहित करना, पर्यटन को गति देगा।
  - भारत में हर दो वर्ष में 'ऑस्ट्रेलिया मार्केटप्लेस' आयोजन, पर्यटन क्षेत्र में व्यापारिक रिश्तों को मज़बूत करेगा।
  - मैत्री अनुदान कार्यक्रम, दृश्य एवं प्रदर्शन कला, साहित्य, फिल्म और संगीत के क्षेत्रों में परियोजनाओं, आयोजनों, प्रदर्शनों और व्यावसायिक विनिमयों का समर्थन करेगा।
- **द्विपक्षीय निवेश को बढ़ावा देना:**
  - एक्सपोर्ट फाइनेंस ऑस्ट्रेलिया (EFA), भारतीय बाज़ार में ऑस्ट्रेलियाई निर्यातकों, अवसररचना विकास और निजी निवेश आकर्षण के लिए वित्तीय सहयोग को सशक्त करेगा।
  - क्वाड जलवायु कार्य समूह और क्वाड स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण कार्यक्रम, भारत एवं अन्य क्वाड साझेदारों के साथ मिलकर स्वच्छ ऊर्जा कार्यबल और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाएं विकसित करेगा।

**भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध: उच्च संभावनाओं वाले क्षेत्र**

- **स्वच्छ ऊर्जा:**
  - नेट ज़ीरो लक्ष्य प्राप्त करने की साझा प्रतिबद्धता।

- भारत, स्वच्छ ऊर्जा उत्पादों का अग्रणी निर्माता और ऑस्ट्रेलिया, नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों, प्राकृतिक संसाधनों एवं कुशल कार्यबल के साथ, एक-दूसरे के ऊर्जा परिवर्तन में परस्पर सहयोग के लिए सक्षम हैं।
- **शिक्षा और कौशल:**
  - भारत, विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में सबसे युवा जनसांख्यिकी वाला देश है — लगभग दो-तिहाई भारतीयों की आयु 35 वर्ष से कम है।
  - ऑस्ट्रेलिया, उच्च शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में भारत का एक प्रमुख साझेदार है — चीन के बाद ऑस्ट्रेलिया में भारतीय अंतरराष्ट्रीय छात्रों की संख्या सबसे अधिक है।
  - अब ऑस्ट्रेलियाई शैक्षणिक संस्थान भारत में व्यक्तिगत उपस्थिति आधारित तथा ऑनलाइन दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम प्रदान करने की संभावनाएं तलाश रहे हैं।
- **कृषि व्यवसाय:**
  - भारत को ऑस्ट्रेलिया से प्रीमियम कृषि उत्पादों का निर्यात, पहले मुक्त व्यापार समझौते के प्रभावी होने के बाद से 59 प्रतिशत बढ़ चुका है।
  - भारत में कृषि बाज़ार के अधिक उदारीकरण और मौसमी पूरकता के चलते, ऑस्ट्रेलिया भारत की खाद्य सुरक्षा को समर्थन देने और इसके बढ़ते उपभोक्ता वर्ग की माँग पूरी करने में मदद कर सकता है।
- **पर्यटन:**
  - भारतीय पर्यटक प्रति वर्ष ऑस्ट्रेलिया की अर्थव्यवस्था में \$1.5 बिलियन से अधिक का योगदान देते हैं।
  - जैसे-जैसे भारत का उपभोक्ता वर्ग बढ़ रहा है, उड़ानों की संख्या में वृद्धि हो रही है और ओलंपिक जैसे प्रमुख आयोजन सामने आ रहे हैं, वैसे-वैसे इस क्षेत्र में और अधिक वृद्धि की विशाल संभावनाएं हैं।

- भारत के साथ ऑस्ट्रेलिया की आर्थिक भागीदारी का यह रोडमैप एक रणनीतिक और दूरदर्शी ढांचा है, जो महत्वपूर्ण और उभरते क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को गहराई प्रदान करता है। स्वच्छ ऊर्जा, शिक्षा, कृषि व्यवसाय, पर्यटन और प्रौद्योगिकी जैसे साझा प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करके, दोनों देश निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अच्छी स्थिति में हैं:
- एक-दूसरे की पूरक क्षमताओं का लाभ उठाना,
- लचीली आपूर्ति श्रृंखलाएं विकसित करना, और
- हिंद-प्रशांतक्षेत्र और उससे आगे तक सतत और समावेशी विकास को बढ़ावा देना।

यह रोडमैप ऑस्ट्रेलिया की हिंद-प्रशांतरणनीति और भारत की क्षेत्रीय आर्थिक शक्ति के रूप में बढ़ती भूमिका और वैश्विक साझेदार के रूप में भारत के महत्व को भी मज़बूत करता है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. स्वच्छ ऊर्जा, शिक्षा, कृषि व्यवसाय और पर्यटन जैसे क्षेत्र भारत और ऑस्ट्रेलिया की पूरक आर्थिक शक्तियों को कैसे दर्शाते हैं? चर्चा करें कि इन क्षेत्रों में सहयोग आपसी विकास को कैसे बढ़ावा दे सकता है और साझा क्षेत्रीय और वैश्विक चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है। [150 शब्द] [10 अंक]

## रायसीना संवाद 2025

**चर्चा में क्यों:** रायसीना संवाद 2025, भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र पर भारत का प्रमुख सम्मेलन, हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

### रायसीना संवाद क्या है?

- रायसीना संवाद अंतरराष्ट्रीय मामलों पर भारत का प्रमुख बहुपक्षीय सम्मेलन है। यह प्रमुख वैश्विक चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए विश्व नेताओं, नीति विशेषज्ञों और रणनीतिक विचारकों को एक साथ लाता है।
- अक्सर म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन (जर्मनी) और शांगरी-ला संवाद (सिंगापुर) से तुलना की जाती है, यह राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक प्रमुख वैश्विक मंच बन गया है।

### आयोजक:

- ऑब्जरवर रिसर्च फाउंडेशन (ORF) - दिल्ली स्थित एक प्रमुख थिंक टैंक।
- विदेश मंत्रालय (MEA) - भारत सरकार।

### रायसीना' क्यों?

सम्मेलन का नाम रायसीना हिल के नाम पर रखा गया है, जो भारत की केंद्रीय सरकार का मुख्यालय है, जहाँ राष्ट्रपति भवन और सचिवालय जैसी महत्वपूर्ण इमारतें स्थित हैं।

### उद्देश्य और महत्व:

- वैश्विक चुनौतियों का समाधान:** महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान पर ध्यान केंद्रित करता है।
- खुला संवाद:** भू-राजनीति, अर्थशास्त्र, विकास, क्षेत्रीय सहयोग और वैश्विक सुरक्षा पर ईमानदार चर्चा को प्रोत्साहित करता है।
- नीतिगत प्रभाव:** चर्चा किए गए विचार और सिफारिशें भविष्य की नीतियों को आकार देने में मदद करती हैं।
- भारत की वैश्विक भूमिका को बढ़ावा देना:** अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में भारत को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में प्रदर्शित करता है।
- समावेशी और विविध:** 100 से अधिक देशों के प्रतिभागी विचारों और अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला सुनिश्चित करते हैं।

### संरचना और प्रारूप:

- वार्षिक कार्यक्रम:** 2016 से हर साल आयोजित किया जाता है।
- बहु-दिवसीय सम्मेलन:** आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है।
- आकर्षक सत्र:** इसमें मुख्य भाषण, पैनल चर्चा, कार्यशालाएँ और इंटरैक्टिव कार्यक्रम शामिल हैं।
- विषयगत स्तंभ:** वैश्विक मुद्दों और अवसरों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विशिष्ट विषयों पर चर्चा की जाती है।

### रायसीना संवाद 2025 की मुख्य विशेषताएं:

- 10वाँ संस्करण:** डायलॉग के एक दशक का जश्न मनाया गया।
- थियां:** 17 से 19 मार्च, 2025 तक आयोजित किया जाएगा।
- थीम:** “कालचक्र - लोग, शांति और ग्रह” (मानवीय अंतर्संबंध, शांति और पर्यावरणीय स्थिरता पर विचार करते हुए।)
- मुख्य अतिथि:** न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन ने मुख्य भाषण दिया।
- वैश्विक भागीदारी:**
  - 3,500 से अधिक व्यक्तिगत प्रतिभागी।
  - लगभग 125 देशों के प्रतिनिधि।

- डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों लोगों ने ऑनलाइन इसका अनुसरण किया।

### चर्चा किए गए मुख्य विषय (विषयगत स्तंभ):

- राजनीति में बाधा:** वैश्विक अस्थिरता और सत्ता की बदलती गतिशीलता की जांच की गई।
- ग्रीन ट्रिलेमा का समाधान:** जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा आवश्यकताओं और स्थिरता को संबोधित किया गया।
- डिजिटल प्लैनेट:** प्रौद्योगिकी, एआई और डेटा शासन की भूमिका पर बहस की गई।
- उग्रवादी व्यापारिकता:** व्यापार युद्ध, प्रतिबंध और आर्थिक हथियारीकरण का पता लगाया गया।
- टाइगर्स टेल:** विकास के लिए नए दृष्टिकोणों पर चर्चा की गई, विशेष रूप से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में।
- वाणिज्य, कनेक्टिविटी, जलवायु और साइबर सुरक्षा:** व्यापार, बुनियादी ढांचे, पर्यावरण और डिजिटल खतरों पर वैश्विक सहयोग को कवर किया गया।

### रायसीना 2025 से प्रमुख निष्कर्ष:

- व्यापार का हथियारीकरण:** टैरिफ, प्रतिबंध और वित्तीय साधनों का विदेश नीति के हथियार के रूप में उपयोग करने वाले देशों पर बढ़ती चिंताएँ।
- हिंद-प्रशांत सुरक्षा:** हिंद महासागर में चीन की मुखरता और एक शांतिपूर्ण और सुरक्षित समुद्री क्षेत्र की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करना।
- डिजिटल संप्रभुता:** भारत ने डेटा गोपनीयता, एआई विकास और डिजिटल व्यापार विनियमों पर अपने स्वतंत्र रुख पर जोर दिया।

रायसीना संवाद ने वैश्विक भू-राजनीतिक कैलेंडर पर एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के रूप में खुद को मजबूती से स्थापित किया है। यह नेताओं और विशेषज्ञों को जटिल मुद्दों पर ईमानदार चर्चा करने के लिए एक शक्तिशाली मंच प्रदान करता है।

जैसे-जैसे इसकी अंतर्राष्ट्रीय मान्यता बढ़ती जा रही है, यह वार्ता वैश्विक नीति और कूटनीति के भविष्य को आकार देने में भारत के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन सा कथन रायसीना डायलॉग के संबंध में असत्य है?

- रायसीना संवाद एक वार्षिक सम्मेलन है जो नई दिल्ली में आयोजित होता है, जिसका केंद्रबिंदु भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र होता है।
- रायसीना संवाद का 10वाँ संस्करण मार्च 2025 में आयोजित हुआ, जिसका विषय था “कालचक्र – लोग, शांति और ग्रह”।
- रायसीना संवाद का आयोजन मुख्य रूप से केवल भारत सरकार के विदेश मंत्रालय (MEA) द्वारा किया जाता है।
- यह संवाद वैश्विक चुनौतियों पर चर्चा हेतु एक मंच प्रदान करने और अंतरराष्ट्रीय मामलों में भारत की भूमिका को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखता है।

(C) : 211

## आर्मेनिया-अज़रबैजान युद्ध

**चर्चा में क्यों:** आर्मेनिया और अज़रबैजान ने हाल ही में एक शांति संधि पर सहमति व्यक्त की है, जो नागोर्नो-करबाख के विवादित क्षेत्र पर लगभग चार दशकों से चल रहे संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।



### शांति संधि की मुख्य विशेषताएं:

- शांति समझौता अज़रबैजान द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रस्तावों के बाद हुआ है, जिन्हें अब आर्मेनिया ने स्वीकार कर लिया है, जिससे संधि को अंतिम रूप देने में आने वाली मुख्य बाधाएं दूर हो गई हैं।
- संधि में संबोधित दो मुख्य मुद्दे हैं:
  1. साझा सीमा पर विदेशी सैन्य उपस्थिति को समाप्त करना, विशेष रूप से तीसरे देश के सैनिकों की उपस्थिति।
  2. गैर-आक्रामकता के लिए आपसी प्रतिबद्धता, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय न्यायालयों में एक-दूसरे के खिलाफ कानूनी दावों को वापस लेना शामिल है।
- इसके अतिरिक्त, अज़रबैजान ने अज़रबैजान की संप्रभुता या क्षेत्रीय अखंडता पर सवाल उठाने वाले किसी भी संदर्भ को हटाने के लिए आर्मेनिया के संविधान में बदलाव की मांग की है।
- इस समझौते से दक्षिण काकेशस क्षेत्र में अधिक स्थिर और शांतिपूर्ण माहौल बनने की संभावना है।

### नागोर्नो-काराबाख संघर्ष: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- काकेशस पर्वत में स्थित नागोर्नो-करबाख क्षेत्र दशकों से आर्मेनिया-अज़रबैजान संघर्ष का केंद्र रहा है।
- 1813 में, इस क्षेत्र को रूसी साम्राज्य द्वारा कब्जा कर लिया गया था। बाद में, 1923 में, सोवियत संघ ने इसे जातीय अर्मेनियाई बहुमत होने के बावजूद अज़रबैजान एसएसआर के भीतर एक स्वायत्त ओब्लास्ट (प्रांत) के रूप में नामित किया।
- 1991 में सोवियत संघ के पतन के बाद, आर्मेनिया और अज़रबैजान दोनों स्वतंत्र राज्यों के रूप में उभरे। जैसे-जैसे सोवियत सत्ता कम होती गई, लंबे समय से चले आ रहे जातीय और क्षेत्रीय विवाद फिर से भड़क उठे।
- अर्मेनियाई समर्थन के साथ, नागोर्नो-करबाख में जातीय अर्मेनियाई लोगों ने स्वतंत्रता की घोषणा की और 1990 के दशक की शुरुआत में इस क्षेत्र और आस-पास के अज़रबैजानी क्षेत्रों पर सैन्य नियंत्रण हासिल कर लिया।
- 1994 में युद्ध विराम समझौते के तहत पहला युद्ध समाप्त हो गया, लेकिन क्षेत्र में लगातार झड़पों और अनसुलझे राजनीतिक मुद्दों के कारण तनाव बना रहा।

### नए सिरे से संघर्ष और 2023 के घटनाक्रम:

- 1994 से 2020 तक, एक नाजुक युद्धविराम था, जो विशेष रूप से 2010 के दशक के दौरान प्रासंगिक झड़पों से बाधित था।
- 2020 में, छह सप्ताह का युद्ध छिड़ गया, जिसके परिणामस्वरूप अज़रबैजानी क्षेत्रीय लाभ और रूस की मध्यस्थता में युद्धविराम हुआ।
- सितंबर 2023 में, अज़रबैजान ने नागोर्नो-करबाख पर पूर्ण नियंत्रण हासिल करते हुए 24 घंटे का तेज़ सैन्य आक्रमण शुरू किया।
- इस आक्रमण के कारण क्षेत्र से लगभग 120,000 जातीय अर्मेनियाई लोगों का सामूहिक पलायन आर्मेनिया में हुआ, जिससे प्रभावी रूप से इस क्षेत्र में अर्मेनियाई नियंत्रण समाप्त हो गया।

### शांति संधि का महत्व:

- यह शांति समझौता औपचारिक रूप से शत्रुता को समाप्त करने और उस क्षेत्र को स्थिर करने की क्षमता रखता है, जिसने 30 से अधिक वर्षों से तीव्र जातीय और भू-राजनीतिक तनाव देखा है।
- यह क्षेत्र में बदलती गतिशीलता को भी दर्शाता है, जिसमें रूस का प्रभाव कम हो रहा है, और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण दक्षिण काकेशस में शांति सुनिश्चित करने में अंतर्राष्ट्रीय रुचि बढ़ रही है।
- यदि सफलतापूर्वक लागू किया जाता है, तो संधि राजनयिक संबंधों को सामान्य कर सकती है, परिवहन मार्गों को फिर से खोल सकती है, और दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दे सकती है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. हाल ही में नागोर्नो-कराबाख क्षेत्र समाचारों में क्यों था?

- (a) अर्मेनिया और अज़रबैजान के बीच संघर्ष
- (b) दक्षिण सूडान में नागरिक अशांति
- (c) रूस और यूक्रेन के बीच विवाद
- (d) इनमें से कोई नहीं

(ए) : 2023

### बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA)

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA) ने जाफ़र एक्सप्रेस को निशाना बनाकर लगभग 25 वर्षों में अपना सबसे महत्वपूर्ण हमला किया, जो पाकिस्तानी राज्य के खिलाफ बलूच विद्रोह की बढ़ती तीव्रता को उजागर करता है।

#### बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA) के बारे में:

- BLA एक सशस्त्र अलगाववादी समूह है जो मुख्य रूप से पाकिस्तान के जातीय बलूच क्षेत्रों में काम करता है, और सुरक्षा बलों और नागरिकों को निशाना बनाता है।
- यह 2000 के दशक की शुरुआत में बलूचिस्तान की स्वतंत्रता की वकालत करने वाले बड़े बलूच जातीय राष्ट्रवादी आंदोलन के हिस्से के रूप में उभरा।
- BLA बलूच संघर्ष में सबसे स्थायी समूह साबित हुआ है, जो सात दशकों से अधिक समय तक चला है। इसकी उत्पत्ति ऐतिहासिक रूप से मरी, बुगती और मंगल कबीलों जैसे शक्तिशाली बलूच जनजातियों द्वारा समर्थित उग्रवादी परंपराओं से हुई है।

- लगभग 6,000 सक्रिय लड़ाकों के साथ, BLA मुख्य रूप से बलूचिस्तान और अफ़गानिस्तान सीमा पर सक्रिय है।
- शीत युद्ध के दौरान मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर, इसके कुछ पिछले नेताओं ने सोवियत संघ में प्रशिक्षण प्राप्त किया। अपनी क्रांतिकारी जड़ों को बनाए रखते हुए, BLA ने युवा लड़ाकों को शामिल करने के लिए स्वयं को ढाल लिया है।
- इस समूह को 2006 में पाकिस्तान द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था, और 2019 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा एक वैश्विक आतंकवादी संगठन नामित किया गया था।
- **मजीद ब्रिगेड:** BLA के भीतर एक आत्मघाती दस्ता इकाई जो फिदायीन शैली के हमलों के लिए जानी जाती है।
- **बलूच छात्र संगठन (BSO):** BLA की छात्र शाखा, जो अक्सर वैचारिक लामबंदी और भर्ती में शामिल होती है।

### बलूच विद्रोह के कारण:

- **संसाधन शोषण:** बलूचिस्तान क्षेत्रफल के हिसाब से पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत है, लेकिन इसकी आबादी बहुत कम है। तेल, गैस, तांबा और सोने के विशाल भंडार के बावजूद, प्रांत अविकसित बना हुआ है।
- **आर्थिक उपेक्षा:** बलूच विद्रोहियों का तर्क है कि केंद्र सरकार स्थानीय आबादी को उचित लाभ दिए बिना प्रांत के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करती है।
- **जातीय हाशिए पर:** बलूच नेता पंजाबी-प्रभुत्व वाली सरकार पर बलूच आवाजों और अधिकारों को दुरकिनार करने का आरोप लगाते हैं।
- **ऐतिहासिक शिकायतें:**
  - विभाजन के बाद, बलूचिस्तान पाकिस्तान के साथ एक संधि के माध्यम से मार्च 1948 तक स्वतंत्र रहा।
  - कलात के खान, प्रमुख आदिवासी नेता, स्वतंत्र रहना चाहते थे, लेकिन उन पर विलय के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने का दबाव डाला गया।
  - बलूच आबादी के कुछ हिस्सों में आज़ादी की चाहत बनी हुई है।
- **विदेशी संलिप्तता के आरोप:** पाकिस्तान ने बार-बार भारत पर बलूच विद्रोहियों का समर्थन करने का आरोप लगाया है - एक ऐसा आरोप जिसका भारत ने स्पष्ट रूप से खंडन किया है।

### बलूच विद्रोह का सीपीईसी पर प्रभाव

- **सुरक्षा जोखिमों में वृद्धि:**
  - **उग्रवादी गतिविधि और विद्रोही अभियान:** उग्रवादी गतिविधि में वृद्धि सीधे तौर पर पाकिस्तानी सुरक्षा बलों और सीपीईसी परियोजनाओं में शामिल चीनी कर्मियों को निशाना बनाती है, जिससे गलियारे की स्थिरता कमज़ोर होती है।
  - **सतत ख़तरा वातावरण:** लगातार हमले, न केवल बलूचिस्तान में बल्कि कराची जैसे प्रमुख आर्थिक केंद्रों में भी फैल रहे हैं, जिससे पाकिस्तानी अधिकारियों को अपने पहले से ही तनावपूर्ण संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा सुरक्षा के लिए आवंटित करने के लिए मजबूर होना पड़ा है।
- **रुकी हुई परियोजनाएँ और धीमी होती निवेश गति:**
  - बलूच विद्रोह ने चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) की प्रमुख परियोजनाओं को धीमा या रोक दिया है, जिससे सीधा आर्थिक प्रभाव पड़ा है।
  - पाकिस्तान को सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाने के लिए अत्यधिक परिचालन लागत वहन करनी पड़ी है।

### • भू-राजनीतिक और रणनीतिक संकट:

- **चीन-पाकिस्तान संबंधों में तनाव:** सुरक्षा विफलताओं के दोहराव ने चीनी अधिकारियों को यह स्पष्ट रूप से कहने पर मजबूर किया है कि भविष्य में निवेश तभी होगा जब पाकिस्तान में सुरक्षा और राजनीतिक माहौल में ठोस सुधार होगा।
- **रणनीतिक मूल्य का पुनर्मूल्यांकन:** निरंतर अस्थिरता ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) में पाकिस्तान की दीर्घकालिक रणनीतिक उपयोगिता को लेकर बहस छेड़ दी है।

### • सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव:

- **स्थानीय असंतोष और बहिष्कार की भावना:** बलूच समुदाय खुद को परियोजनाओं से वंचित और शोषित महसूस करता है। चीनी परियोजनाओं को वे बाहरी प्रभुत्व के साधन के रूप में देखते हैं, जिससे विद्रोह को और बल मिलता है और समावेशी विकास की संभावनाएँ क्षीण हो जाती हैं।
- **नीति में असंगति और रणनीतिक गतिरोध:** पाकिस्तान के भीतर विद्रोह से निपटने को लेकर नीति में स्पष्ट विभाजन है — कुछ नेता कड़ी सैन्य कार्रवाई की मांग करते हैं, जबकि अन्य नरम पुलिस-प्रधान दृष्टिकोण को अपनाने के पक्ष में हैं।

बलूच विद्रोह पाकिस्तान की आंतरिक स्थिरता और उसकी रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं, खास तौर पर सीपीईसी की सफलता के लिए एक जटिल चुनौती है। राजनीतिक संवाद, आर्थिक समावेशन और स्थानीय स्वायत्तता के सम्मान के माध्यम से लंबे समय से चली आ रही शिकायतों का समाधान करना बलूचिस्तान में स्थायी शांति के लिए महत्वपूर्ण है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा हेतु संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह एक पृथकतावादी समूह है जो मुख्य रूप से बलूचिस्तान की स्वतंत्रता के लिए पाकिस्तानी सरकार के साथ राजनीतिक वार्ता और संवाद के माध्यम से प्रयास करता है।
2. इसे पाकिस्तान, चीन और अमेरिका द्वारा एक आतंकी संगठन के रूप में सूचीबद्ध किया जा चुका है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) दोनों 1 और 2 (d) न तो 1 और न ही 2

(P) : 2024

### एनबीएफसी को बैंक ऋणों का जोखिम भार

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) को उनकी क्रेडिट रेटिंग के आधार पर बैंक ऋण पर जोखिम भार को 25 प्रतिशत तक कम करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम की घोषणा की।

#### निर्णय की मुख्य विशेषताएं

- इस कदम का उद्देश्य बैंकों से एनबीएफसी को ऋण का प्रवाह बढ़ाना है।
- यह ऐसे समय में आया है जब एनबीएफसी को बैंक ऋण देने में भारी कमी आई है, जो चार साल के निचले स्तर पर पहुंच गया है।
- संशोधित नियम तब लागू होते हैं जब एनबीएफसी की बाहरी क्रेडिट रेटिंग के आधार पर जोखिम भार 100% से कम होता है।
- इसका लक्ष्य ऋण देने को बढ़ावा देना, वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना और एनबीएफसी क्षेत्र को पुनर्जीवित करना है, जो खुदरा ऋण वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

#### “जोखिम भार” क्या है?

- बैंकिंग में, जोखिम भार एक प्रतिशत है जिसका उपयोग यह गणना करने के लिए किया जाता है कि बैंक को अपने ऋणों के लिए कितनी पूंजी अलग रखनी चाहिए, यह इस बात पर आधारित है कि वे कितने जोखिम भरे हैं।
- उच्च जोखिम भार = अधिक पूंजी की आवश्यकता → ऋण महंगा हो जाता है।
- कम जोखिम भार = कम पूंजी की आवश्यकता → ऋण सस्ता और देना आसान हो जाता है।
- जोखिम भार को कम करके, RBI बैंकों को अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता के बिना अधिक पैसा उधार देने की अनुमति देता है, जिससे उन्हें एनबीएफसी को अधिक उधार देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

#### इसकी आवश्यकता क्यों थी?

- RBI के हालिया डेटा से पता चलता है कि 2024 में एनबीएफसी को दिए जाने वाले ऋण में वृद्धि घटकर मात्र 6.7% रह गई, जो पिछले चार सालों में सबसे कम है।
- इसका मुख्य कारण यह है:
  - ऋण मानदंडों में सख्ती, तथा
  - उच्च जोखिम भार, जिससे बैंकों के लिए एनबीएफसी को दिए जाने वाले ऋण अधिक महंगे हो गए।
- परिणामस्वरूप, बैंक सतर्क हो गए और एनबीएफसी को ऋण देना कम कर दिया।
- इससे पहले, एनबीएफसी ने मजबूत ऋण वृद्धि देखी थी, लेकिन वर्तमान आर्थिक दबावों ने वित्तपोषण को और अधिक कठिन बना दिया।
- जोखिम भार में कमी से इस प्रवृत्ति के उलट होने की संभावना है।
  - एनबीएफसी के लिए ऋण लेना सस्ता हो जाएगा, तथा
  - उन्हें खुदरा क्षेत्र (जैसे आवास, ऑटो, व्यक्तिगत ऋण आदि) को अधिक ऋण देने की अनुमति मिलेगी।

#### एनबीएफसी क्या हैं?

एनबीएफसी (गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ) वित्तीय संस्थाएँ हैं जो:

- कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत पंजीकृत हैं, और
- ऋण, पट्टे, किराया खरीद, निवेश और बीमा जैसी वित्तीय सेवाएँ प्रदान करती हैं।

**हालाँकि, वे बैंक नहीं हैं। मुख्य अंतर ये हैं:**

विशेषता	बैंक	एनबीएफसी
मांग जमा स्वीकार करना	☑ हाँ	☒ नहीं
चेक जारी करना	☑ हाँ	☒ नहीं
भुगतान प्रणाली का हिस्सा	☑ हाँ	☒ नहीं
जमा बीमा (DICGC)	☑ हाँ	☒ नहीं

एनबीएफसी को आरबीआई और कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय दोनों द्वारा विनियमित किया जाता है।

एनबीएफसी के प्रकारों में शामिल हैं:

- जमा लेने वाली और जमा न लेने वाली एनबीएफसी
- व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी (एनबीएफसी-एनडीएसआई),
- विशिष्ट व्यवसायों में लगे एनबीएफसी (जैसे माइक्रोफाइनेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस, आदि)

एनबीएफसी हालाँकि वे बचत या चालू खाते की पेशकश नहीं कर सकते हैं, एनबीएफसी बैंकों की तरह उधार देते हैं और निवेश करते हैं, जिससे वे ऋण वितरण के लिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं, खासकर कम सेवा वाले क्षेत्रों में।

#### RBI के निर्णय का प्रभाव

- **पूंजी दक्षता:** बैंकों को अब उच्च रेटिंग वाली एनबीएफसी को ऋण देने के लिए कम पूंजी रखने की आवश्यकता होगी, जिससे उनकी पूंजी पर्याप्तता अनुपात में सुधार होगा।
- **ऋण देने को बढ़ावा:** एनबीएफसी को सस्ते फंड मिलेंगे, जिससे वे अपनी ऋण पुस्तिकाओं का विस्तार कर सकेंगे।
- **खुदरा ऋण को बढ़ावा:** एनबीएफसी अक्सर खुदरा क्षेत्रों (आवास, ऑटो, शिक्षा, आदि) को ऋण देते हैं, इसलिए अर्थव्यवस्था में ऋण प्रवाह में सुधार होगा।
- **आर्थिक विकास के लिए समर्थन:** अधिक ऋण का अर्थ है खपत और निवेश में वृद्धि, जिससे अर्थव्यवस्था को बढ़ने में मदद मिलेगी।

#### निष्कर्ष

एनबीएफसी को दिए जाने वाले ऋणों पर जोखिम भार कम करने का RBI का कदम समय पर उठाया गया नीतिगत कदम है। इससे उम्मीद की जाती है कि:

- एनबीएफसी के लिए उधार लेने की लागत कम होगी,
- उनकी वित्तीय सेहत में सुधार होगा, और

- अर्थव्यवस्था में ऋण प्रवाह को पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी, खासकर खुदरा और एमएसएमई क्षेत्रों में।

इससे न केवल वित्तीय स्थिरता मजबूत होगी बल्कि देश भर में छोटे ऋणदाताओं और उधारकर्ताओं को सशक्त बनाकर समावेशी आर्थिक विकास में भी मदद मिलेगी।

### यूपीएससी सिविली सेवा परीक्षा प्रश्न के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. ऋण के जोखिम भार में वृद्धि बैंक की विनियामक पूंजी आवश्यकता को कैसे प्रभावित करती है?

- (a) यह पूंजी आवश्यकता को कम करता है
- (b) यह पूंजी आवश्यकता को बढ़ाता है
- (c) इसका पूंजी आवश्यकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है
- (d) इन में से कोई नहीं

(9) : 2018

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम भार की भूमिका की जांच करें और विश्लेषण करें कि एनबीएफसी ऋणों के लिए जोखिम भार में कमी वित्तीय स्थिरता में कैसे योगदान दे सकती है। [150 शब्द] [10 अंक]

## क्रिएटर इकॉनमी को समर्थन देने के लिए एक बिलियन डॉलर का फंड

**चर्चा में क्यों:** भारत सरकार ने देश में क्रिएटर इकॉनमी को समर्थन और मजबूत करने के लिए 1 बिलियन डॉलर के फंड की घोषणा की है। इस पहल का उद्देश्य डिजिटल कंटेंट क्रिएटर्स के लिए पूंजी, कौशल विकास और वैश्विक बाजारों के साथ एकीकरण तक पहुँच प्रदान करना है।

### क्रिएटर इकॉनमी क्या है?

क्रिएटर इकॉनमी एक तेजी से बढ़ते डिजिटल इकोसिस्टम को संदर्भित करती है जहाँ व्यक्ति - जैसे कि प्रभावशाली व्यक्ति, कलाकार, शिक्षक, मनोरंजनकर्ता और लेखक - ऑनलाइन कंटेंट बनाते और साझा करते हैं और अपने दर्शकों से सीधे कमाते हैं।

### मुख्य विशेषताएँ

- क्रिएटर व्यक्तिगत ब्रांड बनाते हैं और अपने कंटेंट से कमाई करने के लिए YouTube, Instagram, TikTok, Patreon आदि जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं।
- वे पारंपरिक मीडिया कंपनियों या प्रोडक्शन हाउस को दरकिनार कर देते हैं और इसके बजाय सीधे अपने फॉलोअर्स से जुड़ते हैं।
- यह एक विकेन्द्रीकृत, व्यक्ति-संचालित अर्थव्यवस्था है जिसमें प्रवेश की बाधाएँ कम हैं, जो इसे युवा उद्यमियों के लिए आदर्श बनाती हैं।

### क्रिएटर कैसे कमाते हैं?

क्रिएटर के पास आय के कई स्रोत होते हैं, जैसे:

आय स्रोत	विवरण
विज्ञापन राजस्व	यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म व्यूज़ और सहभागिता के आधार पर क्रिएटर्स के साथ विज्ञापन राजस्व साझा करते हैं।
ब्रांड साझेदारी	प्रायोजित सामग्री या अभियानों के माध्यम से उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कंपनियों के साथ सहयोग।
प्रत्यक्ष समर्थन	पैट्रियन जैसे प्लेटफॉर्म प्रशंसकों को सदस्यता या दान के माध्यम से रचनाकारों का समर्थन करने की अनुमति देते हैं।
माल और उत्पाद	निर्माता भौतिक वस्तुएं (जैसे, टी-शर्ट, मग) या डिजिटल सामान (ई-पुस्तकें, पाठ्यक्रम) बेचते हैं।
फ्रीलांस और परामर्श	क्रिएटर्स स्पीकिंग गिग्स, वर्कशॉप या प्रोजेक्ट कंसल्टेंसी के जरिए अपने कौशल का मुद्रीकरण करते हैं

### भारत क्रिएटर इकॉनमी पर क्यों ध्यान केंद्रित कर रहा है?

क्रिएटर इकॉनमी के लिए भारत का प्रयास रणनीतिक और बहुआयामी है, जो आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों लक्ष्यों से प्रेरित है।

#### सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी

- भारतीय क्रिएटर और प्रभावशाली लोग वैश्विक स्तर पर भारत की संस्कृति और छवि को बढ़ावा देने में बॉलीवुड जैसी भूमिका निभा रहे हैं।
- सोशल मीडिया क्रिएटर अब ब्रांडिंग और सार्वजनिक कूटनीति के लिए महत्वपूर्ण हैं, खासकर युवाओं के बीच।

#### रोजगार सृजन:

- सामग्री निर्माण उद्योग में विविध क्षेत्रों में स्वरोजगार और नौकरी के अवसर पैदा करने की अपार संभावनाएं हैं जैसे:
  - फैशन
  - भोजन और यात्रा

➤ फिटनेस और वित्त

➤ गेमिंग और शिक्षा

#### भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना

- क्रिएटर डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वैश्विक दर्शकों के लिए भारत के पारंपरिक ज्ञान, कला, शिल्प और विरासत को प्रदर्शित कर सकते हैं।

#### नए उपभोग रूझान

- शॉर्ट-फॉर्म वीडियो ऐप और प्रभावशाली मार्केटिंग खासकर गैर-मेट्रो शहरों और ग्रामीण भारत में तेजी से बढ़ रहे हैं, जो सामग्री उपभोग को फिर से परिभाषित कर रहे हैं।
- FMCG, ऑटोमोबाइल और तकनीकी क्षेत्रों के ब्रांड लक्षित मार्केटिंग के लिए डिजिटल क्रिएटर का उपयोग कर रहे हैं।

**विकेंद्रीकृत नवाचार श्रंशान**

- रचनात्मकता अब केवल महानगरों तक सीमित नहीं है। गुवाहाटी, इंदौर और कोच्चि जैसे शहर रचनात्मक केंद्र बन रहे हैं, जो क्षेत्रीय आवाजों को सशक्त बना रहे हैं।

**भारत में क्रिएटर इकोनॉमी को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल**

- **वेक्स बाज़ार:** सरकार ने वर्ल्ड ऑडियो विजुअल और एंटरटेनमेंट समिट (वेक्स) की अगुवाई में वेक्स बाज़ार लॉन्च किया है। एक वैश्विक ई-मार्केटप्लेस, वेक्स बाज़ार एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जिसे भारत के विशाल क्रिएटिव टैलेंट पूल को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों से जोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है ताकि वे अपनी सामग्री प्रदर्शित कर सकें, प्रोजेक्ट पेश कर सकें और भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए सार्थक कनेक्शन बना सकें।
- **वेक्स पुरस्कार:** गेम ऑफ़ द ईयर, फ़िल्म ऑफ़ द ईयर और एडवरटाइजिंग कैम्पेन ऑफ़ द ईयर जैसी श्रेणियों में पुरस्कारों के साथ क्रिएटिव क्षेत्रों में उत्कृष्टता को मान्यता देता है।
- **क्रिएट इन इंडिया चुनौती:** यह चुनौती उभरते क्रिएटर्स को वित्तीय प्रोत्साहन और एक्सपोज़र प्रदान करके विविध क्षेत्रों में स्थानीय कंटेंट निर्माण को प्रोत्साहित करती है।
- **इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ क्रिएटिव टेक्नोलॉजी (IICT):** हाल ही में, भारत सरकार ने कंटेंट क्रिएटर्स, डिजिटल आर्टिस्ट और क्रिएटिव उद्यमियों को प्रशिक्षित करने के लिए एक संस्थान बनाने का प्रस्ताव दिया है। संस्थान एआई, एआर/वीआर, गेमिंग, एनीमेशन और डिजिटल स्टोरीटेलिंग पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- **राष्ट्रीय सामग्री निर्माता पुरस्कार:** यह विभिन्न क्षेत्रों में शीर्ष प्रदर्शन करने वाले डिजिटल रचनाकारों को मान्यता देता है और उन्हें पुरस्कार देता है, और इसका उद्देश्य भारत को रचनाकार अर्थव्यवस्था में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करना है।

**क्रिएटर इकोनॉमी सिर्फ़ एक गुज़रती हुई प्रवृत्ति नहीं है - यह भारत की डिजिटल उद्यमशीलता की भावना का प्रतिनिधित्व करती है।** फंडिंग, प्रशिक्षण और वैश्विक प्रदर्शन के ज़रिए मज़बूत सरकारी समर्थन के साथ, भारत का लक्ष्य है:

- लाखों युवा डिजिटल क्रिएटर्स को सशक्त बनाना।
- विश्व मंच पर अपनी सांस्कृतिक छाप को मज़बूत करना।
- क्रिएटिव सेक्टर के ज़रिए समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।

क्रिएटर इकोनॉमी में भारत का अरबों डॉलर का निवेश एक ऐसे भविष्य को आकार दे सकता है जहाँ रचनात्मकता, नवाचार और तकनीक मिलकर समाज के सभी स्तरों पर नए अवसरों को खोल सकें।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. भारत में निर्माता अर्थव्यवस्था के महत्व पर चर्चा करें और निर्माता अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में सरकारी पहल की भूमिका की जांच करें। [150 शब्द] [10 अंक]

**भारत में निर्धनता का अनुमान**

**चर्चा में क्यों:** 2022-23 और 2023-24 के घरेलू व्यय डेटा पर आधारित एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि भारत में निर्धनता और असमानता में नाटकीय गिरावट आई है:

- भारत में अत्यधिक निर्धनता लगभग समाप्त हो गई है।

- असमानता में उल्लेखनीय गिरावट आई है।

**रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं**

- **निर्धनता में कमी:**
    - विश्व बैंक की \$3.65 (पीपीपी) निर्धनता रेखा के आधार पर भारत की निर्धनता दर 2011-12 में 52% से गिरकर 2023-24 में केवल 15.1% रह गई है।
    - \$1.90 पीपीपी की निचली अत्यधिक निर्धनता रेखा पर, निर्धनता दर अब 1% से नीचे है।
  - **घटती असमानता:**
    - आय असमानता का एक माप, गिनी गुणांक, 37.5 (2011-12) से गिरकर 29.1 (2023-24) हो गया है।
  - **नीति अनुशंसा:**
    - अत्यधिक निर्धनता लगभग समाप्त हो जाने के बाद, अब ध्यान मध्यम वर्ग को मजबूत बनाने और उसका विस्तार करने पर केंद्रित होना चाहिए। निर्धनता को समझना
  - **निर्धनता को समझना:**
- परिभाषा:** निर्धनता से तात्पर्य बुनियादी भौतिक और गैर-भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थता से है, जैसे:
- **भौतिक:** भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा।
  - **गैर-भौतिक:** पहचान, सम्मान और समाज में भागीदारी।
- **भारतीय संदर्भ:**
    - योजना आयोग के अनुसार, निर्धनता रेखा न्यूनतम कैलोरी सेवन पर आधारित है:
      - ◆ ग्रामीण क्षेत्रों में 2400 कैलोरी/दिन
      - ◆ शहरी क्षेत्रों में 2100 कैलोरी/दिन

**नीति आयोग के निष्कर्ष (2023)**

- **रिपोर्ट:** 2005-06 से भारत में बहुआयामी निर्धनता
- 2013-14 और 2022-23 के बीच 24.82 करोड़ लोग बहुआयामी निर्धनता से बाहर निकले।
- निर्धनता की दर में कमी आई:
  - 10.66% वार्षिक (2015-16 से 2019-21),
  - 7.69% वार्षिक (2005-06 से 2015-16) की तुलना में।
- भारत 2030 से पहले निर्धनता को कम करने के अपने सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

**भारत में निर्धनता आकलन के लिए गठित विभिन्न समितियाँ**

- **योजना आयोग कार्य समूह (1962):** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए क्रमशः 20 रुपये और 25 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति साल।
- **अलघ समिति (1979):** ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए प्रतिदिन 2400 और 2100 कैलोरी के साथ-साथ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए क्रमशः 49.1 रुपये और 56.7 रुपये की पोषण संबंधी आवश्यकताओं के आधार पर निर्धनता रेखा का निर्माण किया।
- **लकड़ावाला समिति (1993): निम्नलिखित सुझाव दिए:**
  - उपभोग व्यय की गणना पहले की तरह कैलोरी खपत के आधार पर की जानी चाहिए;

- राज्य-विशिष्ट निर्धनता रेखाएँ बनाई जानी चाहिए, और इन्हें शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI-IW) और ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI-AL) का उपयोग करके अद्यतन किया जाना चाहिए; और
  - राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के आधार पर निर्धनता अनुमानों के 'स्केलिंग' को बंद करना।
  - **तेंदुलकर समिति (2009):** इसने चार प्रमुख बदलावों की अनुशंसा की:
    - कैलोरी खपत-आधारित निर्धनता अनुमान से दूर जाना;
    - ग्रामीण और शहरी भारत में एक समान निर्धनता रेखा टोकरी (पीएलबी);
    - अस्थायी और स्थानिक मूल्य समायोजन समस्याओं को संबोधित करने के लिए मूल्य समायोजन प्रक्रिया में बदलाव; और
    - निर्धनता के अनुमान में निजी स्वास्थ्य और शिक्षा खर्च को शामिल करना।
- 2004-05 में यह निर्धारित किया गया था कि ग्रामीण भारत में निर्धनता रेखा 446.68 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह थी, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 578.80 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह थी।
- **रंगराजन समिति (2012):** रिपोर्ट में निर्धनता रेखा का अनुमान शहरी क्षेत्रों में 1407 रुपये और ग्रामीण क्षेत्रों में 972 रुपये प्रति व्यक्ति मासिक व्यय के रूप में लगाया गया है।

### नई निर्धनता रेखा की आवश्यकता

- अध्ययन में तर्क दिया गया है कि पुराने उपायों पर आधारित भारत की वर्तमान निर्धनता रेखाएँ अब आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती हैं।
- यह एक नया निर्धनता मानदंड अपनाने का सुझाव देता है, जैसे
  - **उपभोग के 33वें प्रतिशत के आधार पर सापेक्ष निर्धनता रेखा:** एक निश्चित निर्धनता रेखा का उपयोग करने के बजाय, सापेक्ष निर्धनता रेखा को परिभाषित करने के लिए जनसंख्या के निचले 33वें प्रतिशत के व्यय स्तर का उपयोग करना।
  - **आय के आधार पर सापेक्ष निर्धनता रेखा:** यूरोप की तरह एक सापेक्ष निर्धनता उपाय को अपनाना, जहाँ निर्धनता को औसत आय के 60 प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया गया है।
- इसमें कोई संदेह नहीं है कि HCES का उपयोग करने की तुलना में निर्धनता का अनुमान लगाने के अधिक सटीक तरीके हैं।
- सबसे पहले, HCES आँकड़े, जो स्वैच्छिक या स्व-रिपोर्ट किए गए हैं, बेहद गलत हैं। भारत में, सबसे अमीर लोगों के पास बहिष्कार और कराधान से बचने का मकसद होता है, जबकि गरीबों के पास सरकारी सहायता (आरोप) को कम करके दिखाने या झूठ बोलने का प्रोत्साहन होता है ताकि वे अधिक से अधिक प्राप्त कर सकें।
- दूसरा, राजस्व पर आँकड़े इकट्ठा करना शुरू करने का समय आ गया है। आय के स्तर और परिणामस्वरूप निर्धनता की अधिक व्यापक समझ प्राप्त करने के लिए, इस डेटा को आयकर रिटर्न (आईटीआर), डिजिटल लेनदेन, संपत्ति कर, के साथ बढ़ाया जा सकता है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: निम्नलिखित समितियों के गठन की व्यवस्था करें भारत में निर्धनता का सही कालानुक्रमिक आकलन उनके गठन का क्रम:

1. तेंदुलकर समिति
2. अलघ समिति
3. लकड़ावाला समिति
4. रंगराजन समिति

### निचे दिये गए कोड का उपयोग कर सही विकल्प चुने:

- (a) 1-3-4-2 (b) 2-3-1-4  
(c) 2-4-1-3 (d) 3-2-1-4

(9) 222

### आईआरसीटीसी और आईआरएफसी को नवरत्न का दर्जा

**चर्चा में क्यों:** केंद्र सरकार ने भारतीय रेलवे खानपान और पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) और भारतीय रेलवे वित्त निगम (आईआरएफसी) को नवरत्न का दर्जा दिया है, जिससे वे देश के 25वें और 26वें नवरत्न सीपीएसई बन गए हैं। यह उनकी वित्तीय ताकत और परिचालन प्रदर्शन की एक महत्वपूर्ण मान्यता है।

#### रत्न दर्जा क्या है?

रत्न वर्गीकरण एक मान्यता प्रणाली है जिसका उपयोग भारतीय सरकार द्वारा CPSE (केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम) को उनके वित्तीय प्रदर्शन, रणनीतिक महत्व और स्वायत्तता के आधार पर वर्गीकृत करने के लिए किया जाता है।

#### इस वर्गीकरण के अंतर्गत तीन श्रेणियाँ हैं:

1. महारत्न - शीर्ष-स्तरीय
2. नवरत्न - मध्य-स्तरीय
3. मिनीरत्न - प्रवेश-स्तर

#### नवरत्न दर्जा क्या है?

नवरत्न दर्जा उच्च प्रदर्शन करने वाले CPSE को दिया जाता है जिन्हें पहले से ही मिनीरत्न श्रेणी-I का दर्जा प्राप्त करते हैं। यह वित्त मंत्रालय के तहत सार्वजनिक उद्यम विभाग (DPE) द्वारा दिया जाता है।

#### पालता मानदंड:

#### नवरत्न दर्जा पाने के लिए, CPSE को:

- मिनीरत्न श्रेणी-I कंपनी होना चाहिए।
- अनुसूची 'A' CPSE के रूप में वर्गीकृत होना चाहिए।
- पिछले पांच सालों में से कम से कम तीन सालों के लिए "उत्कृष्ट" या "बहुत अच्छा" MoU रेटिंग प्राप्त की हो।
- निम्नलिखित छह संकेतकों में प्रदर्शन के आधार पर 100 में से कम से कम 60 अंक प्राप्त करें:

संकेतक	भारंश (%)
निवल लाभ का निवल संपत्ति से अनुपात	25%
मानव संसाधन लागत का कुल उत्पादन या सेवा लागत से अनुपात	15%
मूल्यहास, ब्याज और कर से पहले लाभ (PBDIT) का निवेश पूंजी या पूंजी पर प्रतिफल से अनुपात	15%

ब्याज और कर से पहले लाभ (PBIT) का कारोबार से अनुपात	15%
प्रति शेयर आय (Earnings per Share - EPS)	10%
कंपनी का अंतर-क्षेत्रीय प्रदर्शन	20%

- **नवरत्न दर्जे के लाभ**
  - **बढ़ी हुई वित्तीय स्वायत्तता:** सरकारी मंजूरी के बिना परियोजनाओं में ₹1,000 करोड़ या नेटवर्थ का 15% तक निवेश करना।
  - **परिचालन स्वतंत्रता:** संयुक्त उद्यम, सहायक कंपनियों बनाएं और स्वतंत्र रूप से विलय/अधिग्रहण करना।
  - **वैश्विक विस्तार:** अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश करें, गठबंधन करें और नौकरशाही बाधाओं को कम करना।
  - **प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त:** निजी क्षेत्र की फर्मों को टक्कर देने के लिए व्यावसायिक निर्णय लेना।
  - **निवेशक विश्वास:** कथित वित्तीय स्थिरता और शासन के माध्यम से निवेश आकर्षित करना।
  - **उच्च शेयरधारक रिटर्न:** रणनीतिक निवेश और वैश्विक उपक्रमों के माध्यम से बेहतर लाभ प्रदान करना।
  - **सुव्यवस्थित शासन:** न्यूनतम नौकरशाही देरी के साथ परियोजनाओं का तीव्र निष्पादन।
  - **ब्रांड विश्वसनीयता:** वित्तीय रूप से मजबूत इकाई के रूप में बाजार की प्रतिष्ठा को मजबूत करना।

**महारत्न का दर्जा: शीर्ष स्तरीय मान्यता**  
**महारत्न बनने के लिए मानदंड:**  
 CPSE को निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना होगा:

- नवरत्न का दर्जा होना चाहिए।

- SEBI के मानदंडों के अनुसार न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता के साथ भारतीय स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होना चाहिए।
- **होना आवश्यक है:**
  - औसत वार्षिक कारोबार ₹25,000 करोड़ से अधिक (पिछले 3 साल)।
  - औसत वार्षिक निवल संपत्ति ₹15,000 करोड़ से अधिक (पिछले 3 साल)।
  - कर के बाद औसत वार्षिक शुद्ध लाभ ₹5,000 करोड़ से अधिक (पिछले 3 साल)।
- महत्वपूर्ण वैश्विक उपस्थिति या अंतरराष्ट्रीय संचालन होना चाहिए।

**महारत्न CPSE को और भी अधिक स्वायत्तता प्राप्त है:**

- सरकार की मंजूरी के बिना ₹5,000 करोड़ या अपनी निवल संपत्ति का 15% तक निवेश कर सकते हैं।

**मिनीरत्न स्थिति: फाउंडेशन टियर**  
 मिनीरत्न को लाभप्रदता और वित्तीय अनुशासन के आधार पर श्रेणी-I और श्रेणी-II में विभाजित किया जाता है।

- मिनीरत्न श्रेणी-I:**
- पिछले 3 लगातार सालों से लाभ कमाया हो।
  - उन तीन सालों में से कम से कम एक साल में 30 करोड़ रुपये या उससे अधिक का कर-पूर्व लाभ होना चाहिए।
  - सकारात्मक निवल संपत्ति होनी चाहिए।

- मिनीरत्न श्रेणी-II:**
- पिछले 3 लगातार सालों से लाभ कमाया हो।
  - सकारात्मक निवल संपत्ति बनाए रखनी चाहिए।

- अतिरिक्त शर्तें:**
- सरकार को देय ऋण या ब्याज भुगतान में चूक नहीं होनी चाहिए।
  - बजटीय सहायता या सरकारी गारंटी पर निर्भर नहीं होना चाहिए।

महारत्न, नवरत्न और मिनीरत्न सीपीएसई के कुछ उदाहरण			
महारत्न CPSEs	नवरत्न CPSEs	मिनीरत्न 1 CPSEs	मिनीरत्न 2 CPSEs
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड	भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड
कोल इंडिया लिमिटेड	रेल विकास निगम लिमिटेड	एंट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड	कृत्रिम अंग निर्माण भारतीय निगम
गेल इंडिया लिमिटेड	मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड	भारत डायनेमिक्स लिमिटेड	ब्रॉडकास्ट इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स इंडिया लिमिटेड
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड	सेंट्रल वेयरहाउसिंग कॉर्पोरेशन	बीईएमएल लिमिटेड	मेकॉन लिमिटेड

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**  
**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**  
 प्रश्न. नवरत्न स्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. नौ केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (CPSE) हैं जिन्हें नवरत्न का दर्जा दिया गया है।

2. प्रति शेयर आय और शुद्ध लाभ का शुद्ध मूल्य से अनुपात ऐसे संकेतक हैं जिन्हें नवरत्न का दर्जा देने के लिए CPSE को चुना जाता है।  
 उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?  
 (a) केवल 1 (b) केवल 2  
 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2  
 (q) २५६

## भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने घोषणा की कि भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था आने वाले सालों में लगभग पाँच गुना बढ़कर \$8 बिलियन से \$44 बिलियन हो जाएगी। इस वृद्धि से भारत के आर्थिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की उम्मीद है, जो कि विकसित भारत @2047 के विजन के तहत है।

### अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था क्या है?

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) के अनुसार, अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था

में ऐसी सभी गतिविधियाँ और संसाधनों का उपयोग शामिल है जो अंतरिक्ष की खोज, शोध, समझ, प्रबंधन और उपयोग की प्रक्रिया में मनुष्यों के लिए मूल्य और लाभ उत्पन्न करते हैं।

- इसमें उपग्रहों और प्रक्षेपण वाहनों के निर्माण से लेकर मौसम पूर्वानुमान, GPS और दूरसंचार जैसी उपग्रह-आधारित सेवाएँ प्रदान करने तक सब कुछ शामिल है।
- अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था परिवहन, कृषि, रक्षा, शिक्षा और आपदा प्रबंधन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

## भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था: मुख्य विशेषताएँ

पहलू	विवरण
वर्तमान मूल्यांकन	~\$8.4 बिलियन
वैश्विक हिस्सेदारी	वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का ~2%
लक्ष्य (2033)	11 बिलियन डॉलर के निर्यात और 8% वैश्विक हिस्सेदारी के साथ 44 बिलियन डॉलर तक वृद्धि
रोज़गार	96,000+ नौकरियों को सीधे समर्थन देता है
उत्पादकता	अंतरिक्ष क्षेत्र का कार्यबल औसत भारतीय उद्योग कार्यबल की तुलना में 2.5 गुना अधिक उत्पादक है
विश्व रैंकिंग	अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था वित्तपोषण के मामले में 8वां सबसे बड़ा
क्षेत्रवार हिस्सा	उपग्रह संचार (54%), नेविगेशन (26%), प्रक्षेपण (11%)
बजट वृद्धि	₹5,615 करोड़ (2013-14) से बढ़कर ₹13,416 करोड़ (2025-26)
विदेशी मुद्रा आय	इसरो द्वारा ₹433 विदेशी उपग्रह प्रक्षेपित कर €292 मिलियन और \$172 मिलियन की कमाई की गई

### अंतरिक्ष क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रमुख पहल

#### 1. अंतरिक्ष विजन 2047:

- 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) की स्थापना।
- 2040 तक चंद्रमा पर एक भारतीय अंतरिक्ष यान को उतारना।
- 2032 तक अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण यान (NGLV) का विकास।

#### 2. भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023:

- निजी खिलाड़ियों (गैर-सरकारी संस्थाएँ - NGE) के लिए समान अवसर प्रदान करना।
- ISRO, IN-SPACe, NSIL और निजी क्षेत्र की भूमिकाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना।

#### 3. ₹1000 करोड़ का वेंचर कैपिटल फंड:

- अंतरिक्ष आधारित स्टार्टअप में निवेश को बढ़ावा देना।

#### 4. भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe):

- अंतरिक्ष में निजी भागीदारी के लिए एक विनियामक और प्रचार निकाय के रूप में कार्य करता है।

#### 5. FDI नीति सुधार:

- अंतरिक्ष के विभिन्न क्षेत्रों में 100% तक FDI की अनुमति देता है क्षेत्र:
  - ◆ घटक निर्माण में 100% तक।
  - ◆ उपग्रह निर्माण और संचालन में 74% तक।

◆ प्रक्षेपण अवसंरचना और अंतरिक्ष बंदरगाहों में 49% तक।

#### 6. भारतीय अंतरिक्ष संघ (आईएसपीए):

- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विकास में निजी क्षेत्र, स्टार्टअप और शिक्षाविदों का समर्थन करने वाला उद्योग निकाय।

#### 7. अटल टिंकरिंग लैब्स - अंतरिक्ष चुनौती:

- STEM क्षेत्रों में छात्रों के बीच अंतरिक्ष शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देता है।

### भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र का आर्थिक और सामरिक महत्व

#### 1. रोजगार सृजन:

- प्रत्यक्ष नौकरियाँ: इंजीनियर, वैज्ञानिक, सॉफ्टवेयर डेवलपर और परियोजना प्रबंधक
- अप्रत्यक्ष नौकरियाँ: रसद, विनिर्माण, डेटा विश्लेषण, पेशेवर सेवाएँ

#### 2. औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा:

- अंतरिक्ष-आधारित नवाचार कई उद्योगों का समर्थन करते हैं। जैसे:
  - दूरसंचार
  - आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स
  - विमानन
  - फार्मास्यूटिकल्स
  - रक्षा

**3. कृषि और सटीक खेती:**

- उपग्रह डेटा मौसम पूर्वानुमान, मिट्टी के स्वास्थ्य की निगरानी और फसल उपज अनुमान लगाने में मदद करता है।

**4. आपदा प्रबंधन:**

- अंतरिक्ष-आधारित रिमोट सेंसिंग बाढ़, चक्रवात, सूखे आदि के लिए प्रारंभिक चेतावनी और राहत योजना का समर्थन करता है।

**5. नेविगेशन और लॉजिस्टिक्स:**

- भारतीय क्षेत्रीय नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (IRNSS/NavIC) रसद और रक्षा के लिए GPS विकल्पों का समर्थन करता है।

**6. विदेशी मुद्रा आय:**

- इसरो के PSLV मिशन के माध्यम से विदेशी ग्राहकों के लिए वाणिज्यिक लॉन्च जारी विदेशी मुद्रा राजस्व उत्पन्न करने के लिए।

**7. उभरता हुआ स्टार्ट-अप इकोसिस्टम:**

- भारत में अब 260 से अधिक अंतरिक्ष स्टार्ट-अप हैं (2014 में केवल 1 से बढ़कर), जिसमें अग्रिकुल कॉसमॉस, स्काईरूट एयरोस्पेस, पिक्सल आदि शामिल हैं।

**8. भविष्य की आर्थिक सीमाएँ:**

- अंतरिक्ष पर्यटन, अंतरिक्ष खनन, उपग्रह सेवा और इनऑर्बिट विनिर्माण भविष्य के लिए नए राजस्व स्रोत हैं।

**निष्कर्ष**

भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र देश के आर्थिक, तकनीकी और रणनीतिक भविष्य में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

स्पष्ट नीति दृष्टि, निजी क्षेत्र की बढ़ती भागीदारी और महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के साथ, भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था केवल रॉकेट और उपग्रहों के बारे में नहीं है - यह समावेशी विकास, नवाचार और राष्ट्रीय गौरव को शक्ति प्रदान करने के बारे में है क्योंकि हम विकसित भारत @2047 की ओर बढ़ रहे हैं।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. आर्थिक वृद्धि और राष्ट्रीय विकास में भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र की भूमिका पर चर्चा करें। अंतरिक्ष उद्योग को मजबूत करने और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकार की पहलों पर प्रकाश डालें। [250 शब्द] [15 अंक]

**मसाला क्षेत्र**

**चर्चा में क्यों:** विश्व मसाला संगठन (WSO) के अनुसार, दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक होने के बावजूद, वैश्विक मसाला बाजार में भारत की हिस्सेदारी केवल 0.7% पर चौकाने वाली रूप से कम बनी हुई है।

**मुख्य विशेषताएं:**

- 2024 में, वैश्विक मसाला बाजार का मूल्य लगभग \$14 बिलियन था।
- भारत का योगदान केवल 0.7% रहा, जो कि निम्न से बहुत पीछे है:
  - चीन – 12%
  - संयुक्त राज्य अमेरिका – 11%

- यह तब है जब भारत वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक माला में मसालों का उत्पादन करता है और कई प्रमुख मसालों का शीर्ष निर्यातक है।

**भारत का मसाला क्षेत्र:**

- **घरेलू खपत:**
  - भारत में उगाए जाने वाले 85% मसालों की खपत देश में ही की जाती है।
- **निर्यात:**
  - भारत सालाना 1.5 मिलियन टन मसालों का निर्यात करता है।
  - **मसाला निर्यात का कुल मूल्य:** \$4.5 बिलियन।
  - भारत वैश्विक मसाला व्यापार का 25% हिस्सा नियंत्रित करता है (जिसका मूल्य \$20 बिलियन है)।
- **निर्यात की प्रकृति:**
  - भारत के मसाला निर्यात का केवल 48% मूल्यवर्धित उत्पाद हैं (जैसे, मसाला मिश्रण, अर्क, तेल)।
  - बाकी को कच्चे या साबुत मसालों के रूप में निर्यात किया जाता है, जिससे संभावित राजस्व सीमित हो जाता है।
- **उभरते मसाला उत्पादक क्षेत्र:**
  - केरल, आंध्र प्रदेश, गुजरात और राजस्थान जैसे पारंपरिक मसाला केंद्रों के अलावा, पूर्वोत्तर राज्य, ओडिशा और झारखंड जैसे नए क्षेत्र भी महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बन रहे हैं।

**भारतीय मसाला उद्योग के सामने प्रमुख चुनौतियाँ**

- वैश्विक मसाला बाजार में कम हिस्सेदारी:**
  - भारत मसाला उत्पादन में उत्कृष्ट है, लेकिन मसाला मिश्रण, मैरिनेड और मसालों जैसे प्रसंस्कृत और ब्रांडेड मसाला उत्पादों में पीछे है।
- सीमित मूल्य संवर्धन:**
  - मसाला निर्यात का केवल 48% ही प्रसंस्कृत या मूल्यवर्धित है।
  - 2030 तक 10 बिलियन डॉलर के निर्यात लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, भारत को मूल्यवर्धित निर्यात को कम से कम 70% तक बढ़ाना होगा।
- उच्च उत्पादन लागत:**
  - अकुशल कृषि पद्धतियाँ, अत्यधिक कीटनाशक का उपयोग और कटाई के बाद पुरानी प्रसंस्करण विधियाँ उच्च लागत और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को कम करने में योगदान करती हैं।
- कड़ी वैश्विक प्रतिस्पर्धा:**
  - वियतनाम, इंडोनेशिया, ब्राजील, चीन और कई अफ्रीकी देश मसाला व्यापार में तेजी से विस्तार कर रहे हैं, मूल्यवर्धित, स्वच्छ और ब्रांडेड उत्पाद पेश कर रहे हैं।

**सरकारी और संस्थागत सहायता**

- भारतीय मसाला बोर्ड:**
  - अनुसंधान, निर्यात संवर्धन, गुणवत्ता प्रमाणन और बाजार विकास में केंद्रीय भूमिका निभाता है।
- विश्व मसाला संगठन (WSO):**
  - खेती के तरीकों, स्थिरता और पता लगाने की क्षमता में सुधार के लिए किसान उत्पादक संगठनों (FPO) के साथ काम करता है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR):**
  - स्थिरता और उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए उच्च उपज, जलवायु-लचीले मसाला किस्मों का विकास करता है।

4. एकीकृत कीट प्रबंधन कार्यक्रम:

- अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों को पूरा करने के लिए किसानों को पर्यावरण के अनुकूल, सुरक्षित कीटनाशकों के उपयोग के बारे में प्रशिक्षित करता है।

5. मुख्य फोकस क्षेत्र:

- मूल्य संवर्धन और ब्रांडिंग को बढ़ावा देना।
- गुणवत्ता मानकों और पता लगाने की क्षमता में सुधार करना।
- वैश्विक बाजार में उपस्थिति में विविधता लाने के लिए न्यूट्रास्यूटिकल्स, सौंदर्य प्रसाधन और फार्मास्यूटिकल्स में अनुप्रयोगों की खोज करना।

निष्कर्ष

जबकि भारत मसाला उत्पादन और कच्चे माल के निर्यात में अग्रणी है, मूल्य-वर्धित मसाला खंड में इसकी हिस्सेदारी अनुपातहीन रूप से कम बनी हुई है। अपने प्राकृतिक लाभ का लाभ उठाने और महत्वाकांक्षी निर्यात लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, भारत को इन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए:

- मूल्य-वर्धित प्रसंस्करण का विस्तार
- गुणवत्ता और ब्रांडिंग में सुधार
- उत्पादन लागत में कमी
- वैश्विक बाजार पहुंच में विविधता लाना

यह रणनीतिक बदलाव भारत को “विश्व का मसाला कटोरा” होने से विकसित होकर प्रसंस्कृत मसाला उत्पादों में वैश्विक नेता बनने में मदद करेगा

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में मसाला क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत में मसाला उत्पादन का अधिकांश हिस्सा दक्षिणी राज्यों में होता है।
2. भारत मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक है।
3. भारत 25 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी के साथ वैश्विक मसाला बाजार पर हावी है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

(e) :2024

कपास की फसल

**चर्चा में क्यों:** भारतीय कपास की कीमतों पर दबाव के बावजूद, कपास का आयात काफी बढ़ रहा है, जिससे घरेलू उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता पर चिंता बढ़ रही है। 40 अर्थव्यवस्था और कृषि

प्रमुख घटनाक्रम

- आयात में वृद्धि: भारत का कच्चा और बेकार कपास का आयात तेजी से बढ़ा:
  - \$142.89 मिलियन

➤ जनवरी 2025: \$184.64 मिलियन की तुलना में:

◆ दिसंबर 2023: \$29.47 मिलियन

◆ जनवरी 2024: \$19.62 मिलियन

- यह साल-दर-साल आयात में 5 से 7 गुना वृद्धि दर्शाता है, जिससे घरेलू कपास उत्पादकता में सुधार की तत्काल आवश्यकता है।

कपास का आयात क्यों बढ़ रहा है?

1. घरेलू उत्पादन में गिरावट:

- भारत में कपास उत्पादन 2024-25 में 10% घटकर 29.53 मिलियन गांठ रह जाने का अनुमान है।
- हालांकि, घरेलू मांग में मामूली वृद्धि होकर 31.5 मिलियन गांठ होने की संभावना है।

2. वैश्विक मूल्य लाभ:

- अंतर्राष्ट्रीय कपास की कीमतें 4 सालों में अपने सबसे निचले स्तर पर आ गई हैं।
- चीन द्वारा अमेरिकी कपास पर आयात शुल्क लगाने से वैश्विक कीमतों में और गिरावट आई है।
- ब्राजील, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीकी देशों से आने वाला कपास भारतीय कपास की तुलना में सस्ता है, जिससे आयात अधिक आकर्षक हो गया है।

3. कपड़ा क्षेत्र से मांग:

- परिधानों और घरेलू वस्त्रों की निर्यात मांग बढ़ रही है।
- “फास्ट फैशन” के उदय ने बड़े पैमाने पर उत्पादित कपड़ों के लिए कपास की खपत बढ़ा दी है।

प्रारंभिक परीक्षा विशेष

मूलभूत तथ्य

- वैज्ञानिक नाम: गॉसिपियम
- फसल का प्रकार: उष्णकटिबंधीय/उपोष्णकटिबंधीय
- उपयोग: वस्त्रों के लिए फाइबर; तेल, चारा और औद्योगिक उत्पादों में उपयोग किए जाने वाले उप-उत्पाद।

कपास की किस्में:

1. अपलैंड कॉटन (गॉसिपियम हिर्सुटम): सबसे व्यापक रूप से खेती की जाती है (भारत, चीन, यू.एस.)।
2. पिमा कॉटन (गॉसिपियम बारबाडेंस): लंबे समय तक उगने वाली, बेहतर गुणवत्ता वाली; यू.एस. (विशेष रूप से कैलिफोर्निया और एरिज़ोना) में उगाई जाती है।

जलवायु आवश्यकताएँ

- तापमान: 21°C से 35°C
- साला/सिंचाई: मध्यम (अच्छी जल आपूर्ति की आवश्यकता होती है)
- पाले से मुक्त अवधि: न्यूनतम 180 दिन
- मिट्टी: अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ मिट्टी

**कटाई और प्रसंस्करण:**

- कपास के बीज परिपक्व होने पर फूट जाते हैं।
- कटाई मैनुअल या मशीनी तरीके से की जाती है।
- कपास की ओटाई से रेशों को बीजों से अलग किया जाता है।

**आर्थिक महत्व:**

- भारत विश्व स्तर पर कपास के सबसे बड़े उत्पादकों और उपभोक्ताओं में से एक है।
- कपास एक प्रमुख नकदी फसल है, जो लाखों किसानों को आजीविका प्रदान करती है।
- कपास आधारित उद्योग (वस्त्र, परिधान) भारत के निर्यात के लिए महत्वपूर्ण हैं।

**पर्यावरण संबंधी चिंताएँ:**

- कपास की खेती में पानी की बहुत आवश्यकता होती है और यह कीटनाशकों पर बहुत ज़्यादा निर्भर है।
- निम्नलिखित के लिए प्रयास बढ़ रहे हैं:
  - जैविक कपास को बढ़ावा देना
  - ड्रिप सिंचाई को प्रोत्साहित करना
  - सूखा और कीट प्रतिरोधी किस्में विकसित करना

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. भारत में कपास की खेती के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. कपास के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) घोषित कर दिया गया है केंद्र और राज्य दोनों सरकारों द्वारा।
2. भारत एकमात्र ऐसा देश है जो कपास की सभी चार प्रजातियों की खेती करता है।
3. गुजरात भारत में कपास का प्रमुख उत्पादक राज्य है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा सही है?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी उपर्युक्त
- (d) इनमें से कोई नहीं

(E 2018 7 2018) (Q) : 2018

**पूँजी खाता परिवर्तनीयता**

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में 16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया ने सुझाव दिया कि भारत को पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता (Full Capital Account Convertibility) को तब तक स्थगित रखना चाहिए, जब तक देश की प्रति व्यक्ति आय \$8,000 से \$10,000 के बीच नहीं पहुँच जाती। उन्होंने यह टिप्पणी 49वें सिविल एकाउंट्स डे समारोह के दौरान की और चेतावनी दी कि समय से पहले पूर्ण परिवर्तनीयता अपनाते से सरकार व भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) का विनिमय दर प्रबंधन पर नियंत्रण कमजोर पड़ सकता है।

**क्या है पूँजी खाता परिवर्तनीयता?**

- पूँजी खाता परिवर्तनीयता का अर्थ है कि स्थानीय वित्तीय परिसंपत्तियों (Local Financial Assets) को विदेशी वित्तीय परिसंपत्तियों (Foreign Financial Assets) में, और इसके विपरीत, बिना किसी पाबंदी के, बाज़ार द्वारा निर्धारित विनिमय दरों पर बदला जा सकता है।
- सरल भाषा में, इसका मतलब है कि पैसे को निवेश, ऋण, संपत्ति की खरीद आदि उद्देश्यों के लिए सीमाओं के पार स्वतंत्र रूप से ले जाया जा सकता है।

**मुद्रा परिवर्तनीयता के प्रकार**

1. **चालू खाता परिवर्तनीयता (Current Account Convertibility):** यह वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार (निर्यात/आयात) से संबंधित विदेशी मुद्रा लेन-देन की स्वतंत्रता से संबंधित है।
2. **पूँजी खाता परिवर्तनीयता (Capital Account Convertibility):** यह निवेश के उद्देश्यों से संबंधित पूँजी के प्रवाह को दर्शाता है, जैसे:
  - प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)
  - पोर्टफोलियो निवेश
  - अंतरराष्ट्रीय ऋण (Loans)

**भारतीय रुपये की स्थिति: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य**

- **पूर्व-सुधार काल (1990 के दशक से पहले):**  
1990 के दशक की शुरुआत तक (सुधार-पूर्व अवधि), रुपये का उपयोग करने वाला कोई भी व्यक्ति जो विदेशी मुद्रा में लेन-देन करना चाहता था, उसे भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) से अनुमति लेनी पड़ती थी, चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी हो। इन लेन-देन में निम्नलिखित चीज़ें शामिल थीं: विदेश यात्रा, विदेश में अध्ययन, आयातित सामान खरीदना, विदेशी मुद्राएँ प्राप्त करना (जैसे निर्यात के साथ) और उन्हें नकदी के लिए बदलना।
- **उदारीकरण के बाद (1992):**
  - 1992 में उदार आर्थिक सुधार शुरू किए गए, जिससे विदेशी मुद्रा लेन-देन के तरीके पर असर पड़ा। निर्यातक और आयातक बिना प्रतिबंध वाले सामान और सेवाओं के व्यापार के लिए विदेशी मुद्रा का आदान-प्रदान कर सकते थे। विदेश में अध्ययन या यात्रा के लिए विदेशी मुद्रा तक आसान पहुँच थी, और उद्योग के आधार पर, विदेशी व्यापार और निवेश पर कम प्रतिबंध थे।
- **वर्तमान स्थिति (2025):**
  - 2025 तक, भारतीय रुपया आंशिक रूप से परिवर्तनीय मुद्रा है। इसका मतलब यह है कि हालांकि बाज़ार दरों पर स्थानीय और विदेशी मुद्रा का आदान-प्रदान करने की बहुत अधिक स्वतंत्रता है, लेकिन उच्च राशियों के लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रतिबंध बने हुए हैं, और इन्हें अभी भी मंजूरी की आवश्यकता है।
  - इसके अतिरिक्त, INR पूरी तरह से मुक्त रूप से चल सकने वाली मुद्रा नहीं है जिसे बाज़ार की गतिशीलता पर छोड़ दिया गया हो। विनियामक कभी-कभी विनिमय दरों को स्वीकार्य सीमा के भीतर रखने के लिए कार्य करेंगे।

## तरापोर समिति की भूमिका (Tarapore Committees)

### तरापोर समिति I (1997)

- आरबीआई द्वारा गठित एस.एस. तरापोरे की अध्यक्षता में।
- 1999-2000 तक सीएसी को लागू करने के लिए तीन चरणीय रोडमैप की सिफारिश की।
- हालांकि, 1997 के पूर्वी एशियाई वित्तीय संकट के कारण योजना को रोक दिया गया, जिसने समय से पहले उदारीकरण के जोखिमों को उजागर किया।

### तरापोर समिति II (2006)

- इस विचार पर पुनर्विचार किया गया और 2011 तक सीएसी प्राप्त करने के लिए पांच साल का रोडमैप (तीन चरण) प्रस्तावित किया गया।
- इसे भी व्यापक आर्थिक स्थिरता पर चिंताओं के कारण स्थगित कर दिया गया।

### पूर्ण पूंजी खाता परिवर्तनीयता के लिए पूर्व शर्तें (तरापोर समिति के अनुसार)

#### 1. राजकोषीय समेकन:

- राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 3-3.5% तक कम करना।
- स्थिर व्यापक आर्थिक बुनियादी बातों को बनाए रखना।

#### 2. मौद्रिक नीति स्थिरता:

- मुद्रास्फीति को कम और वैश्विक रूप से स्वीकार्य स्तर पर लाना।
- व्याज दरों में मुद्रास्फीति के अंतर को प्रतिबिंबित करना चाहिए और कृत्रिम रूप से निर्धारित नहीं किया जाना चाहिए।

#### 3. मजबूत बैंकिंग प्रणाली:

- सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों के स्वास्थ्य को बढ़ाना।
- विनियामक सुधार और जोखिम प्रबंधन प्रणाली को लागू करना।

#### 4. पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार:

- बाहरी उतार चढ़ाव से निपटने के लिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार सुनिश्चित करना।
- यदि आवश्यक हो तो रुपए की रक्षा करने की क्षमता पर विश्वास बनाए रखें।

### भारत पूर्ण परिवर्तनीयता के बारे में क्यों सतर्क है

- अस्थिर वैश्विक वित्तीय माहौल।
- संकट के दौरान पूंजी पलायन को लेकर चिंताएं।
- कुछ क्षेत्रों में अविकसित घरेलू वित्तीय प्रणाली।
- व्यापक आर्थिक स्थिरता और संस्थागत तत्परता को प्राथमिकता देने की आवश्यकता।

जबकि पूर्ण पूंजी खाता परिवर्तनीयता वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ भारत के एकीकरण को बढ़ा सकती है, इसे सावधानीपूर्वक और धीरे-धीरे आगे बढ़ाया जाना चाहिए। अरविंद पनगढ़िया जैसे विशेषज्ञ सही सुझाव देते हैं कि भारत को पहले उच्च प्रति व्यक्ति आय हासिल करनी चाहिए, मजबूत व्यापक आर्थिक बुनियादी बातों को सुनिश्चित करना चाहिए और पूंजी खाता पूरी तरह से खोलने से पहले संस्थागत क्षमता का निर्माण करना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि यह कदम वैश्विक अनिश्चितताओं के सामने टिकाऊ, लाभकारी और लचीला है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: भारत में मुद्रा परिवर्तनीयता के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारतीय रुपया पूरी तरह से मुक्त-अस्थायी मुद्रा है जिसमें कोई नियामक हस्तक्षेप नहीं है।
2. भारत ने पहले ही पूर्ण पूंजी खाता परिवर्तनीयता के लिए पूर्व शर्त के रूप में तरापोर समिति द्वारा अनुशंसित राजकोषीय घाटा लक्ष्य हासिल कर लिया है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(P) 2022

### भारत का व्यापार घाटा

**चर्चा में क्यों:** वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अनुसार, भारत का माल व्यापार घाटा फरवरी 2025 में 42 महीने के निचले स्तर पर आ गया, जिसका मुख्य कारण सोना, चांदी और कच्चे तेल का आयात कम होना है।

#### मुख्य बातें:

##### • माल व्यापार घाटा:

- फरवरी 2025: \$14.05 बिलियन - अगस्त 2021 के बाद सबसे कम।
- जनवरी 2025: \$22.9 बिलियन।
- फरवरी 2024: \$19.5 बिलियन।

##### • सोना और चांदी का आयात:

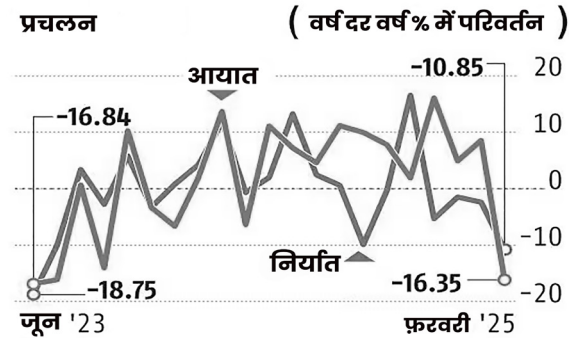
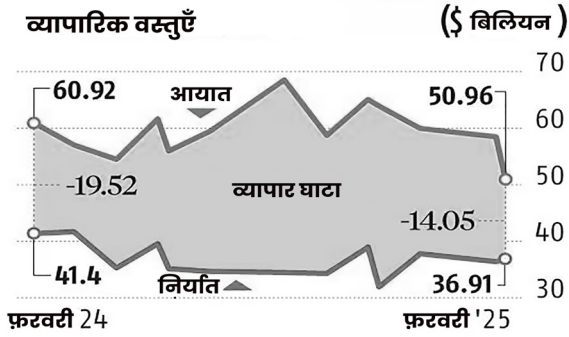
- फरवरी 2025 में कुल \$2.7 बिलियन - जून 2024 के बाद सबसे कम।

##### • कच्चे तेल और पेट्रोलियम आयात:

- जुलाई 2023 के बाद से अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया, \$11.81 बिलियन।

##### • व्यापार घाटे की प्रवृत्ति:

- वित्त साल 2025 के पहले 10 महीनों के लिए, औसत मासिक व्यापार घाटा \$23 बिलियन से अधिक था।
- फरवरी में उल्लेखनीय कमी से अब अनुमान लगाया जा रहा है कि वित्त साल 2025 की चौथी तिमाही में चालू खाता अधिशेष लगभग \$5 बिलियन (जीडीपी का लगभग 0.5%) हो जाएगा।



- निर्यात: \$35.03 बिलियन
- आयात: \$16.55 बिलियन
- इसकी तुलना में, फरवरी 2024 में सेवाओं का निर्यात \$28.33 बिलियन और आयात \$15.23 बिलियन रहा।

### कम व्यापार घाटे के निहितार्थ:

- मिश्रित संकेत:
  - आदर्श रूप से, बढ़ते निर्यात के कारण व्यापार घाटे में गिरावट एक सकारात्मक संकेत है।
  - हालांकि, आयात और निर्यात दोनों में एक साथ गिरावट सुस्त घरेलू और वैश्विक मांग का संकेत दे सकती है।
- व्यापार अधिशेष:
  - भारत ने दुर्लभ \$4.5 बिलियन का समग्र व्यापार अधिशेष (माल + सेवाएँ) दर्ज किया - मई 2021 के बाद ऐसा पहला उदाहरण।
- चालू खाता आउटलुक:
  - भारत Q4 FY25 के लिए \$20 बिलियन का चालू खाता अधिशेष दर्ज कर सकता है।
  - पूरे साल का CAD (चालू खाता घाटा) सकल घरेलू उत्पाद के 0.5%-0.7% तक गिर सकता है, जबकि पहले अनुमान 1%-1.2% था।
- चेतावनी नोट:
  - असामान्य रूप से कम व्यापार घाटा घरेलू आर्थिक गतिविधि में मंदी का संकेत भी दे सकता है, खास तौर पर कच्चे तेल और सोने जैसी आवश्यक वस्तुओं के आयात में गिरावट के कारण।

### व्यापार घाटा क्या है?

व्यापार घाटा तब होता है जब कोई देश निर्यात की तुलना में अधिक वस्तुओं और सेवाओं का आयात करता है।

- इसके परिणामस्वरूप नकारात्मक व्यापार संतुलन होता है।
- इसे माल और सेवाओं के व्यापार दोनों में देखा जा सकता है।
- लंबे समय तक व्यापार घाटे का आर्थिक प्रभाव:
  - स्थानीय मुद्रा का अवमूल्यन
  - विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव
  - घरेलू उद्योगों और रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव
  - बाहरी उधार में वृद्धि

### व्यापार घाटे को कम करने के उपाय:

1. मेक इन इंडिया पहल:
  - आयात के विकल्प के रूप में स्थानीय विनिर्माण को प्रोत्साहित करना, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और रक्षा क्षेत्र में।
2. निर्यात को बढ़ावा देना:
  - द्विपक्षीय और क्षेत्रीय व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर करना
  - सब्सिडी और प्रोत्साहन प्रदान करना
  - आईटी, फार्मास्यूटिकल्स और टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना।
3. निर्यात गंतव्यों में विविधता लाना:
  - अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार का विस्तार करना ताकि पारंपरिक बाजारों पर अत्यधिक निर्भरता कम हो सके।
4. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को बढ़ावा देना:
  - स्थानीय उद्योगों का समर्थन करने, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण करने और आयात निर्भरता को कम करने के लिए एफडीआई को प्रोत्साहित करना।
5. बुनियादी ढांचे में सुधार:
  - व्यापार लागत कम करने और निर्यात दक्षता बढ़ाने के लिए बंदरगाहों, रसद और परिवहन नेटवर्क का आधुनिकीकरण करना।
6. नवीकरणीय ऊर्जा में परिवर्तन:
  - सौर, पवन और जैव ऊर्जा में निवेश करके कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करना।

### निष्कर्ष

भारत के व्यापार घाटे में हाल ही में आई गिरावट मिश्रित आर्थिक तस्वीर पेश करती है। हालांकि इससे चालू खाते और विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव कम होता है, लेकिन आयात में गिरावट से घरेलू मांग में कमी का संकेत मिल सकता है। आगे चलकर, अनिश्चित वैश्विक माहौल में सतत आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिए व्यापार को संतुलित करना, निर्यात में विविधता लाना और घरेलू उत्पादन को मजबूत करना महत्वपूर्ण होगा।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. पिछले 12 महीनों से भारत का निर्यात लगातार बढ़ रहा है।
2. पिछले 12 महीनों से भारत का निर्यात लगातार घट रहा है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(p) : 2119

### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. व्यापार घाटे का किसी देश की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव हो सकता है। भारत के व्यापार घाटे में योगदान देने वाले कारकों पर चर्चा करें और इसे दूर करने के उपाय सुझाएँ। [250 शब्द] [15 अंक]

## भारत का कृषि व्यापार

**चर्चा में क्यों:** कृषि उपज के बढ़ते आयात के कारण भारत का कृषि व्यापार अधिशेष कम हो रहा है।

### कृषि व्यापार में रुझान

- **निर्यात:** भारत का कृषि निर्यात 6.5% बढ़ा है, जो अप्रैल-दिसंबर 2023 में \$35.2 बिलियन से बढ़कर अप्रैल-दिसंबर 2024 में \$37.5 बिलियन हो गया है।
  - यह इस अवधि के लिए देश के व्यापारिक निर्यात में 1.9% की समग्र वृद्धि से अधिक है।
- **आयात:** अप्रैल-दिसंबर 2024 के दौरान भारत का कुल माल आयात अप्रैल-दिसंबर 2023 की तुलना में 7.4% अधिक था। इसी अवधि के लिए, कृषि उपज का आयात 18.7% बढ़ा (24.6 बिलियन डॉलर से 29.3 बिलियन डॉलर तक)।
- **व्यापार अधिशेष:** कृषि व्यापार अधिशेष अप्रैल-दिसंबर 2023-24 में 10.6 बिलियन डॉलर से घटकर अप्रैल-दिसंबर 2024-25 में 8.2 बिलियन डॉलर रह गया है।
- **व्यापार अधिशेष में रुझान**
  - व्यापार अधिशेष 2013-14 में 27.7 बिलियन डॉलर के उच्चतम स्तर पर था।
  - यह 2016-17 तक घटकर 8.1 बिलियन डॉलर रह गया।
  - यह 2020-21 में बढ़कर 20.2 बिलियन डॉलर हो गया, जो 2023-24 में गिरकर 16 बिलियन डॉलर हो जाएगा।

### भारत का कृषि निर्यात

- भारत का कृषि व्यापार अधिशेष मुख्यतः कृषि निर्यात से प्रेरित है।
- कृषि निर्यात 2013-14 में 43.3 बिलियन डॉलर से गिरकर 2019-20 में 35.6 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि आयात 15.5 बिलियन डॉलर से बढ़कर 21.9 बिलियन डॉलर हो गया।
- **कारण:** अंतर्राष्ट्रीय कमोडिटी कीमतों में गिरावट।
  - संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) का खाद्य मूल्य सूचकांक (आधार अवधि: 2014-16=100) 2013-14 और 2019-20 के बीच औसतन 119.1 से गिरकर 96.4 अंक पर आ गया।
  - विश्व में कम कीमतों के कारण भारत का कृषि निर्यात लागत-प्रतिस्पर्धी कम हो गया।
- **पुनःपरवर्तन**
  - कोविड-19 महामारी के बाद आपूर्ति में व्यवधान और यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के कारण वैश्विक मूल्य सुधार हुआ।

- बेंचमार्क एफएओ सूचकांक 2021-22 में औसतन 133.1 और 2022-23 में 140.6 अंक तक बढ़ गया, भारत का कृषि निर्यात इन क्रमशः सालों में \$50.2 बिलियन और \$53.2 बिलियन तक बढ़ गया।

### निर्यात के चालक

- **समुद्री उत्पाद:** भारत से नंबर 1 निर्यात वस्तु, समुद्री उत्पाद, 2021-22 में \$7.8 बिलियन और 2022-23 में \$8.1 बिलियन से गिरकर 2023-24 में \$7.4 बिलियन हो गया है।
  - भारत का समुद्री निर्यात, जिसमें जमे हुए झींगे का हिस्सा लगभग दो-तिहाई है, मुख्य रूप से अमेरिका (2023-24 में 34.5% हिस्सा), चीन (19.6%) और यूरोपीय संघ (14%) को होता है।
- **चीनी:** चीनी को भी झटका लगा है, निर्यात 2022-23 में \$5.8 बिलियन से घटकर 2023-24 में \$2.8 बिलियन रह गया है।
  - घरेलू उपलब्धता और खाद्य मुद्रास्फीति पर चिंताओं के बाद चीनी और गेहूं को सरकारी प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा है।
- **चावल:** चावल के निर्यात में उछाल जारी है।
  - **गैर-बासमती:** विभिन्न प्रतिबंधों को धीरे-धीरे हटा दिया गया है।
    - ◆ गैर-बासमती शिपमेंट का मूल्य 2021-22 और 2022-23 के \$6.1-6.4 बिलियन के उच्चतम स्तर के करीब पहुंचने वाला है।
- **काँफी:** ब्राजील में सूखे और वियतनाम में तूफान की गतिविधि ने भारत से काँफी निर्यात को बढ़ावा दिया है।
- **तंबाकू:** ब्राजील और जिम्बाब्वे में फसल विफलताओं ने भारतीय तंबाकू निर्यातकों को लाभ पहुंचाया है।

### आयात के चालक

- भारत के कृषि आयात में दो वस्तुओं का वर्चस्व है: खाद्य तेल और दालें।
- **दालें:** घरेलू उत्पादन में वृद्धि के कारण दालों का आयात काफी कम हो गया है, 2015-16 में 3.9 बिलियन डॉलर और 2016-17 में 4.2 बिलियन डॉलर से घटकर 2022-23 तक समाप्त होने वाले पाँच सालों के लिए औसतन 1.7 बिलियन डॉलर रह गया है।
- **खाद्य तेल:** 2024-25 के दौरान आयात 2021-22 (\$19 बिलियन) और 2022-23 (\$20.8 बिलियन) के बाद सबसे अधिक होने की उम्मीद है। यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक कीमतों को बढ़ा दिया है।
- **मसाले:** भारत निर्यातक और आयातक दोनों है।
  - 2023-24 में, भारत का काली मिर्च (34,028 टन) और इलायची (9,084 टन) का आयात इसके क्रमशः 17,890 टन और 7,449 टन के निर्यात से अधिक हो गया।
- **कपास:** भारतीय कपास निर्यात 2011-12, 2012-13 और 2013-14 में क्रमशः 4.3 बिलियन डॉलर, 3.7 बिलियन डॉलर और 3.6 बिलियन डॉलर से गिरकर 2022-23 में 781.4 मिलियन डॉलर और 2023-24 में 1.1 बिलियन डॉलर रह गया।
  - अप्रैल-दिसंबर 2024 के दौरान भारत का कपास निर्यात 575.7 मिलियन डॉलर रहा, जो 2023 की इसी अवधि की तुलना में न केवल 8.1% कम है, बल्कि इसका आयात 918.7 मिलियन डॉलर रहा, जो 84.2% अधिक है। इस प्रकार, भारत एक निर्यातक से कपास का शुद्ध आयातक बन गया।

### आगे की राह: नीतिगत उपाय

- **अचानक निर्यात प्रतिबंधों से बचना**
  - रातोंरात निर्यात प्रतिबंधों (जैसे, गेहूं, प्याज) को अस्थायी टैरिफ या कोटा जैसे चरणबद्ध उपायों से बदलें।

- हितधारकों को समायोजित करने की अनुमति देने के लिए नीतिगत परिवर्तनों के लिए अग्रिम सूचना (जैसे 3-6 महीने) प्रदान करना।
- **नियम-आधारित व्यापार तंत्र अपनाना**
  - निर्यात/आयात प्रतिबंध लगाने के लिए पारदर्शी मानदंड (जैसे मूल्य ट्रिगर, उत्पादन सीमा) पेश करना।
  - उपभोक्ता और उत्पादक हितों को संतुलित करने के लिए पूर्ण प्रतिबंधों के बजाय टैरिफ का उपयोग करना।
- **हितधारक परामर्श:** संतुलित परिणाम सुनिश्चित करने के लिए नीति निर्माण में किसान समूहों, व्यापारियों और उद्योग निकायों को शामिल करना।
- **मूल्य स्थिरीकरण तंत्र**
  - किसानों को अस्थिरता से बचाने के लिए जोखिम-शमन उपकरण (जैसे वायदा बाजार, मूल्य बीमा) लागू करना।
  - निर्यात पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने के बजाय कम आय वाले उपभोक्ताओं के लिए आवश्यक वस्तुओं पर सब्सिडी देना।
- **लक्षित सब्सिडी:** कीमतों में उछाल की भरपाई के लिए कमजोर परिवारों को प्रत्यक्ष आय हस्तांतरण या खाद्य वाउचर (जैसे प्याज़ के लिए 30 रुपये प्रति माह अतिरिक्त)।
- **आयात शुल्क को तर्कसंगत बनाना:** घरेलू किसानों की सुरक्षा और आयात पर निर्भरता कम करने के लिए दालों और तिलहन (जैसे चना, पाम ऑयल) पर मध्यम टैरिफ फिर से लागू करना।
- **दालों और तिलहन की खेती को प्रोत्साहित करना**
  - न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) को दालों जैसी जल-कुशल फसलों से जोड़ें, ताकि चावल/गेहूँ के साथ खरीद समानता सुनिश्चित हो सके।
  - विविधीकरण के लिए बीज, सिंचाई और कटाई के बाद के बुनियादी ढाँचे के लिए सब्सिडी प्रदान करना।
- **घरेलू प्रसंस्करण को बढ़ावा देना:** अपशिष्ट को कम करने और निर्यात क्षमता को बढ़ावा देने के लिए मूल्य-वर्धित बुनियादी ढाँचे (जैसे डी-ऑइल राइस ब्रान प्रसंस्करण) में निवेश करना।
- **संधारणीय निर्यात बाजार बनाना:** चावल और भैंस के मांस जैसे स्टेपल के लिए प्रमुख आयातकों (जैसे खाड़ी देशों, आसियान) के साथ दीर्घकालिक व्यापार समझौतों पर बातचीत करना।
- **गुणवत्ता और मानक अनुपालन:** वैश्विक फाइटोसैनिटरी मानदंडों को पूरा करने के लिए परीक्षण प्रयोगशालाओं और प्रमाणन प्रणालियों को अपग्रेड करना।
- **निर्यात टोकरी में विविधता लाना:** कच्चे माल की तुलना में मूल्य-वर्धित उत्पादों (जैसे जैविक मसाले, प्रसंस्कृत फल) को बढ़ावा देना।
- **आपूर्ति श्रृंखलाओं का आधुनिकीकरण करना:** कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए जलवायु-लचीले भंडारण, कोल्ड चेन और रसद विकसित करना।
- **अनुसंधान और विकास निवेश:** पानी की बचत करने वाली फसलों की उच्च उपज वाली, सूखा प्रतिरोधी किस्मों के लिए अनुसंधान को निधि देना।

### निष्कर्ष

बढ़ते आयात और अस्थिर निर्यात के कारण भारत का घटता कृषि व्यापार अधिशेष संतुलित व्यापार नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। चरणबद्ध निर्यात प्रतिबंध, आयात शुल्क युक्तिकरण और घरेलू मूल्य श्रृंखलाओं में निवेश जैसे रणनीतिक उपाय व्यापार गतिशीलता को स्थिर कर सकते हैं। घरेलू मुद्रास्फीति संबंधी चिंताओं को

संबोधित करते हुए किसानों को प्रोत्साहन सुनिश्चित करना कृषि में दीर्घकालिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निर्यात में वृद्धि के बावजूद भारत के कृषि व्यापार अधिशेष में गिरावट के पीछे प्रमुख कारकों का विश्लेषण करें। सरकार घरेलू खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और वैश्विक कृषि बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के दोहरे उद्देश्यों को कैसे संतुलित कर सकती है? [250 शब्द] [15 अंक]

### किसान क्रेडिट कार्ड के खराब ऋणों में वृद्धि

**चर्चा में क्यों:** कृषि क्षेत्र के लिए चिंताजनक संकेत यह है कि किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना के तहत खराब ऋणों में पिछले चार सालों में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर) में 42% की वृद्धि हुई है। यह ग्रामीण ऋण और कृषि आय में बढ़ते तनाव को दर्शाता है।

#### कृषि एनपीए में वर्तमान रुझान:

- आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार, केसीसी के तहत गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (एनपीए) इस स्तर पर थीं:

- मार्च 2021 में ₹68,547 करोड़
- वित्त साल 2022 में ₹84,637 करोड़
- वित्त साल 2023 में ₹90,832 करोड़
- वित्त साल 2024 में ₹93,370 करोड़
- दिसंबर 2024 तक ₹97,543 करोड़

#### वित्त साल 2025 में (अब तक):

- तिमाही 1: ₹95,616 करोड़
- तिमाही 2: ₹96,918 करोड़

**नोट:** यह लगातार वृद्धि किसानों के बीच गहराते पुनर्भुगतान संकट का संकेत देती है।

#### कृषि एनपीए में वृद्धि के कारण

- **जलवायु परिवर्तन:** फसलों को मौसम से होने वाले नुकसान से किसानों की समय पर ऋण चुकाने की क्षमता प्रभावित होती है।
- **पुनर्भुगतान समयसीमा के बारे में किसानों में जागरूकता की कमी।**
- **फसल बीमा की कमी:** अपर्याप्त या कोई फसल बीमा न होने से फसल खराब होने की स्थिति में किसानों की ऋण चुकाने की क्षमता प्रभावित होती है।
- **राजनीतिक मुद्दे:** किसी भी राज्य चुनाव से पहले कृषि ऋण माफी की उम्मीदें अक्सर सरकार से कुछ राहत की उम्मीद में किसानों के पुनर्भुगतान व्यवहार को विकृत कर देती हैं।
- **किसानों की आत्महत्या:** किसानों की आत्महत्याएं ऋणदाताओं को चूक के मामले में आक्रामक वसूली कदम उठाने से रोकती हैं।
- **छोटी राशि:** केसीसी सेगमेंट में चूक अधिक होती है, जहां उधार ली गई राशि अन्य कृषि ऋणों की तुलना में बहुत कम होती है, और इसलिए, पुनर्भुगतान किसान के लिए अंतिम प्राथमिकता बन जाती है।
- **बैंकों के लिए कमजोर ऋण वसूली तंत्र।**

## प्रभाव

- **लाभप्रदता:** जैसे-जैसे एनपीए बढ़ता है, संस्थानों को इन बकाया ऋणों से संभावित नुकसान को कम करने के लिए प्रावधान के रूप में अधिक संसाधन आवंटित करने चाहिए, जिससे समय लाभ कम हो सकता है।
- **परिसंपत्ति (ऋण) संकुचन:** गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों में वृद्धि से बैंकों की अधिक उधार देने की क्षमता कमजोर हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप ब्याज राजस्व कम हो गया है।
- **देयता प्रबंधन:** बैंक जमा राशि को कम करते हुए अग्रिमों पर ब्याज दरें बढ़ाने का निर्णय ले सकते हैं महत्वपूर्ण गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों के कारण ब्याज दरें बढ़ जाती हैं।
- सरकार पर पीएसबी के पुनर्जीकरण के लिए और दबाव पड़ता है।
- **शेयरधारकों का विश्वास:** गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों में वृद्धि के परिणामस्वरूप बैंक के संचालन और लाभप्रदता को नुकसान होने की संभावना है। इस वजह से, शेयरधारकों को अपने निवेश पर बाजार रिटर्न नहीं मिल सकता है, और उनके पैसे का मूल्य कम हो सकता है।
- **सार्वजनिक विश्वास:** उच्च एनपीए स्तरों का बैंकिंग क्षेत्र की प्रतिष्ठा पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि वे संस्था की स्थिरता और भरोसेमंदता में जनता के विश्वास को खत्म करते हैं।

## आगे की राह: केसीसी पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना

1. **बेहतर वसूली तंत्र:**
  - वसूली कर्मचारियों को प्रशिक्षित और प्रोत्साहित करना, ग्राम सभाओं और किसान बैठकों के माध्यम से समुदाय के नेतृत्व वाली वसूली के लिए स्थानीय प्रशासन के साथ एकीकरण करना।
2. **प्रौद्योगिकी-संचालित निगरानी:**
  - ऋण की स्थिति पर निगरानी रखने, स्वचालित मांग नोटिस बनाने और संकट के शुरुआती संकेतों को चिह्नित करने के लिए MIS (प्रबंधन सूचना प्रणाली) का उपयोग करना।
3. **जोखिम-आधारित ऋण प्रथाएँ:**
  - ऋण नवीनीकरण या संवितरण से पहले उधारकर्ता की पुनर्भुगतान क्षमता, ऋण-योग्यता और कृषि उत्पादकता का नियमित रूप से आकलन करना।
4. **अनुबंध खेती को प्रोत्साहित करना:**
  - आय की भविष्यवाणी सुनिश्चित करने और संकट बिक्री के जोखिम को कम करने के लिए किसानों को कृषि-व्यवसायों से जोड़ना।
5. **फसल बीमा और मौसम सूचकांक कवर:**
  - फसल नुकसान के लिए यथार्थवादी और समय पर मुआवजा प्रदान करने के लिए बीमा योजनाओं का विस्तार और सुधार करना।
6. **वित्तीय साक्षरता अभियान:**
  - ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण शर्तों, शीघ्र पुनर्भुगतान के लिए ब्याज लाभ और डिफॉल्ट के लिए दंड के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए नियमित अभियान।
7. **कृषि ऋण पोर्टफोलियो में विविधता लाना:**
  - विविध फसलों, क्षेत्रों और खेतों के आकार में ऋण दें ताकि क्षेत्रीय जोखिम और चूक की क्षेत्रीय सांद्रता कम हो सके।
8. **सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सुधार:**
  - ऋण देने की प्रथाओं को सरल बनाएं, क्रेडिट स्कोरिंग सिस्टम शुरू करें और पारदर्शिता और दक्षता के लिए केसीसी संचालन को डिजिटल बनाएं

## किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना के बारे में:

- **लॉन्च:** 1998
- **प्रशासित:** कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय
- **उद्देश्य:** किसानों को फसल की खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों के लिए समय पर, परेशानी मुक्त और किफायती ऋण उपलब्ध कराना। 46 अर्थव्यवस्था और कृषि।

### मुख्य विशेषताएं:

- **वैधता:** 5 साल
- **ऋण राशि:** छोटे/सीमांत किसानों के लिए ₹2 लाख तक जमानत-मुक्त
- **ब्याज सब्सिडी:**
  - ₹5 लाख तक के अल्पकालिक ऋणों के लिए 7% ब्याज दर।
  - शीघ्र पुनर्भुगतान के लिए 3% छूट → प्रभावी ब्याज दर 4% हो जाती है।
- **एक्सेस मोड:** डेबिट कार्ड, एटीएम, बिजनेस कार्ड्स/डेंट, आदि।
- **भाग:** प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (PSL)

**नोट:** 2025-26 के केंद्रीय बजट में, सरकार ने KCC के लिए संशोधित ब्याज छूट योजना (MISS) के तहत ऋण सीमा को ₹3 लाख से बढ़ाकर ₹5 लाख करने की घोषणा की।

किसान क्रेडिट कार्ड योजना ने ग्रामीण भारत में ऋण की पहुँच में उल्लेखनीय सुधार किया है, लेकिन खराब ऋणों में तीव्र वृद्धि कृषि अर्थव्यवस्था में अंतर्निहित तनाव का संकेत है। ग्रामीण ऋण की व्यवहार्यता की रक्षा करने, बेहतर वसूली सुनिश्चित करने और प्रणाली में विश्वास बनाए रखने के लिए बैंकों, सरकार और कृषक समुदाय को शामिल करते हुए समन्वित प्रतिक्रिया की आवश्यकता है।

## यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. किसान क्रेडिट कार्ड योजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह वित्त मंत्रालय के अधीन प्रशासित है।
2. इसने 3 लाख रुपये तक के कृषि ऋण प्रदान किए।
3. केसीसी ऋण बैंकों की प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (पीएसएल) पुस्तक के अंतर्गत आते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

(ए १७५५) (ए) :१५६

### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना में बढ़ती गैर-निष्पादित संपत्ति (एनपीए) भारत की कृषि ऋण प्रणाली में गहरे संरचनात्मक मुद्दों को उजागर करती है। कृषि ऋणों में बढ़ते एनपीए के पीछे प्रमुख कारणों पर चर्चा करें और ऋण अनुशासन और वसूली में सुधार के उपाय सुझाएँ। [250 शब्द] [15 अंक]

## भारत की जैव अर्थव्यवस्था

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में जारी भारत जैव अर्थव्यवस्था रिपोर्ट 2024 ने भारत की जैव अर्थव्यवस्था का मूल्य \$165 बिलियन से अधिक होने का अनुमान लगाया है, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद में 4.2% से अधिक का योगदान देता है।

### जैव अर्थव्यवस्था क्या है?

जैव अर्थव्यवस्था खाद्य, ऊर्जा और औद्योगिक वस्तुओं के उत्पादन के लिए फसलों, जानवरों और सूक्ष्मजीवों जैसे नवीकरणीय जैविक संसाधनों के उपयोग को संदर्भित करती है। यह स्थायित्व, नवाचार और परिपल अर्थव्यवस्था पर जोर देती है।

- **मुख्य चालक:** जैव प्रौद्योगिकी, जीन संपादन, बायोप्रिंटिंग और डिजिटल उपकरण।
- **लक्ष्य:** पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करते हुए सतत आर्थिक विकास।

### भारत में जैव अर्थव्यवस्था की स्थिति

- **2023 जैव अर्थव्यवस्था मूल्य:** \$150.97 बिलियन
- **सकल घरेलू उत्पाद में योगदान:** भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 4.25% (~\$3.55 ट्रिलियन)
- **2024 अनुमान:** \$165+ बिलियन

### भारत की जैव अर्थव्यवस्था के प्रमुख उप-क्षेत्र

#### 1. बायोफार्मा

- **हिस्सा:** 35.65% | मूल्य: \$53.8 बिलियन
- **फोकस क्षेत्र:** फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरण, डायग्नोस्टिक्स, बायोलॉजिक्स
- **मुख्य विशेषताएँ:** भारत किफायती और गुणवत्तापूर्ण बायोफार्मास्यूटिकल्स के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभर रहा है।

#### 2. बायोएग्री

- **हिस्सा:** 8.24% | मूल्य: \$12.44 बिलियन
- **फोकस क्षेत्र:** कृषि जैव प्रौद्योगिकी, आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें (जैसे, बीटी कपास), परिशुध कृषि

#### 3. बायोइंडस्ट्रियल

- **हिस्सा:** लगभग 50% | मूल्य: \$72.6 बिलियन
- **फोकस क्षेत्र:** जैव ईंधन, हरित रसायन, बायोप्लास्टिक, एंजाइम
- **महत्व:** भारत के हरित परिवर्तन का आधार बनाता है

#### 4. बायोरिसर्च और बायोआईटी (बायोसर्विसेज)

- **मूल्य:** \$12.1 बिलियन
- **इसमें शामिल हैं:** अनुबंध अनुसंधान, नैदानिक परीक्षण, जैव सूचना विज्ञान, बायोटेक सॉफ्टवेयर, शिक्षा।
- **महत्व:** वैश्विक अनुसंधान एवं विकास और नवाचार केंद्र के रूप में भारत की बढ़ती भूमिका।

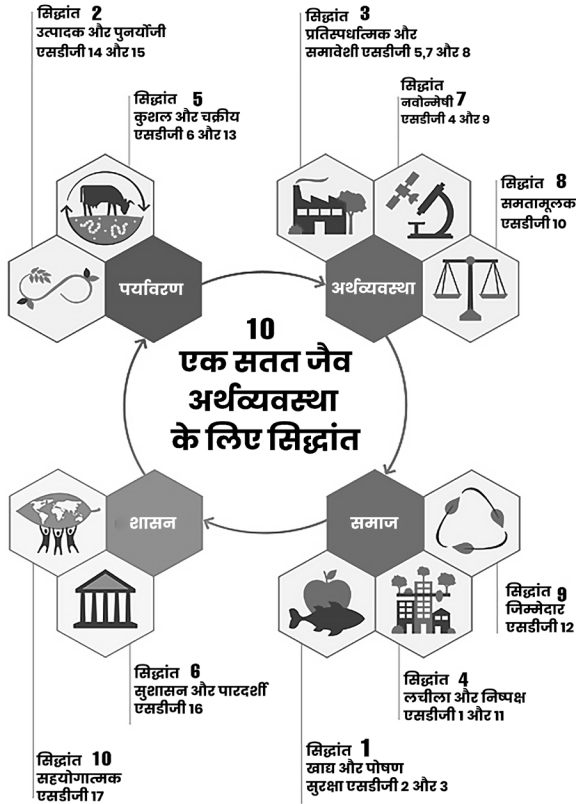
### भारत की जैव अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख स्तंभ

- **क्षमता निर्माण:** मानव संसाधन विकास और विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा।
- **नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र:** अनुसंधान संस्थानों, स्टार्टअप और उद्योगों के बीच सहयोग।

- **उत्पाद व्यावसायीकरण:** बाजार के लिए तैयार उत्पादों के लिए उद्योग-अकादमिक तालमेल।
- **संतुलित अनुसंधान:** बुनियादी विज्ञान और अनुप्रयुक्त अनुसंधान एवं विकास का मिश्रण।

### भारत की जैव अर्थव्यवस्था के लिए चुनौतियाँ

- **बुनियादी ढाँचा और स्केलिंग सीमाएँ:**
  - **अपर्याप्त अनुसंधान एवं विकास सुविधाएँ:** उन्नत अनुसंधान बुनियादी ढाँचे, डिजिटल प्रयोगशालाओं और परीक्षण केंद्रों तक सीमित पहुँच, विशेष रूप से एमएसएमई के लिए।
  - **जैव औद्योगिक अड़चनें:** फीडस्टॉक की कमी (जैसे गन्ना, मक्का) इथेनॉल उत्पादन क्षमता विस्तार में बाधा डालती है।
  - **जैव विनिर्माण अंतराल:** अनुसंधान और वाणिज्यिक उत्पादन को जोड़ने के लिए पायलट-स्केल सुविधाओं की कमी।
- **नीति और विनियामक बाधाएँ:**
  - **जटिल विनियमन:** अल्कोहल उत्पादन और जैव प्रौद्योगिकी अनुमोदन के लिए अलग-अलग राज्य-स्तरीय नीतियाँ परिचालन में देरी पैदा करती हैं।
  - **बौद्धिक संपदा (आईपी) चुनौतियाँ:** कठोर लाइसेंसिंग ढाँचों के कारण सार्वजनिक वित्तपोषित अनुसंधान का धीमा व्यावसायीकरण।
  - **खंडित शासन:** क्रॉस-सेक्टरल बायोइकोनॉमी लक्ष्यों के लिए मंत्रालयों (जैसे कृषि, ऊर्जा, स्वास्थ्य) के बीच समन्वय अंतराल।
- **फंडिंग और निवेश अस्थिरता:**
  - **एमएसएमई वित्तपोषण बाधाएँ:** प्रारंभिक चरण के बायोटेक स्टार्टअप के लिए उद्यम पूंजी और उच्च जोखिम वाले वित्तपोषण तक सीमित पहुँच।
  - **सरकारी योजनाओं पर अत्यधिक निर्भरता:** अनुसंधान एवं विकास और बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में निजी क्षेत्र की अपर्याप्त भागीदारी।
- **स्थिरता और संसाधन संबंधी बाधाएँ:**
  - **फीडस्टॉक प्रतिस्पर्धा:** जैव ईंधन उत्पादन खाद्य सुरक्षा के साथ प्रतिस्पर्धा करता है, जिससे कृषि संतुलन को खतरा होता है।
  - **जलवायु संबंधी कमज़ोरियाँ:** अनियमित मौसम पैटर्न (जैसे, सूखा, कीट) जैव औद्योगिक कच्चे माल की फसल की पैदावार को खतरे में डालते हैं।
  - **अपशिष्ट उपयोग अंतराल:** बायोमास/अपशिष्ट को जैव ईंधन और जैव प्लास्टिक में परिवर्तित करने के लिए अविकसित प्रौद्योगिकियाँ।
- **कौशल और कार्यबल की कमी:**
  - **प्रतिभा की कमी:** सिंथेटिक जीवविज्ञान, जैव सूचना विज्ञान और एआई-संचालित जैव विनिर्माण में सीमित कुशल कार्यबल।
  - **क्षेत्रीय असमानताएँ:** कुछ राज्यों (जैसे, कर्नाटक, महाराष्ट्र) में जैव प्रौद्योगिकी केंद्रों की सांद्रता अखिल भारतीय विकास को सीमित करती है।
- **बाजार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा:**
  - **निर्गत बाधाएँ:** बायोसिमिलर और चिकित्सा उपकरणों के लिए सख्त वैश्विक मानक अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रवेश में बाधा डालते हैं।
  - **आयात पर निर्भरता:** घरेलू उत्पादन वृद्धि के बावजूद विदेशी उपकरणों और एपीआई पर अत्यधिक निर्भरता।



## आगे की राह

- नीतिगत ढाँचों को मज़बूत करना:
  - विनियमनों में सामंजस्य स्थापित करना: बायोटेक अनुमोदनों के लिए एकल-खिड़की मंजूरी प्रणाली बनाना।
  - आईपी व्यावसायीकरण को बढ़ावा देना: लाइसेंसिंग प्रक्रियाओं को सरल बनाना और उद्योग-अकादमिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
  - BioE3 नीति कार्यान्वयन का विस्तार करना: बायोमैनुफैक्चरिंग हब और बायो-एआई एकीकरण को प्राथमिकता देना।
- बुनियादी ढाँचे और नवाचार को बढ़ावा देना
  - बायोफाउंड्री में निवेश करना: तेजी से विस्तार के लिए “प्लग-एंड-प्ले” बायोमैनुफैक्चरिंग सुविधाएँ विकसित करना।
  - ग्रामीण बुनियादी ढाँचे को उन्नत करना: टियर-II/III शहरों में विकेंद्रीकृत बायोइन्फ्यूबेटर स्थापित करना।
  - परिपल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना: अपशिष्ट-से-बायोएनर्जी प्रौद्योगिकियों और संधारणीय फीडस्टॉक्स के लिए अनुसंधान और विकास को निधि देना।
- फंडिंग और निजी भागीदारी को जुटाना
  - वेंचर कैपिटल को पुनर्जीवित करना: बायोटेक निवेशकों के लिए कर प्रोत्साहन पेश करना और BIRAC के SEED/LEAP फंड का विस्तार करना।
  - FDI का लाभ उठाना: ब्राउनफील्ड फार्मा परियोजनाओं और मेडटेक विनिर्माण के लिए FDI मानदंडों को सरल बनाना।
- कार्यबल और सहयोग को बढ़ाना
  - कौशल विकास कार्यक्रम: सिंथेटिक जीव विज्ञान और जैव सूचना विज्ञान में विशेष पाठ्यक्रम शुरू करना।
  - वैश्विक भागीदारी: प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए WHO और NSF जैसे संस्थानों के साथ सहयोग करना।

## सरकारी पहल और प्रमुख कार्यक्रम

- बायोE3 (BioE3) नीति (अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोजगार के लिए जैव प्रौद्योगिकी)**
  - इस नीति का उद्देश्य उच्च प्रदर्शन वाले जैव विनिर्माण को बढ़ावा देकर और अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोजगार के प्रमुख स्तंभों को संबोधित करके भारत को एक वैश्विक जैव प्रौद्योगिकी पावरहाउस में बदलना है।
  - बायोई3 नीति जैव-आधारित उत्पाद विकास और व्यावसायीकरण का समर्थन करने के लिए उन्नत जैव विनिर्माण सुविधाओं, जैव-फाउंड्री क्लस्टर और जैव-एआई हब जैसी प्रमुख पहलों की शुरुआत करती है।
- राष्ट्रीय बायोफार्मा मिशन**
  - यह जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के नेतृत्व में सरकार द्वारा अनुमोदित पहल है और बीआईआरएसी द्वारा कार्यान्वित की जाती है।
  - इसका उद्देश्य उद्योग और शिक्षाविदों के बीच सहयोग को बढ़ावा देकर जैव-औषधीय उत्पादों, टीकों, बायोसिमिलर, चिकित्सा उपकरणों और निदान में भारत की क्षमताओं को बढ़ावा देना है।
- जैव-कृषि**
  - जलवायु-स्मार्ट फसलें:** सूखा-सहिष्णु, उच्च उपज वाली चना किस्म सात्विक (एनसी 9) को खेती के लिए मंजूरी दी गई है।
  - जीनोम-संपादित चावल:** उपज सीमित करने वाले जीन में कार्य-हानि उत्परिवर्तन के कारण DEP1-संपादित MTU-1010 जैसी उन्नत चावल की प्रजातियाँ विकसित हुई हैं, जो अधिक उपज दर्शाती हैं।
  - जीनोटाइपिंग एरे:** भारत के पहले 90K SNP एरे - चावल के लिए IndRA और चने के लिए IndCA - DNA फिंगरप्रिंटिंग और किस्म की पहचान को सक्षम करते हैं।
  - एमरैथ संसाधन:** एक जीनोमिक डेटाबेस, NIRS तकनीक और 64K SNP चिप पोषण संबंधी जांच और मोटापा-रोधी एमरैथ किस्मों के विकास में सहायता करते हैं।
  - बायोक्ट्रोल:** मायरोथेसियम वेरुकेरिया से एक नैनो-फॉर्मूलेशन टमाटर और अंगूर में पाउडरी फफूंदी का पर्यावरण-अनुकूल नियंत्रण प्रदान करता है।
  - किसान-कवच:** कीटनाशक-रोधी सुरक्षात्मक सूट विषाक्त जोखिम से किसानों की सुरक्षा को बढ़ाता है।
- बायोटेक-किसान (बायोटेक-कृषि नवाचार विज्ञान अनुप्रयोग नेटवर्क)**
  - यह एक वैज्ञानिक-किसान साझेदारी कार्यक्रम है, जो कृषि नवाचार और वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से किसानों, विशेष रूप से महिलाओं और ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के लोगों को सशक्त बनाने के लिए शुरू किया गया है।
  - यह हब-एंड-स्पोक मॉडल का अनुसरण करता है और भारत के 115 आकांक्षी जिलों में सक्रिय है।

## निष्कर्ष:

भारत की जैव अर्थव्यवस्था एक परिवर्तनकारी चरण में प्रवेश कर रही है, जो नवाचार, स्थिरता और समावेशी विकास द्वारा संचालित है। रणनीतिक निवेश, नीतिगत सुसंगतता और वैश्विक सहयोग के साथ, भारत एक वैश्विक जैव प्रौद्योगिकी पावरहाउस के रूप में उभरने के लिए तैयार है, जो औद्योगिक और पर्यावरणीय प्रतिमानों को फिर से परिभाषित करेगा।

## यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

### मुख्य परीक्षा परीक्षा:

प्रश्न. जैव अर्थव्यवस्था क्या है? भारत में जैव अर्थव्यवस्था को संचालित करने वाले कारकों पर चर्चा करें। भारत के जैव अर्थव्यवस्था क्षेत्र के लिए क्या चुनौतियाँ हैं? [250 शब्द] [15 अंक]

### महासागरीय धाराएँ

**चर्चा में क्यों:** वैज्ञानिकों ने जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व की सबसे शक्तिशाली महासागरीय धारा- अंटार्कटिक सर्क्युलर करंट (एसीसी) के धीमे होने की संभावना पर चिंता जताई है। इस घटना के पृथ्वी की जलवायु प्रणाली पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जिसमें समुद्र का जलस्तर बढ़ना, समुद्र का गर्म होना और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र में व्यवधान शामिल हैं।

### शोध से मुख्य निष्कर्ष:

मेलबर्न विश्वविद्यालय द्वारा अपने पर्यावरण शोध पत्रों में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चला है कि:

- अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (एसीसी) जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण धीमी हो रही है।
- उच्च कार्बन उत्सर्जन परिदृश्य के तहत, एसीसी 2050 तक लगभग 20% तक धीमा हो सकता है।
- इस मंदी का वैश्विक जलवायु, महासागर धाराओं और समुद्री जीवन पर दूरगामी प्रभाव हो सकता है।

### अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (एसीसी) के बारे में:

अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (एसीसी) सबसे मजबूत और एकमात्र धारा है जो पूरे विश्व में निर्बाध रूप से बहती है।

#### 1. एसीसी की विशेषताएँ:

- **प्रवाह दिशा:** दक्षिणी ध्रुव से देखने पर एसीसी अंटार्कटिका के चारों ओर दक्षिणावर्त (पश्चिम से पूर्व) बहती है।
- **वैश्विक नाम:** इसे पश्चिमी पवन प्रवाह के रूप में भी जाना जाता है।
- **महासागरों को जोड़ना:** एसीसी अटलांटिक, प्रशांत और हिंद महासागरों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है, जिससे ऊष्मा, पोषक तत्वों और समुद्री प्रजातियों का आदान-प्रदान होता है।

#### 2. एसीसी का महत्व:

- **वैश्विक जलवायु को नियंत्रित करता है:**
  - एसीसी ऊष्मा और पोषक तत्वों को पुनर्वितरित करके वैश्विक महासागर परिसंचरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
  - यह एक तापीय अवरोधक के रूप में कार्य करता है, जो गर्म जल को अंटार्कटिका तक पहुँचने से रोकता है, इस प्रकार ध्रुवीय बर्फ के पिघलने को नियंत्रित करता है।
- **कार्बन सिंक फंक्शन:**
  - एसीसी वायुमंडल से गर्मी और कार्बन डाइऑक्साइड (CO<sub>2</sub>) को अवशोषित करने की महासागर की क्षमता को बढ़ाता है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में सहायता मिलती है।

#### • समुद्री जीवन का समर्थन करता है:

- एसीसी अंटार्कटिक अभिसरण क्षेत्र बनाता है, जहाँ ठंडा अंटार्कटिक जल गर्म उप-अंटार्कटिक जल से मिलता है।
- यह अभिसरण पोषक तत्वों के ऊपर उठने की ओर ले जाता है, जिससे फाइटोप्लांकटन, क्रिल, मछली, पेंगुइन, व्हेल, सील और अल्बट्रॉस जैसे समुद्री पक्षियों का उच्च स्तर बना रहता है।

### एसीसी के धीमे होने के प्रभाव

#### 1. आक्रामक प्रजातियों में वृद्धि:

- एसीसी के कमजोर होने से गैर-देशी प्रजातियाँ (जैसे दक्षिणी बुल केलप, झींगा और मोलस्क) अंटार्कटिक पारिस्थितिकी तंत्र पर आक्रमण कर सकती हैं।
- इससे समुद्री खाद्य श्रृंखलाएँ बाधित हो सकती हैं, जिससे पेंगुइन, सील और व्हेल जैसी देशी प्रजातियाँ खतरे में पड़ सकती हैं।

#### 2. अंटार्कटिका में जलवायु की संवेदनशीलता में वृद्धि:

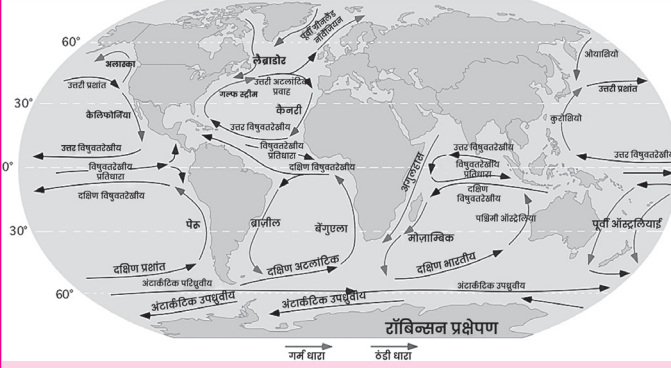
- एसीसी एक अवरोध के रूप में कार्य करता है जो गर्म जल को अंटार्कटिका तक पहुँचने से रोकता है।
- मंद गति के कारण गर्म समुद्री धाराएँ अंटार्कटिक बर्फ को तेज़ी से पिघला सकती हैं, जिससे:
  - समुद्र के स्तर में तेज़ी से वृद्धि
  - जलवायु में अधिक परिवर्तनशीलता
  - जलवायु की चरम सीमाएँ और भी ज़्यादा मजबूत और लगातार होंगी
  - CO<sub>2</sub> को अवशोषित करने की महासागरीय क्षमता में कमी, जिससे ग्लोबल वार्मिंग में तेज़ी आएगी।

#### 3. महासागरीय लवणता और परिसंचरण में परिवर्तन:

- अंटार्कटिका की पिघलती बर्फ की चादरें समुद्र में बड़ी मात्रा में मीठे जल को मिलाती हैं, जिससे लवणता कम हो जाती है।
- यह अंटार्कटिका अधस्तल जल (ABW) के निर्माण को बाधित करता है, जो वैश्विक महासागरीय परिसंचरण को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार एक गहरी महासागरीय धारा है।
- ABW के कमजोर होने से महासागरीय धाराओं की वैश्विक संवाहक पट्टी धीमी हो सकती है, जिससे प्रभावित हो सकता है:
  - विश्व भर में मौसम के पैटर्न
  - भारत और अफ्रीका में मानसून प्रणाली
  - गहरे समुद्र की धाराओं पर निर्भर समुद्री जीवन

**प्रारंभिक परीक्षा विशेष**

**महासागरीय धाराओं को समझना**



**महासागरीय धाराएँ क्या हैं?**

- महासागरीय धाराएँ विश्व के महासागरों में बड़े पैमाने पर होने वाली जल गतिविधियाँ हैं।
- वे जलवायु क्षेत्रों, मौसम के पैटर्न और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्रों को प्रभावित करती हैं।

**महासागरीय धाराओं के संचलन का कारण:**

महासागरीय धाराओं की गति मुख्य रूप से निम्नलिखित से प्रभावित होती है:

- हवा के पैटर्न
- पृथ्वी का घूर्णन (कोरिओलिस प्रभाव)
- महासागर में तापमान में अंतर
- लवणता में बदलाव
- महासागरीय बेसिनों का आकार

**महासागरीय धाराओं के प्रकार:**

**1. सतही धाराएँ (गर्म और ठंडी धाराएँ):**

- सतही धाराएँ महासागर की ऊपरी परत में बहती हैं, जो हवाओं द्वारा संचालित होती हैं।
- वे पूरे ग्रह (पृथ्वी) में ऊष्मा वितरित करने में सहायता करती हैं।
  - **गर्म महासागरीय धाराएँ:** उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से गर्म जल को उच्च अक्षांशों तक ले जाती हैं। **उदाहरण:** गल्फ स्ट्रीम (उत्तरी अटलांटिक महासागर), कुरोशियो धारा (प्रशांत महासागर)।
  - **ठंडी महासागरीय धाराएँ:** ध्रुवीय क्षेत्रों से ठंडे जल को भूमध्य रेखा की ओर ले जाती हैं। **उदाहरण:** पेरू (हम्बोल्ट) धारा, कैलिफोर्निया धारा, कैनरी धारा।

**2. गहरे महासागरीय धाराएँ (तापलवणीय संचरण):**

- इन्हें “वैश्विक कन्वेयर बेल्ट” भी कहा जाता है, ये धाराएँ ठंडे, घने जल को अधिक गहराई पर ले जाती हैं।
- वे वैश्विक जलवायु को विनियमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**निष्कर्ष:**

जलवायु परिवर्तन के कारण अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (एसीसी) का धीमा होना एक बड़ी पर्यावरणीय चिंता है। यह हो सकता है:

- अंटार्कटिका में बर्फ पिघलने में तेजी ला सकता है
- समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित कर सकता है
- वैश्विक तापमान में वृद्धि कर सकता है
- विश्व भर में महासागर परिसंचरण पैटर्न को बदल सकता है

इन जोखिमों को कम करने के लिए, वैश्विक कार्बन उत्सर्जन को कम करना और अंटार्कटिक पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करना तत्काल प्राथमिकताएँ हैं।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. महासागरीय धाराओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. अगुलहास दक्षिण अटलांटिक महासागर को घेरने वाली एक ठंडी धारा है।
2. अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (एसीसी) एक महासागरीय धारा है जो अंटार्कटिका के चारों ओर वामावर्त बहती है।
3. ओयाशियो और कैलिफोर्निया धाराएँ उत्तरी प्रशांत महासागर में बहने वाली ठंडी धाराएँ हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) उपर्युक्त सभी
- (d) इनमें से कोई नहीं

ए १७७५ (ए) २१८८

**राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड**

**चर्चा में क्यों:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व वन्यजीव दिवस (3 मार्च) पर गुजरात के गिर राष्ट्रीय उद्यान में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (एनबीडब्ल्यूएल) की 7वीं बैठक की अध्यक्षता की। हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व वन्यजीव दिवस पर गुजरात के गिर राष्ट्रीय उद्यान में राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (एनबीडब्ल्यूएल) की 7वीं बैठक की अध्यक्षता की।

**मुख्य विशेषताएँ और घोषणाएँ**

- **नदी डॉल्फिन अनुमान रिपोर्ट:**
  - पहली बार, भारत ने नदी डॉल्फिन की आबादी का अनुमान लगाने वाली एक व्यापक रिपोर्ट जारी की।
  - **दर्ज की गई आबादी:** 8 राज्यों की 28 नदियों में 6,327 डॉल्फिन।



## प्रोजेक्ट शेर के लिए राष्ट्रीय वन्यजीव रेफरल केंद्र

**चर्चा में क्यों:** केंद्र सरकार ने प्रोजेक्ट शेर के लिए 2,927.71 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं, जिसमें गुजरात में वन्यजीवों के लिए राष्ट्रीय रेफरल केंद्र (एनआरसी-डब्ल्यू) की स्थापना शामिल है। इस प्रमुख पहल का उद्देश्य एशियाई शेरों की बीमारी की निगरानी और संरक्षण को मजबूत करना है, जो भारत की एक अनूठी प्रजाति है।

### वन्यजीवों के लिए राष्ट्रीय रेफरल केंद्र (एनआरसी-डब्ल्यू)

#### प्रशासनिक नियंत्रण:

- मंत्रालय: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी)
- नोडल एजेंसी: केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण (सीजेडए)

#### उद्देश्य:

जंगली जानवरों में बीमारियों का पता लगाने, निगरानी करने और प्रबंधन करने की भारत की क्षमता को बढ़ाना, विशेष रूप से वे जो जूनोटिक खतरा पैदा करते हैं - यानी, वे बीमारियाँ जो जानवरों से मनुष्यों में फैल सकती हैं।

#### एनआरसी-डब्ल्यू के मुख्य स्तंभ:

1. निगरानी: वन्यजीव आबादी में राष्ट्रव्यापी रोग ट्रैकिंग।
2. प्रतिक्रिया: प्रकोप और आपात स्थितियों के दौरान त्वरित कार्रवाई।
3. रोकथाम: प्रकोप से बचने के लिए अनुसंधान और प्रोटोकॉल।

4. तैयारी: समय पर हस्तक्षेप के लिए पेशेवरों को प्रशिक्षित करना और उन्हें सुसज्जित करना।

#### एनआरसी-डब्ल्यू के कार्य:

- राष्ट्रीय स्तर पर वन्यजीव रोग निगरानी कार्यक्रम
- नैदानिक प्रयोगशालाओं और पूर्व चेतावनी प्रणालियों की स्थापना
- वन्यजीव पशु चिकित्सकों और शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित करके क्षमता निर्माण
- वन्यजीव स्वास्थ्य और जूनोटिक रोग शमन के लिए नीति-निर्माण में सहायता करना
- राज्य वन विभागों, चिड़ियाघरों और अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग

#### प्रोजेक्ट शेर:

- 15 अगस्त, 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रोजेक्ट शेर की शुरुआत की, जो प्रौद्योगिकी-संचालित संरक्षण, मानव-शेर संघर्ष में कमी और सामुदायिक सहभागिता को प्राथमिकता देता है।
- गिर के वन्यजीवों पर नज़र रखने के लिए, प्रोजेक्ट शेर सासन में एक अत्याधुनिक निगरानी सुविधा और पशु चिकित्सा क्लिनिक भी बनाता है।
- गुजरात के 9 जिलों के 53 तालुकाओं में फैले 674 शेरों के साथ, जो लगभग 30,000 वर्ग किलोमीटर में फैले हैं, 10 साल की पहल एशियाई शेरों के कल्याण की रक्षा करना चाहती है।

## एशियाई शेर

गुण	विवरण
वैज्ञानिक नाम	पेंथेरा लियो पर्सिका
पर्यावास	मुख्य रूप से गिर वन (जूनागढ़, गुजरात) में पाया जाता है, इसमें कांटेदार झाड़ियाँ, शुष्क पर्णपाती वन और सागौन के जंगल शामिल हैं
आचरण	छोटे झुंड (2-5 सदस्य), कम शिकार उपलब्धता के कारण अकेले या छोटे समूहों में शिकार करते हैं
आईयूसीएन लाल सूची	असुरक्षित
CITES	परिशिष्ट I (उच्चतम सुरक्षा)
वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972	अनुसूची I (भारत में सर्वोच्च कानूनी संरक्षण)

## एशियाई शेर और अफ्रीकी शेर के बीच तुलना

विशेषता	एशियाई शेर	अफ्रीकी शेर
आकार (वजन)	350 से 450 पाउंड	330 से 550 पाउंड
लंबाई	5.5 फीट से 8.2 फीट	11 फीट तक
पर्यावास	गिर वन राष्ट्रीय उद्यान, गुजरात (भारत)	उप-सहारा अफ्रीका
पसंदीदा भूभाग	शुष्क पर्णपाती वन, सवाना घास के मैदान	खुले सवाना, घास के मैदान

शिकार शैली	छोटे शिकार, व्यक्तिगत या झुंड में सीमित शिकार	बड़ा शिकार, समन्वित रूप से समूह में शिकार
अयाल (Mane)	विरल, छोटे, गहरे रंग के, जिससे कान स्पष्ट दिखते हैं	भरा हुआ, लंबा, सघन, रंग गहरे पीले से काले तक
त्वचा की सिलवटें	स्पष्ट अनुदैर्घ्य सिलवट (प्राइमोर्डियल थैली) पेट पर दिखती है	पेट चिकना, सिलवटें नहीं होती
सिर का आकार	संकरि खोपड़ी, द्विभाजित इन्फ्राऑर्बिटल फोरामिना	चौड़ी खोपड़ी, कोई द्विभाजित फोरामिना नहीं

**निष्कर्ष:**

प्रोजेक्ट शेर के तहत वन्यजीवों के लिए राष्ट्रीय रेफरल केंद्र का शुभारंभ एशियाई शेरों के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक समय पर उठाया गया कदम है, जो गुजरात और भारत का गौरव है। एकीकृत रोग निगरानी, आवास प्रबंधन और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से, भारत संभारणीय और विज्ञान आधारित वन्यजीव संरक्षण के एक मॉडल की दिशा में काम कर रहा है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. एशियाई शेरों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- एशियाई शेरों को आईयूसीएन संकटग्रस्त प्रजातियों की लाल सूची में 'सुभेद्य' के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
- एशियाई शेर का अयाल अफ्रीकी शेर की तुलना में छोटा और कम विकसित होता है।
- एशियाई शेर अब केवल भारत के गिर वन क्षेत्र के भीतर जंगली में पाए जाते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने कथन गलत हैं?

- |                   |                       |
|-------------------|-----------------------|
| (a) केवल एक       | (b) केवल दो           |
| (c) उपर्युक्त सभी | (d) इनमें से कोई नहीं |

(P) : 2024

**बढ़ते खतरों के बीच घड़ियाल संरक्षण**

**चर्चा में क्यों:** मध्य प्रदेश घड़ियाल संरक्षण में अग्रणी के रूप में उभरा है, जहां अवैध रेत खनन और आवास के नुकसान जैसे लगातार खतरों के बावजूद राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई है।

**मुख्य विवरण:**

- मध्य प्रदेश वन विभाग की 2023 की रिपोर्ट में पिछले एक दशक में घड़ियालों की संख्या में 30% की वृद्धि दिखाई गई है।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) की 2022 की रिपोर्ट में चंबल में अवैध रेत खनन को घड़ियालों के लिए एक प्रमुख खतरे के रूप में उजागर किया गया है।
- WWF इंडिया रिपोर्ट (2021):** कहा गया है कि चंबल में 80% घड़ियालों की मौत निवास स्थान के नुकसान और मानवीय गतिविधियों के कारण हुई।

**घड़ियाल (गेवियलिस गैंगेटिकस) के बारे में:**

विशेषता	विवरण
पर्यावास	यह भारत, नेपाल और बांग्लादेश की नदी प्रणालियों का मूल निवासी है।
मुख्य विशेषता	आपस में जुड़े दांतों वाला लंबा, पतला थूथन मछली पकड़ने के लिए आदर्श है।
जनसंख्या में गिरावट	पर्यावास हानि, अवैध शिकार और मछली टॉक में कमी के कारण 1940 के दशक में 5,000+ से घटकर 1970 के दशक में 200 हो गई।
संरक्षण की स्थिति	- आईयूसीएन: गंभीर रूप से संकटग्रस्त - IAS: परिशिष्ट। - वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972: अनुसूची I (उच्चतम संरक्षण)

**चंबल नदी पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में:**

- भारत की सबसे स्वच्छ नदियों में से एक, जो मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में 960 किलोमीटर तक बहती है।
- राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य (NCS) की स्थापना 1978 में की गई थी, जो तीन राज्यों में 5,400 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।
- पारिस्थितिक महत्व:**
  - भारत में घड़ियाल आबादी का अंतिम गढ़।
  - गंगा डॉल्फिन, कछुए और 320 से अधिक पक्षी प्रजातियों का घर।
  - 2020 के WII सर्वेक्षण के अनुसार, चंबल में 1,600 से अधिक घड़ियाल पाए गए - जो इसे एक महत्वपूर्ण निवास स्थान बनाता है।

**भारत सरकार द्वारा संरक्षण प्रयास**

**1. प्रोजेक्ट क्रोकोडाइल (1975):**

- भारत की तीन मगरमच्छ प्रजातियों: घड़ियाल, मगर और खारे जल के मगरमच्छ के लिए एक प्रमुख संरक्षण पहल।
- इस पर ध्यान केंद्रित करता है:**
  - बंदी प्रजनन
  - पर्यावास बहाली
  - प्रजातियों को जंगल में फिर से लाना

**2. वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:**

- लुप्तप्राय प्रजातियों को कानूनी सुरक्षा प्रदान करता है।
- संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना करता है, शिकार और व्यापार को नियंत्रित करता है, और प्रजातियों को अनुसूचियों के अंतर्गत वर्गीकृत करता है।
- घड़ियालों को अनुसूची I के अंतर्गत संरक्षित किया जाता है - जो अधिकतम सुरक्षा प्रदान करता है।

**3. राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य:**

- घड़ियाल, लाल मुकुट वाले छत वाले कछुए और गंगा डॉल्फिन के संरक्षण के लिए विशेष रूप से स्थापित।

- बहु-राज्य नदी संरक्षण प्रयासों के लिए एक मॉडल।

#### 4. संरक्षण प्रजनन केंद्र:

- घड़ियालों के बाहरी संरक्षण, बंदी प्रजनन और पुनर्वास पर केंद्रित सुविधाएँ।
- आनुवंशिक विविधता को बनाए रखने और जंगली आबादी को मजबूत करने का लक्ष्य।

#### मौजूदा चुनौतियाँ:

- **अवैध रेत खनन:** घोंसले के शिकार स्थलों को नष्ट करता है और नदी की आकृति विज्ञान को बदलता है।
- **जलवायु परिवर्तन:** जल प्रवाह और तापमान को बदलता है, जिससे प्रजनन पर असर पड़ता है।
- **पर्यावास विखंडन:** मानव अतिक्रमण, बुनियादी ढाँचे का विकास और प्रदूषण नदी के पारिस्थितिकी तंत्र को खराब करते हैं।

#### आगे की राह:

- वैज्ञानिक, पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित संरक्षण मॉडल अपनाना।
- एकीकृत नदी बेसिन प्रबंधन के लिए अंतर-राज्यीय सहयोग को बढ़ावा देना।
- स्थानीय समुदायों को संरक्षण और आजीविका के विकल्पों में शामिल करना।
- संरक्षित क्षेत्रों में खनन और प्रदूषण नियंत्रण कानूनों का सख्ती से पालन करना।

#### निष्कर्ष:

घड़ियाल संरक्षण में मध्य प्रदेश की सफलता दीर्घकालिक प्रतिबद्धता, सामुदायिक भागीदारी और पारिस्थितिक नियोजन का प्रमाण है। हालाँकि, इस प्रगति को बनाए रखने के लिए पर्यावास क्षरण को रोकने और बहु-राज्य सहयोग को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में घड़ियाल संरक्षण के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत में सभी तीन देशी मगरमच्छ प्रजातियों के संरक्षण के लिए प्रोजेक्ट क्रोकोडाइल (1975) शुरू किया गया था।
2. घड़ियाल पूरी तरह से मीठे जल की प्रजातियाँ हैं और खारे या मुहाना के वातावरण में जीवित नहीं रह सकती हैं।
3. उन्हें वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत सूचीबद्ध किया गया है, जो उन्हें कानूनी सुरक्षा का उच्चतम स्तर प्रदान करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा कथन सही है?

- (a) केवल 1 और 2                      (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1 और 3                      (d) 1, 2 और 3

(p) : 2116

### पवन ऊर्जा

**चर्चा में क्यों:** क्रिसिल रेटिंग्स के अनुसार, भारत की पवन ऊर्जा क्षमता वित्त साल 27 तक 63 गीगावाट तक पहुँचने की उम्मीद है, जो वर्तमान स्तरों से एक महत्वपूर्ण उछाल है और अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ती गति को दर्शाता है।

#### मुख्य बिंदु:

- 31 दिसंबर 2024 तक, भारत की कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता 48.16 गीगावाट थी, जो इसे विश्व में चौथा सबसे बड़ा बनाती है।
- क्रिसिल का अनुमान है कि वित्त साल 26 और वित्त साल 27 में वार्षिक क्षमता वृद्धि औसतन 7.1 गीगावाट होगी, जो वित्त साल 24 और वित्त साल 25 में सालाना जोड़े गए 3.4 गीगावाट से दोगुनी से भी अधिक है।
- हाल के सालों में अपेक्षाकृत कम वृद्धि पवन क्षमता नीलामी में सीमित सफलता के कारण हुई है।
- स्थापित पवन क्षमता में गुजरात देश में सबसे आगे है, उसके बाद तमिलनाडु है - दोनों मिलकर भारत की कुल पवन स्थापनाओं का लगभग 50% हिस्सा हैं।

#### भारत में पवन ऊर्जा के लिए चुनौतियाँ

- **बुनियादी ढाँचे की सीमाएँ:**
  - **ग्रिड एकीकरण:** बड़े पैमाने पर पवन ऊर्जा उत्पादन को समायोजित करने के लिए ग्रिड क्षमता अपर्याप्त है, जो आम तौर पर ग्रिड अस्थिरता की ओर ले जाती है।
  - **ट्रांसमिशन नेटवर्क:** दूरस्थ स्थानों से लोड केंद्रों तक पवन ऊर्जा के परिवहन के लिए पर्याप्त ट्रांसमिशन बुनियादी ढाँचा अभी भी एक कमी है।
  - **बिजली निकासी:** बिजली निकासी के लिए, जटिल बुनियादी ढाँचे और परियोजना विकास में बाधा उत्पन्न करने के जोखिम के कारण कई तरह की मंजूरी और अनुमतियाँ लेनी पड़ती हैं। जिसके परिणामस्वरूप परियोजना की समयसीमा में देरी हो रही है।
- **आर्थिक कारक:**
  - **न्यूनतम परियोजना आकार:** न्यूनतम परियोजना आकार की आवश्यकता काफी अधिक है, जो छोटे डेवलपर्स के लिए बाजार में प्रवेश करना चुनौतीपूर्ण है।
  - **निवेश लागत:** पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए पूंजीगत व्यय काफी अधिक है; इसमें टरबाइन खरीद, स्थापना और ग्रिड कनेक्शन शुल्क शामिल हैं।
  - **वित्तीय जोखिम:** इस क्षेत्र में सरकारी नीतियाँ ऐतिहासिक रूप से अनिश्चित रही हैं। उतार-चढ़ाव वाले टैरिफ और ग्रिड बाधाओं के कारण संभावित राजस्व हानि निवेशकों के लिए वित्तीय जोखिम पैदा कर सकती है।
- **तकनीकी चुनौतियाँ:**
  - **स्थापना और कमीशनिंग:** स्थापना प्रक्रिया बहुत जटिल है और पवन फार्मों के कमीशनिंग के दौरान संभावित तकनीकी चुनौतियाँ हैं।
  - **परिवहन:** बड़े पवन टरबाइन घटकों को दूरस्थ परियोजना स्थलों तक पहुँचाने में चुनौतियों को देखते हुए, आप अनुमान लगा सकते हैं कि यह कितना मुश्किल हो सकता है।
  - **रखरखाव और संचालन:** पवन फार्मों का कुशल रखरखाव और संचालन सुनिश्चित करना नियमित रूप से हो रहा है। इस प्रक्रिया में ब्लेड निरीक्षण, गियरबॉक्स मरम्मत और जनरेटर रखरखाव शामिल हैं।
- **भूमि अधिग्रहण:**
  - **भूमि अधिग्रहण:** पवन फार्मों के लिए उपयुक्त भूमि का अधिग्रहण अपने आप में बहुत चुनौतीपूर्ण है, खासकर घनी आबादी वाले क्षेत्रों या संरक्षित क्षेत्रों में।

#### भारत के पवन ऊर्जा बाजार में अवसर:

- **तकनीकी उन्नति:** टरबाइन दक्षता में निरंतर उन्नति ने ऊर्जा कैप्चर में सुधार किया है और लागत कम की है। पवन ऊर्जा और सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा का संयोजन 2026 तक भारतीय बाजार में क्रांति लाने की बहुत संभावना रखता है।

- **बढ़ती ऊर्जा मांग:** भारत एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और औद्योगीकरण में वृद्धि बिजली की मांग में वृद्धि कर रही है। ग्रामीण विद्युतीकरण पर सरकार का ध्यान ग्रामीण समुदायों की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए पवन ऊर्जा के लिए अवसर प्रदान करता है।
- **वैश्विक बाजार एकीकरण:** भारत में वैश्विक पवन ऊर्जा बाजार में भाग लेने की क्षमता है और यह पवन ऊर्जा उत्पन्न करने की चौथी सबसे अधिक स्थापित क्षमता के साथ बाजार पर हावी है। अन्य देशों को पवन ऊर्जा प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता का निर्यात आने वाले सालों में राजस्व सृजन मॉडल हो सकता है।

#### आगे की राह:

- **ग्रिड आधुनिकीकरण:** अधिक पवन ऊर्जा को समायोजित करने और विश्वसनीय निकासी सुनिश्चित करने के लिए ग्रिड बुनियादी ढांचे का विस्तार और उन्नयन।
- **नीति स्थिरता:** एक सुसंगत और पारदर्शी विनियामक ढांचा निवेशकों का विश्वास बढ़ा सकता है।
- **अपतटीय पवन को बढ़ावा:** अपतटीय पवन परियोजनाओं के माध्यम से भारत की लंबी तटरेखा का लाभ उठाना, विशाल ऊर्जा क्षमता को खोलना।
- **भूमि पूलिंग मॉडल:** लाभ-साझाकरण योजनाओं के माध्यम से भूमि अधिग्रहण में स्थानीय समुदायों को शामिल करना।
- **हाइब्रिड परियोजनाओं को बढ़ावा देना:** चौबीसों घंटे बिजली उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए पवन और सौर प्रणालियों को एकीकृत करना।

#### प्रारंभिक परीक्षा विशेष

##### पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल:

पहल	विवरण
पीढ़ी-आधारित प्रोत्साहन (जीबीआई)	परियोजनाओं को वित्तीय रूप से अधिक व्यवहार्य बनाने के लिए पवन ऊर्जा डेवलपर्स को वास्तविक उत्पादित ऊर्जा के आधार पर प्रोत्साहन दिया जाता है।
त्वरित मूल्यांकन (एटी)	इनसे परिसंपत्तियों का तेजी से मूल्यांकन हो सकेगा, तथा पवन ऊर्जा डेवलपर्स को कार लाभ मिलेगा।
नवीकरणीय खरीद दायित्व (आर.पी.ओ.)	वित्त वितरण कम्पनियों को नवीकरणीय स्रोतों से एक विशिष्ट प्रतिशत बिजली खरीदने का आदेश दिया गया है।
अपतटीय पवन ऊर्जा नीति	भारत के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में अपतटीय पवन फार्मों के विकास के लिए नीतिगत ढांचा प्रदान करता है।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में पवन ऊर्जा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत में विश्व की दूसरी सबसे बड़ी स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता है।
2. तमिलनाडु और उसके बाद गुजरात भारत में सबसे अधिक मात्रा में पवन ऊर्जा का उत्पादन करते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(P) 2018

#### हरित अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्र

**चर्चा में क्यों:** भारत ने स्वच्छ भारत मिशन-शहरी (एसबीएम-यू) के हिस्से के रूप में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के तहत अपने पहले हरित अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन किया है।

- **स्थान:** बिचौली हप्सी, इंदौर
- **क्षेत्र:** 55,000 वर्ग फीट भूमि में फैला हुआ।

#### मुख्य विशेषताएं:

- **इंदौर शहर:** स्वच्छ सर्वेक्षण के तहत लगातार सात सालों तक भारत के सबसे स्वच्छ शहर का खिताब जीता।
- **ग्रीन वेस्ट-टू-एनर्जी:** लकड़ी, पत्तियों और शाखाओं जैसे जैविक बर्गीचे के कचरे को लकड़ी के छरों में परिवर्तित करता है - कोयले का एक स्थायी विकल्प।
- **आर्थिक मॉडल:** इंदौर नगर निगम (IMC) ग्रीन वेस्ट की आपूर्ति के लिए सुविधा से प्रति टन 3,000 रुपये रॉयल्टी कमाता है।
- **दैनिक अपशिष्ट भार:**
  - नियमित उत्पादन: ~30 टन/दिन
  - मौसमी उछाल (शरद ऋतु): 60-70 टन/दिन तक

#### हरित अपशिष्ट प्रसंस्करण को समझना:

हरित अपशिष्ट से तात्पर्य बर्गीचों, पार्कों और सार्वजनिक स्थानों से निकलने वाले बायोडिग्रेडेबल ऑर्गेनिक कचरे से है। लैंडफिल के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, ऊर्जा संरक्षण और हवा और मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार के लिए ग्रीन वेस्ट का उचित प्रबंधन आवश्यक है।

#### इसमें शामिल मुख्य प्रक्रियाएँ

##### 1. संग्रह और पृथक्करण:

- हरित अपशिष्ट को संदूषण से बचने और प्रभावी प्रसंस्करण सुनिश्चित करने के लिए स्रोत (जैसे, घरों, पार्कों से) पर अलग किया जाता है।

##### 2. खाद बनाना:

- जैविक कचरे को विघटित करके पोषक तत्वों से भरपूर खाद बनाई जाती है जिसका उपयोग कृषि, बागवानी और भूनिर्माण में किया जाता है।
- **लाभ:** लैंडफिल से मीथेन उत्सर्जन कम होता है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है।

##### 3. कचरे से ऊर्जा में रूपांतरण:

- बायोमास का उपयोग बायोगैस या बिजली उत्पन्न करने के लिए किया जाता है, जो अक्षय ऊर्जा उत्पादन में योगदान देता है।

##### 4. मल्लिचंग:

- हरित अपशिष्ट को टुकड़ों में काट कर गीली घास बना दी जाती है और इसका उपयोग शहरी वानिकी और भूनिर्माण में मिट्टी की नमी बनाए रखने, खरपतवारों को दबाने और कटाव को रोकने के लिए किया जाता है।

##### 5. वायु गुणवत्ता में सुधार:

- पत्तियों और शाखाओं को खुले में जलाने से, हरे कचरे का प्रसंस्करण वायु प्रदूषण को काफी हद तक कम करता है।

### भारत में हरित अपशिष्ट से जुड़ी प्रमुख पहल:

- **स्वच्छ भारत मिशन-शहरी (एसबीएम-यू):** हरित अपशिष्ट के प्रबंधन के लिए खाद बनाने और स्थानीय अपशिष्ट से ऊर्जा बनाने वाले संयंत्रों को बढ़ावा देता है। उदाहरण: पुणे जैसे शहरों ने विकेंद्रीकृत खाद बनाने वाली इकाइयाँ स्थापित की हैं।
- **सतत आवास पर राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसएच):** हरित अपशिष्ट पुनर्चक्रण सहित सतत अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं को प्रोत्साहित करता है। लक्ष्य: हरित अपशिष्ट उपचार के माध्यम से शहरी उत्सर्जन को कम करना।
- **टोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016:** जैवनिम्नीकरणीय अपशिष्टों को अलग-अलग करना और खाद बनाना अनिवार्य करता है। तथ्य: स्रोत पर पृथक्करण और स्थानीय खाद बनाने वाली इकाइयाँ अब अनिवार्य हैं।
- **कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन (अमृत):** शहरी क्षेत्रों में हरित अपशिष्ट प्रसंस्करण के लिए बुनियादी ढाँचे का समर्थन करता है। लक्ष्य: हरित स्थान प्रबंधन और अपशिष्ट प्रसंस्करण के लिए सुविधाएँ स्थापित करना।
- **वेस्ट टू वेल्थ मिशन (पीएम-एसटीआईएसी के तहत):** हरित अपशिष्ट सहित अपशिष्ट को ऊर्जा या जैव उत्पादों में परिवर्तित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। नवाचार: हरित अपशिष्ट को खाद या ऊर्जा में बदलने के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करना।

### निष्कर्ष

इंदौर में भारत के पहले PPP-आधारित ग्रीन वेस्ट प्रोसेसिंग प्लांट की स्थापना शहरी स्थिरता में एक मील का पत्थर है। यह दर्शाता है कि कैसे अभिनव शासन मॉडल, जब मजबूत नागरिक भागीदारी और प्रौद्योगिकी के साथ संयुक्त होते हैं, तो वेस्ट टू वेल्थ में बदल सकते हैं। जैसे-जैसे शहरी कचरे की मात्रा बढ़ती है, भारत भर के शहर प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल अपशिष्ट प्रबंधन समाधानों के लिए इंदौर के मॉडल को एक खाका के रूप में देख सकते हैं।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत के शहरी क्षेत्रों में हरित अपशिष्ट प्रबंधन में सरकारी पहलों की भूमिका पर चर्चा करें। संधारणीयता को बढ़ावा देने और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें। [250 शब्द] [15 अंक]

### माधव राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य

**चर्चा में क्यों:** केंद्रीय पर्यावरण मंत्री ने हाल ही में घोषणा की कि मध्य प्रदेश में स्थित माधव राष्ट्रीय उद्यान को आधिकारिक तौर पर भारत का 58वाँ बाघ अभयारण्य घोषित किया गया है। यह बाघ संरक्षण और जैव विविधता संरक्षण के लिए भारत की चल रही प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

### माधव राष्ट्रीय उद्यान के बारे में:

पहलू	विवरण
अवस्थिति	मध्य प्रदेश की ऊपरी विंध्य पहाड़ियों में शिवपुरी शहर के पास।
कुल क्षेत्रफल	1,751 वर्ग किमी, में विभाजित: <ul style="list-style-type: none"> <li>• कोर जोन: 375 वर्ग किमी</li> <li>• बफर जोन: 1,276 वर्ग किमी</li> </ul>
पूर्व नाम	पहले इसे शिवपुरी राष्ट्रीय उद्यान कहा जाता था
नाम परिवर्तन	1958 में इसका नाम बदलकर ग्वालियर के महाराजा माधो राव सिंधिया (सिंधिया राजवंश) के नाम पर रखा गया।
पारिस्थितिक क्षेत्र	खथियार-गिर शुष्क पर्णपाती वन पारिस्थितिकी का हिस्सा
भू-भाग	इसमें वनाच्छादित पहाड़ियाँ, समतल घास के मैदान और जलाशय के आसपास के क्षेत्र शामिल हैं
वर्षा	यहाँ औसतन 816 मिमी वार्षिक वर्षा होती है
राज्य टैकिंग	मध्य प्रदेश का 9वाँ बाघ अभयारण्य बना, जिससे राज्य को "भारत का बाघ राज्य" का दर्जा पुनः प्राप्त हुआ

### पारिस्थितिक महत्व:

- यह उद्यान जैव विविधता से समृद्ध है, यहाँ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ और जीव पाए जाते हैं, और यह एक महत्वपूर्ण वन्यजीव गलियारे के रूप में कार्य करता है।
- यहाँ का विविध परिदृश्य न केवल बाघों बल्कि तेंदुओं, हिरणों, जंगली सूअरों और पक्षियों, सरीसृपों और छोटे स्तनधारियों की कई प्रजातियों का भी घर है।

- इसे बाघ अभयारण्य में बदलने से सख्त सुरक्षा और समय आवास प्रबंधन सुनिश्चित होगा, जिससे बाघों की प्राकृतिक पुनः आबादी को बढ़ावा मिलेगा।

### महत्वपूर्ण बाघ/वन्यजीव आवास घोषित करने के मानदंड

वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (2006 में संशोधित) और वन अधिकार अधिनियम, 2006 के अनुसार, महत्वपूर्ण आवासों के निर्धारण में निम्नलिखित सिद्धांत मार्गदर्शक हैं:

**न्यूनतम अनुल्लंघनीय क्षेत्र:**

- व्यवहार्य बाघ आबादी को बनाए रखने के लिए न्यूनतम 800-1,000 वर्ग किलोमीटर अनुल्लंघनीय स्थान आवश्यक है।
- बाघ जीव विज्ञान, प्रादेशिक सीमा और आबादी व्यवहार्यता विश्लेषण जैसे कारकों के आधार पर।

**महत्वपूर्ण वन्यजीव पर्यावास (CWH):**

- न केवल बाघों के लिए बल्कि छल प्रजातियों के लिए भी पहचाना जाता है जैसे:
  - स्थानिक प्रजातियाँ
  - शीर्ष मांसाहारी
  - मेगा-शाकाहारी
  - संकेतक प्रजातियाँ
  - संकटग्रस्त और प्रवासी वन्यजीव
- सीमांकन प्रत्येक जैवभौगोलिक क्षेत्र (भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा वर्गीकृत) के लिए अद्वितीय प्रजाति-क्षेत्र वक्रों पर आधारित है।

**वन्यजीव गलियारे:**

- आनुवंशिक संपर्क और वन्यजीव आंदोलन सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों या आरक्षित वनों को जोड़ने वाले गलियारों का भी इन मानदंडों के तहत मूल्यांकन किया जाता है।

**बाघ अभयारण्यों को आधिकारिक तौर पर कैसे अधिसूचित किया जाता है?**

बाघ अभयारण्यों को राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) की सिफारिश पर वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की धारा 38वी के तहत राज्य सरकारों द्वारा अधिसूचित किया जाता है।

**चरण-दर-चरण अधिसूचना प्रक्रिया:**

1. **प्रस्ताव प्रस्तुत करना:** राज्य सरकार बाघ अभयारण्य बनाने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत करती है।
2. **प्रारंभिक जांच:** एनटीसीए प्रारंभिक समीक्षा करता है और सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान करता है।
3. **विस्तृत प्रस्ताव:** राज्य मानचित्र, सीमाएँ, कोर-बफर जोन और संरक्षण रणनीति सहित एक व्यापक प्रस्ताव प्रस्तुत करता है।
4. **अंतिम अनुशंसा:** एनटीसीए, उचित परिश्रम के बाद, राज्य सरकार को अभयारण्य की अनुशंसा करता है।
5. **आधिकारिक अधिसूचना:** राज्य सरकार आधिकारिक तौर पर क्षेत्र को बाघ अभयारण्य के रूप में अधिसूचित करती है।

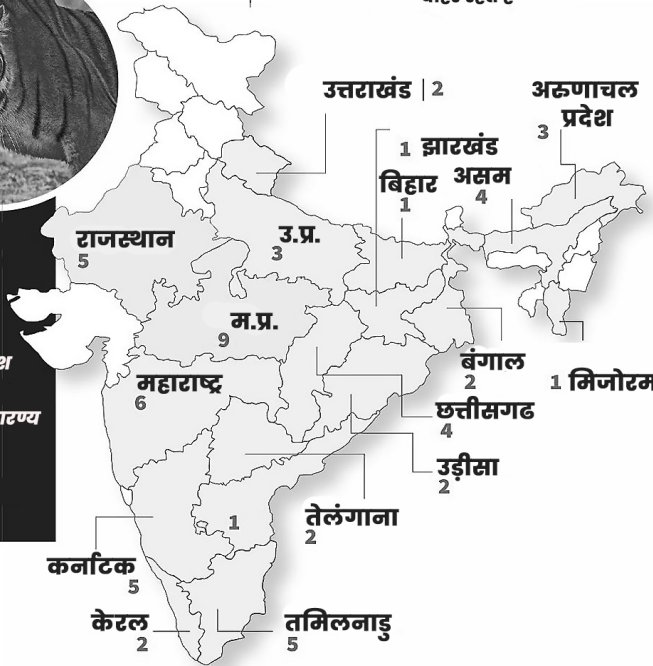
**निष्कर्ष:**

माधव राष्ट्रीय उद्यान को 58वें बाघ अभयारण्य के रूप में घोषित किया जाना न केवल बाघ संरक्षण पर भारत के अटूट ध्यान को दर्शाता है, बल्कि मध्य भारत के पारिस्थितिकी तंत्र को भी मजबूत करता है। यह जैव विविधता संरक्षण, पारिस्थितिकी पर्यटन और संरक्षण प्रयासों में सामुदायिक भागीदारी के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण को दर्शाता है। इस कदम के साथ, भारत वैश्विक बाघ पुनर्प्राप्ति कार्यक्रम के तहत अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और पर्यावरणीय स्थिरता के व्यापक दृष्टिकोण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाता है।

**बड़ी बिल्लियों के लिए घर**



बाघ अभयारण्य भारत के कोने-कोने में फैले हुए हैं, जिनमें मध्य प्रदेश में सबसे अधिक नौ अभयारण्य हैं।



2023 की बाघ जनगणना के अनुसार, भारत में 3,682 बाघ होने का अनुमान है। माना जाता है कि उनमें से लगभग 30% बाघ अभयारण्यों के बाहर रहते हैं।

## उत्सर्जन तीव्रता

**चर्चा में क्यों:** भारत सरकार नौ प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों के लिए उत्सर्जन तीव्रता लक्ष्य घोषित करने की तैयारी कर रही है, जो भारत की राष्ट्रीय कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS) के क्रियान्वयन के लिए महत्वपूर्ण कदम है। यह कम कार्बन अर्थव्यवस्था की ओर भारत की यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

### उत्सर्जन तीव्रता क्या है?

- उत्सर्जन तीव्रता से तात्पर्य गतिविधि की प्रति इकाई, जैसे कि प्रति टन उत्पाद या जीडीपी की प्रति इकाई, उत्पादित ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन की मात्रा से है।
- सरल शब्दों में, यह दर्शाता है कि कोई प्रक्रिया या क्षेत्र अपने आउटपुट के सापेक्ष कितना स्वच्छ या प्रदूषणकारी है।

### कार्बन उत्सर्जन तीव्रता:

- विशेष रूप से आर्थिक उत्पादन की प्रति इकाई उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य (CO<sub>2</sub>e) को मापता है।
- विभिन्न पैमानों पर उद्योगों या देशों की उत्सर्जन दक्षता की तुलना करने के लिए उपयोगी है।

### भारतीय उद्योग के लिए उत्सर्जन तीव्रता क्यों मायने रखती है?

#### नियामक अनुपालन:

- कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS) के तहत, नौ औद्योगिक क्षेत्रों को क्षेत्र-विशिष्ट उत्सर्जन तीव्रता लक्ष्यों को पूरा करना होगा:
  - लोहा और इस्पात
  - एल्युमीनियम
  - क्लोर-क्षार
  - सीमेंट
  - उर्वरक
  - लुगदी और कागज
  - पेट्रोकेमिकल्स
  - पेट्रोलियम रिफाइनरियाँ
  - कपड़ा

#### जलवायु प्रतिबद्धताएँ:

उत्सर्जन तीव्रता में कमी भारत के पेरिस समझौते के तहत सकल घरेलू उत्पाद के जीएचजी उत्सर्जन तीव्रता को 2005 के स्तर से 2030 तक 45% तक कम करने की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है।

#### आर्थिक प्रोत्साहन:

- कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग:** जो कंपनियाँ अपनी आवंटित सीमा से कम उत्सर्जन करती हैं, वे अधिशेष क्रेडिट बेच सकती हैं। (1 क्रेडिट = 1 टन CO<sub>2</sub> उत्सर्जन से बचाव)
- घरेलू और वैश्विक कार्बन बाजारों में भागीदारी के माध्यम से राजस्व सृजन।

#### तकनीकी नवाचार:

स्वच्छ, ऊर्जा-कुशल प्रौद्योगिकियों को अपनाने को प्रोत्साहित करता है, जैसे:

- हीट रिकवरी सिस्टम
- अपशिष्ट-से-ऊर्जा इकाइयाँ
- कम उत्सर्जन वाले ईंधन और नवीकरणीय ऊर्जा

#### वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता:

- भारतीय उद्योगों को अंतर्राष्ट्रीय जलवायु मानकों के साथ तालमेल बिठाने में सहायता करता है, हरित निर्यात बाजारों तक पहुँच में सुधार करता है और निवेशकों का विश्वास बढ़ाता है।

### चुनौतियाँ:

- लक्ष्य निर्धारण में देरी:** उद्योगों के लिए उत्सर्जन तीव्रता लक्ष्य अभी तक निर्दिष्ट नहीं किए गए हैं, जिससे कार्बन बाजार संचालन में देरी हो रही है।
- एसएमई अनुपालन:** लघु और मध्यम उद्यमों (एसएमई) के पास तेजी से तकनीकी उन्नयन के लिए संसाधनों की कमी है।
- लागत और प्रौद्योगिकी बाधाएँ:** दक्षता में सुधार (जैसे, रेट्रोफिटिंग प्लांट) के लिए उच्च अग्रिम लागत।
- निगरानी और सत्यापन:** उत्सर्जन का सटीक माप, रिपोर्टिंग और सत्यापन (एमआरवी) सुनिश्चित करना।
- विकास और उत्सर्जन को संतुलित करना:** विकासशील अर्थव्यवस्था में उत्सर्जन तीव्रता को कम करते हुए औद्योगिक विकास का प्रबंधन करना।

### आगे की राह:

- नीति कार्यान्वयन:** उत्सर्जन तीव्रता लक्ष्यों को जल्द ही अंतिम रूप दिया जाएगा और अक्टूबर 2026 तक कार्बन ट्रेडिंग को चालू किया जाएगा।
- चरणबद्ध अनुपालन:** क्रमिक लक्ष्य: 2027 तक 40% की कमी, एसएमई संक्रमण को आसान बनाने के लिए 2030 तक शेष रहना।
- स्वैच्छिक कार्बन बाजार:** अनुपालन बाजारों के पूरक के लिए स्वैच्छिक ऑफसेट (जैसे वनरोपण परियोजनाएँ) को बढ़ावा देना।
- एसएमई के लिए समर्थन:** हरित प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन, सब्सिडी या तकनीकी सहायता।
- मजबूत एमआरवी ढांचा:** उत्सर्जन को ट्रैक करने और धोखाधड़ी को रोकने के लिए पारदर्शी प्रणाली स्थापित करना।
- वैश्विक संरेखण:** सीमा पार ऋण व्यापार को सक्षम करने के लिए भारतीय कार्बन बाजारों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ संरेखित करना।
- हितधारक सहयोग:** यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करने और चिंताओं को दूर करने के लिए उद्योगों के साथ निरंतर परामर्श।

#### पेरिस समझौते के प्रति भारत की प्रतिबद्धता:

- अपने पहले राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) के हिस्से के रूप में, भारत ने 2005 के स्तर से 2030 तक अपनी अर्थव्यवस्था की ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन तीव्रता को 33-35% तक कम करने का संकल्प लिया।
- अगस्त 2022 में, भारत सरकार ने अपने NDC को संशोधित किया, जिससे 2005 के स्तर से 2030 तक GHG उत्सर्जन तीव्रता में 45% की कमी करने की अपनी महत्वाकांक्षा बढ़ गई।

#### कार्बन मूल्य निर्धारण उपकरण और वैश्विक कार्बन बाजार की स्थिति:

- वैश्विक स्तर पर, कार्बन मूल्य निर्धारण उपकरण जलवायु परिवर्तन के खिलाफ संघर्ष में आवश्यक उपकरण हैं। इन उपकरणों को दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है: अनुपालन तंत्र और स्वैच्छिक तंत्र।
- उत्सर्जन व्यापार प्रणाली (ETS) जैसे अनुपालन तंत्र आमतौर पर सरकारों द्वारा कार्यान्वित और प्रबंधित किए जाते हैं।
  - वे उत्सर्जन पर एक सीमा निर्धारित करते हैं और संस्थाओं को अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उत्सर्जन अनुमतियों का व्यापार करने की अनुमति देते हैं।
- स्वैच्छिक तंत्रों का प्रबंधन अक्सर स्वतंत्र मानकों या गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किया जाता है और यह संस्थाओं को जीएचजी उत्सर्जन को कम करने या हटाने वाली परियोजनाओं से कार्बन क्रेडिट खरीदकर स्वैच्छिक रूप से अपने उत्सर्जन को ऑफसेट करने में सक्षम बनाता है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. भारत के औद्योगिक क्षेत्र के लिए उत्सर्जन तीव्रता के महत्व पर चर्चा करें। उद्योगों को अपनी उत्सर्जन तीव्रता को कम करने में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? [150 शब्द] [10 अंक]

**पार्टिकुलेट मीटर**

**चर्चा में क्यों:** नेचर कम्युनिकेशंस नामक पत्रिका में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन ने उत्तरी भारत में पीएम 2.5 प्रदूषण के स्रोतों, संरचना और स्वास्थ्य जोखिमों का पता लगाया है, जिसमें सिंधु-गंगा के मैदान पर ध्यान केंद्रित किया गया है - जो विश्व के सबसे प्रदूषित क्षेत्रों में से एक है।

**अध्ययन के बारे में:**

- अध्ययन में दिल्ली और कानपुर के शहरी, ग्रामीण, उपनगरीय, सड़क किनारे और औद्योगिक परिधि में पाँच प्रमुख स्थानों से पीएम 2.5 नमूनों का विश्लेषण किया गया।
- इसका एक अनूठा पहलू पीएम 2.5 की ऑक्सीडेटिव क्षमता पर ध्यान केंद्रित करना था - यह इस बात का संकेतक है कि ये कण मानव स्वास्थ्य के लिए कितने हानिकारक हैं, खासकर फेफड़ों की कोशिकाओं में सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव पैदा करने में।
- **मुख्य निष्कर्ष:** अध्ययन का निष्कर्ष है कि स्थानीय अकुशल दहन प्रथाओं को कम करने से - जैसे बायोमास जलाना और अनियमित ईंधन का उपयोग - उत्तर भारत में पीएम 2.5 से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बोझ को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

**पार्टिकुलेट मीटर (पीएम) क्या है?**

पार्टिकुलेट मीटर (पीएम) हवा में विमुक्त सूक्ष्म ठोस या तरल कणों को संदभित करता है। स्वास्थ्य को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाने वाले कण हैं:

प्रकार	आकार	स्रोत उदाहरण
पीएम10	≤10 माइक्रोमीटर	धूल, पराग, फफूँद
पीएम2.5	≤2.5 माइक्रोमीटर	वाहन उत्सर्जन, बायोमास दहन, औद्योगिक उत्सर्जन

- पीएम 2.5 विशेष रूप से खतरनाक है क्योंकि यह फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर सकता है और यहाँ तक कि रक्तप्रवाह में भी प्रवेश कर सकता है, जिससे कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

**भारत में पीएम 2.5 के प्रमुख स्रोत**

**शहरी क्षेत्र:**

- **वाहनों से होने वाला उत्सर्जन:**
  - कार और ट्रकों से निकलने वाले हाइड्रोकार्बन जैसे कार्बनिक एरोसोल (HOA) का प्रभुत्व।
  - ये उत्सर्जन पूरे साल अपेक्षाकृत स्थिर रहता है।
- **आवासीय ईंधन उपयोग:**
  - अमोनियम क्लोराइड और अन्य प्रदूषक गाय के गोबर, लकड़ी और डीजल जनरेटर के जलने से उत्पन्न होते हैं, खासकर सर्दियों के मौसम में।

- हीटिंग और खाना पकाने से प्राथमिक कार्बनिक एरोसोल (सीओए) का ठंड के मौसम में उत्सर्जन गर्मियों की तुलना में 10 गुना अधिक हो सकता है।
- **ऑक्सीजन युक्त कार्बनिक एरोसोल (OOA):**
  - खाना पकाने और निकास सहित मिश्रित शहरी स्रोतों से निर्मित।
  - अपेक्षाकृत स्थिर सांद्रता के साथ साल भर मौजूद रहते हैं।

**ग्रामीण, शहरी-पश्चात और औद्योगिक क्षेत्र**

- **बायोमास जलाना:**
  - अमोनियम सल्फेट, अमोनियम नाइट्रेट और कार्बनिक एरोसोल के निर्माण की ओर ले जाता है।
  - बड़े पैमाने पर कृषि अवशेषों को जलाने और औद्योगिक प्रक्रियाओं द्वारा प्रेरित।
- **शीत-ऋतु OOA:**
  - शहरों के बाहर उत्पन्न होता है लेकिन क्षेत्रीय वायुमंडलीय परिवहन के माध्यम से शहरों में पहुँचता है।
  - सर्दियों की धुंध के दौरान प्रमुख योगदानकर्ता।

**सभी क्षेत्रों में अकुशल दहन**

- फसल अवशेष, गोबर और कोयले जैसी सामग्रियों के अधूरे जलने से प्रतिक्रियाशील कार्बनिक एरोसोल बनते हैं, जो:
  - पीएम 2.5 की ऑक्सीडेटिव क्षमता को बढ़ाते हैं।
  - कणों को मानव स्वास्थ्य के लिए अधिक हानिकारक बनाते हैं।

**स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पीएम 2.5 का प्रभाव**

**स्वास्थ्य संबंधी खतरे:**

- **फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश:** पीएम2.5 एल्वियोली (फेफड़ों में छोटी हवा की थैली) तक पहुँच सकता है और रक्तप्रवाह में प्रवेश कर सकता है।
- कई बीमारियों से जुड़ा है, जिनमें शामिल हैं:
  - दिल या फेफड़ों की समस्याओं वाले लोगों की असमय मृत्यु।
  - गैर-घातक दिल के दौरों और अनियमित दिल की धड़कन।
  - अस्थमा और ब्रॉन्काइटिस का बिगड़ना।
  - फेफड़ों की कार्यक्षमता में कमी, खासकर बच्चों और बुजुर्गों में।
  - श्वसन संबंधी लक्षणों में वृद्धि, जैसे कि खांसी, गले में जलन और सांस लेने में कठिनाई।

**पर्यावरणीय प्रभाव:**

- **दृश्यता में कमी:** पीएम 2.5 शहरी धुंध और धुंध का एक प्राथमिक घटक है, जो दृश्यता को कम करता है।
- **इमारतों और स्मारकों को नुकसान:** महीने कण सतहों को खराब करते हैं और दाग देते हैं, खासकर संगमरमर या बलुआ पत्थर से बनी ऐतिहासिक संरचनाओं (जैसे, ताजमहल) पर।
- **मिट्टी और जल का प्रदूषण:** पीएम लंबी दूरी तय कर सकता है और भूमि और जल निकायों पर जम सकता है, जिससे उनकी रासायनिक संरचना बदल सकती है और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँच सकता है।

WHO वायु गुणवत्ता दिशानिर्देश (AQG)		
प्रदूषक ( $\mu\text{g}/\text{m}^3$ )	औसत समय	WHO एक्यूजी (AQG)
पीएम 2.5	वार्षिक	5
	24 घंटे	15
पीएम 10	वार्षिक	15
	24 घंटे	45
O <sub>3</sub> (ओजोन)	पीक सीजन	60
	8 घंटे	100
NO <sub>2</sub> (नाइट्रोजन डाइऑक्साइड)	वार्षिक	10
	24 घंटे	25
SO <sub>2</sub> (सल्फर डाइऑक्साइड)	24 घंटे	40
CO (कार्बन मोनोऑक्साइड)	24 घंटे	4

अध्ययन एक महत्वपूर्ण संदेश को रेखांकित करता है - कि भारत में वायु प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई के लिए न केवल बड़े उद्योगों को विनियमित करने की आवश्यकता है, बल्कि दहन के स्थानीय, रोजमर्रा के स्रोतों को भी लक्षित करना होगा, खासकर सर्दियों के महीनों के दौरान।

पीएम 2.5 उत्सर्जन को कम करना न केवल स्वच्छ वायु मानकों को पूरा करने के लिए आवश्यक है, बल्कि लाखों लोगों की जान बचाने और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और पारिस्थितिक विरासत की रक्षा के लिए भी आवश्यक है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में वायुमंडलीय कण पदार्थ (पीएम) के प्रमुख स्रोत क्या हैं? मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पीएम के हानिकारक प्रभावों पर चर्चा करें। [150 शब्द] [10 अंक]

### गंगा डॉल्फिन

**चर्चा में क्यों:** भारत ने नदी डॉल्फिन (2021-2023) का अपना पहला व्यापक सर्वेक्षण पूरा कर लिया है, जिसे केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) द्वारा संचालित किया गया है। यह अग्रणी प्रयास देश के प्रमुख मीठे जल के पारिस्थितिक तंत्रों में गंगा और सिंधु नदी डॉल्फिन की आबादी और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

#### सर्वेक्षण के मुख्य बिंदु:

- जनसंख्या अनुमान:** सर्वेक्षण में औसतन 6,324 गंगा डॉल्फिन का अनुमान लगाया गया है, जिनकी संख्या 5,977 से 6,688 के बीच है। इसने तीन सिंधु नदी डॉल्फिन की भी पहचान की, जो सभी पंजाब में ब्यास नदी में पाई जाती हैं।
- भौगोलिक वितरण:** गंगा डॉल्फिन मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश (2,397 व्यक्ति) और बिहार (2,220) में पाई जाती हैं। अन्य महत्वपूर्ण आबादी पश्चिम बंगाल (815), असम (635), झारखंड (162), राजस्थान (95), मध्य प्रदेश (95) और पंजाब (3) में देखी गई।
- सर्वेक्षण कवरेज:** अध्ययन में गंगा और उसकी सहायक नदियों के 7,109 किमी, ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों के 1,297 किमी और ब्यास नदी के 101 किमी को शामिल किया गया, जो सामूहिक रूप से आठ राज्यों में 8,406 किमी को कवर करता है।

- पर्यावास हॉटस्पॉट और कोल्डस्पॉट:** शोध में उच्च डॉल्फिन घनत्व वाले क्षेत्रों की पहचान की गई, जैसे कि गंगा के किनारे चौसा-मनिहार खंड, जहाँ प्रति किमी 2.20 डॉल्फिन की मुठभेड़ दर थी। इसके विपरीत, नरौरा से कानपुर जैसे क्षेत्रों को बहुत कम डॉल्फिन उपस्थिति वाले 'कोल्डस्पॉट' के रूप में चिह्नित किया गया।
- कार्यप्रणाली:** नदी डॉल्फिन की मायावी प्रकृति को देखते हुए, सर्वेक्षण में डॉल्फिन इकोलोकेशन क्लिक का पता लगाने के लिए हाइड्रोफोन के उपयोग सहित दृश्य और ध्वनिक विधियों के संयोजन का उपयोग किया गया, जिससे जनसंख्या अनुमानों की सटीकता बढ़ गई।

#### भारत में नदी डॉल्फिन के बारे में

##### पर्यावास:

- केवल मीठे जल की नदियों में निवास करते हैं, विशेष रूप से गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना और कर्णफुली-सांगू नदी प्रणालियों में।
- भारत, नेपाल और बांग्लादेश में वितरित।

##### सामान्य नाम:

- ब्लाइंड डॉल्फिन, गंगा डॉल्फिन, सुसु, हिहू, साइड-स्विमिंग डॉल्फिन, दक्षिण एशियाई नदी डॉल्फिन

##### वैज्ञानिक नाम:

- प्लैटानिस्टा गैगेटिका

##### राष्ट्रीय महत्व:

- 2009 में भारत का राष्ट्रीय जलीय पशु घोषित किया गया।
- स्वस्थ नदी पारिस्थितिकी तंत्र के प्रतीक के रूप में कार्य करता है।

#### 🏠 संरक्षण स्थिति और कानूनी संरक्षण

वर्गीकरण निकाय	स्थिति
आईयूसीएन लाल सूची	संकरग्रस्त
CITES	परिशिष्ट I (व्यापार संरक्षण का सबसे कठोर स्तर)
वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 (भारत)	अनुसूची I (सुरक्षा का उच्चतम स्तर)

#### संरक्षण संबंधी चिंताएँ:

- पर्यावास विखंडन:** बांध, बैराज और तटबंध डॉल्फिन की आवाजाही और प्रजनन में बाधा डालते हैं।
- प्रदूषण:** औद्योगिक अपशिष्ट, सीवेज और प्लास्टिक जल की गुणवत्ता और शिकार की उपलब्धता को कम करते हैं।
- मछली पकड़ने के खतरे:** मछली पकड़ने के जाल में आकस्मिक उलझाव (बायकैच) मौत का एक प्रमुख कारण है।
- जलवायु परिवर्तन:** नदी के प्रवाह और जल स्तर में परिवर्तन डॉल्फिन के पर्यावासों को बाधित करता है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. गंगा नदी डॉल्फिन (प्लैटनिस्टा गैंगेटिका) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह भारत, नेपाल और बांग्लादेश में गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी प्रणालियों के मीठे जल के पर्यावासों में विशेष रूप से पाया जाता है।
2. गंगा डॉल्फिन लगभग अंधी होने के कारण नेविगेशन के अपने प्राथमिक मोड के रूप में इकोलोकेशन का उपयोग करती है।
3. यह संकटग्रस्त प्रजातियों (CITES) में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन के परिशिष्ट II के तहत सूचीबद्ध है।
4. भारत सरकार ने गंगा डॉल्फिन को समुद्री पारिस्थितिकी प्रणालियों के स्वास्थ्य के लिए एक संकेतक प्रजाति के रूप में नामित किया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2                      (b) केवल 1, 2 और 4  
(c) केवल 1, 2 और 3                (d) केवल 2, 3 और 4

(e) : 2020

**भारतीय ग्रे वुल्फ**

**चर्चा में क्यों:** कभी भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक रूप से पाए जाने वाले भारतीय ग्रे वुल्फ अब केवल कुछ राज्यों में ही सीमित रह गए हैं। हाल के अध्ययनों ने घरेलू कुत्तों के साथ बढ़ते संकरण के कारण उनके अस्तित्व पर चिंता जताई है, और उनके अद्वितीय विकासवादी महत्व पर भी ध्यान आकर्षित किया है।



**हाल के शोध से मुख्य बिंदु:**

- **संकरण का खतरा:** वैज्ञानिक अध्ययनों में भारतीय ग्रे वुल्फ और घरेलू कुत्तों के बीच व्यापक आनुवंशिक मिश्रण पाया गया है। यह संकरण भारत में जंगली भेड़ियों की आबादी की आनुवंशिक शुद्धता और दीर्घकालिक अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है।
- **प्राचीन वंश:** हाल के आनुवंशिक शोध से पुष्टि होती है कि भारतीय ग्रे वुल्फ और तिब्बती भेड़िया विश्व में सबसे पुरानी जीवित भेड़िया वंशों में से कुछ हैं।

- ये वंश हजारों सालों से अलग-अलग विकसित हुए हैं।
- यह दक्षिण एशिया को वैश्विक भेड़िया विकास के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाता है।

**संरक्षण अनुशंसा:** विशेषज्ञों का तर्क है कि उनकी अलग आनुवंशिक पहचान के कारण, भारतीय और तिब्बती भेड़ियों को अन्य सभी ग्रे भेड़ियों (कैनिस ल्यूपस) के साथ समूहीकृत करने के बजाय अलग-अलग प्रजातियों के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। यह मान्यता मजबूत संरक्षण सुरक्षा और प्राथमिकता सुनिश्चित करेगी।

**भारतीय ग्रे वुल्फ के बारे में**

गुण	विवरण
वैज्ञानिक नाम	कैनिस ल्यूपस पैलिफस
आईयूसीएन स्थिति	संकटग्रस्त
वर्ग	कैनिडे
वितरण सीमा	दक्षिण-पश्चिम एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप तक

**विवरण**

- यूरेशियन ग्रे वुल्फ की तुलना में भारतीय ग्रे वुल्फ छोटा और अधिक पतला होता है।
- इसका फर छोटा होता है तथा अंदर घना फर नहीं होता, जो दक्षिण एशिया की गर्म जलवायु के लिए अनुकूलन है।
- यह आम तौर पर हल्के भूरे से भूरे रंग का होता है, जो इसे घास के मैदानों और झाड़ियों में छिपने में मदद करता है।

**भारत में पर्यावास और वितरण**

- भारतीय ग्रे भेड़िया निम्नलिखित राज्यों में शुष्क घास के मैदानों, खुले झाड़ीदार जंगलों और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है:
  - गुजरात
  - राजस्थान
  - हरियाणा
  - उत्तर प्रदेश
  - मध्य प्रदेश
  - झारखंड
  - महाराष्ट्र
  - कर्नाटक
  - केरल
  - आंध्र प्रदेश
- झारखंड के लातेहार जिले में स्थित महुआदानर भेड़िया अभयारण्य, भारतीय भेड़िये के लिए भारत का एकमात्र समर्पित अभयारण्य है। यह इस दुर्लभ उप-प्रजाति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**संरक्षण चुनौतियाँ:**

- **पर्यावास हानि:** तीव्र शहरीकरण, कृषि विस्तार और भूमि-उपयोग परिवर्तन भेड़ियों के प्राकृतिक आवास को कम कर रहे हैं।
- **मानव-वन्यजीव संघर्ष:** भेड़िये कभी-कभी पशुधन का शिकार करते हैं, जिसके कारण स्थानीय समुदायों द्वारा प्रतिशोध में उनकी हत्या कर दी जाती है।
- **कानूनी मान्यता का अभाव:** उनकी अद्वितीय विकासवादी स्थिति अभी तक वर्तमान संरक्षण नीतियों में परिलक्षित नहीं हुई है।

**निष्कर्ष:**

भारतीय ग्रे वुल्फ, विश्व की सबसे पुरानी भेड़िया वंशावलियों में से एक है, जो संकरण, पर्यावास हानि और खराब संरक्षण मान्यता के कारण खतरे में है। उनके विकासवादी महत्व को देखते हुए, निम्नलिखित की तत्काल आवश्यकता है:

- उन्हें अलग प्रजाति के रूप में मान्यता दी जाए;
- कानूनी सुरक्षा को मजबूत किया जाए; और
- वैज्ञानिक निगरानी और आवास संरक्षण में निवेश किया जाए।

ये कदम भारत की पारिस्थितिक विरासत को संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि ये प्रतिष्ठित शिकारी जंगल से गायब न हों।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न****प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. भारतीय ग्रे वुल्फ के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारतीय भेड़िया ग्रे वुल्फ की एक उप-प्रजाति है जो दक्षिण-पश्चिम एशिया से लेकर भारतीय उपमहाद्वीप तक फैली हुई है।
2. भारतीय ग्रे वुल्फ की IUCN स्थिति कम से कम चिंताजनक है।
3. वे मुख्य रूप से हिमालय की तलहटी के आसपास पाए जाते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

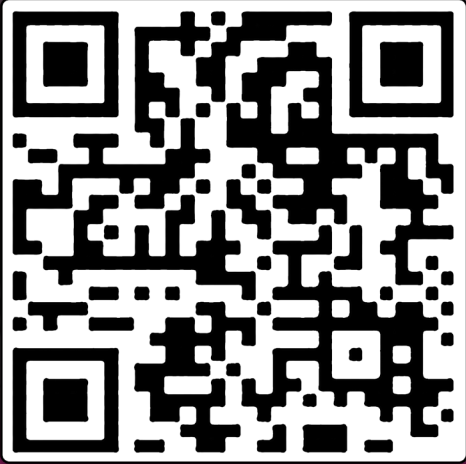
(1 ७७५) (८) :२७९



## यूपीएससी से पहले अपना मूल्यांकन स्वयं करें

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए दैनिक उत्तर लेखन शुरू करें  
द्वारा चहल एकेडमी: सामाजिक रूप से एक जिम्मेदार संस्थान

क्यू आर कोड स्कैन करें



प्रतिदिन प्रश्न को सुबह 10 बजे तथा मॉडल उत्तर  
रात 9 बजे अपलोड किया जाएगा  
(सोमवार से शनिवार)

### विशेष एनसीडी स्क्रीनिंग अभियान

**चर्चा में क्यों:** केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने हाल ही में 30 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की प्रमुख गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के लिए 100% स्क्रीनिंग कवरेज सुनिश्चित करने के लिए गहन विशेष एनसीडी स्क्रीनिंग अभियान शुरू किया है।

#### एनसीडी स्क्रीनिंग अभियान की मुख्य विशेषताएं

##### एनसीडी क्या है?

गैर-संचारी रोग (NCDs) ऐसी चिकित्सा स्थितियाँ हैं जो संक्रामक एजेंटों के कारण नहीं होती हैं। ये आम तौर पर दीर्घकालिक, लंबी अवधि की बीमारियाँ होती हैं जो धीरे-धीरे बढ़ती हैं। NCDs व्यवहारिक, आनुवंशिक, शारीरिक और पर्यावरणीय कारकों के संयोजन के कारण उत्पन्न होते हैं।

##### अभियान का उद्देश्य

अभियान का उद्देश्य 30 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी व्यक्तियों की सामान्य और उच्च-भार वाले गैर-संक्रामक रोगों के लिए जांच करना है, जिनमें शामिल हैं:

- मधुमेह
- उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर)
- मुंह, स्तन और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर

##### समयसीमा

यह अभियान 20 फरवरी से 31 मार्च 2025 तक चलाया जा रहा है।

##### कार्यान्वयन रणनीति

- **गैर-संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपी-एनसीडी):** यह पहल इस कार्यक्रम का हिस्सा है और इसे पूरे भारत में आयुष्मान आरोग्य मंदिरों (एएएम) और अन्य सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं में लागू किया जाएगा।
- **डोर-टू-डोर आउटरच:** प्रशिक्षित फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ता जैसे कि आशा, एएनएम और अन्य अधिकतम कवरेज और सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए घर-घर जाएंगे।
- **चिकित्सा आपूर्ति और बुनियादी ढांचा:** सभी भाग लेने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं में निम्नलिखित सुविधाएं होंगी:
  - ग्लूकोमीटर
  - ब्लड प्रेशर मॉनिटर
  - आवश्यक दवाएं
- **एनपी-एनसीडी पोर्टल के माध्यम से वास्तविक समय की निगरानी:** जवाबदेही, पारदर्शिता और प्रभावी ट्रैकिंग सुनिश्चित करने के लिए स्क्रीनिंग, उपचार और अनुवर्ती कार्रवाई से संबंधित डेटा प्रतिदिन अपलोड किया जाएगा।
- **दैनिक प्रगति समीक्षा:** राज्य और केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) स्वास्थ्य मंत्रालय को शाम 6 बजे तक दैनिक प्रगति रिपोर्ट उपलब्ध कराएंगे, जिससे निरंतर समीक्षा और सहायता मिल सकेगी।

- **बहु-स्तरीय समन्वय:** सुचारू कार्यान्वयन और समस्या समाधान सुनिश्चित करने के लिए हर स्तर - सुविधा, ब्लॉक, जिला और राज्य - पर नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे।

##### लक्ष्य और संभावित परिणाम

- **लक्षित जनसंख्या का 100% कवरेज:** सामूहिक जांच के माध्यम से गैर-संचारी रोगों की प्रारंभिक पहचान।
- **उपचार और देखभाल के लिए बेहतर संबंध:** निदान किए गए व्यक्तियों के लिए समय पर अनुवर्ती और मानकीकृत उपचार।
- **स्वास्थ्य सेवा बोझ में कमी:** अनुपचारित गैर-संचारी रोगों से संबंधित दीर्घकालिक स्वास्थ्य सेवा लागत और जटिलताओं में कमी।
- **बेहतर स्वास्थ्य परिणाम:** जनसंख्या के लिए समग्र जीवन प्रत्याशा और जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि।

##### गैर-संचारी रोग (एनसीडी) और भारत

##### वर्तमान स्थिति

- एनसीडी प्रत्येक वर्ष वैश्विक स्तर पर 41 मिलियन मौतों के लिए जिम्मेदार हैं (सभी मौतों का 71%), जिसमें 30 से 70 वर्ष की आयु के बीच 14 मिलियन असामयिक मौतें शामिल हैं।
- अगर इस पर रोक नहीं लगाई गई, तो डब्ल्यूएचओ का अनुमान है कि 2030 तक वैश्विक एनसीडी से संबंधित मौतें सालाना 55 मिलियन तक बढ़ सकती हैं।

##### भारत में स्थिति

- कैंसर, हृदय रोग, मधुमेह, स्ट्रोक और पुरानी श्वसन संबंधी बीमारियों जैसे गैर-संचारी रोगों के कारण प्रत्येक वर्ष लगभग 5.8 मिलियन भारतीय मरते हैं।
- इसका मतलब है कि 4 में से 1 भारतीय को 70 वर्ष की आयु तक पहुँचने से पहले गैर-संचारी रोगों से मरने का खतरा है।
- भारत में कुल मौतों में गैर-संचारी रोग अब लगभग 60% हैं, जिससे वे मृत्यु दर का प्रमुख कारण बन गए हैं।

##### बीमारियों का बढ़ता बोझ

- “भारत: राष्ट्र के राज्यों का स्वास्थ्य” रिपोर्ट (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, 2016) के अनुसार:
  - एनसीडी के कारण होने वाली मौतें 1990 में 37% से बढ़कर 2016 में 61% हो गईं।
  - समग्र रोग भार (डीएएलवाई) में उनकी हिस्सेदारी 1990 में 30% से बढ़कर 2016 में 55% हो गई।
  - यह भारत में संक्रामक रोगों से गैर-संक्रामक रोगों की ओर स्पष्ट महामारी विज्ञान संक्रमण को दर्शाता है।

##### प्रमुख जोखिम कारक

एनसीडी में योगदान देने वाले प्रमुख व्यवहारिक और जीवनशैली जोखिम कारकों में शामिल हैं:

- तंबाकू का उपयोग (धूम्रपान, सेकेंड हैंड धूम्रपान और धूम्रपान रहित रूपों सहित)
- अस्वास्थ्यकर आहार (फल, सब्जियाँ और साबुत अनाज में कम; नमक और संतृप्त वसा में उच्च)
- शारीरिक निष्क्रियता
- शराब का हानिकारक उपयोग

इन कारकों के कारण निम्नलिखित स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं:

- मोटापा
- उच्च रक्तचाप
- मधुमेह
- उच्च कोलेस्ट्रॉल और लिपिड स्तर

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत सरकार के विशेष गैर-संचारी रोग (एनसीडी) स्क्रीनिंग अभियान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें::

1. इसका उद्देश्य 30 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी व्यक्तियों की 100% कवरेज सुनिश्चित करना है।
2. इसमें तपेदिक, मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ शामिल हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(B) 2019

### रोगाणुरोधी प्रतिरोध और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

**चर्चा में क्यों:** शोधकर्ताओं की एक टीम ने AMRSense नामक एक नया AI-संचालित उपकरण विकसित किया है जो रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) पर प्रारंभिक और सटीक जानकारी उत्पन्न करने के लिए नियमित अस्पताल डेटा का लाभ उठाता है। यह उपकरण अस्पताल, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर काम करता है, जो AMR के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है।

#### मुख्य विवरण: एंटी-माइक्रोबियल प्रतिरोध के बारे में

##### एएमआर क्या है?

एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (एएमआर) तब होता है जब बैक्टीरिया, वायरस, कवक या परजीवी विकसित होते हैं और उनके इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाओं पर प्रतिक्रिया करना बंद कर देते हैं। इससे संक्रमण का इलाज करना मुश्किल हो जाता है, बीमारी फैलने का खतरा बढ़ जाता है, बीमारी लंबी हो जाती है और मौत की संभावना बढ़ जाती है।

##### एएमआर बढ़ने के कारण

- **एंटीबायोटिक प्रदूषण:** रोगाणुरोधी दवाओं के अत्यधिक उपयोग से प्रतिरोधी या अत्यधिक प्रतिरोधी सुपरबग्स का निर्माण हो सकता है, जो अस्पतालों में, पीने के पानी या सीवरों के माध्यम से फैल सकते हैं।

- एएमआर ऐसी स्थिति में सूक्ष्मजीवों के विकास का परिणाम है, जहाँ एंटीबायोटिक दवाओं का दुरुपयोग या अधिक उपयोग होता है।
- **व्यक्तिगत:** कई भारतीयों में बुखार के लिए एंटीबायोटिक लेने की प्रवृत्ति होती है, बिना यह जाँचे कि बुखार किसी जीवाणु के कारण है या नहीं।
- **डॉक्टर:** डॉक्टरों (सामान्य चिकित्सकों) में व्यापक स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक्स लिखने की प्रवृत्ति होती है, जो कई तरह के संक्रमणों के खिलाफ काम करते हैं, लेकिन ये ऐसे भी होते हैं जिनसे प्रतिरोध की संभावना अधिक होती है।
- **निदान:** खराब निदान सुविधाओं के कारण डॉक्टर संक्रमण के लिए विशिष्ट एंटीबायोटिक्स के बजाय व्यापक स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक्स लिखते हैं।
- **फार्मा कंपनियाँ:** रोगाणुरोधी विनिर्माण सुविधाओं से अपशिष्ट जल और कचरे को पर्यावरण में डालना।

##### एएमआर: चिंता का विषय

- एएमआर रोगाणुरोधी दवाओं की प्रभावशीलता को कमजोर करता है।
- एएमआर सुपरबग्स (बैक्टीरिया के ऐसे उपभेद जो हर ज्ञात एंटीबायोटिक के लिए प्रतिरोधी हो गए हैं) के निर्माण की ओर ले जाता है।
- आम रोगजनक एंटीबायोटिक दवाओं के लिए अधिक से अधिक प्रतिरोधी होते जा रहे हैं।
- एंटीबायोटिक प्रतिरोध बढ़ने का अर्थ है कि सरल संक्रमण का इलाज करना मुश्किल हो जाएगा।
- एएमआर सभी आयु स्तरों वाले सभी देशों के लिए एक समस्या है। यह अधिक महंगी और गहन देखभाल की आवश्यकता पैदा करता है और लंबे समय तक अस्पताल में रहने के कारण रोगियों या उनके देखभाल करने वालों की उत्पादकता को प्रभावित करता है।

#### एंटी-माइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR) से निपटने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की भूमिका

- **नैदानिक निदान में एआई:** एआई जीवाणु संक्रमण का पता लगाने और प्रबंधन के तरीके को बदल रहा है, जो प्रभावी एएमआर नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण है।
  - **सुव्यवस्थित नैदानिक कार्यप्रवाह:** एआई एल्गोरिदम विभिन्न नैदानिक परीक्षणों से डेटा विश्लेषण को गति देते हैं, पारंपरिक संस्कृति-आधारित तरीकों की तुलना में टर्नअराउंड समय को कम करते हैं।
  - **इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड (ईएचआर) के साथ एकीकरण:** एआई मॉडल रोगी डेटा से सीखते हैं ताकि वास्तविक समय में निर्णय लेने में सहायता मिल सके और संक्रमण का शीघ्र पता लगाने में सुधार हो सके।
  - **परिणाम सुधार:** समय पर पूर्वानुमान तेजी से एंटीबायोटिक प्रशासन की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे मृत्यु दर का जोखिम काफी कम हो जाता है।
  - **स्वचालित डेटा व्याख्या:** मास स्पेक्ट्रोमेट्री (जैसे MALDI-TOF MS) पर लागू कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (CNN) जैसी तकनीकें तेजी से रोगजनक पहचान और प्रतिरोध प्रोफाइलिंग को सक्षम बनाती हैं।
  - **निदान में देरी में कमी:** AI पारंपरिक तरीकों (जैसे धीमी संस्कृति तकनीक) की सीमाओं को दूर करने में मदद करता है, जिससे अधिक लक्षित उपचार संभव होता है।
- **AMR निगरानी में AI:** AI विशाल मात्रा में जीनोमिक और महामारी विज्ञान डेटा का विश्लेषण करके व्यापक निगरानी प्रयासों का समर्थन करता है।
  - **जीनोमिक और फेनोटाइपिक डेटा:** AI मॉडल प्रतिरोध प्रवृत्तियों की निगरानी के लिए संपूर्ण जीनोम अनुक्रमण डेटा, एंटीबायोटिक

संवेदनशीलता परीक्षण परिणाम और रासायनिक जैव सक्रियता स्क्रीन को एकीकृत करते हैं।

- एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण: निगरानी को नैदानिक, कृषि और पर्यावरणीय सेटिंग्स (जैसे अपशिष्ट जल) तक बढ़ाया जाता है, जो AMR प्रसार का समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- नवीन प्रतिरोध तंत्रों की पहचान करना: मशीन लर्निंग एल्गोरिदम नवीन अनुक्रम स्थानों में सामान्यीकरण कर सकते हैं, ज्ञात संदर्भ डेटाबेस से परे नए एंटीबायोटिक प्रतिरोध जीन (ARG) का पता लगा सकते हैं।
- अनुकूलित सुविधा चयन: यादृच्छिक वन और रैखिक प्रतिगमन जैसी तकनीकें सबसे प्रासंगिक आनुवंशिक मार्करों का चयन करने में मदद करती हैं, जिससे AMR मॉडल की पूर्वानुमान सटीकता में सुधार होता है।
- सूचित निर्णय लेना: AI के माध्यम से उन्नत निगरानी सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों को वास्तविक समय के डेटा के आधार पर केंद्रित हस्तक्षेप और रोकथाम रणनीतियों को लागू करने की अनुमति देती है।
- एंटीबायोटिक खोज में एआई: एआई-संचालित कार्यप्रणाली दवा विकास पाइपलाइन में पारंपरिक बाधाओं को दूर करके नई एंटीबायोटिक दवाओं की खोज में क्रांति ला रही है।
  - कुशल यौगिक स्क्रीनिंग: AI मॉडल संभावित एंटीबायोटिक उम्मीदवारों की पहचान करने के लिए लाखों यौगिकों की वस्तुतः स्क्रीनिंग करते हैं, जिससे महंगी उच्च-थ्रूपुट स्क्रीनिंग की आवश्यकता में भारी कमी आती है।
  - मल्टी-मॉडल डेटा का एकीकरण: AI उपकरण रासायनिक स्क्रीनिंग डेटा को जैविक गतिविधि प्रोफाइल के साथ जोड़ते हैं ताकि ऐसे यौगिकों को प्राथमिकता दी जा सके जो मौजूदा प्रतिरोध तंत्रों पर काबू पा सकें।
  - मौजूदा दवाओं का पुनः उपयोग: AI मौजूदा दवाओं की पहचान करने और उनका पुनः उपयोग करने में भी सहायता करता है, जिससे प्रतिरोधी रोगजनकों के खिलाफ प्रभावी उपचार के लिए तेज़ मार्ग उपलब्ध होते हैं।
  - जनरेटिव मॉडल: वैरिएशनल ऑटोएनकोडर (VAE), जनरेटिव एडवर्सरियल नेटवर्क (GAN) और डिफ्यूजन मॉडल जैसी तकनीकें वांछित जीवाणुरोधी गुणों वाले नए अणुओं के डिज़ाइन को सक्षम बनाती हैं।
  - सिंथेटिक ट्रेक्टबिलिटी: सिंथेमोल जैसे प्लेटफॉर्म ऐसे यौगिकों को उत्पन्न करने के लिए एल्गोरिदम (जैसे मॉटे कार्लो ट्री सर्च) का उपयोग करते हैं जो न केवल सक्रिय होते हैं बल्कि संश्लेषण योग्य भी होते हैं, जो पारंपरिक खोज दृष्टिकोणों की एक बड़ी सीमा को संबोधित करते हैं।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

कथन I: रोगाणुरोधी प्रतिरोध पहले से प्रभावी एंटीबायोटिक्स का उपयोग करने पर भी उपचार विफलता का कारण बन सकता है।

कथन II: ऐसा इसलिए होता है क्योंकि एंटीबायोटिक्स का दुरुपयोग प्रतिरोधी सूक्ष्मजीव उपभेदों के चयन को बढ़ावा देता है।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(a) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, एवं कथन II कथन I की सही व्याख्या करता है।

(b) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II कथन I की व्याख्या नहीं करता है।

(c) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

(d) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

(ए) :१५६

### SPHEREx मिशन

**चर्चा में क्यों:** नासा ने SPHEREx अंतरिक्ष दूरबीन लॉन्च की है, जो 488 मिलियन डॉलर का मिशन है, ताकि वैज्ञानिकों को यह समझने में मदद मिल सके कि आकाशगंगाएँ कैसे बनती हैं और समय के साथ ब्रह्मांड कैसे विकसित हुआ है।

#### SPHEREx क्या है?

- पूरा नाम: स्पेक्ट्रो-फोटोमीटर फॉर द हिस्ट्री ऑफ़ द यूनिवर्स, एपोच ऑफ़ रियायनाइजेशन, एंड आइस एक्सप्लोरर
- प्रकार: अंतरिक्ष वेधशाला
- लॉन्च की तारीख: 11 मार्च, 2025
- मिशन अवधि: 2 वर्ष
- लागत: \$488 मिलियन

#### मिशन के मुख्य लक्ष्य

1. पूरे आकाश का मानचित्र बनाना
  - SPHEREx हर छह महीने में पूरे आकाश का स्पेक्ट्रल सर्वेक्षण (3D मानचित्र की तरह) करेगा।
  - यह अंतरिक्ष में पहले से कहीं ज़्यादा गहराई तक देखने के लिए ऑप्टिकल और निकट-अवरक्त प्रकाश दोनों को देखेगा।
2. ब्रह्मांड की उत्पत्ति का पता लगाना
  - यह 450 मिलियन से ज़्यादा आकाशगंगाओं का अध्ययन करेगा - कुछ इतनी दूर हैं कि उनके प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में 10 बिलियन वर्ष लग गए।
  - इसका उद्देश्य ब्रह्मांड में एक महत्वपूर्ण घटना को समझना है जिसे ब्रह्मांडीय मुद्रास्फीति कहा जाता है - बिग बैंग के तुरंत बाद की अवधि जब ब्रह्मांड प्रकाश की तुलना में तेज़ी से फैल रहा था।
3. जीवन-आवश्यक अणुओं की खोज
  - हमारी आकाशगंगा मिल्की वे में, SPHEREx पानी और कार्बनिक अणुओं (जो जीवन के निर्माण खंड हैं) की खोज करेगा।
  - ये निम्नलिखित स्थानों पर पाए जाएंगे:
    - तारकीय नर्सरी (जहाँ तारे जन्म लेते हैं)
    - प्रोटोप्लेनेटरी डिस्क (युवा तारों के चारों ओर धूल के छल्ले, जहाँ ग्रह बन सकते हैं)

#### SPHEREx कैसे काम करेगा?

- यह 102 रंग बैंडों में आकाश को स्कैन करेगा, जिससे ब्रह्मांड का अब तक का सबसे रंगीन और विस्तृत मानचित्र तैयार होगा।
- पृथ्वी अवलोकन उपग्रहों और अंतरिक्ष यान से अनुकूलित प्रौद्योगिकियों का उपयोग करता है।

# SPHEREX क्यों महत्वपूर्ण है?

## मुख्य लाभ

## अर्थ

### आकाशगंगा विकास का अध्ययन

वैज्ञानिकों को यह समझने में मदद मिलती है कि अरबों वर्षों में आकाशगंगाएँ कैसे बनीं

### जीवन-अनुकूल परिस्थितियों की खोज

जहां नए ग्रह बन रहे हैं वहां पानी और कार्बनिक अणुओं की खोज की जाती है

### भविष्य के मिशनों का समर्थन करता है

जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप और अन्य भावी अंतरिक्ष मिशनों द्वारा अधिक विस्तृत अध्ययन के लिए संभावित लक्ष्यों की पहचान की गई

### प्रारंभिक ब्रह्मांड के रहस्यों को समझता है

ब्रह्मांडीय मुद्रास्फीति को मापता है - बिग बैंग के तुरंत बाद ब्रह्मांड का रहस्यमय अति-तीव्र विस्तार

## निष्कर्ष

SPHEREx एक अभूतपूर्व मिशन है जो ब्रह्मांड के जन्म के रहस्यों को उजागर करेगा, जीवन के निर्माण खंडों का पता लगाने में मदद करेगा और आज तक का सबसे विस्तृत आकाश मानचित्र तैयार करेगा। यह हमारी खोज में एक बड़ा कदम है कि हम कहीं से आए हैं और सितारों से परे क्या है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. ब्रह्मांड के निर्माण को बेहतर ढंग से समझने के लिए निम्नलिखित में से किसने SPHEREx टेलीस्कोप विकसित किया है?

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)
- यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA)
- राष्ट्रीय वैमानिकी और अंतरिक्ष प्रशासन (NASA)
- जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (JAXA)

(C) : 2019

## भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास

**चर्चा में क्यों:** भारत का अनुसंधान एवं विकास पर सकल व्यय (जीईआरडी) पिछले दशक में दोगुना से भी अधिक हो गया है - 2013-14 में ₹60,196 करोड़ से बढ़कर ₹1,27,381 करोड़ हो गया है। यह वृद्धि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बायोटेक्नोलॉजी और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में नवाचार के माध्यम से भारत की भविष्य की अर्थव्यवस्था को आकार दे रही है।

### भारत में अनुसंधान एवं विकास पर मुख्य आँकड़े

- जीईआरडी ₹60,196.75 करोड़ (2010-11) से बढ़कर ₹1,27,380.96 करोड़ (2020-21) हो गया।
- प्रति व्यक्ति अनुसंधान एवं विकास व्यय पीपीपी\$ 29.2 (2007-08) से बढ़कर पीपीपी\$ 42.0 (2020-21) हो गया।

- भारत ने दुनिया के अनुसंधान एवं विकास व्यय में 3.1% का योगदान दिया (यूनेस्को विज्ञान रिपोर्ट, 2021)।
- वित्त पोषण स्रोत (2020-21):**
  - केंद्र सरकार: 43.7%
  - राज्य सरकारें: 6.7%
  - उच्च शिक्षा: 8.8%
  - सार्वजनिक क्षेत्र का उद्योग: 4.4%
  - निजी क्षेत्र का उद्योग: 36.4%
- निजी क्षेत्र बिक्री का 1.46% अनुसंधान एवं विकास पर खर्च करता है, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र की अनुसंधान एवं विकास इकाइयाँ केवल 0.30% खर्च करती हैं।

### भारत के अनुसंधान एवं विकास परिदृश्य में मुख्य चुनौतियाँ

#### 1. कम निवेश

- भारत अमेरिका और चीन जैसे देशों की तुलना में अनुसंधान एवं विकास पर बहुत कम खर्च करता है।
- निजी क्षेत्र का योगदान अभी भी सीमित है।

#### 2. विश्वविद्यालय अनुसंधान की उपेक्षा

- शीर्ष संस्थानों (जैसे आईआईटी) को सबसे अधिक धन मिलता है; नियमित विश्वविद्यालयों में बुनियादी ढांचे और समर्थन की कमी है।
- विश्वविद्यालयों में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए सरकारी सुधार अपर्याप्त हैं।

#### 3. उच्च शिक्षा में पहुँच और गुणवत्ता

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल कुलीन संस्थानों तक सीमित है।
- बहुत से छात्र उच्च लागत के कारण STEM (विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग, गणित) शिक्षा तक पहुँच नहीं पाते हैं।

#### 4. आर्थिक असमानता

- आय असमानता विज्ञान शिक्षा और नौकरियों तक पहुँच को सीमित करती है।
- प्रतिभाशाली व्यक्ति अक्सर विदेश चले जाते हैं (प्रतिभा पलायन)।

#### 5. उद्योग में कमज़ोर नवाचार

- बहुत से उद्योग (जैसे, फार्मा) बड़े पैमाने पर उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, नवाचार पर नहीं।
- शिक्षा और उद्योग के बीच खराब सहयोग

## A. विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निवेश बढ़ाना

- आरएंडडी खर्च को जीडीपी के कम से कम 2% तक बढ़ाना।
- कर प्रोत्साहन और आरएंडडी-अनुकूल नीतियों के माध्यम से निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करना।
- नवाचार केंद्र, इनक्यूबेटर और वैश्विक भागीदारी विकसित करना।

## B. बुनियादी विज्ञान अनुसंधान को बढ़ावा देना

- भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान जैसे क्षेत्रों को निश्चित निधि आवंटित करना।
- अंतःविषय कार्य का समर्थन करना (जैसे, जीव विज्ञान को डेटा विज्ञान के साथ जोड़ना)।
- विज्ञान में रुचि पैदा करने के लिए सार्वजनिक अभियान चलाना (जैसे, नागरिक विज्ञान परियोजनाएँ)।
- विदेशों में भारतीय मूल के वैज्ञानिकों को योगदान देने के लिए आमंत्रित करना।

## C. STEM शिक्षा में सुधार करना

- सीखने को व्यावहारिक और समस्या-समाधान-आधारित बनाना (रटने की आदत को कम करना)।
- स्कूलों में अटल टिकरिंग लैब का विस्तार करना।
- शिक्षकों को आधुनिक STEM शिक्षाशास्त्र में प्रशिक्षित करना।
- स्कूलों और कॉलेजों में इंटरशिप और स्टार्टअप मेंटरशिप बनाना।

## D. सहयोगात्मक शासन को बढ़ावा देना

- सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ एक राष्ट्रीय विज्ञान सलाहकार परिषद बनाना।
- अनुसंधान अनुमोदन, अनुदान संवितरण और पेटेंट प्रक्रियाओं को सरल बनाना।
- वास्तविक जीवन की स्थानीय समस्याओं को हल करने के लिए "समाज के लिए विज्ञान" परियोजनाएँ शुरू करना।

## विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा सरकारी पहल मानव संसाधन विकास

- **INSPIRE:** युवा छात्रों को विज्ञान करियर की ओर आकर्षित करना।
- **INSPIRE-MANAK:** स्कूली बच्चों (10-15 वर्ष की आयु) के लिए नवाचार को बढ़ावा देना।
- **WISE-KIRAN:** विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाओं की भागीदारी का समर्थन करना।

## अनुसंधान और विकास कार्यक्रम

- नैनो विज्ञान मिशन
- संज्ञानात्मक विज्ञान अनुसंधान पहल (CSRI)
- राष्ट्रीय भू-स्थानिक कार्यक्रम

## नवाचार और तकनीकी विकास

- **NSTEDB:** विज्ञान-आधारित उद्यमिता को बढ़ावा देता है।

- **प्रौद्योगिकी मिशन:** स्वच्छ जल, स्वच्छ ऊर्जा आदि पर ध्यान केंद्रित करना।
- **प्रौद्योगिकी विकास और हस्तांतरण:** अनुसंधान को उत्पादों में बदलना।
- **तकनीकी अनुसंधान केंद्र (TRC):** वैज्ञानिक-वाणिज्यिक सहायता प्रदान करना।

## समाज के लिए विज्ञान

- **SEED कार्यक्रम:** हाशिए पर पड़े समुदायों की मदद के लिए विज्ञान लाता है।
- **NCSTC:** मीडिया और कार्यक्रमों के माध्यम से जनता तक विज्ञान का संचार करता है।

## राष्ट्रीय मिशन

- राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (NQM)
- राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM)
- साइबर फिजिकल सिस्टम मिशन (NM-ICPS)
- **NAPCC के अंतर्गत जलवायु मिशन:**
  - हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखना (NMSHE)
  - जलवायु परिवर्तन पर रणनीतिक ज्ञान (NMSKCC)

## संस्थागत क्षमता निर्माण

- **FIST:** विश्वविद्यालयों में उपकरण और बुनियादी ढांचे का समर्थन करता है।
- **PURSE:** विश्वविद्यालयों को एक शोध पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में मदद करता है।
- **SAIF:** उच्च-स्तरीय वैज्ञानिक उपकरणों तक पहुँच प्रदान करता है।
- **SATHI:** शिक्षाविदों, स्टार्टअप और उद्योगों के लिए साझा सुविधाएँ।
- **STUTI:** वैज्ञानिक उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- **SUPREME:** शोध उपकरणों के रखरखाव और उन्नयन का समर्थन करता है।

## यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

## मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास में बाधा डालने वाली संरचनात्मक और प्रणालीगत चुनौतियों का विश्लेषण करें। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार द्वारा की गई पहलों की प्रभावकारिता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें। [250 शब्द] [15 अंक]

## CAR-T सेल थेरेपी

**चर्चा में क्यों:** भारत के पहले CAR-T सेल थेरेपी परीक्षण के परिणाम हाल ही में प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नल द लैंसेट में प्रकाशित हुए। इस थेरेपी ने आशाजनक परिणाम दिखाए, लगभग 73% रोगियों ने उपचार के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

### मुख्य बिंदु:

- यह पहला भारतीय CAR-T सेल थेरेपी क्लिनिकल ट्रायल है जिसे किसी अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल जर्नल में प्रकाशित किया गया है।
- इस थेरेपी की लागत वैश्विक स्तर पर लाइसेंस प्राप्त CAR-T थेरेपी की लागत का केवल 1/20वां हिस्सा है, फिर भी इसकी प्रभावशीलता तुलनीय है।
- सफलता दर:
  - रोगियों में 73% प्रतिक्रिया दर।
  - तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया वाले रोगी रोग की प्रगति के बिना औसतन 6 महीने तक जीवित रहे।
  - लिम्फोमा वाले रोगी रोग की प्रगति के बिना औसतन 4 महीने तक जीवित रहे।
- यह थेरेपी उन रोगियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जिन्होंने पिछले कैंसर उपचारों पर प्रतिक्रिया नहीं की है।

### दुष्प्रभाव:

हालाँकि यह थेरेपी प्रभावी है, लेकिन जोखिम रहित नहीं है। परीक्षण के दौरान कुछ गंभीर दुष्प्रभाव दर्ज किए गए:

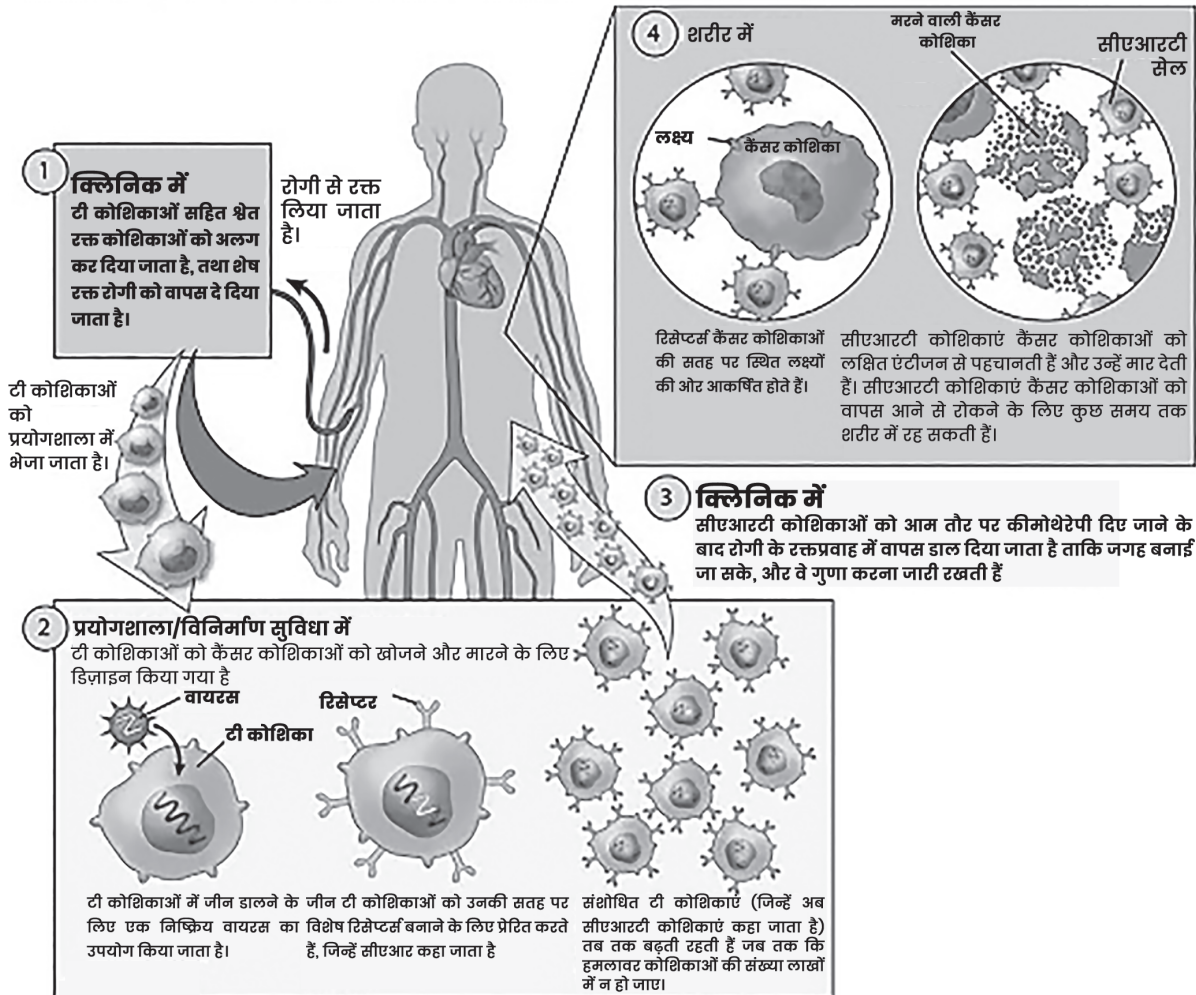
- हेमोफैगोसाइटिक लिम्फोहिस्टियोसाइटोसिस (HLH) - 12% रोगियों में देखा गया।
  - एक गंभीर प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया जहाँ प्रतिरक्षा कोशिकाएँ अति सक्रिय हो जाती हैं, जिससे सूजन और संभावित अंग क्षति होती है।
- अन्य दुष्प्रभावों में शामिल हैं:
  - एनीमिया - 61% रोगी
  - थ्रोम्बोसाइटोपेनिया (कम प्लेटलेट्स, रक्तस्राव का जोखिम) - 65%
  - न्यूट्रोपेनिया (कम सफेद रक्त कोशिकाएँ) - 96%
  - फ्रेब्राइल न्यूट्रोपेनिया (बुखार के साथ न्यूट्रोपेनिया) - 47%

नोट: ये रोगी पहले से ही बहुत बीमार थे और उनके पास उपचार के अन्य विकल्प समाप्त हो चुके थे।

### CAR-T सेल थेरेपी क्या है?

CAR-T सेल थेरेपी इम्यूनोथेरेपी का एक क्रांतिकारी रूप है जो कैंसर कोशिकाओं की पहचान करने और उन्हें नष्ट करने के लिए शरीर की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली का उपयोग करता है, विशेष रूप से कुछ प्रकार के रक्त कैंसर में।

## ऑटोलॉग्स सीएआर टी-सेल थेरेपी प्रक्रिया



**यह कैसे काम करता है - चरण दर चरण:**

- टी-सेल संग्रह:** रोगी की टी-कोशिकाएँ (एक प्रकार की श्वेत रक्त कोशिका जो संक्रमण से लड़ती है) उनके रक्त से एकल की जाती हैं।
- आनुवंशिक संशोधन:** इन टी-कोशिकाओं को उनकी सतह पर काइमेरिक एंटीजन रिसेप्टर्स (CARs) बनाने के लिए प्रयोगशाला में आनुवंशिक रूप से संशोधित किया जाता है। ये रिसेप्टर्स टी-कोशिकाओं को कैंसर कोशिकाओं को पहचानने और उनसे जुड़ने में मदद करते हैं।
- गुणन:** संशोधित टी-कोशिकाओं को फिर प्रयोगशाला में बड़ी संख्या में गुणा किया जाता है।
- रोगी में संचार:** नई CAR-T कोशिकाओं को रोगी के शरीर में वापस संचारित किया जाता है।
- कैंसर पर हमला:** ये संशोधित कोशिकाएँ अब कैंसर कोशिकाओं का प्रभावी ढंग से पता लगा सकती हैं और उन्हें नष्ट कर सकती हैं, जिनका आमतौर पर पता नहीं चल पाता।

**यह एक बड़ी बात क्यों है?**

- मेड-इन-इंडिया थेरेपी महंगे अंतरराष्ट्रीय उपचारों पर निर्भरता कम करती है।
- उपचार की लागत में भारी कटौती करती है, जिससे यह भारतीय रोगियों के लिए अधिक सुलभ हो जाती है।
- उन्नत कैंसर देखभाल में भारत की अनुसंधान और नवाचार क्षमता स्थापित करती है।
- उन्नत कैंसर वाले रोगियों को आशा प्रदान करती है जिनके पास अन्य विकल्प नहीं रह गए हैं।

**निष्कर्ष**

भारत की CAR-T सेल थेरेपी कैंसर के उपचार में एक मील का पत्थर है, जो उन्नत विज्ञान को किफ़ायती कीमत के साथ जोड़ती है।

हालाँकि इसके दुष्प्रभाव महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इसकी उच्च सफलता दर और लागत-प्रभावशीलता रक्त कैंसर से जूझ रहे हज़ारों रोगियों के लिए नई उम्मीद की किरण है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. हाल ही में, CAR-T सेल थेरेपी समाचारों में देखी गई थी; यह किससे संबंधित है?

- (a) कैंसर (b) बीटी बैंगन  
(c) मधुमेह (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ए) 2022

**हंटावायरस**

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, प्रसिद्ध हॉलीवुड अभिनेता जीन हैकमैन की पत्नी का हंटावायरस पल्मोनरी सिंड्रोम (एचपीएस) नामक एक दुर्लभ बीमारी के कारण निधन हो गया, जिससे इस कम ज्ञात लेकिन घातक बीमारी की ओर ध्यान गया।

**हंटावायरस क्या है?**

- हंटावायरस वायरस का एक समूह है जो कुछ कृतकों द्वारा फैलता है जैसे:
  - डियर रैट्स
  - वाइट फूटेड रैट्स
  - राइस रैट्स
  - कॉटन रैट्स

## हंटावायरस कैसे फैलता है?

अमेरिकी सीडीसी ने मनुष्यों के संक्रमित होने के मुख्य तरीकों के बारे में बताया है:

संचरण का तरीका	यह कैसे होता है?
एयरोसोलिज़ेशन	जब कृतक के मूत्र, गोबर या घोंसले विक्षुब्ध होते हैं तो वायरस के कण हवा में फैल जाते हैं और फिर सांस के जरिए अंदर चले जाते हैं
चेहरे को छूना	दूषित पदार्थों को छूने के बाद, यदि आप अपनी आंखें, नाक या मुँह छूते हैं
खुले घाव	वायरस, कटी हुई त्वचा के माध्यम से प्रवेश करता है
कुन्तकों का काटना	बहुत दुर्लभ, लेकिन संभव
मनुष्य-से-मनुष्य	अत्यंत दुर्लभ, विश्व भर में केवल कुछ ही ज्ञात मामले

## हंटावायरस संक्रमण के लक्षण

### चरण 1: प्रोड्रोमल चरण (संक्रमण के 1 से 8 सप्ताह बाद)

- बुखार और ठंड लगना
- मांसपेशियों में दर्द (विशेष रूप से जांघों, कूल्हों और पीठ में)
- थकान और सिरदर्द
- मतली, उल्टी और पेट में दर्द

### चरण 2: गंभीर चरण - हंटावायरस पल्मोनरी सिंड्रोम (HPS)

- अचानक सांस फूलना
- खांसी और सीने में जकड़न (क्योंकि फेफड़े तरल पदार्थ से भर जाते हैं)
- श्वसन विफलता या हृदय विफलता की ओर तेज़ी से बढ़ना
- तत्काल चिकित्सा देखभाल के बिना घातक हो सकता है

### क्या इसका कोई इलाज है?

- अभी तक कोई विशिष्ट एंटीवायरल दवा या टीका मौजूद नहीं है।
- उपचार सहायक देखभाल पर केंद्रित है:
  - सांस लेने में मदद के लिए ऑक्सीजन थेरेपी
  - गंभीर मामलों में मैकेनिकल वेंटिलेशन
- प्रारंभिक निदान महत्वपूर्ण है। अगर आपको कृतक के संपर्क में आने के बाद फ्लू जैसे लक्षण दिखाई देते हैं, तो चिकित्सा सहायता लें।

### आगे की राह

- रोकथाम ही हैन्टावायरस से निपटने का सबसे प्रभावी तरीका है।
- प्रवेश बिंदुओं को सील करके, भोजन और कचरे का सुरक्षित तरीके से निपटान करके और कृतक गतिविधि वाले क्षेत्रों की सफाई करते समय सुरक्षात्मक गियर पहनकर घरों और कार्यस्थलों को कृतक मुक्त रखना जोखिम को काफी हद तक कम कर सकता है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. हंटावायरस के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. हंटावायरस मुख्य रूप से कृन्तकों द्वारा ले जाए जाने वाले वायरस का एक समूह है।
2. हंटावायरस संक्रमण आम तौर पर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(c) : 2019

## माइसीलियम ईंट

**चर्चा में क्यों:** जलवायु परिवर्तन से लड़ने के प्रयासों के तहत, निर्माण उद्योग कार्बन उत्सर्जन को कम करने और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए माइसेलियम ईंटों जैसी पर्यावरण के अनुकूल सामग्रियों की खोज कर रहा है।

### माइसीलियम ईंटें

- ये ईंटें माइसीलियम से बनी होती हैं, जो कृषि अपशिष्ट (जैसे भूसी, चूरा) और फंगल बीजाणुओं के साथ मिलकर बनती हैं।
  - माइसीलियम, कवक की वनस्पति जड़ संरचना है।
- ये एक रेशेदार नेटवर्क विकसित करके बनाई जाती हैं जो एक हल्के, बायोडिग्रेडेबल पदार्थ में ठोस हो जाती है।

### माइसीलियम ईंटें क्या हैं?

- माइसीलियम कवक की जड़ जैसी संरचना है जो मिट्टी के नीचे बढ़ती है।
- माइसीलियम ईंटें निम्नलिखित को मिलाकर बनाई जाती हैं:
  - माइसीलियम बीजाणु
  - कृषि अपशिष्ट (जैसे चूरा, भूसी)
- मिश्रण एक रेशेदार, ठोस रूप में बढ़ता है जो एक हल्के और बायोडिग्रेडेबल ईंट बन जाता है।

### माइसेलियम ईंटों की विशेषताएँ

- **संरचना:** जैविक अपशिष्ट (भूसी, चूरा) और फंगल बीजाणुओं से बनी होती हैं।
- **बायोडिग्रेडेबल:** प्राकृतिक रूप से विघटित होती हैं, जिससे लैंडफिल अपशिष्ट कम होता है।
- **अग्निरधी:** प्राकृतिक रूप से आग की लपटों के प्रति प्रतिरोधी।
- **थर्मल इन्सुलेशन:** प्रभावी ऊष्मा इन्सुलेटर, हीटिंग/कूलिंग के लिए ऊर्जा की आवश्यकता को कम करता है।
- **हलकापन:** पारंपरिक ईंटों की तुलना में परिवहन और संभालना आसान है।
- **उच्च शक्ति-से-वजन अनुपात** लेकिन कंक्रीट या पकी हुई ईंटों की तुलना में कम भार वहन करने की क्षमता।
- **कम जीवनकाल:** कुछ वर्षों में बायोडिग्रेड हो जाता है।

### माइसेलियम ईंटों का महत्व

- **पर्यावरणीय लाभ**
  - कार्बन फुटप्रिंट में कमी: पकी हुई मिट्टी की ईंटें सालाना ~300 मिलियन टन CO<sub>2</sub> उत्सर्जित करती हैं। माइसेलियम ईंटें कम ऊर्जा उत्पादन का उपयोग करती हैं।
  - अपशिष्ट उपयोग: कृषि अपशिष्ट को निर्माण सामग्री में बदल देती हैं।
- **अनुप्रयोग**
  - निर्माण: आंतरिक पैनलिंग, इन्सुलेशन
  - अन्य उपयोग: लिक्विड फ़िल्टर, खेल उपकरण, मुद्रित सर्किट बोर्ड।

### चुनौतियाँ

- **संरचनात्मक सीमाएँ**
  - लंबे समय तक भारी भार सहन नहीं कर सकता (कंक्रीट से 100 गुना कम मज़बूती)।
  - लंबे समय तक गर्मी/नमी के संपर्क में रहने पर खराब हो जाता है।
- **संधारणीयता के मुद्दे:** नमी, दीमक और फफूंद क्षय के प्रति संवेदनशील (विशेष रूप से भारत जैसे उष्णकटिबंधीय जलवायु में)।

- उत्पादन बाधाएँ
  - बुनियादी ढांचे की कमी के कारण उच्च लागत।
  - इसका अभी तक बड़े पैमाने पर उत्पादन नहीं किया जा सकता है।

### आगे की राह

- संधारणीय निर्माण प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान
- ईंटों को मजबूत और नमी प्रतिरोधी बनाने के लिए अनुसंधान और विकास
- सरकार का समर्थन:
  - सब्सिडी
  - ग्रीन बिल्डिंग सर्टिफिकेशन
  - पर्यावरण के अनुकूल निर्माण नीतियाँ

### निष्कर्ष

माइसेलियम ईंटें हरित निर्माण की दिशा में एक उत्कृष्ट कदम का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो अपशिष्ट प्रबंधन, स्थिरता और नवाचार को जोड़ती हैं। हालाँकि वे अभी तक पारंपरिक ईंटों की पूरी तरह से बदलने के लिए तैयार नहीं हैं, लेकिन वे एक स्वच्छ, हरित भविष्य के लिए बहुत अच्छा वादा दिखाते हैं - विशेष रूप से आंतरिक उपयोग, अस्थायी संरचनाओं या सजावटी अनुप्रयोगों के लिए।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन सा माइसेलियम का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

- कवक की वनस्पति जड़ संरचना।
- प्रजनन संरचना जो बीजाणु पैदा करती है।
- कवक का दृश्यमान, जमीन के ऊपर फलने वाला भाग।
- कवक कोशिकाओं को ढकने वाली सुरक्षात्मक बाहरी परत।

(ए) : 2022

### स्टारलिक सैटेलाइट इंटरनेट

चर्चा में क्यों: एयरटेल के बाद, टेलीकॉम दिग्गज जियो ने भी भारत में स्टारलिक सैटेलाइट इंटरनेट लाने के लिए स्पेसएक्स के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

#### जियो-स्पेसएक्स साझेदारी:

- उद्देश्य: भारत के सबसे दूरदराज और ग्रामीण इलाकों तक हाई-स्पीड सैटेलाइट इंटरनेट का विस्तार करना।
- यह कैसे काम करता है:
  - जियो की सामर्थ्य: डेटा ट्रेफिक और उपयोगकर्ता आधार के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल नेटवर्क।
  - स्पेसएक्स की सामर्थ्य: स्टारलिक के ज़रिए लो-अर्थ ऑर्बिट (LEO) सैटेलाइट इंटरनेट में वैश्विक नेता।
- साझेदारी का उद्देश्य जियो की पहुँच और स्टारलिक की तकनीक को मिलाकर पूरे भारत में विश्वसनीय ब्रॉडबैंड की पेशकश करना है।

### एयरटेल-स्टारलिक समझौता

- एयरटेल सैटेलाइट आधारित इंटरनेट सेवाएँ प्रदान करने के लिए स्टारलिक के साथ भी बातचीत कर रहा है।
- इस सौदे के तहत:
  - एयरटेल अपने रिटेल आउटलेट के माध्यम से स्टारलिक डिवाइस बेच सकता है।
  - दोनों ग्रामीण स्कूलों, स्वास्थ्य सेवा केंद्रों और दूरदराज के गांवों में तेज़ इंटरनेट लाने के लिए मिलकर काम करेंगे, जिससे भारत के डिजिटल डिवाइड को पाटने में मदद मिलेगी।

### सैटेलाइट इंटरनेट क्या है?

- सैटेलाइट इंटरनेट, पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले संचार उपग्रहों के माध्यम से इंटरनेट एक्सेस प्रदान करता है।
- यदि यह हाई-स्पीड कनेक्शन प्रदान करता है, तो इसे सैटेलाइट ब्रॉडबैंड कहा जाता है।

### सैटेलाइट इंटरनेट के दो प्रकार:

#### 1. जियोस्टेशनरी सैटेलाइट (पुरानी तकनीक):

- पृथ्वी पर एक स्थान पर स्थिर रहते हैं।
- अच्छी कवरेज प्रदान करते हैं लेकिन उच्च विलंबता (देरी) के साथ।

#### 2. लो-अर्थ ऑर्बिट (LEO) सैटेलाइट (नई तकनीक):

- पृथ्वी के निकट रहते हैं।
- कम विलंबता, हाई-स्पीड इंटरनेट प्रदान करते हैं (जैसा कि स्टारलिक प्रदान करता है)।
- वीडियो कॉल, ऑनलाइन गेमिंग आदि जैसे वास्तविक समय के अनुप्रयोगों के लिए बेहतर अनुकूल है।

### यह भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

- भारत के कई दूरदराज और ग्रामीण इलाकों में अभी भी अच्छे इंटरनेट की कमी है।
- सैटेलाइट इंटरनेट उन जगहों तक पहुँच सकता है जहाँ फाइबर केबल नहीं जा सकते - जैसे पहाड़, मरुस्थल, जंगल या अलग-थलग गाँव।
- यह निम्न में मदद करता है:
  - शिक्षा में सुधार (ग्रामीण स्कूलों में ऑनलाइन शिक्षा)
  - स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करना (दूरदराज के इलाकों में टेलीमेडिसिन)
  - दूरदराज के इलाकों में व्यवसायों और स्टार्टअप का समर्थन करना

देश का नाम	सक्रिय सैटेलाइट इंटरनेट परियोजनाएँ
• अमेरिका	<ul style="list-style-type: none"> <li>• इकोस्टार (EchoStar),</li> <li>• ह्यूजेसनेट (HughesNet)</li> <li>• स्टारलिक (Starlink),</li> <li>• प्रोजेक्ट कुइपर (Project Kuiper)</li> </ul>
• यूरोपीय संघ	<ul style="list-style-type: none"> <li>• आईरिस (IRIS)</li> </ul>
• चीन	<ul style="list-style-type: none"> <li>• चीनसैट (ChinaSat)</li> </ul>
• भारत	<ul style="list-style-type: none"> <li>• वनवेब (OneWeb)</li> <li>• जिओस्पेसफाइबर (JioSpaceFiber)</li> <li>• कुिपर (Kuiper)</li> </ul>

## सैटेलाइट इंटरनेट का महत्व

### 1. व्यापक उपलब्धता:

- दूरदराज के पहाड़ों, मरुस्थलों या गांवों में भी इंटरनेट उपलब्ध करा सकता है, जहां कोई केबल या टावर नहीं है।
- इंटरनेट को वास्तव में वैश्विक बनाता है।

### 2. तीव्र और लागत प्रभावी:

- आधुनिक सैटेलाइट इंटरनेट पुराने डायल-अप कनेक्शन की तुलना में 10 से 35 गुना तेज़ हो सकता है।
- यह फाइबर-ऑप्टिक केबल बिछाने की तुलना में सस्ता होता जा रहा है, खासकर उन इलाकों में जहां पहुंचना मुश्किल है।

### 3. पर्यावरण के अनुकूल स्थापना:

- जमीन खोदने या ऊंचे टावर बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है।
- प्रकृति और परिदृश्य को कम नुकसान।

## चुनौतियाँ / नुकसान

### 1. विलंबता (देरी):

- डेटा को अंतरिक्ष में जाने और वापस आने में समय लगता है।
- एक सेकंड की देरी भी वीडियो कॉल, गेमिंग या लाइव इंटरैक्शन को प्रभावित कर सकती है।

### 2. मौसम पर निर्भर:

- बारिश, तूफान और तेज़ हवाएँ सिग्नल को कमज़ोर या तोड़ सकती हैं।
- चरम मौसम के दौरान अविश्वसनीय।

### 3. बाधाएँ:

- आकाश का स्पष्ट दृश्य आवश्यक है।
- पेड़, इमारतें या पहाड़ियाँ सिग्नल को रोक सकती हैं।

### 4. एकाधिकार जोखिम:

- वर्तमान में एलन मस्क (स्टारलिनक), गूगल और फेसबुक जैसी बड़ी तकनीकी दिग्गजों का वर्चस्व है।
- एकाधिकार प्रथाओं और डेटा नियंत्रण का जोखिम।

## आगे की राह

### • सख्त नियम:

- सैटेलाइट इंटरनेट प्रदाताओं को एकाधिकार को रोकने और उपयोगकर्ता की गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट सरकारी नियमों का पालन करना चाहिए।

### • सतत विकास:

- इसका उद्देश्य जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना होना चाहिए, न कि केवल लाभ कमाना।
- हजारों उपग्रहों का उपयोग पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित होना चाहिए और वैज्ञानिक रूप से निगरानी की जानी चाहिए।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. सैटेलाइट इंटरनेट दुनिया भर में इंटरनेट की पहुंच बढ़ाने के लिए एक क्रांतिकारी तकनीक हो सकती है। सैटेलाइट इंटरनेट संचार से जुड़े फायदे और नुकसान की व्याख्या करें। [250 शब्द] [15 अंक]

## जीएम फसल

**चर्चा में क्यों:** सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई), लखनऊ के वैज्ञानिकों ने दुनिया की पहली जीएम कपास किस्म विकसित की है जो कि पिंक बॉलवर्म (पीबीडब्ल्यू) - एक प्रमुख कपास कीट के प्रति पूरी तरह प्रतिरोधी है।

### नया क्या है?

#### • नई जीएम कॉटन किस्म में ये गुण हैं:

- पिंक बॉलवर्म के प्रति उच्च प्रतिरोध
- अन्य कीटों से सुरक्षा जैसे:
  - ◆ कॉटन लीफवर्म
  - ◆ फॉल आर्मीवर्म

### बीटी (BT) कॉटन क्या है?

- बीटी कॉटन, कॉटन का आनुवंशिक रूप से संशोधित संस्करण है जिसमें बैसिलस थुरिंजिएंसिस (बीटी) नामक मिट्टी के जीवाणु के जीन होते हैं।
- ये जीन कीट-नाशक प्रोटीन (विषाक्त पदार्थ) उत्पन्न करते हैं, जो कपास के पौधे को कीटों से बचाते हैं।

### यह किन कीटों को नियंत्रित करता है?

- बीटी कॉटन (बोलगार्ड-I) की पहली पीढ़ी ने क्राय1एसी नामक विष उत्पन्न किया, जो निम्न के विरुद्ध प्रभावी है:
  - तंबाकू बडवर्म
  - पिंक बॉलवर्म (शुरुआत में)

### भारत में बीटी कॉटन से जुड़ी समस्याएँ

#### • अब 100% प्रभावी नहीं:

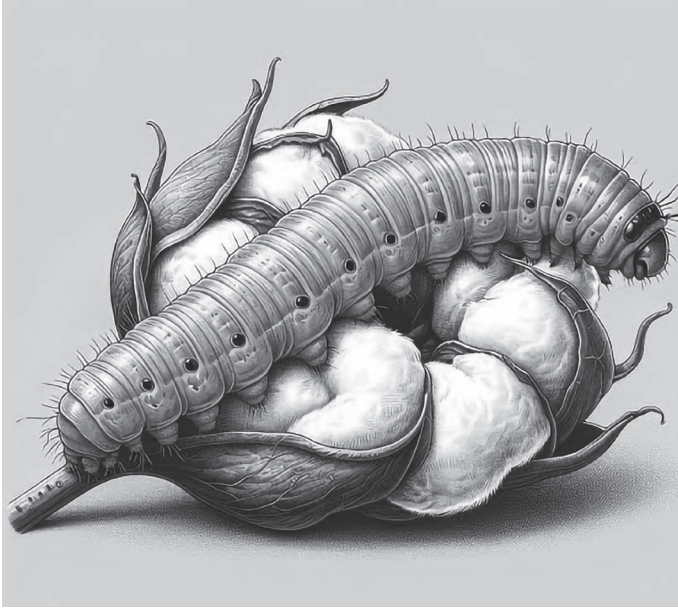
- बीटी कॉटन को भारत में 2002 में पेश किया गया था (बोलगार्ड I और II), जिसे मोनसेंटो के साथ साझेदारी में विकसित किया गया था।
- समय के साथ, पिंक बॉलवर्म ने प्रतिरोध विकसित कर लिया है, खासकर गुजरात के कुछ हिस्सों में।
- मोनसेंटो ने स्वीकार किया है कि इन क्षेत्रों में बोलगार्ड कॉटन अप्रभावी हो गया है।

#### • पर्यावरणीय प्रभाव:

- बीटी फसलें व्यापक कीटनाशकों के उपयोग को कम करती हैं, जो पर्यावरण के लिए अच्छा है।
- लेकिन गैर-लक्ष्य कीटों (जैसे लाभकारी आर्थ्रोपॉड्स) पर प्रभावों के बारे में चिंताएँ हैं।
- समय के साथ, मिट्टी में विषाक्त पदार्थों के स्तर में भी वृद्धि होती है, क्योंकि जीएम पौधे लगातार विषाक्त पदार्थों का उत्सर्जन करते हैं।

### पिंक बॉलवर्म के बारे में

- **वैज्ञानिक नाम:** पेक्टिनोफोरा गॉसिपिएला
- **दिखावट:** छोटे, पतले भूरे रंग के पंख वाले कीट।
- भारत में गुलाबी सुंडी के नाम से जाना जाता है।
- अब कई क्षेत्रों में पहली पीढ़ी के बीटी कॉटन (Cry1Ac) के प्रति प्रतिरोधी है।



### प्रारंभिक परीक्षा विशेष

#### भारत में जीएम फसलें - वर्तमान परिदृश्य

- भारत में अभी केवल जीएम कपास ही व्यावसायिक रूप से उगाया जाता है।
- जीएम बैंगन को 2010 में मंजूरी दी गई थी, लेकिन सरकार ने इसे अनिश्चित काल के लिए रोक दिया।
- 2017 में, जीएम सरसों को परीक्षण के लिए मंजूरी दे दी गई थी, लेकिन अतिरिक्त परीक्षण के कारण इसमें देरी हुई।
- 18 अक्टूबर 2022 को, GEAC (जेनेटिक इंजीनियरिंग अप्रेंटिस कमेटी) ने जीएम सरसों हाइब्रिड DMH-11 के पर्यावरणीय विमोचन को मंजूरी दे दी, जिससे बीज उत्पादन और परीक्षण की अनुमति मिल गई - पूर्ण खेती से एक कदम पहले।

#### भारत में जीएम फसलों का विनियमन

- GEAC (MoEFCC के तहत) प्रमुख नियामक है।
- अनुमोदन प्रक्रिया में जैव सुरक्षा परीक्षण, पर्यावरणीय मंजूरी और सार्वजनिक परामर्श शामिल हैं।
- अंतिम निर्णय में अक्सर राजनीतिक, पर्यावरणीय और सामाजिक विचार शामिल होते हैं।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) फसलों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत में वाणिज्यिक खेती के लिए किसी भी खाद्य जीएम फसल को मंजूरी नहीं दी गई है।

2. कृषि मंत्रालय के तहत जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (जीईएसी) भारत में जीएम फसलों को मंजूरी देने के लिए अंतिम प्राधिकारी है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

(ए) : 2022

### चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र का पहला विस्तृत मानचित्र

**चर्चा में क्यों:** खगोलविदों ने हाल ही में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र का पहला विस्तृत भूवैज्ञानिक मानचित्र जारी किया है, जिसे चंद्रयान-3 के डेटा का उपयोग करके बनाया गया है।

#### मुख्य विवरण

- **अनुसंधान दल:** इसरो की इलेक्ट्रो-ऑप्टिकस सिस्टम प्रयोगशाला (बेंगलुरु), भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (अहमदाबाद) और पंजाब विश्वविद्यालय (चंडीगढ़) के वैज्ञानिकों के एक समूह ने प्रज्ञान रोवर से डेटा का उपयोग किया, जो विक्रम लैंडर के नौ दिवसीय मिशन का हिस्सा था।
- **उद्देश्य:** मिशन ने रेगोलिथ - चंद्र सतह पर शिथिल चट्टानें और धूल - की रासायनिक संरचना का विश्लेषण किया।

इस मानचित्र से चंद्रमा के निर्माण और विकास के बारे में नई जानकारी मिलने की उम्मीद है।

#### चंद्रयान-3 द्वारा की गई प्रमुख खोजें

1. **आदिम मैग्मा:** चंद्रमा पर पिघली हुई चट्टान (आदिम मैग्मा) का एक भूमिगत महासागर है, जिसकी पुष्टि प्रज्ञान रोवर ने की है। यह पिघला हुआ लावा केवल भूमध्य रेखा या मध्य अक्षांश क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे चंद्रमा में फैला हुआ है।
2. **समान भू-रसायन:** पृथ्वी और चंद्रमा दोनों ही समान स्थलीय और भू-रसायन विज्ञान साझा करते हैं। उनमें समान समस्थानिक होते हैं, जो यह सुझाव देते हैं कि दोनों पिघले हुए पदार्थ के एक ही बादल से बने हैं।
3. **चंद्रमा की उत्पत्ति:** लगभग 4.5 अरब वर्ष पहले, पृथ्वी मंगल ग्रह के समान एक विशाल ग्रह के आकार की चट्टान से टकराई थी। इस टक्कर से निकला मलबा अंततः ठंडा होकर चंद्रमा बन गया, जो ठोस होने पर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में खिंच गया।
4. **चंद्रमा पर क्रेटर:** पृथ्वी के विपरीत, जहाँ वायुमंडलीय परिस्थितियाँ क्रेटर को नष्ट कर देती हैं, चंद्रमा का शुष्क, वायुहीन वातावरण लाखों वर्षों तक क्रेटर को संरक्षित रखता है। यह चंद्रमा को प्राचीन भूवैज्ञानिक इतिहास के अध्ययन के लिए एक मूल्यवान स्थान बनाता है।

#### दक्षिणी ध्रुव का महत्व

1. **बर्फ की मौजूदगी:** माना जाता है कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ उपस्थित है, जो भविष्य के मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। पानी का इस्तेमाल ऑक्सीजन, ईंधन, शीतलन प्रणाली और यहां तक कि अंतरिक्ष यात्रियों के लिए पीने के पानी के लिए भी किया जा सकता है।

2. **भूवैज्ञानिक इतिहास:** चंद्रयान मानचित्र चंद्रमा की सतह की संरचना, क्रेटरों की आयु और इसके भूवैज्ञानिक विकास के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है। इसका एक उदाहरण एटकेन बेसिन है, जो दक्षिणी ध्रुव के पास एक महत्वपूर्ण गड्ढा है।
3. **प्रमुख खनिज:** माना जाता है कि चंद्रमा में बहुमूल्य खनिज हैं:
  - **हीलियम-3:** अनुमानित 1 मिलियन टन हीलियम-3, जो संभावित रूप से खतरनाक अपशिष्ट उत्पन्न किए बिना परमाणु संलयन रिएक्टरों को ईंधन दे सकता है।
  - **दुर्लभ पृथ्वी धातुएँ:** स्कैंडियम और यिट्रियम जैसे खनिज भी प्रचुर मात्रा में हैं, जिनका व्यापक औद्योगिक अनुप्रयोग है।
4. **मानव बस्तियाँ:** दक्षिणी ध्रुव की अनूठी परिस्थितियाँ - कुछ चोटियों पर स्थायी सूर्य का प्रकाश और क्रेटरों में निरंतर अंधेरा - इसे सौर ऊर्जा उत्पादन और संभावित मानव बस्तियों के लिए एक आदर्श स्थान बनाती हैं। निरंतर अंधेरे में रहने वाले क्षेत्र कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों से सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

### निष्कर्ष

चंद्रयान-3 द्वारा निर्मित चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का नक्शा चंद्रमा के अतीत, उसके संसाधनों और मानव अन्वेषण की संभावनाओं को समझने के लिए नए द्वार खोलता है। बर्फ, प्रमुख खनिजों और स्थिर भूगर्भीय स्थितियों के साथ, दक्षिणी ध्रुव भविष्य के मिशनों के लिए एक केंद्रीय फोकस बन सकता है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. एटकेन बेसिन साइट के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह मंगल ग्रह पर सबसे बड़े और सबसे पुराने प्रभाव बेसिनों में से एक है।
2. इसमें सक्रिय ज्वालामुखी विस्फोट होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(c) : 2016

## सफेद हाइड्रोजन

**चर्चा में क्यों:** फ्रांस ने मोसेल क्षेत्र में प्राकृतिक (सफेद) हाइड्रोजन का एक विशाल भंडार खोजा है, जिसका अनुमान 46 मिलियन टन है और इसकी कीमत लगभग 92 बिलियन डॉलर है।

### सफेद हाइड्रोजन क्या है?

- सफेद हाइड्रोजन प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला शुद्ध हाइड्रोजन है जो भूमिगत रूप से पाया जाता है।
- यह पृथ्वी की भूपर्पटी में खनिजों और पानी के बीच भू-रासायनिक प्रतिक्रियाओं द्वारा बनता है, विशेष रूप से कठोर चट्टान संरचनाओं में।
- तेल या गैस के विपरीत, हाइड्रोजन के अणु बहुत छोटे और हल्के होते हैं, इसलिए वे कभी-कभी चट्टानों के माध्यम से आसानी से बच सकते हैं, जिससे अन्वेषण मुश्किल हो जाता है।

### सफेद हाइड्रोजन कहाँ पाया जाता है?

- **माली (अफ्रीका):** 2012 में, एक कुँए से लगभग शुद्ध हाइड्रोजन का रिसाव हुआ था - जो पहली बड़ी खोजों में से एक थी।
- **यूरोप:** फ्रांस और स्पेन में भी महत्वपूर्ण प्राकृतिक हाइड्रोजन भंडार पाए गए हैं।

### सफेद हाइड्रोजन क्यों महत्वपूर्ण है?

- **शून्य उत्सर्जन:** यह प्राकृतिक रूप से बनता है, इसलिए इसके निर्माण में कोई कार्बन उत्सर्जन शामिल नहीं होता।
- **ग्रीन हाइड्रोजन से सस्ता:** कृत्रिम प्रक्रियाओं द्वारा बनाए गए हाइड्रोजन की तुलना में सफेद हाइड्रोजन की कीमत कम हो सकती है।
- **स्व-पुनःपूर्ति:** यह लगातार भूमिगत रूप से बनता रहता है, जीवाश्म ईंधन के विपरीत, जिसमें लाखों वर्ष लगते हैं।

### सफेद हाइड्रोजन के इस्तेमाल में चुनौतियाँ

- **ढूँढ़ना मुश्किल:** सफेद हाइड्रोजन सिर्फ खास भूगर्भीय स्थितियों में ही बनता है, जिससे खोजबीन मुश्किल हो जाती है।
- **निष्कर्षण संबंधी समस्याएँ:** मौजूदा तकनीक बड़े पैमाने पर व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए सीमित है।
- **पर्यावरण संबंधी चिंताएँ:** अगर सही तरीके से न संभाला जाए तो प्राकृतिक रिसाव सुरक्षा या पर्यावरण के लिए जोखिम पैदा कर सकता है।
- **स्पष्ट विनियमनों का अभाव:** वैश्विक स्तर पर इस संसाधन का प्रबंधन और विनियमन कैसे किया जाए, इस बारे में अभी भी अनिश्चितता है।

## हाइड्रोजन रंग स्पेक्ट्रम: हाइड्रोजन के विभिन्न प्रकार

प्रकार	निर्माण प्रक्रिया	उत्सर्जन स्तर
सफेद	प्राकृतिक रूप से भूमिगत होता है	शून्य उत्सर्जन
हरा भरा	नवीकरणीय ऊर्जा (सौर, पवन) का उपयोग करके इलेक्ट्रोलीसिस	शून्य उत्सर्जन
नीला	प्राकृतिक गैस + कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (सीसीएस) से	निम्न उत्सर्जन
स्लेटी	प्राकृतिक गैस से, बिना CO <sub>2</sub> ग्रहण किये	उच्च उत्सर्जन
गुलाबी/बैंगनी	परमाणु ऊर्जा का उपयोग करके इलेक्ट्रोलीसिस	न्यूनतम से शून्य उत्सर्जन
पीला	सौर ऊर्जा का उपयोग करके इलेक्ट्रोलीसिस	शून्य उत्सर्जन
काला/भूरा	कोयला (बिटुमिनस या लिग्नाइट) जलाकर बनाया गया	बहुत अधिक उत्सर्जन

सफेद हाइड्रोजन एक सफल स्वच्छ ऊर्जा स्रोत बन सकता है, जो जीवाश्म ईंधन के लिए एक प्राकृतिक रूप से नवीकरणीय और शून्य-उत्सर्जन विकल्प प्रदान करता है। हालाँकि, इसे अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचाने के लिए, तकनीकी सुधार, बेहतर अन्वेषण उपकरण और स्पष्ट विनियमन की आवश्यकता है। बढ़ती वैश्विक रुचि और फ्रांस जैसी खोजों के साथ, सफेद हाइड्रोजन जल्द ही टिकाऊ ऊर्जा के भविष्य में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन सा हाइड्रोजन प्रकार इलेक्ट्रोलिसिस के लिए अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके उत्पादित किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप सबसे कम कार्बन उत्सर्जन होता है?

- (a) ग्रे हाइड्रोजन
- (b) ब्लू हाइड्रोजन
- (c) ग्रीन हाइड्रोजन
- (d) पिंक हाइड्रोजन

(c) :2022

**विक्रम और कल्पना**

**चर्चा में क्यों:** इसरो ने चंडीगढ़ स्थित सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला (एससीएल) के साथ मिलकर विक्रम 3201 और कल्पना 3201 नामक दो हाईस्पीड, 32-बिट माइक्रोप्रोसेसर विकसित किए हैं, जिन्हें विशेष रूप से भारत के अंतरिक्ष मिशनों के लिए डिज़ाइन किया गया है।



**ये माइक्रोप्रोसेसर क्या हैं?**

माइक्रोप्रोसेसर इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम के "दिमाग" हैं, जिनमें उपग्रह और प्रक्षेपण यान शामिल हैं। वे डेटा को प्रोसेस करते हैं और संचालन को नियंत्रित करते हैं। नए प्रोसेसर पूरी तरह से भारतीय निर्मित हैं और कठोर अंतरिक्ष वातावरण के लिए बनाए गए हैं।

**विक्रम 3201 के बारे में:**

- अंतरिक्ष उपयोग के लिए भारत का पहला पूर्ण स्वदेशी 32-बिट माइक्रोप्रोसेसर।
- प्रक्षेपण यानों को जटिल परिस्थितियों में काम करने के लिए डिज़ाइन किया गया।
- 32-बिट प्रोसेसिंग पावर तेज़ डेटा हैंडलिंग, बेहतर मेमोरी प्रबंधन (4 जीबी तक) और कुशल प्रदर्शन की अनुमति देता है।

- विक्रम 1601 (2009 से इसरो के प्रक्षेपण वाहनों में इस्तेमाल की जाने वाली 16-बिट चिप) का बेहतर संस्करण।
- जटिल गणनाओं (फ्लोटिंग-पॉइंट ऑपरेशन) और एडा जैसी उच्च-स्तरीय भाषाओं में प्रोग्रामिंग का समर्थन करता है।
- SCL की 180nm CMOS निर्माण इकाई में निर्मित, मेक इन इंडिया पहल का समर्थन करता है।

**कल्पना 3201 के बारे में**

- IEEE 1754 इंस्ट्रक्शन सेट पर आधारित 32-बिट SPARC V8 RISC माइक्रोप्रोसेसर।
- ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर टूल के साथ अच्छी तरह से काम करता है और वास्तविक फ्लाइंग सॉफ्टवेयर के साथ परीक्षण किया गया है।
- सरल, तीव्र और ऊर्जा-कुशल निर्देशों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो इसे विभिन्न अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए अत्यधिक बहुमुखी बनाता है।

**यह विकास क्यों महत्वपूर्ण है:**

**1. बेहतर विश्वसनीयता:**

- विक्रम 3201 का परीक्षण अंतरिक्ष में PSLV-C60 मिशन पर किया गया, जिससे यह साबित हुआ कि यह भविष्य में प्रक्षेपण यानों और उपग्रहों में उपयोग के लिए तैयार है।

**2. अंतरिक्ष इलेक्ट्रॉनिक्स में आत्मनिर्भरता:**

- ये प्रोसेसर विदेशी माइक्रोचिप्स पर भारत की निर्भरता को कम करते हैं, जो तकनीकी संप्रभुता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

**3. छोटे, स्मार्ट सिस्टम:**

- **इन चिप्स के साथ, इसरो और एससीएल ने विकसित किया है:**

- एक रीकॉन्फिगरैबल डेटा एक्जिजिशन सिस्टम
- एक मल्टी-चैनल लो ड्रॉप-आउट रेगुलेटर आईसी ये एवियोनिक्स के लघुकरण का समर्थन करते हैं - लॉन्च सिस्टम को हल्का, तेज़ और अधिक ऊर्जा कुशल बनाने में मदद करते हैं।

**निष्कर्ष**

विक्रम और कल्पना माइक्रोप्रोसेसर केवल चिप्स नहीं हैं - वे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की बढ़ती शक्ति के प्रतीक हैं। वे स्वतंत्र रूप से मिशनों को डिज़ाइन और नियंत्रित करने की हमारी क्षमता को मजबूत करते हैं, लॉन्च वाहनों को अधिक कुशल बनाते हैं, और भारत को अंतरिक्ष नवाचार में वैश्विक नेता बनने की दिशा में आगे बढ़ाते हैं।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. हाल ही में खबरों में आए विक्रम और कल्पना किससे संबंधित हैं:

- (a) चंद्रयान -3 मिशन
- (b) नए स्टार्टअप
- (c) बीजों की नई HYV किस्म
- (d) अंतरिक्ष मिशनों के लिए हाई-स्पीड माइक्रोप्रोसेसर

(d) :2022

## सुनीता विलियम्स का अनिर्धारित अंतरिक्ष प्रवास

**चर्चा में क्यों:** अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और साथी अंतरिक्ष यात्री बुच विल्मोर हाल ही में अंतरिक्ष में सबसे लंबे समय तक अनिर्धारित प्रवास को पूरा करने के बाद पृथ्वी पर लौट आए।

### विवरण:

- जून 2024 में, दोनों अंतरिक्ष यात्री बोइंग के स्टारलाइनर अंतरिक्ष यान का उपयोग करके अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) की यात्रा पर गए।
- उन्हें मूल रूप से एक सप्ताह में वापस लौटना था।
- हालांकि, स्टारलाइनर के साथ तकनीकी समस्याओं ने इसे वापसी के लिए असुरक्षित बना दिया, इसलिए उन्हें ISS पर अधिक समय तक रहना पड़ा।

- हालांकि स्टारलाइनर सितंबर 2024 में सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर (चालक दल के बिना) वापस आ गया, विलियम्स और विल्मोर को वापसी के लिए एक और सवारी का इंतजार करना पड़ा।
- आखिरकार, वे स्पेसएक्स ड्रैगन अंतरिक्ष यान का उपयोग करके दो अन्य अंतरिक्ष यात्रियों के साथ पृथ्वी पर लौट आए।

### सबसे लंबा अनिर्धारित अंतरिक्ष प्रवास

- सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर 286 दिनों तक - 9 महीने से अधिक समय तक अंतरिक्ष में रहे।
- यद्यपि अनियोजित, उनका प्रवास भविष्य के लंबे समय तक चलने वाले मिशनों के लिए मूल्यवान डेटा जोड़ता है।

## अन्य लंबी दूरी के अंतरिक्ष प्रवास

अंतरिक्ष यात्री	अंतरिक्ष में बिताया गया समय	विवरण
वलेरी पोलाकोव (रूस)	438 दिन	सबसे लंबे समय तक लगातार रुकना (मीर स्टेशन)
ओलेग कोनोनेनको (रूस)	1,111 दिन (कुल)	अंतरिक्ष में कुल मिलाकर सबसे लम्बा समय
पैगी व्हिटसन (अमेरिका)	675 दिन (कुल)	किसी महिला द्वारा अंतरिक्ष में बिताया गया सबसे लम्बा समय

- नवंबर 2000 से आईएसएस पर अंतरिक्ष यात्री है।
- आमतौर पर, अंतरिक्ष यात्री कुछ सप्ताहों से लेकर महीनों तक वहां रहकर प्रयोग करते हैं।

### यह प्रवास क्यों महत्वपूर्ण है?

हालांकि यह मिशन अनियोजित है, लेकिन इसके वैज्ञानिक लाभ हैं: मानव स्वास्थ्य अनुसंधान

- नासा इस बात का अध्ययन कर रहा है कि अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने पर मानव शरीर किस तरह प्रतिक्रिया करता है।
- अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने से:
  - मांसपेशियों की ताकत और हड्डियों का घनत्व कम हो सकता है।
  - मस्तिष्क द्रव परिसंचरण प्रभावित हो सकता है।
  - हृदय रोग का जोखिम बढ़ सकता है।
  - मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं।

### भविष्य के मिशनों की योजना बनाना

- नासा के मून बेस जैसी भविष्य की परियोजनाओं के लिए लोगों को लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने की आवश्यकता होगी।
- यह अनुभव अंतरिक्ष एजेंसियों को आपात स्थितियों, बैकअप विकल्पों और अंतरिक्ष यात्रियों के लिए बेहतर प्रशिक्षण के लिए तैयार होने में मदद करता है।

### अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के बारे में

- ISS पृथ्वी से लगभग 240 मील (400 किमी) ऊपर परिक्रमा करता है।
- यह एक अंतरिक्ष यान, विज्ञान प्रयोगशाला, वेधशाला और अंतरिक्ष यात्रियों का घर है।
- 1998 में अमेरिका, रूस और जापान सहित 15 देशों के गठबंधन द्वारा बनाया गया।
- इसे अक्सर "मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धि" कहा जाता है, यह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का एक मॉडल है।
- यह 28,000 किमी/घंटा की गति से यात्रा करता है, दिन में 16 बार पृथ्वी की परिक्रमा करता है।
- चालक दल के बदलाव के दौरान 10-12 अंतरिक्ष यात्रियों को रख सकता है, हालांकि इसमें आम तौर पर कम लोग होते हैं।

### अंतरिक्ष में भारत का भविष्य: भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन

- भारत 2035 तक अपना स्वयं का अंतरिक्ष स्टेशन लॉन्च करने की योजना बना रहा है।
- भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन नाम का यह स्टेशन पृथ्वी से 400 किलोमीटर ऊपर परिक्रमा करेगा और इसका वजन लगभग 20 टन होगा।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें:

स्पेस एजेंसी	स्पेसक्राफ्ट
1. बोइंग	ट्रैगन
2. स्पेसएक्स	स्टारलाइनर

उपर्युक्त दिए गए युग्मों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(P) : 2018

### अंतरिक्ष यानियों के स्वास्थ्य पर अंतरिक्ष यान का प्रभाव

**चर्चा में क्यों:** नासा के अंतरिक्ष यानों सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर 8 महीने से अधिक समय तक अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) में फंसे रहने के बाद पृथ्वी पर लौट आए हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंताएँ बढ़ गई हैं।

**मानव अंतरिक्ष उड़ान के खतरे:** अंतरिक्ष यानियों को अंतरिक्ष में याना करते समय पाँच खतरों का सामना करना पड़ता है।

- अंतरिक्ष विकिरण:** मानव आंखों के लिए अदृश्य, अंतरिक्ष विकिरण न केवल गुप्त है बल्कि अंतरिक्ष उड़ान के सबसे खतरनाक पहलुओं में से एक माना जाता है।
- अलगव और कारावास:** व्यवहारिक प्रतिक्रियाएँ पृथ्वी से दूर लोगों के समूहों के बीच होती हैं जो लंबे समय तक एक छोटे से स्थान में अलग-थलग और सीमित रहते हैं।
- पृथ्वी से दूरी:** निर्देश, नई आपूर्ति, चिकित्सा देखभाल, और बहुत कुछ प्राप्त करना तेजी से चुनौतीपूर्ण होता जाता है क्योंकि अंतरिक्ष यानों अंतरिक्ष में गहराई तक जाते हैं।
- गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र:** अंतरिक्ष यानियों के पूरे शरीर - मांसपेशियों, हड्डियों, आंतरिक कान और अंगों - को अंतरिक्ष स्टेशन या उनके अंतरिक्ष यान पर, साथ ही साथ घर लौटने के बाद चंद्रमा, मंगल और पृथ्वी पर सामना किए जाने वाले नए गुरुत्वाकर्षण के साथ समायोजित करना होगा।
- शलुतापूर्ण/बंद वातावरण:** अंतरिक्ष यान के अंदर एक सुरक्षित पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखना अद्वितीय चुनौतियों को प्रस्तुत करता है, जिसमें इष्टतम तापमान, दबाव और प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करने से लेकर शोर को कम करना, सूक्ष्मजीव समुदायों की निगरानी करना और प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं पर निगरानी रखना शामिल है।

#### मानव शरीर पर अंतरिक्ष उड़ान का प्रभाव

- मांसपेशियाँ और हड्डियाँ**
  - **मांसपेशी शोष:**
    - ◆ 2 सप्ताह में 20% मांसपेशी द्रव्यमान का नुकसान; 3-6 महीनों में 30% तक।
    - ◆ यह पीठ, गर्दन, पिंडलियों और क्वाड्रिसेप्स जैसी मुद्रा-सहायक मांसपेशियों को प्रभावित करता है।

- ◆ ISS पर प्रतिरोध व्यायाम (2.5 घंटे/दिन) मांसपेशियों के नुकसान का पूरी तरह से मुकाबला करने के लिए अपर्याप्त हैं।

#### अस्थि विखननीकरण:

- ◆ हर महीने 1-2% अस्थि द्रव्यमान की हानि और 6 महीनों में 10% तक (बनाम पृथ्वी पर 0.5-1% वार्षिक हानि)।
- ◆ फ्रैक्चर का जोखिम बढ़ जाता है और उपचार में देरी होती है।
- ◆ उड़ान से पहले की अस्थि घनत्व की रिकवरी में 4 वर्ष तक का समय लग सकता है।

- **रीढ़ की हड्डी में परिवर्तन:** सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण में रीढ़ की हड्डी के बढ़ने से पीठ दर्द होता है और वापसी के बाद स्प्लिड डिस्क का जोखिम बढ़ जाता है।

- **वजन घटना:** आहार में बदलाव, सीमित खाद्य विविधता और चयापचय परिवर्तनों के कारण वजन घटना।

#### दृष्टि

- **द्रव पुनर्वितरण:** सिर में रक्त/द्रव संचय से ऑप्टिक तंत्रिका शोफ, दृष्टि हानि (जैसे तीक्ष्णता में कमी) होती है।

- **विकिरण जोखिम:** कॉस्मिक किरणों रेटिना चमक और संभावित दीर्घकालिक आंखों की क्षति का कारण बनती है।

#### तंत्रिका शफलिंग (Neural Shuffling)

##### ➤ मस्तिष्क संरचना

- ◆ मस्तिष्क निलय की सूजन को सामान्य होने में 3 वर्ष लग सकते हैं।
- ◆ मोटर और वेस्टिबुलर क्षेत्रों में तंत्रिका संपर्क में बदलाव, संतुलन और स्थानिक अभिविन्यास को प्रभावित करता है।

- **संज्ञानात्मक प्रदर्शन:** लैंडिंग के बाद गति/सटीकता में अस्थायी गिरावट।

- **अनुकूल बैक्टीरिया / माइक्रोबायोम:** आहार, पुनर्नवीनीकरण पानी, विकिरण और सामाजिक संपर्क के कारण आंत के बैक्टीरिया की विविधता बदल जाती है। यह पाचन, सूजन और प्रतिरक्षा कार्य को प्रभावित करता है।

- **त्वचा:** मिशन के बाद संवेदनशीलता और चकत्ते में वृद्धि, संभवतः कम उत्तेजना के कारण।

#### जीन:

- **टेलोमेरेस:** अंतरिक्ष उड़ान के दौरान लंबाई बढ़ती है, लेकिन वापस आने के बाद तेजी से छोटी हो जाती है, जिससे दीर्घकालिक उम्र बढ़ने का जोखिम बढ़ जाता है।

- **डीएनए क्षति:** ब्रह्मांडीय विकिरण के कारण; टेलोमेरेस में परिवर्तन और संभावित स्वास्थ्य जोखिमों से जुड़ा हुआ है।

- **जीन अभिव्यक्ति:** डीएनए मरम्मत, अस्थि के गठन और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया से संबंधित जीन में बदली हुई गतिविधि (ज्यादातर 6 महीने के भीतर प्रतिवर्ती)।

- **लैंगिक अंतर:** पुरुषों में प्रतिरक्षा प्रणाली में अधिक व्यवधान (जैसे इंटरल्यूकिन प्रोटीन) और मिशन के बाद मंद रिकवरी दिखाई देती है।

#### प्रतिरक्षा प्रणाली:

- विकिरण जोखिम के साथ सहसंबद्ध सफेद रक्त कोशिका की संख्या में कमी।
- पुरुष अंतरिक्ष यानियों में सूजन मार्कर (जैसे फाइब्रिनोजेन) में वृद्धि।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. अंतरिक्ष यानियों के शारीरिक, कार्यिकीय और मानसिक स्वास्थ्य पर संभावित प्रतिकूल प्रभाव क्या हैं? [150 शब्द] [10 अंक]

### भारतीय सेना की वायु रक्षा आधुनिकीकरण

**चर्चा में क्यों:** अपनी वायु रक्षा कोर को आधुनिक बनाने के लिए स्वदेशी तकनीक का उपयोग करते हुए, भारतीय सेना जल्द ही चुनिंदा रक्षा हथियार प्रणालियों और उपकरणों के लिए परीक्षण कर सकती है, जिसमें काउंटर मानव रहित हवाई प्रणाली (सीयूपएस), स्मार्ट गोला-बारूद वाली गन प्रणाली और विभिन्न रेंज की मिसाइलें शामिल हैं।

#### वायु रक्षा आधुनिकीकरण अभियान:

- मौजूदा वायु रक्षा तोपों (सेवा में 1,300) के लिए विखंडन गोला-बारूद शामिल करना।
- क्यूआरएसएएम और आकाश-एनजी जैसी नई प्रणालियों की खरीद में तेजी लाना।
- स्मार्ट गोला-बारूद, लेजर/माइक्रोवेव हथियारों और विकेंद्रीकृत कमांड संरचनाओं के माध्यम से ड्रोन खतरों का मुकाबला करना।

#### क्विक रिप्लेसमेंट सरफेस-टू-एयर मिसाइल (QRSAM):

- सीमा: 30 किमी
- उत्पादन समयरेखा:
  - अनुबंध अगले 3-4 महीनों में होने की संभावना है।
  - अनुबंध के 12 महीने के भीतर पहला प्रोटोटाइप मॉडल (FoPM)।
  - 18 महीनों में पूर्ण उत्पादन (पहिएदार और ट्रेक किए गए कॉन्फिगरेशन)।
- महत्व: QSRAM सामरिक वायु रक्षा के लिए एक प्राथमिकता आवश्यकता है।

#### आकाश एसएएम (SAM) सिस्टम:

- तैनाती:
  - आकाश एसएएम की 3 रेजिमेंट पहले से ही कार्यरत हैं।
  - अगली पीढ़ी के आकाश-एनजी की 2 रेजिमेंट का अनुबंध किया गया।
- अपग्रेड: बड़ी हुई क्षमताओं के साथ FoPM अगले 45 दिनों में उच्च ऊंचाई वाले परीक्षणों से गुजर रहा है।

#### लिंगेसी गन के लिए फ्रैगमेंटेशन ऐम्युनिशन:

- प्राथमिकता: L-70 और Zu-23 एयर डिफेंस गन को 30 मिमी एयर बस्ट गोला बारूद से लैस करना।
- लाभ: ड्रोन और लोड्टर गोला-बारूद के खिलाफ प्रभावशीलता में वृद्धि।
- स्थिति: निविदा पहले ही जारी की जा चुकी है और जल्द ही परीक्षण की संभावना है।

#### सक्सेसर गन कार्यक्रम और स्मार्ट ऐम्युनिशन:

- योजना: एल-70 और जू-23 को 220 नई बंदूकों और स्मार्ट गोला-बारूद से बदलना।
- जुलाई 2025 में परीक्षण शुरू होंगे और मई-जून 2026 तक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

- स्वदेशी विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- स्मार्ट ऐम्युनिशन: पारंपरिक विस्फोटकों की तुलना में 17 गुना अधिक मारक क्षमता वाले प्रोग्रामेबल राउंड। रसद बोझ को कम करता है।

#### ड्रोन विरोधी तकनीकें और रणनीतियाँ:

- उभरते खतरे:
  - ड्रोन, लोड्टर म्युनिशन और स्मार्ट स्वार्स का प्रसार।
  - खतरों को मापने और उन्हें योग्य बनाने में कठिनाई (अप्रत्याशित गुणवत्ता/मात्रा)।
- समाधान:
  - लेजर/माइक्रोवेव हथियार: उन्नत खरीद चरणों में।
  - वायु रक्षा बंदूकें: विखंडन बारूद के साथ ड्रोन के खिलाफ पुनर्जीवित उपयोगिता।
  - विकेंद्रीकृत कमांड पोस्ट: त्वरित प्रतिक्रिया के लिए महत्वपूर्ण (यूक्रेन से सबक)।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. फ्रैगमेंटेशन ऐम्युनिशन मुख्य रूप से इस उद्देश्य से बनाया गया है:

- विस्फोट होने पर उच्च-वेग वाले टुकड़ों को फैलाना, जिससे व्यापक क्षति हो।
- संकेंद्रित गतिज ऊर्जा का उपयोग करके बख्तरबंद लक्ष्यों को भेदना।
- लक्ष्य को अक्षम करने के लिए प्रभाव पर रासायनिक एजेंट छोड़ना।
- आस-पास आग या आग लगाने वाले प्रभाव को प्रज्वलित करना।

(ए) :2025

#### अभ्यास-धर्म रक्षक

**चर्चा में क्यों:** भारतीय सेना की टुकड़ी भारत-जापान संयुक्त सैन्य अभ्यास धर्म रक्षक के 6वें संस्करण के लिए रवाना हुई।

**मुख्य विवरण:**

- यह अभ्यास 24 फरवरी से 9 मार्च 2025 तक जापान के पूर्वी फूजी युद्धाभ्यास प्रशिक्षण क्षेत्र में आयोजित किया जाना है।
- 120 कर्मियों वाली भारतीय टुकड़ी का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन के सैनिकों के साथ-साथ अन्य हथियारों और सेवाओं के सैनिकों द्वारा किया जाएगा। जापान ग्राउंड सेल्फ डिफेंस फोर्स (JGSDF) टुकड़ी, जिसमें समान ताकत शामिल है, का प्रतिनिधित्व 34वीं इन्फैंट्री रेजिमेंट द्वारा किया जाएगा।

**धर्म गार्डियन अभ्यास के बारे में:**

- यह भारत और जापान में बारी-बारी से आयोजित होने वाला एक वार्षिक कार्यक्रम है।
- इसी अभ्यास का पिछला संस्करण फरवरी-मार्च 2024 में राजस्थान में आयोजित किया गया था।
- **अभ्यास का उद्देश्य:**
  - इसका उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र के आदेश के तहत संयुक्त शहरी युद्ध और आतंकवाद विरोधी अभियान चलाते हुए दोनों सेनाओं के बीच अंतर-संचालन को बढ़ाना है। अभ्यास में उच्च स्तर की शारीरिक फिटनेस, संयुक्त योजना और संयुक्त सामरिक अभ्यास पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- **अभ्यास के पहलू:** अभ्यास में सामरिक अभ्यास, संयुक्त अभ्यास और आपदा प्रतिक्रिया रणनीति शामिल होगी, जिसे परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने, युद्ध कौशल को निखारने और प्रभावी संयुक्त संचालन के लिए अंतर-संचालन को मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

**अभ्यास के निहितार्थ:**

- **साझा दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है:** यह अभ्यास भारत और जापान की क्षेत्रीय सुरक्षा, शांति और स्थिरता के प्रति साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, साथ ही एक स्वतंत्र, खुले और समावेशी इंडो-पैसिफिक के उनके साझा दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है।
- **सैन्य और सांस्कृतिक सहयोग:** धर्म गार्डियन अभ्यास भारत-जापान संबंधों को क्षेत्रीय सहयोग की आधारशिला के रूप में मजबूत करता है, सैन्य-से-सैन्य संबंधों को मजबूत करता है और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है।
- **अधिक पेशेवर जुड़ाव:** भारत और जापान के बीच दोस्ती, विश्वास और सांस्कृतिक संबंधों के स्थायी बंधन का एक प्रमाण, यह अभ्यास सार्थक पेशेवर जुड़ाव के लिए मंच तैयार करता है, जो व्यापक रक्षा सहयोग के लिए दोनों देशों की अटूट प्रतिबद्धता को उजागर करता है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. भारत और देशों के सैन्य अभ्यासों के निम्नलिखित जोड़ों पर विचार करें:

अभ्यास	देश का नाम
1. गरुड़ शक्ति	इंडोनेशिया
2. प्रबल दोस्तिक	जापान
3. धर्म संरक्षक	कजाकिस्तान
4. सिम्बेक्स	श्रीलंका

उपर्युक्त युग्मों में से कितने युग्म सही सुमेलित हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

7 2025 I 12222 (9) :2222

**अभ्यास वरुण 2025**

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास वरुण 2025 में भारतीय नौसेना और फ्रांसीसी नौसेना एक साथ आई, जो उनकी स्थायी साझेदारी को रेखांकित करता है।

**वरुण अभ्यास के बारे में:**

- भारतीय और फ्रांसीसी नौसेनाओं के बीच द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास 1993 में शुरू किया गया था।
- इस अभ्यास को बाद में 2001 में 'वरुण' नाम दिया गया और तब से यह भारत-फ्रांस के बीच मजबूत रणनीतिक द्विपक्षीय संबंधों की पहचान बन गया है।
- द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास वरुण का 23वां संस्करण (2025) भारत और फ्रांस के बीच स्थायी समुद्री साझेदारी का प्रमाण है।
- इस अभ्यास में बहु-क्षेत्रीय वातावरण में अभ्यास शामिल थे।
- **संचालन:**
  - विमानवाहक पोत विक्रान्त और चार्ल्स डी गॉल की संयुक्त भागीदारी, उनके लड़ाकू विमानों, विध्वंसक, फ्रिगेट और एक भारतीय स्कोर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी के साथ, दोनों नौसेनाओं की सहयोगी ताकत को उजागर करती है।
  - फ्रांसीसी नौसेना के राफेल-एम और भारतीय नौसेना के एमआईजी-29के की भागीदारी के साथ उन्नत वायु रक्षा अभ्यास, यथार्थवादी युद्ध परिदृश्यों का अनुकरण करते हुए, हवाई खतरों का संयुक्त रूप से मुकाबला करने के लिए भाग लेने वाली इकाइयों की क्षमता को निखारता है।
  - भारतीय पनडुब्बी और दोनों सेनाओं के पनडुब्बी रोधी फ्रिगेट को शामिल करते हुए पनडुब्बी रोधी युद्ध अभ्यास ने पानी के नीचे के डोमेन जागरूकता और रणनीति में समझ और दक्षता को गहरा करने पर ध्यान केंद्रित किया।
  - सतही युद्ध संचालन में जटिल समन्वित युद्धाभ्यास और नकली जुड़ाव शामिल थे, जो भाग लेने वाले बेड़े की संयुक्त लड़ाकू शक्ति को प्रदर्शित करते थे। दोनों बेड़े के टैंकरों द्वारा समुद्र में पुनःपूर्ति अभ्यास ने रसद अंतर-संचालन क्षमता को साबित किया और निरंतर संचालन के लिए आपसी समर्थन और धीरज को बढ़ाया।
- **परिणाम:**
  - अभ्यास ने संयुक्तता को बढ़ाने के अपने उद्देश्य को प्राप्त किया और नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था के सिद्धांतों को बनाए रखने और हिंद-प्रशांत में स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए साझा प्रतिबद्धता को मजबूत किया।
  - जटिल अभ्यासों ने अमूल्य परिचालन अनुभव प्रदान किया, जिससे समकालीन समुद्री सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने की सामूहिक क्षमता मजबूत हुई।
  - अभ्यास ने सर्वोत्तम प्रथाओं के महत्वपूर्ण आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की, एक-दूसरे के परिचालन सिद्धांतों की गहरी समझ को बढ़ावा दिया और दोनों नौसेनाओं की जटिल समुद्री वातावरण में निर्बाध रूप से संचालन करने की क्षमता को बढ़ाया।
  - अभ्यास के 2025 संस्करण ने पिछले संस्करणों की तुलना में दोनों नौसेनाओं के बीच परिचालन समन्वय का उच्च स्तर हासिल किया।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. वरुण द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास भारत और किस देश के बीच आयोजित किया जाता है?

- (a) यूएसए (b) यूके  
(c) रूस (d) फ्रांस

(P) : 2019

**अभ्यास खंजर**

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, भारत-किर्गिस्तान संयुक्त विशेष बल अभ्यास खंजर-XII का 12वां संस्करण किर्गिस्तान में आयोजित किया गया।

**मुख्य विवरण:**

- यह 2011 में शुरू किया गया एक वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है।
- भारत और किर्गिस्तान के बीच वैकल्पिक स्थल बढ़ते रणनीतिक संबंधों के अनूठे आयाम को दर्शाते हैं।
- **उद्देश्य:** शहरी और पहाड़ी उच्च ऊंचाई वाले इलाकों में आतंकवाद विरोधी और विशेष बल संचालन में अनुभवों और सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करना।
- **फोकस क्षेत्र:** साइपिंग, जटिल इमारत हस्तक्षेप और पर्वत शिल्प के उन्नत विशेष बल कौशल विकसित करना।
- **महत्व:**
  - इस अभ्यास ने दोनों पक्षों को अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद और उग्रवाद की आम चिंताओं को संबोधित करते हुए रक्षा संबंधों को मजबूत करने का अवसर प्रदान किया।
  - यह अभ्यास क्षेत्र में शांति, स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारत और किर्गिस्तान की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।
  - इस अभ्यास से साझा सुरक्षा उद्देश्यों को प्राप्त करने और द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने के अलावा अत्याधुनिक स्वदेशी रक्षा उपकरणों की क्षमताओं को प्रदर्शित करने का अवसर मिला।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. खंजर संयुक्त विशेष बल अभ्यास भारत और किस देश के बीच आयोजित किया जाता है?

- (a) कजाकिस्तान (b) उज्बेकिस्तान  
(c) ताजिकिस्तान (d) किर्गिस्तान

(P) : 2019

**लो-लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार - अश्विनी**

**चर्चा में क्यों:** केंद्रीय रक्षा मंत्रालय (MoD) ने लो-लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार, LLTR (अश्विनी) की खरीद के लिए भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL) के साथ 2,906 करोड़ रुपये के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।

**लो-लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार (LLTR) अश्विनी के बारे में:**

- LLTR (अश्विनी) अत्याधुनिक सॉलिड-स्टेट तकनीक पर आधारित एक सक्रिय इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्कैन किया गया चरणबद्ध सरणी रडार है।
- लो लेवल ट्रांसपोर्टेबल रडार (LLTR) शत्रुतापूर्ण EW परिचालन वातावरण में हवाई लक्ष्यों का पता लगाने और उन्हें ट्रैक करने के लिए हवाई क्षेत्र की निगरानी के लिए एक ज़मीनी-आधारित घूर्णनशील सक्रिय चरणबद्ध सरणी रडार प्रणाली है।
- रडार स्थानीय ऑपरेंटर वर्कस्टेशन से पूरी तरह से प्रोग्राम करने योग्य है।
- रडार हाईस्पीड लड़ाकू विमानों से लेकर धीमी गति से चलने वाले लक्ष्यों जैसे मानव रहित हवाई वाहनों और हेलीकॉप्टरों तक हवाई लक्ष्यों को ट्रैक करने में सक्षम है।
- रडार को स्वदेशी रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और रडार विकास प्रतिष्ठान, DRDO द्वारा डिज़ाइन और विकसित किया गया है।
- **प्रौद्योगिकियाँ:** अश्विनी रडार के हिस्से के रूप में स्थापित प्रौद्योगिकियाँ निम्नलिखित हैं, और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास प्रतिष्ठान (एलआरडीई) की सभी भविष्य की समान श्रेणी की रडार परियोजनाओं के लिए इसका उपयोग किया जाएगा:
  - रोटेटिंग एक्टिव फेज्ड ऐरे
  - टाइम सिंक्रोनाइजेशन ऑफ मल्टीपल रिसेवर्स
  - 2D डिजिटल बीम-फॉर्मिंग
  - डिजिटल बीमफॉर्मिंग (DBF) आधारित एक्टिव ऐरे कैलिब्रेशन
  - मल्टी-बीम प्रोसेसिंग
  - क्रिटिकल रियल-टाइम सॉफ्टवेयर और फर्मवेयर
  - मैकेनिकल पैकेजिंग (इंजीनियरिंग, थर्मल, आदि)
- **महत्व:**
  - इसके अधिग्रहण से भारतीय वायुसेना की परिचालन तैयारियों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
  - यह कार्यक्रम विदेशी मूल के उपकरण निर्माताओं पर निर्भरता कम करके रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम है, साथ ही यह देश में रक्षा औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगा।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. भारत के स्वदेशी रूप से विकसित अश्विनी रडार का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

- (a) मौसम की निगरानी और भविष्यवाणी  
(b) समुद्री निगरानी और तटीय सुरक्षा  
(c) कम उड़ान वाले हवाई लक्ष्यों का पता लगाना  
(d) उपग्रहों और अंतरिक्ष मलबे पर निगरानी रखना

(C) : 2019

## केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF) के महानिदेशक राजविंदर सिंह भट्टी ने कहा कि CISF आने वाले वर्षों में अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए सालाना 15,000 से 20,000 कर्मियों की भर्ती करने के लिए तैयार है ताकि अधिक सुविधाओं को कवर किया जा सके।

### केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल:

- केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल 1969 में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल अधिनियम, 1968 के तहत अस्तित्व में आया।
- इसे केवल तीन बटालियनों की ताकत वाले कुछ संवेदनशील सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को एकीकृत सुरक्षा कवर प्रदान करने के लिए बनाया गया था।
- तब से, बल का विस्तार एक शीर्ष बहु-कुशल संगठन बन गया है, जिसमें वर्तमान में 188,000 से अधिक लोग कार्यरत हैं।
- वर्तमान में, देश भर में 359 संस्थान सुरक्षा के मामले में CISF द्वारा कवर किए जाते हैं।

- उपर्युक्त व्यवसायों में से 115 को CISF की अपनी फायर विंग द्वारा सेवा प्रदान की जाती है।
- भारत के सबसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे जैसे परमाणु स्टेशन, अंतरिक्ष संस्थान, हवाई अड्डे, बंदरगाह, बिजली संयंत्र आदि CISF सुरक्षा छत्र द्वारा कवर किए जाते हैं।
- महत्वपूर्ण सरकारी संरचनाएँ, प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल, दिल्ली मेट्रो, संसद भवन परिसर और जम्मू और कश्मीर की केंद्रीय जेलों की भी CISF सुरक्षा करती है।
- महत्वपूर्ण सुरक्षा प्राप्त व्यक्तियों को CISF के समर्पित VIP सुरक्षा वर्टिकल द्वारा चौबीसों घंटे सुरक्षा प्रदान की जाती है।
- नवंबर 2008 के मुंबई आतंकवादी हमले के बाद CISF के कार्यक्षेत्र का विस्तार करके निजी व्यावसायिक स्थानों की सुरक्षा भी शामिल की गई।
- इसके अलावा, CISF निजी संगठनों को सुरक्षा परामर्श सेवाएँ भी प्रदान करता है, जिनकी बहुत माँग है।
- एकमात्र केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल होने के नाते जो नियमित रूप से हवाई अड्डों, दिल्ली मेट्रो और प्रसिद्ध स्थलों पर जनता के साथ बातचीत करता है, सीआईएसएफ सुरक्षा प्रोटोकॉल और मानवीय रवैये के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता के बारे में पूरी तरह से जागरूक है।

विषय	सैन्य बल (Military Forces)	केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CAPF)
प्राथमिक कर्तव्य	देश की बाहरी सीमाओं को आतंकवाद और अन्य देशों के आक्रमण से बचाना	आंतरिक सुरक्षा बनाए रखना, जैसे उग्रवाद, वामपंथी उग्रवाद आदि से निपटना
कार्य मंत्रालय	रक्षा मंत्रालय	गृह मंत्रालय
प्रमुख शाखाएँ	भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना, भारतीय नौसेना	असम राइफल्स, सीमा सुरक्षा बल (BSF), केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF), भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP), शसस्त्र सीमा बल (SSB)
अध्यक्ष/नेतृत्व	सेना के जनरल के समकक्ष रैंक का 4 स्टार अधिकारी	पुलिस महानिदेशक (DGP), जो भारतीय पुलिस सेवा (IPS) से होते हैं

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित प्रमुख प्रतिष्ठानों पर विचार करें:

1. भारत की संसद
2. दिल्ली मेट्रो
3. मुंबई हवाई अड्डा

उपर्युक्त प्रमुख प्रतिष्ठानों में से कितने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के सुरक्षा कवरेज के अंतर्गत आते हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

(c) : 116

### बोडो शांति समझौता

**चर्चा में क्यों:** केंद्रीय गृह मंत्री ने असम के कोकराझार में ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन (ABSU) के 57वें वार्षिक सम्मेलन में बोडो शांति समझौते के महत्व पर प्रकाश डाला।

#### बोडो शांति समझौता:

- दशकों पुराने बोडो संकट को समाप्त करने के लिए 27.01.2020 को भारत सरकार, असम सरकार और बोडो समूहों के प्रतिनिधियों के बीच समझौता ज्ञापन (MoS) पर हस्ताक्षर किए गए।
- यह तीसरा बोडो समझौता था
- MoS का उद्देश्य:**
  - बोडोलैंड प्रादेशिक परिषद के दायरे और शक्ति को बढ़ाना और इसके कामकाज को सुव्यवस्थित करना;
  - बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र जिलों (BTAD) के बाहर रहने वाले बोडो लोगों से संबंधित मुद्दों को हल करना;
  - बोडो की सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय पहचान को बढ़ावा देना और उनकी रक्षा करना;
  - आदिवासियों के भूमि अधिकारों के लिए विधायी संरक्षण प्रदान करना;
  - आदिवासी क्षेत्रों का त्वरित विकास सुनिश्चित करना

- राज्य मंत्री ने मौजूदा प्रक्रिया के अनुसार बोडो-कछारी कल्याण परिषद की स्थापना, बोडो भाषा को राज्य में एक सहयोगी आधिकारिक भाषा के रूप में अधिसूचित करने और बोडो माध्यम स्कूलों के लिए एक अलग निदेशालय स्थापित करने का भी प्रावधान किया।
- बोडो क्षेत्रों के विकास के लिए विशिष्ट परियोजनाओं को शुरू करने के लिए 1500 करोड़ रुपये के विशेष विकास पैकेज का प्रावधान।
- स्थिति: राज्य मंत्री की अधिकांश धाराओं को लागू किया गया है, जिसमें 1615 कैडरों को हथियार और गोला-बारूद के साथ आत्मसमर्पण करना, बोडो कछारी कल्याण परिषद की स्थापना, बोडो माध्यम स्कूलों के लिए एक अलग निदेशालय की स्थापना, बोडो क्षेत्रीय परिषद (बीटीसी) सहित संविधान की छठी अनुसूची के तहत परिषदों से संबंधित मामलों से निपटने के लिए एक अलग बोडोलैंड कल्याण विभाग का निर्माण आदि शामिल हैं।

#### बोडो आंदोलन:

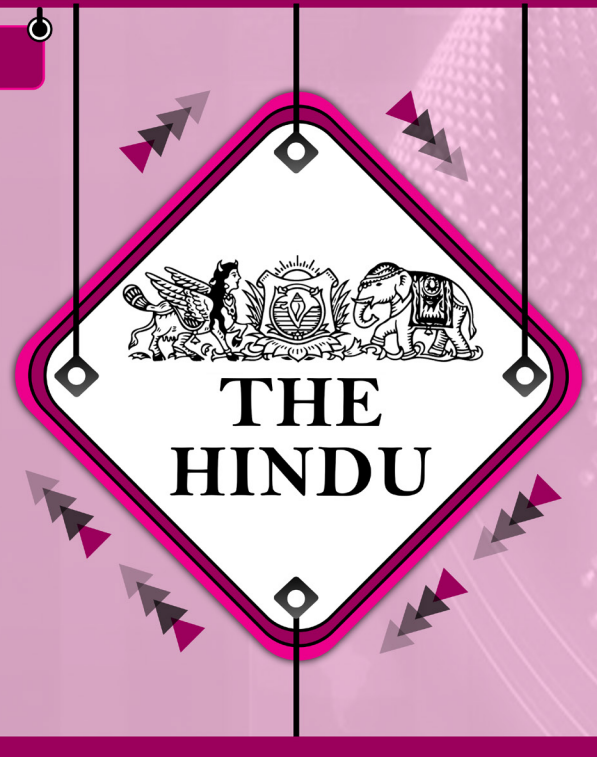
- बोडो असम के सबसे शुरुआती निवासियों में से हैं, जो मंगोलॉयड समूह से संबंधित हैं।
- वे ऐतिहासिक रूप से ब्रह्मपुत्र घाटी और पूर्वोत्तर भारत, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश के कुछ हिस्सों में केंद्रित हैं।
- औपनिवेशिक शासन:
  - अंग्रेजों ने 1826 की यंदाबू संधि के बाद बोडो क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।

- डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स (1832) और संधियों (जैसे चिंचुला, 1864) ने बोडो राज्यों को खत्म कर दिया।
- स्वतंत्रता पश्चात: प्रमुख संगठन और कार्यक्रम
  - ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनिन (ABSU): भाषाई और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का नेतृत्व करने के लिए 1967 में गठित।
  - असम की मैदानी जनजातीय परिषद (पीटीसीए): 1973 में "उदयचल" (केंद्र शासित प्रदेश) की वकालत की।
  - हिंसक दौर:
    - एनडीएफबी (नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड): संप्रभुता की मांग की (1986)।
    - बीएलटी (बोडो लिबरेशन टाइगर्स): भारत के भीतर राज्य का दर्जा मांगा (1996)।
  - पिछले शांति समझौते
    - 1993 बोडो समझौता: बोडोलैंड स्वायत्त परिषद (बीएसी) का गठन किया। सीमा विवादों के कारण विफल रहा।
    - 2003 बीटीसी समझौता: छठी अनुसूची के तहत बोडोलैंड प्रादेशिक परिषद (बीटीसी) की स्थापना की, सीमित स्वशासन प्रदान किया।

## चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल

'द हिंदू' का एडिटोरियल एनालिसिस

क्यू आर कोड स्कैन करें



### मोटापा

**चर्चा में क्यों:** मन की बात के 119वें एपिसोड को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने लोगों से तेल की खपत में 10% की कमी लाने और मोटापे से लड़ने का आग्रह किया है।

#### मोटापे के बारे में:

- **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)** के अनुसार, मोटापे को असामान्य या अत्यधिक वसा संचय के रूप में परिभाषित किया जाता है जो स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा करता है।
- मोटापे को वर्गीकृत करने के लिए आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला मीट्रिक बॉडी मास इंडेक्स (BMI) है, जहाँ 25 या उससे अधिक का BMI अधिक वजन माना जाता है, और 30 या उससे अधिक का BMI मोटापे के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
- भारत में, यदि किसी व्यक्ति का बॉडी मास इंडेक्स (BMI) 23.0 और 24.9 kg/m<sup>2</sup> के बीच है, तो उसे अधिक वजन वाला माना जाता है, और यदि उसका BMI 25 kg/m<sup>2</sup> या उससे अधिक है, तो उसे मोटा माना जाता है। रुग्ण मोटापा तब होता है जब किसी व्यक्ति का BMI 35 या उससे अधिक होता है।

#### मोटापे के आँकड़े:

- **वैश्विक:**
  - विश्व भर में वयस्कों और बच्चों दोनों में अधिक वजन और मोटापे की व्यापकता लगातार बढ़ रही है।
  - 1990 और 2022 के बीच, मोटापे से ग्रस्त बच्चों और किशोरों (5-19 वर्ष की आयु) का प्रतिशत चार गुना बढ़कर 2% से 8% हो गया।
  - इसी अवधि के दौरान, मोटापे से ग्रस्त वयस्कों (18 वर्ष और उससे अधिक आयु) का अनुपात दोगुना से अधिक हो गया, जो 7% से बढ़कर 16% हो गया।
- **भारत:**
  - राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS)-5 (2019-21) के अनुसार, कुल मिलाकर, 24% भारतीय महिलाएँ और 23% भारतीय पुरुष अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हैं।
  - एनएफएचएस-5, (2019-2021) के अनुसार 15-49 वर्ष की आयु वर्ग में, 6.4% महिलाएँ और 4.0% पुरुष मोटे हैं।
  - अखिल भारतीय स्तर पर 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में अधिक वजन (ऊँचाई के अनुपात में वजन) की दर में भी वृद्धि हुई है, जो एनएफएचएस-4 (2015-16) में 2.1 प्रतिशत से बढ़कर एनएफएचएस-5 (2019-21) में 3.4 प्रतिशत हो गई है।

#### भारत में मोटापे की वृद्धि को बढ़ावा देने वाले कारक:

- **उच्च कैलोरी, कम पोषक आहार:** परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट और संतृप्त वसा की खपत में वृद्धि।
- **प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों तक आसान पहुँच:** पैकेज्ड, रेडी-टू-ईट भोजन की व्यापक उपलब्धता।

- **आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों का उपयोग:** खाद्य पदार्थों की बदली हुई संरचना चयापचय और वजन बढ़ाने को प्रभावित करती है।
- **शारीरिक निष्क्रियता:** खेल, व्यायाम और बाहरी गतिविधियों में कमी।
- **बाहर खाने की बढ़ती संस्कृति:** अक्सर ऐसे रेस्तरां में खाना खाया जाता है जहाँ खाना अक्सर अस्वास्थ्यकर तेलों में पकाया जाता है।
- **गतिहीन जीवन शैली:** लंबे समय तक बैठे रहना, स्क्रीन के सामने बहुत समय बिताना और दैनिक दिनचर्या में न्यूनतम गतिविधि।

#### मोटापे को नियंत्रित करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप:

- **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW) - सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रियाओं को मजबूत करना।**
  - गैर-संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (NP-NCD)
    - ◆ भारत में, गैर-संचारी रोग (NCD) सभी मौतों में से 63% का कारण बनते हैं।
    - ◆ गैर-संचारी रोग (NCD) जैसे हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह और पुरानी श्वसन संबंधी बीमारियाँ मुख्य रूप से तम्बाकू के उपयोग, अस्वास्थ्यकर आहार, शारीरिक निष्क्रियता और शराब के सेवन सहित परिवर्तनीय जीवनशैली कारकों से प्रेरित होती हैं।
    - ◆ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के माध्यम से गैर-संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (NP-NCD) के तहत समुदायों, नागरिक समाज, मीडिया और विकास भागीदारों को शामिल करके व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है।
- **आयुष मंत्रालय:** पारंपरिक और समग्र स्वास्थ्य प्रथाओं को बढ़ावा देना
  - **विशेष आयुर्वेदिक देखभाल:** नई दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (AIIA) मोटापे और संबंधित जीवनशैली विकारों के लिए विशेष उपचार प्रदान करता है। इन उपचारों में पंचकर्म चिकित्सा, आयुर्वेदिक दवाएँ, व्यक्तिगत आहार संबंधी दिशा-निर्देश और योग चिकित्सा शामिल हैं।
  - **अनुसंधान और साक्ष्य सृजन:** केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (CCRAS) मोटापे सहित जीवनशैली विकारों के लिए आयुर्वेदिक हस्तक्षेपों की सुरक्षा और प्रभावकारिता को मान्य करने के लिए अनुसंधान करती है।
  - **आयुर्वेद स्वास्थ्य योजना:** यह केंद्रीय क्षेत्रक योजना, वित्त वर्ष 2021-22 से चालू, इसमें 'आयुष और सार्वजनिक स्वास्थ्य' घटक शामिल है जिसका उद्देश्य सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा में आयुष हस्तक्षेप को बढ़ावा देना है। यह योजना जीवनशैली संबंधी विकारों और गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के प्रबंधन पर केंद्रित परियोजनाओं का समर्थन करती है, जिसमें वर्तमान में 11 परियोजनाएँ मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और ऑस्टियोपोरोसिस जैसे मुद्दों को संबोधित करती हैं।

- **महिला और बाल विकास मंत्रालय:**
  - **पोषण अभियान:** बचपन में मोटापे की रोकथाम
    - ◆ 8 मार्च 2018 को शुरू किया गया पोषण अभियान समग्र पोषण के लिए भारत सरकार की प्रमुख पहल है।
    - ◆ इसका उद्देश्य बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए पोषण संबंधी परिणामों में सुधार करना है, जो एक अभिसरण पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देता है जो कुपोषण से निपटने और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए पोषण सामग्री, वितरण और जागरूकता को बढ़ाता है।
- **युवा मामले और खेल मंत्रालय:** शारीरिक फिटनेस की संस्कृति को बढ़ावा देना
  - **खेलो इंडिया कार्यक्रम:** एक सक्रिय पीढ़ी का निर्माण
    - ◆ 2019 में शुरू किया गया, फिट इंडिया मूवमेंट सक्रिय जीवनशैली को बढ़ावा देता है और व्यक्तियों को दैनिक दिनचर्या में फिटनेस को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- **भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI):** सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खाद्य पदार्थों का विनियमन
  - **ईट राइट इंडिया मूवमेंट (FSSAI):** स्वस्थ भविष्य के लिए खाद्य विकल्पों में सुधार
    - ◆ भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) द्वारा शुरू किया गया ईट राइट इंडिया मूवमेंट, सभी के लिए सुरक्षित, स्वस्थ और टिकाऊ भोजन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कई प्रमुख पहलों को शामिल करता है।
  - **राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान – आज से थोड़ा कम**
    - ◆ स्वस्थ खान-पान की आदतों को प्रोत्साहित करने के लिए, FSSAI ने 'आज से थोड़ा कम' अभियान शुरू किया, जिसके तहत उपभोक्ताओं से धीरे-धीरे वसा, चीनी और नमक का सेवन कम करने का आग्रह किया गया।
  - **उच्च वसा, नमक और चीनी (HFSS) खाद्य पदार्थों का विनियमन:** FSSAI ने ICMR-राष्ट्रीय पोषण संस्थान (NIN) के सहयोग से उच्च वसा, नमक और चीनी (HFSS) खाद्य पदार्थों की अनिवार्य लेबलिंग की सिफारिश की है।
  - **आरयूसीओ पहल:** एफएसएसएआई की आरयूसीओ (पुनर्प्रयोजन प्रयुक्त कुकिंग ऑयल) पहल यह सुनिश्चित करती है कि प्रयुक्त कुकिंग ऑयल को खाद्य श्रृंखला में पुनः शामिल न किया जाए, बल्कि सुरक्षित रूप से पुनःप्रयोजन किया जाए।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. दी गई जानकारी के आधार पर भारत में मोटापे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS)-5 (2019-21) के अनुसार, 15-49 वर्ष की आयु वर्ग में पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अधिक वजन या मोटापे का प्रचलन अधिक है।
2. आयुष मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया "ईट राइट इंडिया" आंदोलन उपभोक्ताओं से वसा, चीनी और नमक का सेवन धीरे-धीरे कम करने का आग्रह करके स्वस्थ भविष्य के लिए भोजन के विकल्पों में सुधार पर केंद्रित है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा सही है?

- |                  |                      |
|------------------|----------------------|
| (a) केवल 1       | (b) केवल 2           |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1 और न ही 2 |

I ११११ (१) :१११

### क्या कैंसर को अधिसूचित बीमारी होना चाहिए?

**चर्चा में क्यों:** भारत में निगरानी और उपचार में सुधार के लिए कैंसर को अधिसूचित बीमारी बनाने की बार-बार मांग की गई है, लेकिन सरकार ने केवल संक्रामक रोगों को अधिसूचित करने की अपनी नीति का हवाला देते हुए इसका विरोध किया है, क्योंकि कैंसर गैर-संचारी है।

#### मुख्य विवरण:

- भारत का राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम (एनसीआरपी) वर्तमान में स्वैच्छिक रिपोर्टिंग पर निर्भर करता है, जिसके कारण कैंसर के आंकड़ों की कम रिपोर्टिंग होती है।
- 2020 की आईसीएमआर रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2025 तक कैंसर के मामले बढ़कर 15.7 लाख हो जाएंगे।
- कैंसर को अधिसूचित करने से निगरानी में सुधार होगा, संसाधन आवंटन में मार्गदर्शन मिलेगा और देश भर में बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य योजना और कैंसर देखभाल का समर्थन होगा।

#### अधिसूचित बीमारी के बारे में:

- अधिसूचित बीमारी एक ऐसी बीमारी है, जिसका निदान होने पर कानून के अनुसार सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों को रिपोर्ट किया जाना चाहिए। यह प्रक्रिया सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए संक्रामक रोगों के प्रसार की निगरानी और नियंत्रण में सहायता करती है।

#### राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम (एनसीआरपी) के बारे में:

- भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के तहत 1982 में स्थापित राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम (एनसीआरपी) पूरे भारत में अस्पतालों और जनसंख्या-आधारित रजिस्ट्री से कैंसर डेटा एकत्र करता है।

#### क्या कैंसर को अधिसूचित रोग होना चाहिए?

कैंसर को अधिसूचित रोग बनाने से निम्नलिखित लाभ मिल सकते हैं:

- **व्यापक डेटा संग्रह:** अनिवार्य रिपोर्टिंग से डेटा की सटीकता बढ़ेगी, जिससे अधिकारियों को कैंसर की व्यापकता और पैटर्न का पता लगाने में मदद मिलेगी। ICMR का अनुमान है कि भारत में 2025 तक हर साल 15.7 लाख नए कैंसर के मामले सामने आएंगे।
- **लक्षित सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियाँ:** बेहतर डेटा सरकार को संसाधनों को बेहतर ढंग से आवंटित करने और उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों के लिए अनुरूप कार्यक्रम तैयार करने में मदद करेगा। उदाहरण: सटीक डेटा पूर्वोत्तर राज्यों में कैंसर की रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकता है, जहाँ कैंसर की घटनाएँ अधिक हैं।
- **प्रारंभिक पहचान और उपचार:** अधिसूचना से प्रारंभिक निदान को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे उपचार और परिणामों तक पहुँच में सुधार हो सकता है। WHO के अनुसार, प्रारंभिक पहचान से जीवित रहने की दर 70-80% तक बढ़ सकती है।

- **बेहतर शोध और योजना:** बोझ से बेहतर शोध और नीति निर्माण होगा। उदाहरण: कैंसर जीनोम एटलस परियोजना शोध के लिए बेहतर डेटा संग्रह से लाभान्वित हो सकती है।
- **क्षेत्रीय असमानताओं में कमी:** अनिवार्य रिपोर्टिंग से सभी क्षेत्रों में समान कैंसर देखभाल सुनिश्चित होगी, खास तौर पर वंचित क्षेत्रों में। उदाहरण: बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य कैंसर निदान के बुनियादी ढांचे में पिछड़े हुए हैं, जिसे लक्षित प्रयासों से संबोधित किया जा सकता है।

**निष्कर्ष:**

कैंसर को एक अधिसूचित बीमारी बनाने से डेटा सटीकता में उल्लेखनीय सुधार होगा, शीघ्र निदान संभव होगा और भारत भर में कैंसर की रोकथाम और उपचार के लिए प्रभावी नीतियाँ बनाने में मदद मिलेगी। हालांकि गैर-संचारी, कैंसर एक बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती है, और अनिवार्य रिपोर्टिंग बढ़ते कैंसर के बोझ के लिए अधिक संगठित और प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए आधार प्रदान करेगी।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम (एनसीआरपी) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एनसीआरपी की स्थापना 1982 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत की गई थी।
2. एनसीआरपी जनसंख्या आधारित रजिस्ट्री से कैंसर के रूझान, प्रकार और जनसांख्यिकी पर डेटा एकत्र करता है।
3. एनसीआरपी वर्तमान में पूरे भारत में कैंसर के मामलों की अनिवार्य रिपोर्टिंग के माध्यम से कार्य करता है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा सही है?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)

**न्यायपालिका में लैंगिक अंतर**

**चर्चा में क्यों:** निचली अदालतों में महिला वकीलों और न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि के बावजूद, उच्च न्यायालयों में पुरुष समकक्षों की तुलना में महिला न्यायाधीशों की संख्या में महत्वपूर्ण अंतर बना हुआ है।

**मुख्य विवरण:**

- **महिला न्यायाधीशों की वर्तमान स्थिति:**
  - उच्च न्यायालयों में महिला न्यायाधीशों की हिस्सेदारी केवल 14.27% (764 में से 109) है।
  - आठ उच्च न्यायालयों में, महिला न्यायाधीशों की संख्या केवल एक तक सीमित है।
  - उत्तराखंड, मेघालय और त्रिपुरा के उच्च न्यायालयों में कोई महिला न्यायाधीश नहीं है।

- इलाहाबाद उच्च न्यायालय, जो वर्तमान में 79 न्यायाधीशों के साथ देश का सबसे बड़ा उच्च न्यायालय है, में केवल तीन महिला न्यायाधीश (2%) हैं।
- महिला न्यायाधीशों की नियुक्ति भी पुरुषों की तुलना में बाद में होती है। पुरुषों की नियुक्ति की औसत आयु 51.8 वर्ष है, लेकिन महिलाओं के लिए यह 53 वर्ष है। इस प्रकार, महिला न्यायाधीश वरिष्ठता के पदों तक नहीं पहुँच पाती हैं।
- 25 उच्च न्यायालयों में से केवल गुजरात उच्च न्यायालय में ही एक महिला मुख्य न्यायाधीश है।
- **सर्वोच्च न्यायालय में:**
  - ◆ सर्वोच्च न्यायालय की संख्या बहुत खराब है, वर्तमान में केवल दो महिला न्यायाधीश कार्यरत हैं - न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना और न्यायमूर्ति बेला त्रिवेदी।
  - ◆ न्यायमूर्ति बेला त्रिवेदी के जून 2025 में सेवानिवृत्त होने के कारण, शीर्ष न्यायालय में केवल एक महिला न्यायाधीश रह जाएगी।
  - ◆ सर्वोच्च न्यायालय में अंतिम महिला न्यायाधीश की नियुक्ति 2021 में हुई थी। तब से, सर्वोच्च न्यायालय में 28 न्यायाधीशों की नियुक्ति की गई है, और उनमें से एक भी महिला नहीं है।

• **महिला जजों की नियुक्ति में निष्क्रियता के कारण**

- **योग्यता की कमी की धारणा:** ऐसा कहा जाता है कि पर्याप्त योग्य महिला उम्मीदवार नहीं हैं, वरिष्ठता वाली पर्याप्त महिलाएँ नहीं हैं, या महिलाएँ जज नहीं बनना चाहती हैं। यह सब केवल दिखावा है, जबकि अंतर्निहित कारक गहरी असमानता है।
- **प्रणालीगत असमानता:** उच्च न्यायपालिका से महिलाओं के बहिष्कार का एक मुख्य कारण गहरी जड़ें और प्रणालीगत असमानता है, जहाँ महिलाओं को कानूनी पेशे में हीन माना जाता है।
- **उच्च जाँच:** न्यायाधीश पद के लिए नामांकित महिला वकीलों को कड़ी जाँच का सामना करना पड़ता है। योग्यता से समझौता करने की बजाय, महिलाओं को लगभग हमेशा पुरुषों की तुलना में योग्यता साबित करने की आवश्यकता होती है।
- **कॉलेजियम में पक्षपात:**
  - ◆ हमारे पास नियुक्तियों की कॉलेजियम प्रणाली भी है, जो अपारदर्शी और अपारदर्शी है।
  - ◆ कॉलेजियम में लगभग हमेशा पुरुष ही होते हैं और पदोन्नति के लिए योग्य महिला वकीलों के नाम प्राप्त करने के लिए बहुत कम या कोई प्रयास नहीं किया जाता है।
  - ◆ जब कॉलेजियम द्वारा महिलाओं के नामों की सिफारिश की जाती है, तब भी सरकार द्वारा महिलाओं की पुष्टि नहीं की जाती है।
  - ◆ 2020 से, कॉलेजियम द्वारा उच्च न्यायालयों में नियुक्ति के लिए नौ महिलाओं के नामों की सिफारिश की गई, लेकिन उनकी पुष्टि नहीं की गई।

**न्यायपालिका में लैंगिक विविधता की आवश्यकता:**

- **न्यायालयों की वैधता में वृद्धि:** बेंच पर महिलाओं की समान संख्या होने से न्यायालयों की वैधता में वृद्धि होगी और यह संकेत मिलेगा कि हमारी न्यायपालिका समावेशी है और उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जिनके जीवन पर उनका प्रभाव पड़ता है।
- **न्यायिक समीक्षा और न्यायनिर्णयन में सुधार:** महिला न्यायाधीशों की उपस्थिति न्यायिक प्रक्रिया में व्यापक दृष्टिकोण लाती है। अलग-अलग जीवन के अनुभवों से हाथ में मौजूद मामलों की बेहतर समझ बनती है, खासकर लिंग-विशिष्ट मुद्दों से जुड़े मामलों की।

- **लिंग-तटस्थ न्यायिक स्थान बनाना:** न्यायपालिका का लक्ष्य न्याय का तटस्थ मध्यस्थ बनना है। हालाँकि, अचेतन पूर्वाग्रह निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। न्यायपालिका में महिलाओं की अधिक संख्या इन पूर्वाग्रहों का मुकाबला करने में मदद कर सकती है, जिससे वास्तव में लिंग-तटस्थ कानूनी स्थान की ओर बढ़ा जा सकता है।
- **कानूनी निर्णयों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना:** महिला न्यायाधीश अपने निर्णयों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके निर्णय ऐसे उदाहरण स्थापित कर सकते हैं जो लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं, न केवल कानूनी क्षेत्र बल्कि बड़े पैमाने पर समाज को प्रभावित करते हैं।
- **महिलाओं के खिलाफ सामाजिक पूर्वाग्रहों को संबोधित करना:** प्रगति के बावजूद, महिलाओं के खिलाफ सामाजिक पूर्वाग्रह बने हुए हैं। न्यायपालिका में महिलाएँ इन पूर्वाग्रहों को दूर करने और उन्हें कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि न्याय पुरानी रूढ़ियों से प्रभावित न हो।
- **समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना:** न्यायपालिका शून्य में काम नहीं करती। इसकी संरचना और इसके द्वारा लिए गए निर्णयों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। महिला न्यायाधीश अपनी उपस्थिति और निर्णयों के माध्यम से पूरे देश में लैंगिक समानता के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में सहायक हो सकती हैं।

### आगे की राह

- **नियुक्ति के लिए पारदर्शी प्रक्रिया निर्धारित करना:** कॉलेजियम एक पारदर्शी प्रक्रिया तैयार कर सकता है और नियुक्ति के लिए स्पष्ट मानदंड प्रदान कर सकता है। उल्लेखित और निष्ठा के उच्चतम मानकों पर आधारित स्पष्ट मानदंड होने चाहिए और एक निर्दिष्ट समय सीमा होनी चाहिए जिसके दौरान सिफारिशें की जानी चाहिए।
- **समावेशी नियुक्तियाँ:**
  - ◆ विविधता और योग्यता विरोधाभासी नहीं हैं; बल्कि, हमारे जैसे बहुलवादी समाज में, विविधता न्यायपालिका को अधिक प्रतिनिधि बनाती है।
  - ◆ लैंगिक विविधता को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारी उच्च न्यायपालिका का काम से कम एक तिहाई हिस्सा, यदि आधा नहीं, महिलाओं से बना हो।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. “एक लिंग समावेशी न्यायपालिका एक लिंग समावेशी समाज के लिए आवश्यक है”। कथन के प्रकाश में, न्यायपालिका के लिए अधिक लिंग समावेशी बनने में बाधाओं पर टिप्पणी करें। [150 शब्द] [10 अंक]

### महिला सशक्तिकरण

**चर्चा में क्यों:** सर्वोच्च न्यायालय का कड़ा रुख: सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में टिप्पणी की कि महिलाओं को सहानुभूति की नहीं बल्कि कानून प्रवर्तन के माध्यम से सशक्तिकरण की आवश्यकता है।

#### भारत में महिला सशक्तिकरण: मुख्य डेटा आंकड़े

- **आर्थिक भागीदारी:** महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 2022-23 में 37.0% से बढ़कर 2023-24 में 41.7% हो गई, जो सुधार को दर्शाता है लेकिन अभी भी कम है।

- **राजनीतिक भागीदारी:** लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पहले सत्र में 5% से बढ़कर वर्तमान सत्र में 15% हो गया, जो एक स्थिर वृद्धि है लेकिन अभी भी सीमित है।
- **सामाजिक भागीदारी:** शिक्षा में प्रगति के बावजूद, कई महिलाएँ (44.5%) कार्यबल में प्रवेश करने में बच्चों की देखभाल और गृहस्थी को बाधा के रूप में बताती हैं, जो दर्शाता है कि भागीदारी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

### महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए संवैधानिक और कानूनी प्रावधान:

अनुच्छेद	विवरण
अनुच्छेद 14	कानून के समक्ष समानता और समान संरक्षण की गारंटी देता है।
अनुच्छेद 15	राज्य को लिंग, धर्म, जाति, नस्ल या जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव करने से रोकता है।
अनुच्छेद 16	सार्वजनिक रोजगार के मामलों में समान अवसर की गारंटी देता है।
अनुच्छेद 39(डी)	समान कार्य के लिए पुरुषों और महिलाओं दोनों को समान वेतन सुनिश्चित करता है।
अनुच्छेद 42	राज्य को न्यायसंगत और मानवीय कार्य स्थितियाँ प्रदान करने तथा मातृत्व राहत सुनिश्चित करने का निर्देश देता है।

### कानूनी प्रावधान:

- **घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005:** घरेलू हिंसा से सुरक्षा प्रदान करता है।
- **कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न अधिनियम, 2013:** कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न को संबोधित करता है।
- **दहेज निषेध अधिनियम, 1961:** दहेज देने या लेने पर प्रतिबंध लगाता है।
- **मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961:** मातृत्व लाभ प्रदान करता है और प्रसव से पहले और बाद में महिलाओं के रोजगार को नियंत्रित करता है।

इन प्रावधानों के बावजूद, भारत में महिलाओं को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

### आर्थिक चुनौतियाँ:

- **लिंग वेतन अंतर:** महिलाएँ समान कार्य के लिए पुरुषों की तुलना में 18% कम कमाती हैं।
- **कम श्रम बल भागीदारी:** महिला LFPR केवल 29.4% है, जो वैश्विक स्तर पर सबसे कम है।
- **अवैतनिक कार्य बोझ:** महिलाएँ अवैतनिक देखभाल कार्य पर पुरुषों की तुलना में 9.8 गुना अधिक घंटे बिताती हैं।

### राजनीतिक चुनौतियाँ:

- **कम प्रतिनिधित्व:** महिलाएँ लोकसभा में केवल 15% और राज्य विधानसभाओं में 10% सीटें रखती हैं।
- **सामाजिक बाधाएँ:** सांस्कृतिक मानदंड और पार्टी पूर्वाग्रह उनके चुनावी अवसरों को सीमित करते हैं।

**सामाजिक चुनौतियाँ:**

- **लिंग आधारित हिंसा:** भारत ने 2022 में महिलाओं के खिलाफ 400,000 से अधिक अपराध दर्ज किए, जिनमें दोषसिद्धि दर कम है।
- **शिक्षा का अंतर:** लड़कियों में स्कूल छोड़ने की दर अधिक है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जो कि कम उम्र में शादी, सुरक्षा संबंधी चिंताओं और वित्तीय बाधाओं के कारण है।

**कानूनी और संस्थागत चुनौतियाँ:**

- **अपराधों की कम रिपोर्टिंग:** सामाजिक कलंक का डर और जागरूकता की कमी महिलाओं को उत्पीड़न और हिंसा की रिपोर्ट करने से रोकती है।
- **कमज़ोर कानून प्रवर्तन:** कार्यस्थल पर उत्पीड़न जैसे मामले अक्सर न्याय में देरी और संस्थागत समर्थन की कमी के कारण अनसुलझे रह जाते हैं।

**डिजिटल और तकनीकी बाधाएँ:**

- **डिजिटल विभाजन:** ग्रामीण भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में महिलाओं की संख्या केवल 30% है, जिससे शिक्षा, काम और डिजिटल बैंकिंग तक उनकी पहुँच सीमित हो जाती है।
- 57% महिलाओं को ऑनलाइन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जिससे डिजिटल प्लेटफॉर्म में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी कम हो जाती है।

**आगे की राह:**

- **कानूनी और संस्थागत सहायता:**
  - **फास्ट-ट्रैक कोर्ट (OSC):** पीड़ितों को कानूनी, चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करना।
  - **सामुदायिक पुलिसिंग:** महिलाओं के नेतृत्व वाली पुलिस डेस्क और सुरक्षित सार्वजनिक स्थानों के लिए केरल की पिक पेट्रोल जैसी पहल।
- **आर्थिक सशक्तिकरण:**
  - **समान वेतन ऑडिट:** कंपनियों के लिए वार्षिक लिंग वेतन रिपोर्टिंग लागू करना।
  - **कौशल विकास:** महिलाओं के लिए डिजिटल और AI प्रशिक्षण पर ध्यान देना।
  - **माइक्रोफाइनेंस सहायता:** महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों के लिए ब्याज मुक्त ऋण (जैसे, मुद्रा योजना)।
- **राजनीतिक भागीदारी:**
  - **50% आरक्षण:** शहरी स्थानीय निकायों और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए।
  - **पार्टी सुधार:** राजनीतिक दलों को 30% महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **सामाजिक और शैक्षिक सुधार:**
  - **सार्वभौमिक चाइल्डकैअर और पैरेंटल लीव:** क्रेच और पितृत्व अवकाश का विस्तार करना।
  - **डिजिटल साक्षरता:** ग्रामीण क्षेत्रों में निःशुल्क कार्यक्रम (जैसे, इंटरनेट साथी)।
  - **साइबर सुरक्षा:** ऑनलाइन उत्पीड़न से निपटने के लिए मजबूत कानून और साइबर सेल।

**भारत में झुग्गी-झोपड़ियाँ**

**चर्चा में क्यों:** बॉम्बे उच्च न्यायालय ने एक कानून, यानी महाराष्ट्र झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्र (सुधार, निकासी और पुनर्विकास) अधिनियम, 1971 की अपनी तरह की पहली समीक्षा शुरू की।

**महाराष्ट्र झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्र (सुधार, निकासी और पुनर्विकास) अधिनियम, 1971:**

- यह कानून महाराष्ट्र सरकार को किसी क्षेत्र को “झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्र” घोषित करने और ज़रूरत पड़ने पर उसे अधिग्रहित करने का अधिकार देता है।
- पुनर्वास की देखरेख के लिए एक वैधानिक निकाय, झुग्गी-झोपड़ी पुनर्वास प्राधिकरण (एसआरए) बनाया गया है, जो निर्दिष्ट क्षेत्र के पुनर्विकास के लिए किसी भी एजेंसी या डेवलपर को काम सौंप सकता है।

**मलिन बस्तियाँ:**

- भारत में मलिन बस्तियों की परिभाषा जनगणना और एनएसएसओ द्वारा निर्धारित की जाती है और भारत के प्रत्येक राज्य में मलिन बस्तियों की एक अलग परिभाषा होती है जो क्षेत्र की विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं, उसके भूभाग और मलिन बस्तियों में आवास की स्थिति को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की जाती है।
- **जनगणना 2011 के अनुसार मलिन बस्तियों की परिभाषा:**
  - किसी कस्बे या शहर में सभी अधिसूचित क्षेत्र जिन्हें राज्य, संघ शासित प्रदेश प्रशासन या स्थानीय सरकार, आवास और मलिन बस्तियों के बोर्ड आदि द्वारा ‘मलिन बस्तियों’ के रूप में अधिसूचित किया गया है, जिसमें ‘मलिन बस्तियों के अधिनियम’ सहित किसी भी कानून के तहत अधिसूचित मलिन बस्तियों के रूप में माना जाता है।
  - राज्य/स्थानीय सरकार, संघ शासित प्रदेश प्रशासन, आवास और मलिन बस्तियों के बोर्ड आदि द्वारा ‘मलिन बस्तियों’ के रूप में मान्यता प्राप्त सभी क्षेत्र, जिन्हें औपचारिक रूप से किसी भी कानून के तहत मलिन बस्तियों के रूप में अधिसूचित नहीं किया गया है, उन्हें मान्यता प्राप्त मलिन बस्तियों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
  - कम से कम 300 की आबादी वाला एक सघन क्षेत्र या लगभग 60-70 परिवार, खराब तरीके से निर्मित, भीड़भाड़ वाले घर, अस्वच्छ वातावरण में, आमतौर पर अपर्याप्त बुनियादी ढांचे के साथ और उचित स्वच्छता और पीने के पानी की सुविधाओं की कमी वाले राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों को पहचानी गई मलिन बस्तियों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
- **मलिन बस्तियों की विशेषताएँ:**
  - **बुनियादी सेवाओं की कमी:** बेहतर स्वच्छता सुविधाओं और बेहतर जल स्रोतों तक पहुँच की कमी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है, जो कभी-कभी अपशिष्ट संग्रह प्रणालियों, बिजली की आपूर्ति, पक्की सड़कों और फुटपाथों, स्ट्रीट लाइटिंग और वर्षा जल निकासी की अनुपस्थिति से पूरित होती है।
  - घटिया आवास या अवैध और अपर्याप्त भवन संरचनाएँ
  - अत्यधिक भीड़भाड़ और उच्च घनत्व
  - **अस्वस्थ रहने की स्थिति और खतरनाक स्थान:** अस्वस्थ रहने की स्थिति बुनियादी सेवाओं की कमी, दृश्यमान, खुले सीवर, रास्तों की कमी, कचरे का अनियंत्रित डंपिंग, प्रदूषित वातावरण आदि का परिणाम है।
  - असुरक्षित कार्यकाल; अनियमित या अनौपचारिक बस्तियाँ
  - **गरीबी और सामाजिक बहिष्कार:** इसे झुग्गी बस्तियों की अंतर्निहित विशेषता के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि झुग्गी की स्थितियों के कारण (और, काफी हद तक, परिणाम) के रूप में देखा जाता है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. “भारत में महिला सशक्तिकरण प्राप्त करने में आने वाली प्रमुख चुनौतियों पर चर्चा करें और उन्हें दूर करने के लिए समाधान सुझाएँ।” [150 शब्द] [10 अंक]

## भारत में मलिन बस्तियों के विकास के कारण:

- **तीव्र शहरीकरण:**
  - ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन के कारण शहरी आबादी में विस्फोटक वृद्धि।
  - बिना उचित बुनियादी ढांचे के विकास के शहर की सीमाओं का विस्तार।
  - अपर्याप्त नियोजन के साथ नए कस्बों और शहरों का उदय।
- **अपर्याप्त किफायती आवास:**
  - शहरी क्षेत्रों में भूमि के लिए उच्च प्रतिस्पर्धा संपत्ति की कीमतों को बढ़ा रही है।
  - निम्न आय वर्ग के लिए औपचारिक आवास की सीमित उपलब्धता।
  - किफायती आवास विकल्पों की कमी शहरी गरीबों को अनौपचारिक बस्तियों का विकल्प चुनने के लिए प्रेरित कर रही है।
- **आर्थिक कारक और ग्रामीण संकट:**
  - ग्रामीण गरीबी और आजीविका के अवसरों की कमी प्रवासियों को शहरों की ओर धकेलती है।
  - जीवन यापन की उच्च लागत के बावजूद आर्थिक अवसरों के केंद्र के रूप में शहरों की धारणा।
  - असंतुलित क्षेत्रीय विकास, जहाँ शहरी केंद्र ग्रामीण विकास से आगे निकल जाते हैं।

## झुग्गी विकास की उपेक्षा के कारण उत्पन्न होने वाले मुद्दे:

- **खराब रहने की स्थिति:**
  - अत्यधिक भीड़भाड़ और घटिया आवासीय संरचनाएँ।
  - स्वच्छ जल, स्वच्छता और जल निकासी जैसी बुनियादी सेवाओं तक अपर्याप्त पहुँच।
  - सुरक्षित भूमि का अभाव असुरक्षितता और बेदखली के निरंतर भय की ओर ले जाता है।
- **स्वास्थ्य और सामाजिक चुनौतियाँ:**
  - अस्वच्छ वातावरण बीमारियों की उच्च घटनाओं में योगदान देता है।
  - स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और मनोरंजन सुविधाओं तक अपर्याप्त पहुँच।
  - झुग्गी निवासियों का सामाजिक बहिष्कार और कलंक।
- **अवसंरचनात्मक घाटा:**
  - वित्तीय बाधाओं और जटिल शासन के कारण अपर्याप्त नगरपालिका सेवाएँ।
  - उचित सड़कों, स्ट्रीट लाइटिंग और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों का अभाव।
  - पर्यावरणीय खतरों में प्रदूषण और असुरक्षित रहने की स्थिति शामिल हैं।

## झुग्गी पुनर्वास में चुनौतियाँ:

- **वित्तीय बाधाएँ और वित्तपोषण अंतराल:**
  - बड़े पैमाने पर झुग्गी पुनर्विकास परियोजनाओं के लिए सीमित संसाधन उपलब्ध हैं।
  - झुग्गी आबादी के पैमाने की तुलना में निधियों का अपर्याप्त आवंटन।
  - कई वित्तपोषण स्रोतों पर निर्भरता परियोजना कार्यान्वयन में देरी कर सकती है।
- **असुरक्षित काश्तकारी और कानूनी मुद्दे:**
  - अनौपचारिक भूमि काश्तकारी और कानूनी दस्तावेज़ीकरण की कमी से जटिलताएँ उत्पन्न होती हैं।
  - वैधानिक विनियमों और ज़मीनी वास्तविकताओं के बीच टकराव।

- निवासियों को विस्थापित किए बिना पुनर्विकास के लिए भूमि अधिग्रहण में कठिनाई।
- **समन्वय और कार्यान्वयन चुनौतियाँ:**
  - केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारों के बीच बहु-एजेंसी समन्वय मुद्दे।
  - निर्णय लेने में पारदर्शिता और झुग्गी निवासियों की भागीदारी की कमी।
  - पुनर्वास का प्रतिरोध और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त पुनर्वास मॉडल तैयार करने में चुनौतियाँ।
- **तकनीकी और नियोजन सीमाएँ:**
  - अपर्याप्त शहरी नियोजन और झुग्गी जनसांख्यिकी पर अपर्याप्त डेटा।
  - आवास के साथ-साथ बुनियादी ढाँचा प्रदान करने में चुनौतियाँ।
  - ऐसे नवीन दृष्टिकोणों की आवश्यकता जो पुनर्विकास को न्यूनतम विस्थापन के साथ संतुलित कर सकें।

## आगे की राह:

- **एकीकृत शहरी नियोजन:**
  - व्यापक शहरी नीतियाँ विकसित करें जो झुग्गी विकास को शहरी नियोजन के साथ एकीकृत करना।
  - भूमि को संसाधन के रूप में उपयोग करके झुग्गी पुनर्विकास को प्रोत्साहित करना।
  - साक्ष्य-आधारित नीति निर्धारण को सूचित करने के लिए डेटा संग्रह को मजबूत करना।
- **किफायती आवास को बढ़ावा देना:**
  - शहरी गरीबों के लिए किफायती आवास परियोजनाओं में निवेश बढ़ाना।
  - आवास योजनाओं को वित्तपोषित करने और लागू करने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी का लाभ उठाना।
  - प्रधानमंत्री आवास योजना (सभी के लिए आवास) जैसी योजनाओं के तहत लाभार्थी-नेतृत्व वाली आवास पहलों को बढ़ावा देना।
- **सामुदायिक भागीदारी और सशक्तिकरण:**
  - झुग्गीवासियों को उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए नियोजन और निष्पादन में शामिल करना।
  - भागीदारीपूर्ण निर्णय लेने के लिए स्थानीय निकायों और समितियों की स्थापना करना।
  - निवासियों के उत्थान के लिए कौशल विकास और वित्तीय समावेशन कार्यक्रम प्रदान करना।
- **नीति और संस्थागत सुधार:**
  - भूमि अधिग्रहण को औपचारिक बनाने और संपत्ति के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए कानूनी प्रक्रियाओं को सरल बनाना।
  - केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारों के बीच समन्वय बढ़ाना।
  - झुग्गी सुधार और पुनर्वास कार्यक्रमों का समय पर कार्यान्वयन सुनिश्चित करना।
- **बुनियादी ढांचा और बुनियादी सेवाएँ:**
  - पानी, स्वच्छता और परिवहन जैसी आवश्यक सेवाओं के विकास को प्राथमिकता देना।
  - जीवन स्थितियों में सुधार के लिए संधारणीय शहरी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को लागू करना।
  - शहरी नियोजन को सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों के साथ एकीकृत करके पर्यावरण और स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करना।

भारत की झुग्गी-झोपड़ियों की चुनौती से निपटने के लिए कानूनी सुधारों, समावेशी शहरी नियोजन और सामुदायिक सशक्तिकरण को मिलाकर एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। झुग्गी-झोपड़ियों के पुनर्वास की नीतियों में किरायेदारी की सुरक्षा को मजबूत करना, किफायती आवास को बढ़ावा देना और बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता देना जीवन स्तर को ऊपर उठा सकता है। सरकारों, नागरिक समाज और निवासियों के बीच सहयोगात्मक प्रयास संधारणीय, न्यायसंगत शहरी विकास सुनिश्चित करने और तेजी से शहरीकरण और समावेशी विकास के बीच की खाई को पाटने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा प्रश्न के लिए संभावनी प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. सरकार झुग्गी पुनर्वास में आने वाली चुनौतियों पर काबू पाकर सतत और न्यायसंगत शहरी विकास कैसे सुनिश्चित कर सकती है? विस्तार से बताइए। [250 शब्द] [15 अंक]

### भारत में भाषाई विविधता

**संदर्भ:** विभाजनकारी प्रवृत्तियों के जवाब में भारत की साझा भाषाई विरासत की एकीकृत प्रकृति पर प्रधानमंत्री का हालिया जोर, राष्ट्र के सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने में भाषा की जटिल और महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। यह मुद्दा भाषा नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कार्यान्वयन और लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के आसपास चल रही बहसों के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

#### भारत का भाषाई परिदृश्य:

भारत में भाषाई विविधता की असाधारण डिग्री की विशेषता है, जो शासन, शिक्षा और सामाजिक सामंजस्य के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों पेश करती है।

#### • विविधता का परिमाण:

- **जनगणना 2011:** भारत में बोली जाने वाली 19,500 से अधिक भाषाएँ/बोलियाँ दर्ज की गईं।
- 10,000 से अधिक व्यक्तियों द्वारा बोली जाने वाली 121 भाषाएँ। इससे दोनों प्रमुख भाषाओं की उपस्थिति पर प्रकाश पड़ता है, जिनमें बोलने वालों की संख्या बहुत अधिक है और साथ ही विभिन्न समुदायों द्वारा बोली जाने वाली छोटी-छोटी भाषाओं की भी बहुतायत है।

#### • संकटग्रस्त भाषाएँ:

- **यूनेस्को एटलस ऑफ़ द वर्ल्ड्स लैंग्वेजेज इन डेंजर:** 197 भारतीय भाषाओं को संकटग्रस्त के रूप में वर्गीकृत करता है, जो भारत की भाषाई विरासत के एक बड़े हिस्से के अस्तित्व के लिए एक महत्वपूर्ण खतरे का संकेत देता है।
- **भाषा जीवन शक्ति रिपोर्ट (यूनेस्को):** वैश्वीकरण जैसे कारकों द्वारा उत्पन्न वैश्विक भाषाई विविधता के लिए जोखिम पर जोर देता है, जो कम प्रभावी भाषाओं के हाशिए पर जाने और गिरावट का कारण बन सकता है।

• **पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया (पीएलएसआई) 2013:** लगभग 780 भाषाओं के अस्तित्व का अनुमान लगाया गया है, जिनमें से लगभग 250 भाषाएँ पिछले 50 वर्षों में विलुप्त हो गई हैं। यह तेजी से भाषा के नुकसान की एक चिंताजनक तस्वीर पेश करता है।

• **राजभाषा समिति (2022):** केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की समिति की सिफारिश भाषाई अल्पसंख्यकों और भाषाई बहुलवाद

के सिद्धांत के लिए संभावित निहितार्थों के बारे में चिंताएं पैदा करती है। इस सिफारिश का संवैधानिक सुरक्षा उपायों और समावेशी भाषा नीतियों की आवश्यकता के संदर्भ में विश्लेषण किया जाना चाहिए।

#### संवैधानिक और कानूनी ढांचा

भारतीय संविधान भाषाई विविधता के संरक्षण के लिए एक ढांचा प्रदान करता है, जबकि विभिन्न कानून और नीतियों का उद्देश्य भाषाई अधिकारों को बढ़ावा देना और उनकी रक्षा करना है।

#### • संवैधानिक प्रावधान:

- **अनुच्छेद 29 (अल्पसंख्यकों के हितों का संरक्षण):** नागरिकों के किसी भी वर्ग को अपनी विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति को संरक्षित करने के अधिकार की गारंटी देता है। यह एक मौलिक अधिकार है जो भाषाई पहचान के संरक्षण को रेखांकित करता है।
- **अनुच्छेद 30 (अल्पसंख्यकों को शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने और उनका प्रशासन करने का अधिकार):** भाषाई अल्पसंख्यकों को अपने स्वयं के शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने और उनका प्रबंधन करने का अधिकार देता है, जिससे वे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान कर सकें और अपनी भाषाई विरासत को संरक्षित कर सकें।
- **राजभाषा प्रावधान (अनुच्छेद 343-351):** हिंदी को संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करते हुए, ये अनुच्छेद अन्य भाषाओं के महत्व को भी मान्यता देते हैं और राज्य स्तर पर आधिकारिक उद्देश्यों में उनके उपयोग का प्रावधान करते हैं। अनुच्छेद 350 भाषाई अल्पसंख्यक समूहों से संबंधित बच्चों के लिए शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधा प्रदान करने का आदेश देता है।
- **आठवीं अनुसूची:** 22 भाषाओं को अनुसूचित भाषाओं के रूप में मान्यता देती है, उन्हें आधिकारिक मान्यता और दर्जा प्रदान करती है। इस मान्यता का सरकारी सहायता, शैक्षिक नीतियों और सांस्कृतिक प्रचार पर प्रभाव पड़ता है।

#### • कानूनी प्रावधान और अधिनियम:

- **आधिकारिक भाषा अधिनियम, 1963:** आधिकारिक संचार में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के निरंतर उपयोग का प्रावधान करता है और केंद्र सरकार की भाषा नीति की रूपरेखा तैयार करता है।
- **शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009:** 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का आदेश देता है, और इसके प्रावधानों की व्याख्या विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग का समर्थन करने के लिए की जा सकती है।
- **राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 1992:** राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना करता है, जिसका कार्य अन्य बातों के अलावा भाषाई अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करना है।

#### सरकारी नीतियाँ और पहल:

सरकार ने भारत की भाषाई विविधता द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों और अवसरों का समाधान करने के लिए विभिन्न नीतियों और पहलों को लागू किया है।

- **त्रि-भाषा फॉर्मूला (1968):** स्कूलों में हिंदी, अंग्रेजी और एक क्षेत्रीय भाषा के शिक्षण की वकालत करके बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक नीति। इसका कार्यान्वयन असमान रहा है और अक्सर बहस का विषय रहा है।
- **राष्ट्रीय अनुवाद मिशन:** ज्ञान ग्रंथों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने, भाषाई पहुंच और बौद्धिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने का प्रयास करता है।
- **भारतीय भाषा सर्वेक्षण (2010 - जारी):** भारत की भाषाई विविधता का दस्तावेजीकरण करने, शोध, नीति निर्माण और भाषा संरक्षण प्रयासों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान करने के उद्देश्य से एक व्यापक सर्वेक्षण।

- **भारत भाषा विभाग:** भारतीय भाषाओं के प्रचार और संरक्षण पर केंद्रित एक प्रस्तावित विभाग।
- **एनईपी 2020:** कक्षा 5 तक और अधिमानतः कक्षा 8 और उससे आगे तक शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा/स्थानीय भाषा के उपयोग पर जोर देता है। यह भाषा नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है और इसमें बहुभाषावाद को बढ़ावा देने और सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने की क्षमता है।

### अंतर्राष्ट्रीय केस स्टडी: न्यूजीलैंड - माओरी भाषा का पुनरुद्धार

न्यूजीलैंड के माओरी भाषा को पुनर्जीवित करने के सफल प्रयास भारत के लिए बहुमूल्य सबक प्रदान करते हैं। माओरी बच्चों को विसर्जन शिक्षा प्रदान करने वाले "लैंग्वेज नेस्ट्स" कार्यक्रम ने माओरी बोलने वालों की संख्या बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। माओरी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिए जाने और मीडिया, शिक्षा और भाषा के आधिकारिक उपयोग में सरकारी निवेश ने इसके पुनरुद्धार में और योगदान दिया है। 1980 के दशक में माओरी बोलने वालों की संख्या 12% से बढ़कर 2021 में 21% हो जाना निरंतर और व्यापक भाषा पुनरुद्धार प्रयासों की प्रभावशीलता को दर्शाता है।

### विश्लेषण और आगे की राह:

- **भाषाई विविधता का महत्व:** भारत की भाषाई विविधता एक अनूठी सांस्कृतिक संपत्ति है जो इसके समाज को समृद्ध बनाती है और इसकी बहुलवादी पहचान में योगदान देती है। हालाँकि, यह राष्ट्रीय एकीकरण, शिक्षा और शासन से संबंधित चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है।
- **चुनौतियाँ:**
  - **भाषा संकट:** कई भारतीय भाषाओं के बोलने वालों की संख्या में तेजी से गिरावट सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक ज्ञान के लिए खतरा बन गई है।
  - **भाषा नीतियों का असमान कार्यान्वयन:** त्रि-भाषा फॉर्मूला और अन्य नीतियों को कार्यान्वयन में चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिससे बहुभाषी शिक्षा तक पहुँच में असमानताएँ पैदा हुई हैं।
  - **राष्ट्रीय एकता और भाषाई अधिकारों में संतुलन:** राष्ट्रीय एकीकरण के लिए एक आम भाषा को बढ़ावा देने और अल्पसंख्यक समूहों के भाषाई अधिकारों की रक्षा के बीच संतुलन बनाना एक जटिल और निरंतर चुनौती है।
  - **संसाधन की कमी:** कई भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री सहित महत्वपूर्ण संसाधनों की आवश्यकता होती है।
- **अवसर:**
  - **बहुभाषावाद एक संज्ञानात्मक लाभ के रूप में:** शोध से पता चलता है कि बहुभाषावाद संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ा सकता है और सीखने के परिणामों में सुधार कर सकता है।
  - **सांस्कृतिक समृद्धि:** भाषाई विविधता भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करती है और रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देती है।
  - **आर्थिक क्षमता:** भाषाएँ एक मूल्यवान आर्थिक संपत्ति हो सकती हैं, विशेष रूप से वैश्वीकरण और अंतर-सांस्कृतिक संचार के संदर्भ में।
- **अनुशंसाएँ:**
  - **NEP 2020 का प्रभावी कार्यान्वयन:** मातृभाषा आधारित शिक्षा नीति का सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करना बहुभाषीवाद को बढ़ावा देने और सीखने के परिणामों में सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण है।

- **भाषा पुनरोद्धार प्रयासों को मजबूत करना:** लुप्तप्राय भाषाओं को प्रलेखित करने, संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए व्यापक कार्यक्रमों को लागू करना, न्यूजीलैंड में माओरी भाषा पुनरुद्धार जैसे सफल अंतर्राष्ट्रीय केस अध्ययनों से सबक लेना।
- **समावेशी भाषा नीतियों को बढ़ावा देना:** ऐसी भाषा नीतियों का विकास और कार्यान्वयन करना जो समावेशी और न्यायसंगत हों, यह सुनिश्चित करना कि सभी भाषाई समूहों की शिक्षा, सार्वजनिक सेवाओं और अवसरों तक पहुँच हो।
- **भाषा शिक्षा में निवेश करना:** बहुभाषी शिक्षकों के प्रशिक्षण में निवेश बढ़ाना, उच्च गुणवत्ता वाली बहुभाषी शिक्षण सामग्री का विकास और बहुभाषी स्कूलों की स्थापना करना।
- **प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना:** भाषा सीखने, दस्तावेज़ीकरण और संरक्षण के लिए डिजिटल संसाधन बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।
- **जागरूकता बढ़ाना:** भाषाई विविधता के मूल्य और भाषा संरक्षण के महत्व को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक जागरूकता अभियान चलाना।

### निष्कर्ष

भाषाई विविधता भारत की एक परिभाषित विशेषता है और यह शक्ति और जटिलता दोनों का स्रोत है। समावेशी नीतियाँ, NEP 2020 जैसे शैक्षिक सुधारों का प्रभावी कार्यान्वयन और प्रौद्योगिकी का रणनीतिक उपयोग इस अमूल्य विरासत को संरक्षित करने के लिए आवश्यक है, साथ ही राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना और सभी नागरिकों के लिए अवसरों तक समान पहुँच सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। भारतीय राज्य के पास भाषाई विविधता की रक्षा करने का संवैधानिक जनादेश है, और सक्रिय प्रचार और संरक्षण के लिए विशुद्ध रूप से प्रतीकात्मक दृष्टिकोण से आगे बढ़ना महत्वपूर्ण है।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में भाषाई विविधता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 350A राज्य को हिंदी को राष्ट्रीय एकीकरण की भाषा के रूप में बढ़ावा देने का निर्देश देता है।
2. संविधान की आठवीं अनुसूची में मूल रूप से 14 भाषाएँ थीं, जिन्हें बाद में कई संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से 22 तक विस्तारित किया गया।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c) [250 शब्द]

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. “भारत की भाषाई विविधता चुनौतियाँ और अवसर दोनों प्रस्तुत करती है। भारत में भाषाई विविधता के संरक्षण के लिए संवैधानिक और कानूनी ढाँचे की आलोचनात्मक जाँच करें और राष्ट्रीय एकता और विकास के संदर्भ में समावेशी बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के उपाय सुझाएँ।” [250 शब्द] [15 अंक]

### जब मनुष्य ने औजारों का उपयोग करना शुरू किया

**चर्चा में क्यों:** जर्नल नेचर में प्रकाशित शोध के अनुसार, हमारे प्राचीन पूर्वज कम से कम 1.5 मिलियन वर्ष पहले हड्डी के औजारों का उपयोग कर रहे थे, जो कि पहले माना जाने वाले समय से लगभग दस लाख वर्ष पहले है।

#### मुख्य विवरण:

- खोजे गए सबसे पुराने पत्थर के औजार 3.3 मिलियन वर्ष पुराने हैं।
- आधुनिक विशेषज्ञों के अनुसार, हमारे वानर जैसे पूर्वज सबसे पुराने औजारों की खोज से लाखों वर्ष पहले से ही दैनिक आधार पर लाठी और पत्थरों का उपयोग कर रहे होंगे।
- यह दर्शाता है कि औजार प्रौद्योगिकी ऐसी विशेषता नहीं है जो केवल मनुष्यों तक ही सीमित है, जैसा कि लंबे समय से माना जाता रहा है, और यह होमो जीनस के उभरने से पहले से ही मौजूद थी।
- गुडॉल और मार्जके के कार्यों ने उस बात पर संदेह पैदा किया है जिसे अब शिक्षाविद "मानव असाधारणता" कहते हैं, या यह धारणा कि मनुष्य अद्वितीय हैं और अन्य सभी जानवरों से बेहतर हैं।
- यह सिद्धांत कि औजारों का उपयोग और औजार बनाना विशिष्ट मानवीय गुण हैं, इतने लंबे समय तक इसलिए प्रचलित रहा क्योंकि हम मानते थे कि हम विशेष हैं, जबकि हमारे आस-पास पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं जो इसके विपरीत संकेत देते हैं।
- उदाहरण के लिए, अन्य प्राइमेट्स के अध्ययन से पता चला है कि कई हाथ की आकृतियाँ - न केवल मनुष्यों की - अत्यधिक निपुण व्यवहार करने में सक्षम हैं।
- जीवित प्राइमेट्स के विश्लेषण पर आधारित नवीनतम साक्ष्य बताते हैं कि लगभग 13 मिलियन वर्ष पहले सभी महान वानरों के अंतिम सामान्य पूर्वज में भी सटीक निपुणता थी और वे औजारों का उपयोग करते थे।

#### पाषाण युग:

मानव विकास का सबसे प्रारंभिक चरण है, जो लगभग 8000 ईसा पूर्व तक फैला हुआ है, और पत्थर के औजार प्रौद्योगिकी और अन्य परिवर्तनों के आधार पर इसे तीन अलग-अलग चरणों में विभाजित किया गया है।

#### 1. निम्न पुरापाषाण युग (100,000 ईसा पूर्व तक)

- पुरा पाषाण युग का प्रारंभिक चरण।
- आदिम पत्थर के औजारों की विशेषता।
- **होमो इरेक्टस और संभवतः** निण्डरथल जैसी प्रारंभिक मानव प्रजातियाँ मौजूद थीं।
- हस्त कुल्हाड़ी का उपयोग करके, बड़े पत्थरों से क्लीवर बनाए जाते हैं।
- **प्रमुख स्थल:** छोटा नागपुर पठार, कुरनूल और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्से।

#### 2. मध्य पुरापाषाण युग (100,000 ईसा पूर्व - 40,000 ईसा पूर्व)

- पत्थर के औजार प्रौद्योगिकी में प्रगति देखी गई।
- होमो इरेक्टस की निरंतर उपस्थिति और प्रारंभिक होमो सेपियन्स का उद्भव।
- पुरातात्विक खोजों से औजारों की जटिलता में वृद्धि और संस्कृतियों का विकास दिखाई देता है।

#### 3. उच्च पुरापाषाण युग (40,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- अधिक परिष्कृत पत्थर के औजार जैसे ब्लेड, विशेष शिकार के औजार और हड्डी के औजार।
- होमो सेपियन्स का प्रभुत्व।
- औजार और स्थल जटिल सामाजिक व्यवहार और अनुकूलन को दर्शाते हैं।

#### मध्यपाषाण युग

- पुरापाषाण और नवपाषाण युगों के बीच संक्रमण चरण, जो लगभग 9,600 ईसा पूर्व से शुरू हुआ, अंतिम हिमयुग के अंत के साथ मेल खाता है।
- शिकारी-संग्रहकर्ता जीवन शैली से प्रारंभिक कृषि में बदलाव को दर्शाता है।
- माइक्रोलिथ (छोटे, तीखे पत्थर के औजार) इस अवधि के प्रमुख उपकरण हैं।
- कृषि के आगमन के आधार पर, यह युग विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग समय पर समाप्त होता है।

#### नवपाषाण युग

- लगभग 6000 ईसा पूर्व से शुरू हुआ, जो पाषाण युग के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करता है।
- स्थिर कृषि और मवेशियों, भेड़ों और बकरियों जैसे जानवरों के पालतूकरण द्वारा चिह्नित।
- पॉलिश किए गए पत्थर के औजारों और माइक्रोलिथिक ब्लेड का उपयोग।
- कुल्हाड़ियों, कुल्हाड़ी, छेनी और सेल्ट्स जैसे औजारों का विकास।
- **मुख्य फसलें:** रागी, चना, कपास, चावल, गेहूँ और जौ।
- बस्तियाँ अक्सर झीलों के पास होती हैं, शिकार और मछली पकड़ने पर निरंतर निर्भरता के साथ।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. माइक्रोलिथ मानव इतिहास में पाषाण युग के किस चरण में पाए जाते हैं?

- |                   |                       |
|-------------------|-----------------------|
| (a) नवपाषाण युग   | (b) मध्यपाषाण युग     |
| (c) पुरापाषाण युग | (d) इनमें से कोई नहीं |

(9) :2111

#### लेपाक्षी मंदिर

**चर्चा में क्यों:** इतिहासकार ने सरकार से लेपाक्षी मंदिर को यूनेस्को की विरासत सूची में शामिल करवाने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया।

### श्री वीरभद्र मंदिर, लेपाक्षी:

- अनंतपुर जिले (आंध्र प्रदेश) में लेपाक्षी में श्री वीरभद्र स्वामी मंदिर और अखंड बैल (नंदी) विजयनगर मूर्तिकला और चितकला कला परंपरा के लिए जाने जाते हैं।
- इसे यूनेस्को की विश्व विरासत की संभावित सूची में शामिल किया गया है।
- श्री वीरभद्र मंदिर, जिसे लेपाक्षी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, लेपाक्षी गांव में स्थित है, जिसका नाम वीरभद्र (भगवान शिव के उग्र अवतार) को समर्पित एक मुख्य मंदिर के नाम पर रखा गया है।
- मंदिर की प्राकार दीवारों पर उत्कीर्ण शिलालेखों से, गांव को वैकल्पिक रूप से लेपाक्ष, लेपाक्षी और लेपाक्षीपुरा कहा जाता है।
- **किंवदंती:** इस स्थान का महत्व भारतीय महाकाव्य रामायण से जुड़ा है। ऐसा माना जाता है कि लंका के राजा रावण द्वारा घायल किया गया पक्षी जटायु, अयोध्या के राजा राम की पत्नी सीता को ले जाने वाले राजा के साथ युद्ध के बाद यहाँ गिरा था।
- **विकास**
  - मंदिर परिसर के विकास को तीन व्यापक चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो इसकी वास्तुकला संबंधी प्रगति के आधार पर 1100 से 1800 ई. तक है।
  - पहला चरण 1100-1350 ई. के बीच आता है, जिसके दौरान स्तंभ, स्तंभ और आलों जैसी महत्वपूर्ण वास्तुकला संबंधी विशेषताएँ विकसित हुईं, जिनमें उत्तर चोल, पांड्य और होयसल शैलियों और प्रारंभिक विजयनगर काल की विशेषताएँ भी शामिल हैं।
  - अगली अवधि में, 1350 - 1600 ई. के बीच प्रमुख निर्माण गतिविधियाँ हुईं, जो परिपक्व विजयनगर वास्तुकला की अवधि का प्रतिनिधित्व करती हैं।
  - विजयनगर काल के दौरान, लेपाक्षी मंदिर राजा अच्युतराय (1529-42 ई.) के शासनकाल में क्रमिक विकास से गुजरा और अपने विकास के एक महत्वपूर्ण चरण में विजयनगर काल का साक्षी है।
  - अंतिम काल 1600 से 1800 ई. के बीच आता है, जिसके दौरान कुछ छोटे मंदिरों को छोड़कर कोई महत्वपूर्ण संरचना नहीं बनी।
- **मंदिर परिसर के घटक**
  - मंदिर परिसर अपनी संकेद्रित दीवारों या प्राकार के साथ एक कम ग्रेनाइट कछुए के आकार की पहाड़ी पर स्थित है जिसे कुर्मासैला के नाम से जाना जाता है।
  - संरचनाओं को पहाड़ी के तीन अलग-अलग स्तरों या आकृति पर बनाया गया था; प्रत्येक समूह तीन प्राकारसियों से घिरा हुआ था - आंतरिक, मध्य और बाहरी प्राकार जो तीन अलग-अलग चरणों में बनाए गए थे।
- मंदिर बिक्रूट शैली में बनाया गया है, जिसमें शुरू में दो मंदिर - वीरभद्र और पापनासेश्वर एक साझा मंच और एक स्तंभित महा-मंडप साझा करते हैं।
- तीसरा मंदिर उसी मंच के पश्चिम में जोड़ा गया था, जो मिलकर आंतरिक प्राकार का एक हिस्सा बनता है, जो रघुनाथ को समर्पित है।

### यूनेस्को की अनंतिम सूची

- देश अपनी अनंतिम सूचियाँ प्रस्तुत करते हैं, वे संपत्तियाँ जिन्हें वे उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य की सांस्कृतिक और/या प्राकृतिक विरासत मानते हैं और इसलिए विश्व धरोहर सूची में शामिल किए जाने के लिए उपयुक्त हैं।
- यूनेस्को देशों को कम से कम हर दस साल में अपनी अनंतिम सूची की पुनः जाँच करने और उसे पुनः प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

- विश्व धरोहर सूची में नामांकन पर तब तक विचार नहीं किया जाता जब तक कि नामांकित संपत्ति को पहले से ही राज्य पक्ष (देश) की अनंतिम सूची में शामिल नहीं किया गया हो।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित स्थलों पर विचार करें:

1. गारो हिल्स संरक्षण क्षेत्र (जीएचसीए)
2. केबुल लामजाओ संरक्षण क्षेत्र
3. सतपुड़ा टाइगर रिजर्व
4. कांचीपुरम के मंदिर

उपर्युक्त स्थलों में से कौन-से यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल हैं?

- |                    |                    |
|--------------------|--------------------|
| (a) केवल 1 और 2    | (b) केवल 2, 3 और 4 |
| (c) केवल 1, 2 और 3 | (d) 1, 2, 3 और 4   |

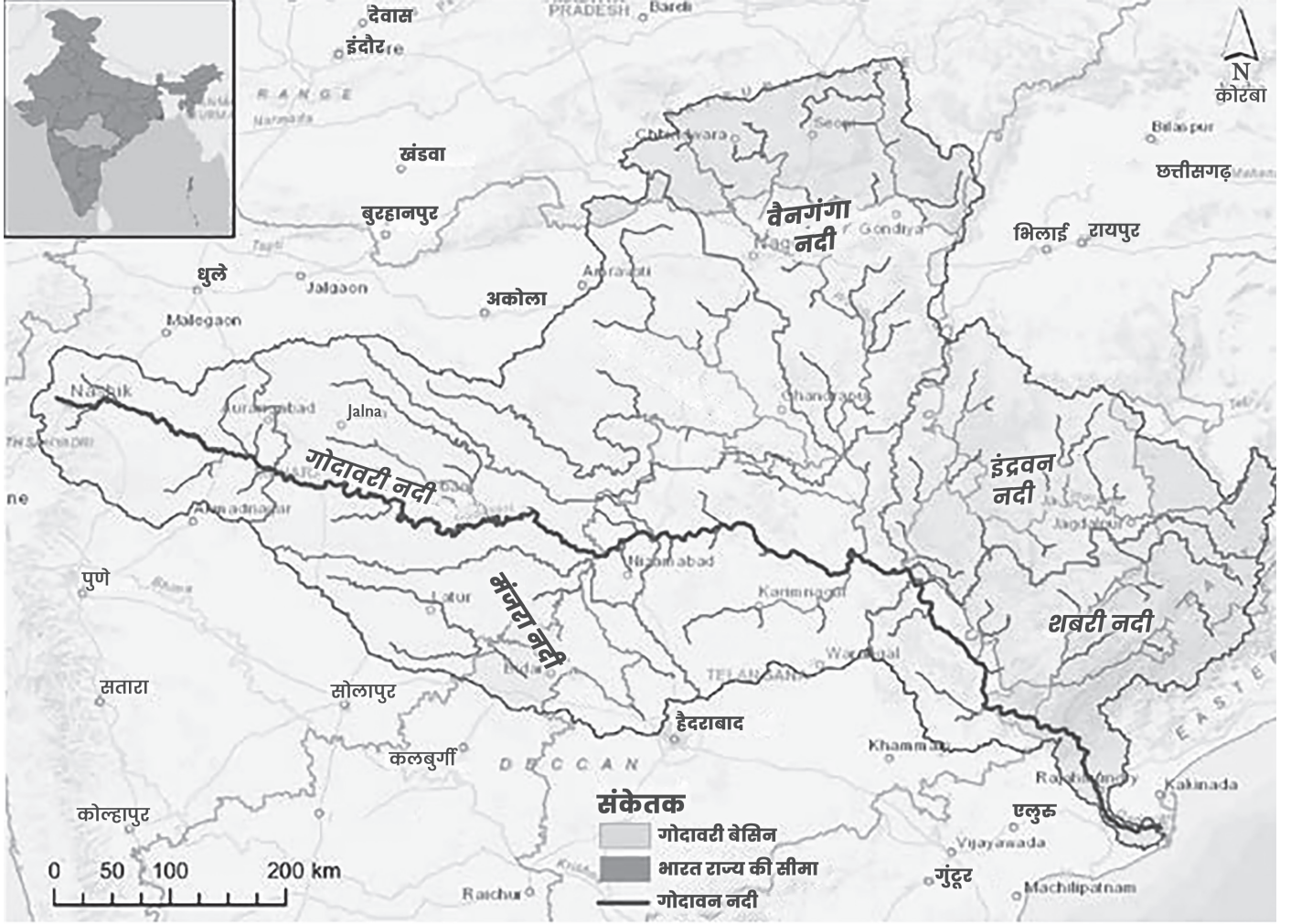
(P) : 255

### गोदावरी पुष्करालु

**चर्चा में क्यों:** आंध्र प्रदेश सरकार 2027 में महाकुंभ मेले के समान ही गोदावरी पुष्करालु मनाने की योजना बना रही है।

#### गोदावरी पुष्करालु/पुष्करम के बारे में:

- गोदावरी पुष्करम एक हिंदू परंपरा है जो गोदावरी नदी की पूजा से जुड़ी है।
- पुष्करम नदियों का त्योहार है, देश की 12 महत्वपूर्ण नदियाँ, प्रत्येक नदी के लिए 12 साल में एक बार मनाया जाता है।
- पुष्करम कुंभ मेले के समान है, जो देश में अन्य नदियों के किनारे मनाया जाता है और पवित्र स्नान करना त्योहार का मुख्य अनुष्ठान है।
- प्रत्येक वर्ष के त्योहार के लिए नदी राशि चक्र में बृहस्पति की स्थिति पर आधारित होती है, पुष्करम तब तक चलता है जब तक ग्रह वहाँ रहता है।
- आखिरी गोदावरी पुष्करलु 2015 में आयोजित किया गया था। यह महा पुष्करम था, क्योंकि यह 144 वर्षों में एक बार होता है, जो 12-वर्षीय चक्र की 12वीं पुनरावृत्ति के अनुरूप है।
- गोदावरी नदी का उद्गम ल्यंबकेश्वर से होता है नासिक में मंदिर और कई स्थानों पर बहती है आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जिन्हें कहा जाता है दिव्यक्षेत्रम्।
- 12 दिवसीय कार्यक्रम तेलंगाना के ग्यारह शहरों में होता है और आंध्र प्रदेश: निर्मल, बसारा, धर्मपुरी, कालेश्वरम, भद्राचलम, पट्टीसीमा, कोव्वुह, राजमुदरी, दावलेश्वरम, नरसापुरम, अंतर्वेदी।



**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. गोदावरी पुष्करालु परंपरा किस राज्य में मनाई जाती है:

- (a) आंध्र प्रदेश
- (b) तेलंगाना
- (c) महाराष्ट्र
- (d) (a) और (b) दोनों

(p) : 2018

**भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य**

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, महाराष्ट्र के सांस्कृतिक मामलों के मंत्री ने छत्रपति शिवाजी महाराज के किलों को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा दिलाने के लिए पेरिस जाने वाले प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

**मुख्य विवरण:**

- छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा निर्मित बारह किलों को राज्य द्वारा “भारत का मराठा सैन्य परिदृश्य” थीम के तहत यूनेस्को मान्यता के लिए अनुशंसित किया गया है।
- इसका उद्देश्य दुनिया भर में छत्रपति शिवाजी महाराज के किलों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत के मूल्य पर जोर देना है।

- यदि इन किलों को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया जाता है तो इनके संरक्षण और पर्यटन के विकास के अधिक अवसर पैदा होंगे।
- महाराष्ट्र में साल्हेर किला, शिवनेरी किला, लोहागढ़, खंडेरी किला, रायगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़, सुवर्णदुर्ग, पन्हाला किला, विजय दुर्ग, सिंधुदुर्ग और जिंजी किला इस नामांकन के बारह घटक खंड हैं।
- ये तत्व, जो विभिन्न भौगोलिक और भौगोलिक क्षेत्रों में फैले हुए हैं, मराठों की रणनीतिक सैन्य शक्ति को उजागर करते हैं।
- मराठा शासकों द्वारा कल्पना की गई उल्लेखनीय किलेबंदी और सैन्य प्रणाली भारत के मराठा सैन्य परिदृश्यों में परिलक्षित होती है, जो 17वीं और 19वीं शताब्दी के बीच उभरी।
- भारतीय प्रायद्वीप में सह्याद्री पर्वत श्रृंखलाओं, कोंकण तट, दक्कन पठार और पूर्वी घाटों के अद्वितीय परिदृश्य, भूभाग और भौगोलिक विशेषताओं के एकीकरण के परिणामस्वरूप किलों का यह उल्लेखनीय नेटवर्क बना है, जो पदानुक्रम, पैमाने और प्रतीकात्मक विशेषताओं में भिन्न हैं।
- महाराष्ट्र के 390 से अधिक किलों में से केवल 12 को भारत के मराठा सैन्य परिदृश्यों के लिए चुना गया है।
- सलहेर, शिवनेरी, लोहागढ़, रायगढ़, राजगढ़ और गिंगी भारत के मराठा सैन्य परिदृश्यों में पहाड़ी किले हैं; प्रतापगढ़ एक पहाड़ी-वन किला है; पन्हाला एक पहाड़ी पठार किला है; विजयदुर्ग एक तटीय किला है; और खंडेरी, सुवर्णदुर्ग और सिंधुदुर्ग द्वीप किले हैं।

- 1670 ई. तक, मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज ने मराठा सैन्य सिद्धांत की स्थापना की थी, जो 1818 ई. तक पेशवा के शासन तक आने वाले युगों तक कायम रहा।
- मराठा सैन्य परिदृश्यों को सांस्कृतिक मानदंड श्रेणी के तहत नामांकित किया जाता है, जो दो नामांकन श्रेणियों में से एक है; दूसरा प्राकृतिक कारकों के लिए है। विश्व धरोहर सूची में शामिल होने के लिए, सांस्कृतिक स्थलों को छह मानदंडों (i से vi) को पूरा करना चाहिए, जबकि प्राकृतिक स्थलों को चार मानदंडों (vii से x) को पूरा करना चाहिए।
- भारत के मराठा सैन्य परिदृश्यों को मानदंड के तहत नामांकित किया गया है:
  - (iii): किसी सांस्कृतिक परंपरा या सभ्यता के लिए एक अद्वितीय या कम से कम असाधारण साक्ष्य प्रस्तुत करना जो जीवित है या जो लुप्त हो गई है, मानदंड (iv): किसी प्रकार की इमारत, वास्तुशिल्प या तकनीकी समूह या परिदृश्य का उत्कृष्ट उदाहरण होना जो मानव इतिहास में महत्वपूर्ण चरण(ओं) को दर्शाता हो और मानदंड (vi): घटनाओं या जीवित परंपराओं, विचारों या विश्वासों, उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्व के कलात्मक और साहित्यिक कार्यों के साथ सीधे या मूर्त रूप से जुड़ा होना।

### महाराष्ट्र में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

- भारत में अब 42 विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें से 34 सांस्कृतिक स्थल हैं, सात प्राकृतिक स्थल हैं और एक मिश्रित स्थल है।
- महाराष्ट्र में छह विश्व धरोहर स्थल हैं: मुंबई के विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको एनसेंबल्स (2018), अजंता गुफाएँ (1983), एलोरा गुफाएँ (1983), एलीफेंटा गुफाएँ (1987), छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (पूर्व में विक्टोरिया टर्मिनस) (2004), और महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल के पश्चिमी घाट प्राकृतिक श्रेणी में क्रमिक संपत्तियाँ हैं (2012)।
- विश्व धरोहर सूची में शामिल होने के लिए नामांकित होने वाली महाराष्ट्र की छठी सांस्कृतिक संपत्ति भारत का मराठा सैन्य परिदृश्य है, जिसे 2021 में विश्व धरोहर स्थलों की संभावित सूची में जोड़ा गया था।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वर्तमान में, भारत में 42 विश्व धरोहर स्थल हैं।
2. 42 विश्व धरोहर स्थलों में से 34 सांस्कृतिक स्थल हैं और 8 प्राकृतिक स्थल हैं।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

I ११११ (१) :११११

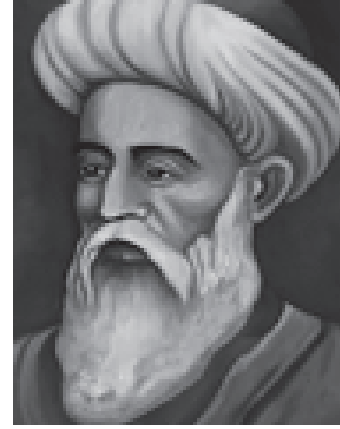
### अमीर खुसरो

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली में भव्य सूफी संगीत समारोह, जहान-ए-खुसरो 2025 में भाग लिया।

### मुख्य विवरण:

- अंतर्राष्ट्रीय समारोह जहान-ए-खुसरो सूफी नृत्य, कविता और संगीत का सम्मान करता है।
- विश्व भर के कलाकार अमीर खुसरो की विरासत का सम्मान करने के लिए एक साथ आते हैं।
- यह समारोह रूमी फाउंडेशन द्वारा आयोजित किया जाता है।
- इसकी स्थापना 2001 में प्रसिद्ध कलाकार और फिल्म निर्माता मुजफ्फर अली ने की थी; यह समारोह इस वर्ष 28 फरवरी से 2 मार्च तक अपनी 25वीं वर्षगांठ मनाएगा।

### अमीर खुसरो कौन थे?



- अमीर खुसरो, जिन्हें “कव्वाली का जनक” कहा जाता है, एक सूफी विद्वान, कवि और संगीतकार थे।
- उन्होंने विभिन्न काव्य शैलियों में रचना की है, जैसे तरकीब-बंद, गज़ल, मसनवी, क़ता, रुबाई और दो-बैती।
- इसके अतिरिक्त, उन्होंने तुर्की, अरबी और फ़ारसी घटकों को भारतीय शास्त्रीय संगीत में शामिल किया।
- वे सात से अधिक दिल्ली सल्तनत सम्राटों के शाही दरबारों से जुड़े थे।
- हालाँकि उन्होंने पंजाबी में एक सैन्य कविता लिखी थी, लेकिन उनकी प्राथमिक भाषाएँ फ़ारसी और हिंदुस्तानी थीं।

### प्रारंभिक जीवन और बचपन:

- 1253 में उत्तर प्रदेश के पटियाली में जन्मे।
- वे अच्छी तरह से शिक्षित थे और उन्होंने कला, साहित्य, खगोल विज्ञान, भाषा, दर्शन, तर्कशास्त्र, धर्म, रहस्यवाद, इतिहास और फ़िक्कह का अध्ययन किया।
- उन्होंने कई भारतीय बोलियों में धाराप्रवाहता विकसित की और अरबी, फ़ारसी और तुर्की में पारंगत हो गए।
- इसके अतिरिक्त, वे दिल्ली के निज़ामुद्दीन औलिया के आध्यात्मिक अनुयायी बन गए।

### कालांतर वर्ष:

- 1272 में, मलिक छज्जू ने उन्हें दरबारी कवि नियुक्त किया।
- कुछ वर्ष बाद, 1276 में, खुसरो ने बलबन के पुत्र बुगरा खान के लिए काम करना शुरू कर दिया।
- दिल्ली में कई राज्यों के उत्थान और पतन को देखने के बावजूद, अमीर खुसरो के साथ प्रत्येक बाद के राजवंशों द्वारा सम्मान और आदर के साथ व्यवहार किया गया।

- 'तूती-ए-हिंद' (भारत का तोता) की उपाधि उन्हें उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों, बुद्धिमत्ता और नैतिक सदाचार की सराहना में दी गई थी।
- उन्होंने दरबारी कवि के रूप में अपनी साहित्यिक उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ राजलें भी लिखीं।

**साहित्यिक कृतियाँ:**

- 'खज़ाइन उल-फुतुह' (विजय के खज़ाने) – अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासन का विवरण।
- 'नुह सिपिहर' (नौ आसमान) – मुबारक शाह के शासनकाल पर 9 अध्याय और साथ ही भारत के पर्यावरण, संस्कृति, वनस्पतियों और वन्य जीवन का विस्तृत विवरण।
- 'तुगलक नामा' – गियास अल-दीन तुगलक और अन्य तुगलक राजाओं के शासनकाल का सम्मान करने के लिए।

**मृत्यु:**

- कालांतर वर्षों में, उन्होंने तुगलक के साथ बंगाल की यात्रा की और अपने आध्यात्मिक गुरु, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के असामयिक निधन के बारे में जानने के बाद दिल्ली लौटने से पहले कुछ समय तक वहाँ रहे।
- वे अपने मार्गदर्शक के बिना लंबे समय तक जीवित नहीं रह सके; इस प्रकार, अक्टूबर 1325 में उनका निधन हो गया।

- अमीर खुसरो का मकबरा हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के अंतिम विश्राम स्थल के करीब था।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. अमीर खुसरो के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. उन्हें तूती-ए-हिंद (भारत का तोता) की उपाधि दी गई थी।
2. उन्होंने तुगलकनामा लिखा।
3. वे हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के प्रबल अनुयायी थे।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

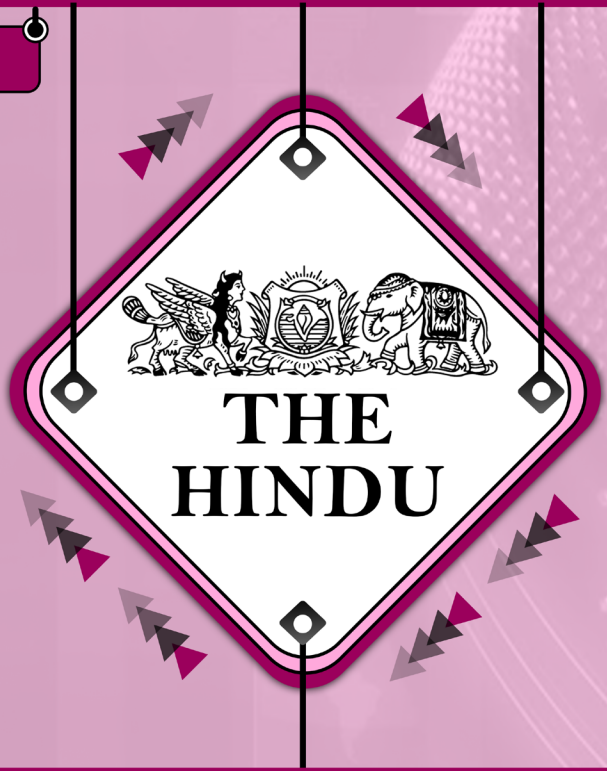
- |                   |                       |
|-------------------|-----------------------|
| (a) केवल एक       | (b) केवल दो           |
| (c) उपर्युक्त सभी | (d) इनमें से कोई नहीं |

(C) : 258

**चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल**

**'द हिन्दू' में क्या पढ़ें?**

**क्यू आर कोड स्कैन करें**



### प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन (PMSYM) योजना

**चर्चा में क्यों:** प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन (PMSYM) योजना 37% बजट वृद्धि, कम नामांकन चिंताओं, ई-श्रम पोर्टल के साथ योजनाबद्ध एकीकरण और मार्च 2025 तक 45 लाख लाभार्थियों तक पहुंचने के कारण चर्चा में है।

#### PMSYM के बारे में

- **लॉन्च की तारीख:** 1 फरवरी, 2019
- **कार्यान्वयन एजेंसी:** श्रम और रोजगार मंत्रालय, भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) पेंशन फंड मैनेजर के रूप में कार्य करेगा।
- **नामांकन प्रक्रिया:** पाल कर्मचारी भारत भर में कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) के माध्यम से नामांकन कर सकते हैं। इस प्रक्रिया के लिए आधार कार्ड और बचत बैंक खाते के विवरण की आवश्यकता होती है।

#### योजना की मुख्य विशेषताएँ

- **न्यूनतम सुनिश्चित पेंशन:**
  - 60 वर्ष की आयु के बाद ₹3,000 की मासिक पेंशन प्रदान करती है।
- **अंशदान-आधारित योजना:**
  - श्रमिकों को 60 वर्ष की आयु तक एक मामूली मासिक राशि (₹55 से ₹200) का अंशदान करना होता है।
  - भारत सरकार ग्राहक के अंशदान के बराबर अंशदान करती है।
- **पालता मानदंड:**

असंगठित क्षेत्र का श्रमिक होना चाहिए (जैसे रेहड़ी-पटरी वाले, रिक्शा चालक, कृषि मजदूर, निर्माण मजदूर, घरेलू कामगार आदि)।

  - आयु 18 से 40 वर्ष के बीच।
  - मासिक आय ₹15,000 से अधिक नहीं होनी चाहिए।
  - EPFO, NPS या ESIC के अंतर्गत कवर नहीं होना चाहिए।
  - आयकर दाता नहीं होना चाहिए।
- **पारिवारिक लाभ:**
  - यदि ग्राहक की मृत्यु 60 वर्ष से पहले हो जाती है, तो पति या पत्नी या तो योजना जारी रख सकते हैं या ब्याज सहित अंशदान वापस ले सकते हैं।
  - ग्राहक की मृत्यु के बाद सेवानिवृत्ति के बाद, पति या पत्नी को पारिवारिक पेंशन के रूप में पेंशन का 50% मिलता है।
- **सरल पंजीकरण प्रक्रिया:**
  - पंजीकरण भारत भर में कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) के माध्यम से किया जा सकता है।
  - आधार कार्ड और बैंक खाते के विवरण की आवश्यकता है।

#### • विकास प्रावधान:

- यदि ग्राहक 10 वर्ष से पहले बाहर निकलता है, तो अंशदान बचत बैंक ब्याज के साथ वापस कर दिया जाता है।
- यदि ग्राहक 10 वर्ष के बाद लेकिन 60 वर्ष से पहले बाहर निकलता है, तो अंशदान निधि पर अर्जित ब्याज के साथ वापस कर दिया जाता है।

#### PMSYM क्यों महत्वपूर्ण है?

- असंगठित क्षेत्र के कामगारों को बुढ़ापे में वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान करता है।
- बुजुर्ग कामगारों में गरीबी कम करने में सहायता करता है।
- अनौपचारिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए दीर्घकालिक बचत और सामाजिक सुरक्षा को प्रोत्साहित करता है।

#### निष्कर्ष:

यह योजना भारत के असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिए सामाजिक सुरक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम है, जो यह सुनिश्चित करता है कि वे सेवानिवृत्ति के बाद एक सम्मानजनक जीवन जी सकें।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन (PMSYM) योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- (a) यह एक स्वैच्छिक और अंशदायी पेंशन योजना है जिसका उद्देश्य असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को लाभ पहुंचाना है।
- (b) भारत सरकार कुल राशि का 50% योगदान देती है, जबकि शेष 50% अंशदाता द्वारा दिया जाता है।
- (c) यह योजना सभी श्रमिकों पर लागू है, जिसमें EPFO, NPS और ESIC के अंतर्गत आने वाले लोग भी शामिल हैं।
- (d) अंशदाता की मृत्यु होने पर, पूरी पेंशन उसके पति/पत्नी को हस्तांतरित कर दी जाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 4
- (d) केवल 1

(e) :211

## 10,000 एफपीओ का गठन और संवर्धन योजना

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, 10,000 किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के गठन और संवर्धन योजना के तहत 10,000वां एफपीओ पंजीकृत किया गया है।

**योजना के बारे में:**

- **जिम्मेदार मंत्रालय:** कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय।
- **लॉन्च तिथि:** 29 फरवरी, 2020।
- **बजटीय परिव्यय:** 2027-28 तक ₹6,865 करोड़।
- **सहायता:** गठित प्रत्येक नए एफपीओ के लिए पांच साल की अवधि के लिए सहायता।
- **वित्तीय सहायता:** योजना के तहत प्रत्येक एफपीओ को 3 साल के लिए प्रबंधन लागत के लिए 18 लाख रुपये।
- **मैचिंग इक्विटी ग्रांट :** 10 लाख रुपये तक। एफपीओ के प्रत्येक किसान सदस्य को 2,000 रुपये की सीमा दी जाएगी, जिसकी सीमा प्रति एफपीओ 15.00 लाख रुपये होगी।
- **क्रेडिट गारंटी सुविधा:** प्रति एफपीओ 2 करोड़ रुपये तक का प्रोजेक्ट लोन।
- **क्रेडिट गारंटी फंड:** एफपीओ को लोन देने के लिए वित्तीय संस्थानों को क्रेडिट गारंटी कवर प्रदान करने के लिए।
- **ओपनडीसी प्लेटफॉर्म:** देश भर में ग्राहकों को ऑनलाइन अपना माल बेचने के लिए, 8,000 पंजीकृत किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) में से 5,000 से अधिक ने ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ओपनडीसी) पोर्टल पर नामांकन कराया है।
- **10,000 एफपीओ को सीएससी में बदलने के लिए समझौता ज्ञापन:** सीएससी एसपीवी (कॉमन सर्विसेज सेंटर स्पेशल पर्पज व्हीकल) और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के बीच '10,000 एफपीओ के गठन और संवर्धन योजना' के तहत पंजीकृत एफपीओ को सीएससी में बदलने और उन्हें नागरिक-केंद्रित सेवाएं प्रदान करने में सहायता करने के लिए समझौता ज्ञापन।

**योजना का महत्व**

- जीवंत और संधारणीय आय-उन्मुख खेती के विकास को सुगम बनाना।
- किसानों के उत्पादों के लिए बेहतर तरलता और बाजार संपर्क।
- एफपीओ को कुशल क्षमता निर्माण प्रदान करके उनकी कृषि उद्यमशीलता क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करना।
- विस्तार सेवाओं, समकालीन प्रौद्योगिकी, जीएपी पर सहकारी प्रशिक्षण और कृषि उत्पादों की ट्रेसबिलिटी की गारंटी तक पहुंच।
- बिना किसी संपार्श्विक के स्टॉक के खिलाफ संस्थागत ऋण तक पहुंच।
- किसानों के लिए अधिक सौदेबाजी की शक्ति और उत्पादन और प्रसंस्करण गतिविधियों में अधिक गुणवत्ता अभिविन्यास।
- प्रतिकूल मूल्य उतार-चढ़ाव और संकटग्रस्त बिक्री को रोकना या नियंत्रित करना संभव है।
- विभिन्न स्थानों और अन्य कृषि-संबंधी सलाह में कीमतों और मात्रा के बारे में जानकारी के प्रसार के लिए संचार में आसानी।
- थोक परिवहन और एकत्रीकरण से विपणन खर्च कम होता है।
- वस्तुओं के एकत्रीकरण के माध्यम से पैमाने का निर्माण करने से पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं का लाभ मिलता है और व्यापारियों, प्रसंस्करणकर्ताओं और खुदरा विक्रेताओं को खेत की ओर आकर्षित किया जाता है।
- सहकारी भंडारण और मूल्य संवर्धन की सुविधाओं से फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है।
- थोक मूल्यों पर बड़ी मात्रा में सभी आवश्यक इनपुट खरीदकर, विनिर्माण या खेती की लागत को कम किया जा सकता है।

### किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)

- **किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)** एक सामान्य नाम है, जो कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के उत्पादन और विपणन में पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं के माध्यम से सामूहिक लाभ उठाने के उद्देश्य से गठित किसान-उत्पादकों के संगठन को संदर्भित करता है।
- **स्वामित्व:** एफपीओ का स्वामित्व सदस्य किसानों के पास होता है।
- **विधायी ढांचा:** संबंधित राज्यों के कंपनी अधिनियम या सहकारी समिति अधिनियम का भाग IXA।
- **उदाहरण:** चेतना ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर, इंडियन ऑर्गेनिक फार्मर्स प्रोड्यूसर्स कंपनी लिमिटेड, बलिराजा कृषक।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. 10,000 किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) योजना के गठन और संवर्धन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे बजट 2025-26 में लॉन्च किया गया था।
2. यह गठित प्रत्येक नए एफपीओ को पाँच वर्ष की अवधि के लिए सहायता प्रदान करता है।
3. इसका उद्देश्य हर साल 10,000 किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) पंजीकृत करना है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन सा सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2  
(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

(9) :211E

### राष्ट्रीय गोकुल मिशन

**चर्चा में क्यों:** केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में वित्त वर्ष 2024-25 और 2025-26 के लिए महत्वपूर्ण बजट वृद्धि के साथ संशोधित राष्ट्रीय गोकुल मिशन (आरजीएम) को मंजूरी दी। यह कदम स्वदेशी नस्लों की सुरक्षा और सुधार तथा डेयरी उत्पादन को बढ़ाने पर भारत के फोकस को मजबूत करता है।

#### मुख्य विवरण:

- **कुल आवंटन:** ₹3400 करोड़
- स्वदेशी नस्लों और डेयरी विकास को बढ़ावा देने पर ध्यान
- पशुपालकों के लिए सब्सिडी और वित्तीय सहायता

#### राष्ट्रीय गोकुल मिशन के बारे में:

2014 में शुरू किए गए राष्ट्रीय गोकुल मिशन का उद्देश्य गोकुल ग्राम (स्वदेशी नस्ल पालन केंद्र) स्थापित करके स्वदेशी मवेशियों की नस्लों को संरक्षित और बढ़ावा देना, एआई (कृत्रिम गर्भाधान) सेवाओं को मजबूत करना और आनुवंशिक उन्नयन कार्यक्रम करना है।

### उपलब्धियाँ:

- दूध उत्पादन में 63.55% की वृद्धि हुई।
- उत्पादकता में 26.34% की वृद्धि हुई।
- 23.82 लाख से अधिक गर्भाधान किए गए।

### संशोधित गोकुल मिशन:

संशोधित मिशन में उत्पादकता में वृद्धि, मवेशियों के आनुवंशिक सुधार और उच्च आय के माध्यम से किसानों के लिए वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने पर अधिक ध्यान दिया जाएगा।

### मुख्य विशेषताएँ:

- **किसानों के लिए वित्तीय सहायता:** संशोधित मिशन में बछिया पालन केंद्र स्थापित करने, किफायती देखभाल और उच्च गुणवत्ता वाले पशुधन के विकास के लिए 35% सब्सिडी प्रदान की जाती है।
- **ब्याज अनुदान:** आईवीएफ बछिया खरीदने वाले किसानों को 3% ब्याज अनुदान दिया जाता है, जिससे आधुनिक प्रजनन तकनीकों को अपनाने को प्रोत्साहन मिलता है।
- **स्वदेशी नस्ल पर ध्यान:** मिशन आनुवंशिक उन्नयन कार्यक्रमों के माध्यम से स्वदेशी मवेशियों की नस्लों की आनुवंशिक गुणवत्ता को संरक्षित और बढ़ाने पर जोर देता है।
- **बुनियादी ढांचे का विकास:** एआई सेवाओं और आईवीएफ केंद्रों जैसे आधुनिक प्रजनन बुनियादी ढांचे में निवेश।
- **किसान सशक्तिकरण:** इसका लक्ष्य उन्नत मवेशी प्रबंधन के माध्यम से दूध की पैदावार और उत्पादकता को बढ़ाकर किसानों की आय में वृद्धि करना है।

### निष्कर्ष:

संशोधित राष्ट्रीय गोकुल मिशन भारत के डेयरी और पशुधन क्षेत्रों को सुरक्षित करने में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो उत्पादकता लाभ और किसान कल्याण दोनों का वादा करता है।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन संशोधित राष्ट्रीय गोकुल मिशन की विशेषता नहीं है?

- बछिया पालन केंद्रों के लिए 35% सब्सिडी
- IVF बछियों की खरीद पर 3% ब्याज छूट
- डेयरी उत्पादन के लिए विदेशी मवेशियों की नस्लों का आयात
- देशी मवेशियों की नस्लों का संरक्षण और संवर्धन

(C) : 2024

#### भीम-यूपीआई (BHIM UPI)

**चर्चा में क्यों:** मंत्रिमंडल ने हाल ही में भारत में डिजिटल भुगतान को मजबूत करने के उद्देश्य से कम मूल्य वाले भीम-यूपीआई व्यक्ति से व्यापारी (पी2एम) लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन योजना को मंजूरी दी है।

### मुख्य विवरण:

- मंत्रिमंडल ने व्यक्ति से व्यापारी (पी2एम) भुगतान के लिए कम मूल्य वाले भीम-यूपीआई लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन योजना को मंजूरी दी है।
- वित्त वर्ष 2024-25 के लिए ₹1,500 करोड़ के परिव्यय वाली यह योजना छोटे व्यापारियों को डिजिटल भुगतान अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए ₹2,000 से कम के डिजिटल लेनदेन को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित है।
- इस पहल का उद्देश्य वित्तीय समावेशन का विस्तार करना, ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल भुगतान बुनियादी ढांचे में सुधार करना और पूरे देश में यूपीआई के उपयोग को बढ़ावा देना है।

### भीम के बारे में:

भीम (भारत इंटरफेस फॉर मनी) एक सरकारी यूपीआई आधारित मोबाइल भुगतान प्लेटफॉर्म है जिसे एनपीसीआई द्वारा वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और डिजिटल लेनदेन को सरल बनाने के लिए विकसित किया गया है।

### योजना की विशेषताएँ:

- **लेन-देन सीमा:** यह योजना ₹2,000 से कम के UPI लेन-देन को प्रोत्साहित करती है, विशेष रूप से छोटे और सूक्ष्म व्यापारियों को लक्षित करती है।
- **व्यापारी अपनाना:** यह योजना छोटे व्यापारियों के बीच व्यापक डिजिटल भुगतान स्वीकृति को बढ़ावा देती है, जिससे उन्हें नकद-आधारित लेन-देन से डिजिटल भुगतान में संक्रमण करने में सक्षम बनाया जाता है।
- **ग्रामीण और अर्ध-शहरी फोकस:** डिजिटल पैठ बढ़ाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों और टियर-3 शहरों में डिजिटल भुगतान के लाभों को बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया है।
- **डिजिटल साक्षरता में वृद्धि:** इस योजना से व्यापारियों के बीच डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, विशेष रूप से वंचित समुदायों में, UPI को अपनाने को प्रोत्साहित करके।
- **वित्तीय समावेशन:** यह कार्यक्रम बिना बैंक वाले और कम बैंक वाले लोगों को डिजिटल भुगतान प्लेटफॉर्म से जोड़ने में सहायता करता है, जो वित्तीय समावेशन के समग्र लक्ष्य में योगदान देता है।
- **प्रोत्साहन संरचना:** व्यापारियों को 2,000 रुपये तक के लेनदेन के लिए 0.15% प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा, जिससे छोटे व्यवसायों को डिजिटल भुगतान स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्न में से कौन भीम-यूपीआई लेनदेन के लिए प्रोत्साहन योजना की विशेषताओं का सही वर्णन करता है?

- ₹2,000 से कम मूल्य के लेनदेन पर ध्यान केंद्रित करें।
- मुख्य रूप से मेट्रो शहरों में डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने का लक्ष्य है।
- डिजिटल भुगतान स्वीकार करने के लिए व्यापारियों को प्रोत्साहन दिया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है?

- केवल 1 और 3
- 1, 2 और 3
- केवल 1
- केवल 3

(D) : 2024

## जयपुर घोषणापत्र और परिपलता के लिए शहर गठबंधन

**चर्चा में क्यों:** भारत ने परिपलता के लिए शहर गठबंधन (सिटीज कोलिशन फॉर सर्कुलरिटी) (सी-3) की शुरुआत की, जो सतत शहरी विकास के लिए शहर-दर-शहर सहयोग, ज्ञान-साझाकरण और निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए एक बहु-राष्ट्र गठबंधन है।

### मुख्य विवरण: जयपुर घोषणापत्र

- 12वां क्षेत्रीय 3आर (रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकिल) और सर्कुलर इकोनॉमी फोरम जयपुर में आयोजित किया गया।
- फोरम में जयपुर घोषणापत्र को अपनाया गया।

### मुख्य विशेषताएं:

- **गैर-बाध्यकारी प्रतिबद्धता:** यह एशिया-प्रशांत देशों के लिए एक सहयोगात्मक, गैर-राजनीतिक ढांचा है।
- **फोकस क्षेत्र:**
  - ◆ संसाधन दक्षता और सर्कुलर अर्थव्यवस्था एकीकरण।
  - ◆ जलवायु लचीलापन और कम कार्बन शहरी विकास।
  - ◆ अपशिष्ट प्रबंधन और नवाचार के लिए क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करना।
- **रणनीतिक लक्ष्य:**
  - ◆ वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों के साथ संरेखित करना, जिसमें संयुक्त राष्ट्र एसडीजी और पेरिस समझौता शामिल है।
  - ◆ सार्वजनिक-निजी भागीदारी और प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों को बढ़ावा देना।

### परिपलता के लिए शहरों के गठबंधन (सी-3) के बारे में:

- जयपुर घोषणा के हिस्से के रूप में, वैश्विक गठबंधन के रूप में एक सहयोगी ज्ञान मंच, सी-3 (परिपलता के लिए शहरों का गठबंधन) पर सहमति हुई।
- **संरचना:** यह एक बहुराष्ट्रीय गठबंधन है, जिसमें परिचालन ढांचे को अंतिम रूप देने के लिए एक प्रस्तावित कार्य समूह है।
- **उद्देश्य:**
  - ज्ञान साझा करने, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए शहर-दर-शहर साझेदारी को सक्षम करना।
  - स्थानीय समाधानों के माध्यम से सर्कुलर अर्थव्यवस्था को अपनाने में तेजी लाना।
- **फोकस क्षेत्र**
  - अपशिष्ट से संसाधन नवाचार (जैसे बायो-सीएनजी, प्लास्टिक/ई-कचरा पुनर्चक्रण)।
  - आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ पारंपरिक प्रथाओं का एकीकरण। (जैसे, राजस्थान का वर्षा जल संचयन)

### चक्रीय अर्थव्यवस्था (सर्कुलर इकोनॉमी):

- सर्कुलर इकोनॉमी उत्पादन और उपभोग का एक मॉडल है, जिसमें मौजूदा सामग्रियों और उत्पादों को यथासंभव लंबे समय तक साझा करना, पट्टे पर देना, पुनः उपयोग करना, मरम्मत करना, नवीनीकरण करना और पुनर्चक्रण करना शामिल है। इस तरह, उत्पादों का जीवन चक्र बढ़ाया जाता है।
- व्यवहार में, इसका तात्पर्य कचरे को कम से कम करना है।

- जब कोई उत्पाद अपने जीवन के अंत तक पहुँच जाता है, तो उसकी सामग्री को जहाँ भी संभव हो, पुनर्चक्रण के माध्यम से अर्थव्यवस्था के भीतर रखा जाता है। इनका बार-बार उत्पादक रूप से उपयोग किया जा सकता है, जिससे और अधिक मूल्य का सृजन होता है।



### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन सा कथन चक्रीय अर्थव्यवस्था के प्राथमिक लक्ष्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

- अपशिष्ट को कम करना और पुनः उपयोग, मरम्मत और पुनर्चक्रण के माध्यम से उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना।
- पर्यावरणीय प्रभावों पर विचार किए बिना उत्पादन में वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करना।
- उपभोक्ता सुविधा और स्वच्छता के लिए एकल-उपयोग वाले उत्पादों को प्राथमिकता देना।
- मुख्य रूप से लैंडफिलिंग और भस्मीकरण जैसे कुशल अपशिष्ट निपटान विधियों पर ध्यान केंद्रित करना।

(ए) : 2020

### पशु औषधि पहल

**चर्चा में क्यों:** भारत सरकार ने पशुओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए पशु औषधि पहल शुरू की है, ताकि सस्ती, उच्च गुणवत्ता वाली जेनेरिक पशु चिकित्सा दवाइयाँ उपलब्ध कराई जा सकें।

#### पशु औषधि पहल के मुख्य पहलू:

- **सस्ती पशु चिकित्सा दवाइयाँ:** जन औषधि के बाद तैयार की गई, पशुपालकों के लिए स्वास्थ्य सेवा लागत को कम करने के लिए कम लागत वाली जेनेरिक पशु चिकित्सा दवाइयाँ उपलब्ध कराई गई।

- **पशु औषधि केंद्रों की स्थापना:** पशु चिकित्सा दवाइयाँ वितरित करने के लिए समर्पित केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जिससे पशुओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाले उपचारों तक आसान पहुँच सुनिश्चित होगी।
- **पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एलएचडीसीपी):** ₹3,880 करोड़ आवंटन के साथ एलएचडीसीपी में एकीकृत, तथा पशु औषधि घटक के लिए ₹75 करोड़ निर्धारित।
- **पशुधन रोगों को लक्षित करना:** खुरपका एवं मुंहपका रोग (एफएमडी), ब्रुसेल्लोसिस, पीपीआर, तथा गांठदार त्वचा रोग जैसी बीमारियों पर ध्यान केंद्रित करना, जो उत्पादकता में बड़ी हानि का कारण बनते हैं।
- **मौजूदा बुनियादी ढांचे का लाभ उठाना:** यह पहल पशु चिकित्सा दवाओं के कुशल वितरण और व्यापक पहुँच के लिए मौजूदा जन औषधि नेटवर्क का उपयोग करेगी।
- **किसानों के लिए सहायता:** पशुधन स्वास्थ्य में सुधार और उत्पादकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, उपचार लागत को कम करके किसानों की आर्थिक भलाई को लाभ पहुंचाना।

### स्वावलंबिनी

**चर्चा में क्यों:** श्री जयंत चौधरी ने महिला उद्यमिता कार्यक्रम स्वावलंबिनी का शुभारंभ किया।

#### मुख्य विवरण:

- कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) ने नीति आयोग के सहयोग से मेरठ के चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में महिला उद्यमिता कार्यक्रम स्वावलंबिनी का शुभारंभ किया, जो भारत में महिला उद्यमिता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

#### स्वावलंबिनी के बारे में:

- यह युवा महिलाओं को अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने के लिए आवश्यक कौशल और आत्मविश्वास से सशक्त बनाने की पहल है।
- **योजना का उद्देश्य:** स्वावलंबिनी का उद्देश्य युवा महिलाओं के लिए एक संरचित और चरण-वार उद्यमशीलता यात्रा स्थापित करना है।
- **मुख्य घटक:** कार्यक्रम प्रतिभागियों को जागरूकता निर्माण, कौशल विकास, सलाह और वित्त पोषण सहायता सहित विभिन्न चरणों से गुजारेगा।
- **बेंचमार्क स्थापित करना:** होनहार महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों को बढ़ावा देने और मान्यता देने के माध्यम से, यह पहल भारत में महिला उद्यमिता के भविष्य के लिए एक बेंचमार्क स्थापित करना चाहती है।
- **प्रशिक्षण के चरण:**
  - यह कार्यक्रम युवा महिलाओं को विचार से लेकर सफल उद्यम निर्माण तक के संक्रमण में सहायता करने के लिए एक संरचित, बहु-चरणीय प्रशिक्षण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।
  - इसकी शुरुआत उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (ईएपी) से होती है, जो दो दिवसीय कार्यशाला है, जिसका उद्देश्य लगभग 600 महिला छात्राओं को मौलिक उद्यमिता अवधारणाओं, बाज़ार अवसरों और आवश्यक व्यावसायिक कौशल से परिचित कराना है।
  - इसके बाद महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) होता है, जो 300 चयनित छात्राओं के लिए 40 घंटे का प्रशिक्षण कार्यक्रम है।
  - ईडीपी में व्यवसाय विकास, वित्त पहुँच, बाज़ार संपर्क, अनुपालन और कानूनी सहायता के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है।

#### योजना के सकारात्मक प्रभाव:

- महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने वाले पारिस्थितिकी तंत्र की वकालत करके, स्वावलंबिनी उत्तर भारत और उससे आगे एक महत्वपूर्ण प्रभाव पैदा करने के लिए तैयार है।
- इस पहल का उद्देश्य कम से कम 10% ईडीपी प्रशिक्षित प्रतिभागियों को सफल उद्यम स्थापित करते हुए देखना है, जो भारत में एक आत्मनिर्भर, महिला-नेतृत्व वाले उद्यमशील परिदृश्य के बड़े दृष्टिकोण में योगदान देगा।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. हाल ही में चर्चा में रही स्वावलंबिनी योजना किससे संबंधित है:

- MMR और IMR को कम करना
- महिला उद्यमियों को AI प्रशिक्षण
- महिला उद्यमिता कार्यक्रम
- महिला किसानों को जैविक खेती सिखाना

(C) : 2022

### सागरमाला

**चर्चा में क्यों:** सागरमाला स्टार्ट-अप इनोवेशन इनिशिएटिव (S2I2) को 4वें राष्ट्रीय सागरमाला शीर्ष समिति (NSAC) की बैठक में लॉन्च किया गया, जिसका उद्देश्य समुद्री क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देना है।

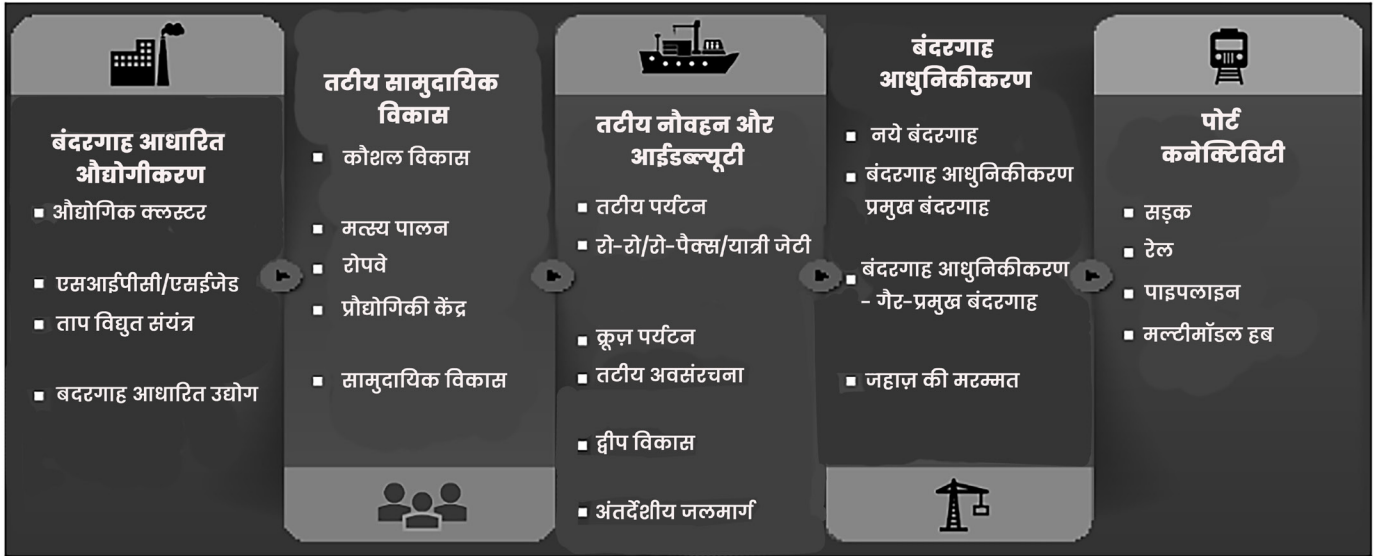
#### सागरमाला स्टार्ट अप इनोवेशन इनिशिएटिव (S2I2) के बारे में:

- यह एक दूरदर्शी कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य समुद्री क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देना है।
- S2I2 का उद्देश्य ग्रीन शिपिंग, स्मार्ट पोर्ट, समुद्री रसद, जहाज निर्माण प्रौद्योगिकी और सतत तटीय विकास जैसे क्षेत्रों में काम करने वाले स्टार्टअप को सशक्त बनाना है।
- यह पहल अत्याधुनिक समाधानों को विकसित करने के लिए वित्त पोषण, मार्गदर्शन और उद्योग भागीदारी प्रदान करेगी।
- S2I2 के माध्यम से, समुद्री क्षेत्र में RISE - अनुसंधान, नवाचार, स्टार्टअप और उद्यमिता की एक नई लहर देखने को मिलेगी - जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देगी और परिवर्तनकारी तकनीकी प्रगति को सामने लाएगी।
- इसका उद्देश्य भारत में बंदरगाह और समुद्री क्षेत्र में नवाचार और उद्यमिता का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है। यह क्षेत्र की चुनौतियों का समाधान करने के लिए नए विचारों, ऊर्जा और युवाओं को लाने का प्रयास करता है।
- MoS संस्थानों, शैक्षणिक और प्रशिक्षण संस्थानों, अनुसंधान संस्थानों और CEMS, NTCPWC, CICMT, अन्य सरकारी विभागों और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग से, यह समुद्री नवाचार केंद्र बनाने के लिए स्टार्टअप को वित्तीय, संस्थागत, बुनियादी ढाँचा, मार्गदर्शन और नए बाजार तक पहुँच प्रदान करेगा।

#### सागरमाला कार्यक्रम के बारे में:

- सागरमाला कार्यक्रम, बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय की एक प्रमुख पहल है, जो देश के समुद्री क्षेत्र को बदलने के लिए भारत सरकार द्वारा एक दूरदर्शी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।

- भारत की व्यापक तटरेखा, नौगम्य जलमार्ग और रणनीतिक समुद्री व्यापार मार्गों के साथ, सागरमाला का उद्देश्य बंदरगाह आधारित विकास और तटीय समुदाय के उत्थान के लिए इन संसाधनों की अप्रयुक्त क्षमता को अनलॉक करना है।
- मार्च 2015 में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित, सागरमाला घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों के लिए रसद लागत को कम करके रसद क्षेत्र के प्रदर्शन को बढ़ाने का प्रयास करता है।
- तटीय और जलमार्ग परिवहन का लाभ उठाकर, कार्यक्रम का उद्देश्य व्यापक बुनियादी ढांचे के निवेश की आवश्यकता को कम करना है, इस प्रकार रसद को अधिक कुशल बनाना और भारतीय निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करना है।
- सागरमाला से जुड़े मुख्य पहलू:
  - न्यूनतम बुनियादी ढांचे के निवेश के साथ EXIM और घरेलू व्यापार के लिए रसद लागत को कम करना।
  - मल्टी-मॉडल परिवहन में घरेलू जलमार्ग (अंतर्देशीय और तटीय) को बढ़ाना।
  - तट के करीब उद्योगों को स्थापित करके थोक वस्तुओं की रसद लागत को कम करना।
  - बंदरगाहों और समुद्री क्षेत्र में नौकरियों का सृजन और कौशल का विकास करना।
- परियोजनाओं के समग्र सेट को 5 स्तंभों और 24 श्रेणियों में विभाजित किया गया है।



- आगे की राह: सागरमाला के मौजूदा संस्करण को अगले कुछ वर्षों में पूरा किया जाना है, सरकार जल्द ही 40,000 करोड़ रुपये के बजटीय कोष के साथ इसका दूसरा संस्करण शुरू करेगी, जिसमें जहाज निर्माण, मरम्मत और रीसाइक्लिंग पर विशेष ध्यान दिया जाएगा

**चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल**

**CGHAHAL ACADEMY**

'द हिंदू' और 'इंडियन एक्सप्रेस' से 10 बहुविकल्पीय प्रश्नों की दैनिक प्रश्नोत्तरी

क्यू आर कोड स्कैन करें

**THE HINDU**

**The Indian EXPRESS**

### भारत @2047: भारत को तकनीक आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने की रिपोर्ट

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में नैसकॉम और बैन एंड कंपनी ने संयुक्त रूप से एक रिपोर्ट प्रकाशित की, इंडिया@2047: ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया इनटू ए टेक-ड्रिवन इकोनॉमी।

#### रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:

- 23-35 ट्रिलियन डॉलर की अनुमानित जीडीपी के साथ, भारत के 2047 तक लगातार 8%-10% वार्षिक वृद्धि के कारण उच्च आय वाला राष्ट्र बनने की संभावना है।
- 2047 तक, विनिर्माण भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 32% हिस्सा होगा, जबकि सेवा क्षेत्र का हिस्सा 60% होने की संभावना है।
- प्रमुख विकास स्तर:** इलेक्ट्रॉनिक्स, ऊर्जा, रसायन, मोटर वाहन और सेवा उद्योग प्रमुख विकास लीवर के रूप में काम करेंगे।
- कृषि क्षेत्र:** परिशुद्ध कृषि, डिजिटलीकरण, स्वचालित कृषि और कटाई, और अन्य कृषि नवाचार उत्पादन बढ़ाएंगे और संसाधन उपयोग को अधिकतम करेंगे।
- विनिर्माण क्षेत्र:** हाइपर-ऑटोमेशन, 3डी और 4डी एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग, क्वांटम-संचालित आपूर्ति श्रृंखलाएं और सर्कुलर मैन्युफैक्चरिंग सभी विनिर्माण के विस्तार में योगदान देंगे और अधिक संधारणीय और प्रभावी उत्पादन की अनुमति देंगे।
- सेवा क्षेत्र:** AI/एमएल और जनरेटिव AI, क्वांटम कंप्यूटिंग और ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस को अपनाने से सेवा उद्योग को आगे बढ़ने में मदद मिलेगी, जिससे स्वचालन, निर्णय लेने और उपभोक्ता अनुभवों में उल्लेखनीय सुधार होगा।

#### मुख्य अनुशंसाएँ:

- रोजगार सृजन:** 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उच्च-मूल्य वाली नौकरियाँ सृजित करने और महिला श्रम भागीदारी को 40% से 50% तक बढ़ाने की आवश्यकता हो सकती है। क्योंकि 200 मिलियन लोगों के कार्यबल में शामिल होने की संभावना है।
- इलेक्ट्रॉनिक्स:** टचलेस विनिर्माण, बायोडिग्रेडेबल पार्ट्स और AI-सक्षम चिप डिज़ाइन दक्षता बढ़ा सकते हैं और बिजली की बर्बादी में कटौती कर सकते हैं। ये विकास भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण में 25% हिस्सेदारी के साथ एक विश्वव्यापी नेता के रूप में स्थापित कर सकते हैं, घरेलू उत्पादन बढ़ा सकते हैं, आयात पर निर्भरता कम कर सकते हैं और लगभग 20 मिलियन रोजगार सृजित कर सकते हैं।
- ऊर्जा:** माइक्रोग्रिड जैसे विकेंद्रीकृत समाधान पहुँच में सुधार कर सकते हैं, स्मार्ट ग्रिड ऊर्जा वितरण को अनुकूलित करने में सहायता कर सकते हैं। उन्नत परमाणु और हरित हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों में ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने, कार्बन-तटस्थ प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने और भारत को अक्षय ऊर्जा में अग्रणी के रूप में स्थापित करने की क्षमता है।

- रसायन:** डिजिटल द्विन और AI-संचालित आणविक डिज़ाइन R&D उत्पादकता को बढ़ाएंगे और नवाचार को बढ़ावा देंगे। वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के लगभग 10% के लिए लक्ष्य बनाना, विशेष रूप से विशेष रसायनों, जैव-आधारित उत्पादन और हरित प्रथाओं में, स्थिरता और निर्यात प्रतिस्पर्धा में सुधार कर सकता है।
- ऑटोमोटिव:** उन्नत इलेक्ट्रिक वाहन (EV) बैटरी, नेटवर्क सॉफ्टवेयर और स्वायत्त प्रौद्योगिकियाँ संभवतः विद्युतीकरण के मुख्य चालक बनने जा रही हैं। वाहन-से-सब कुछ (V2X) कनेक्टिविटी और EV विनिर्माण क्लस्टर में निवेश भारत को स्मार्ट परिवहन समाधानों के लिए एक वैश्विक केंद्र बना सकता है।
- सेवाएँ:** इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), ब्लॉकचेन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) में खुदरा, स्वास्थ्य सेवा और वित्त सहित कई क्षेत्रों में क्रांति लाने की क्षमता है।
- सार्वजनिक-निजी भागीदारी:** सार्वजनिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों के बीच सहयोग से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा मिल सकता है।
- वित्तपोषण:** सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में अनुसंधान और विकास व्यय को बढ़ाने से घरेलू नवाचार को बढ़ावा मिल सकता है और अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं पर भारत की निर्भरता कम हो सकती है।
- विदेशी व्यापार:** अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे विकासशील देशों में निर्यात विविधीकरण और मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) के माध्यम से वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत की स्थिति को मजबूत करने से स्थापित व्यापारिक भागीदारों पर निर्भरता कम हो सकती है।

क्षेत्रीय विस्तार को स्थिरता और समावेशन के साथ समन्वयित करके, भारत 2047 तक 23 से 35 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। इस परिवर्तन से विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा में सुधार, अपने नागरिकों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने और देश को सामाजिक, तकनीकी और आर्थिक क्षेत्रों में अग्रणी बनाने की क्षमता है।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत @2047: भारत को तकनीक-संचालित अर्थव्यवस्था में बदलना रिपोर्ट किसके द्वारा प्रकाशित की गई थी?

- (a) विश्व आर्थिक मंच (b) विश्व बैंक  
(c) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (d) इनमें से कोई नहीं

(P) : 2122

## अमेरिकी टैरिफ अनिश्चितता के बीच भारत की व्यापार लचीलेपन पर एसबीआई रिपोर्ट

**चर्चा में क्यों:** भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने एक विशेष रिपोर्ट में कहा कि टैरिफ की बढ़ती अनिश्चितता वाली दुनिया में भारत को लाभ होगा।

### रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:

- **पारस्परिक शुल्कों का भारत पर प्रभाव**
  - **न्यूनतम निर्यात व्यवधान:** शुल्कों के बाद अमेरिका को भारतीय निर्यात में 3-3.5% की गिरावट आ सकती है, लेकिन नुकसान की भरपाई निम्नलिखित तरीकों से होने की संभावना है:
    - ◆ निर्यात बास्केट (विनिर्माण और सेवाएँ) का विविधीकरण।
    - ◆ उत्पादों में मूल्य संवर्धन और वैकल्पिक बाजारों की खोज।
    - ◆ नए व्यापार मार्ग (जैसे, यूरोप से मध्य पूर्व के माध्यम से अमेरिका)।
  - **एल्युमिनियम और स्टील शुल्क:** भारत का अमेरिका के साथ मामूली व्यापार घाटा है - एल्युमिनियम वस्तुओं में \$13 मिलियन और स्टील वस्तुओं में \$406 मिलियन।
- **भारत के रणनीतिक व्यापार उपाय**
  - **निर्यात विविधीकरण और आपूर्ति श्रृंखला पुनः डिजाइन:**
    - ◆ विनिर्माण और सेवाओं में निर्यात लक्ष्यों का विस्तार करना।
    - ◆ वैकल्पिक बाजारों और आपूर्ति श्रृंखला मार्गों (जैसे मध्य पूर्व गलियारे) का लाभ उठाना।
  - **मुक्त व्यापार समझौते (FTA):**
    - ◆ भारत ने मॉरीशस, UAE, ऑस्ट्रेलिया सहित कई FTA पर हस्ताक्षर किए - टैरिफ कटौती, सेवाएँ, डिजिटल व्यापार और बौद्धिक संपदा को कवर करते हुए।
    - ◆ यू.के., कनाडा, EU के साथ चल रही बातचीत - सेवाओं, डिजिटल व्यापार और सतत विकास को लक्षित करना।
  - **डिजिटल व्यापार:** डिजिटल अर्थव्यवस्था विस्तार के माध्यम से 2025 तक भारत के सकल घरेलू उत्पाद में \$1 ट्रिलियन का योगदान करने का अनुमान है।
- **भविष्य के अवसर और अनुमान**
  - ◆ **भू-राजनीतिक बदलाव:** यू.एस.-चीन व्यापार तनाव और आपूर्ति श्रृंखला पुनर्संरचना भारत के लिए अवसर पैदा करते हैं।
  - ◆ **तकनीक और नवाचार:** एक संभावित 'डीप सीक' क्षण अमेरिकी तकनीक प्रभुत्व को चुनौती दे सकता है, भारत को डिजिटल व्यापार का लाभ उठाने के अवसर प्रदान कर सकता है।
  - ◆ **विकास अनुमान:** संरचनात्मक सुधार और निजी क्षेत्र की भीड़-भाड़ भारत की दीर्घकालिक जीडीपी क्षमता को बढ़ा सकती है।

### मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए)

- एफटीए देश(देशों) या क्षेत्रीय ब्लॉकों के बीच आपसी बातचीत के माध्यम से व्यापार बाधाओं को कम करने या खत्म करने के लिए एक समझौता है, जिसका उद्देश्य व्यापार को बढ़ाना है।
- यह वस्तुओं, सेवाओं, निवेश, बौद्धिक संपदा, प्रतिस्पर्धा, सरकारी खरीद और अन्य क्षेत्रों को शामिल करने के लिए व्यापक हो सकता है।

- व्यापार समझौते द्विपक्षीय, बहुपक्षीय या बहुपक्षीय हो सकते हैं।
  - द्विपक्षीय व्यापार समझौते तब होते हैं जब दो देश व्यापार के अवसरों का विस्तार करने के लिए व्यापार प्रतिबंधों को हटाने के लिए सहमत होते हैं।
  - बहुपक्षीय समझौते कई देशों के बीच होते हैं, या तो क्षेत्रीय संदर्भ में या अन्यथा।
  - बहुपक्षीय व्यापार समझौतों को आम तौर पर डब्ल्यूटीओ वार्ता के लिए संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह कई देशों को कवर करता है और वैश्विक व्यापार नियम निर्धारित करता है।

### भारत का एफटीए:

- भारत ने 14 मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) और 6 अधिमाम्य व्यापार समझौतों (पीटीए) पर हस्ताक्षर किए हैं।
- एफटीए कई क्षेत्रों में व्यापक है और इसमें गहरी प्रतिबद्धताएं हैं, जबकि पीटीए वस्तुओं के व्यापार तक ही सीमित है और वरीयता मार्जिन (एमओपी) के संदर्भ में केवल टैरिफ उन्मूलन की मांग करता है।
- एफटीए की तुलना में वस्तुओं पर पीटीए का कवरेज भी सीमित है।
- **उदाहरण:**
  - भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौता (ISLFTA)
  - दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFTA)
  - भारत-भूटान व्यापार, वाणिज्य और पारगमन समझौता
  - भारत थाईलैंड अर्ली हार्वेस्ट स्कीम (EHS)
  - भारत-सिंगापुर व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA)
  - आसियान-भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र (AIFTA)
  - भारत-कोरिया व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (IKCEPA)
  - भारत-जापान व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (IJCEPA)
  - भारत-मलेशिया व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (IMCECA)
  - भारत-मॉरीशस व्यापक आर्थिक सहयोग और भागीदारी समझौता (IMCECPA)
  - भारत-नेपाल व्यापार संधि
  - भारत यूएई व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA)
  - भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA)
  - भारत EFTA व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौता (TEPA)

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) और अधिमान्य व्यापार समझौतों (पीटीए) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एफटीए कई क्षेत्रों में व्यापक है और इसमें गहरी प्रतिबद्धताएं हैं।
2. पीटीए वस्तुओं के व्यापार तक ही सीमित है और वरीयता मार्जिन (एमओपी) के संदर्भ में केवल टैरिफ उन्मूलन की मांग करता है।
3. वस्तुओं पर पीटीए का कवरेज भी एफटीए की तुलना में सीमित है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने कथन सही हैं?

- |                   |                       |
|-------------------|-----------------------|
| (a) केवल एक       | (b) केवल दो           |
| (c) उपर्युक्त सभी | (d) इनमें से कोई नहीं |

(c) : 2024

- **रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (iDEX):** स्टार्टअप और MSME द्वारा रक्षा उत्पादन में नवाचार को प्रोत्साहित करता है।
- **DRDO परियोजनाएँ:** तेजस, INSAS, आकाश और अर्जुन MBT जैसी स्वदेशी प्रणालियों का विकास।
- **रणनीतिक साझेदारी मॉडल:** निजी क्षेत्र और विदेशी निर्माताओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है।

**निष्कर्ष:**

जबकि भारत ने रक्षा स्वदेशीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है, यह अभी भी महत्वपूर्ण रक्षा जरूरतों के लिए आयात पर निर्भर है। इस निर्भरता को कम करने के लिए मजबूत नीतियों और सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से घरेलू उत्पादन क्षमताओं को मजबूत करना आवश्यक है।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. भारत के रक्षा आयात के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत विश्व स्तर पर सबसे बड़ा हथियार आयातक है।
2. रूस भारत का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता है।
3. भारत ने रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने के लिए रणनीतिक साझेदारी मॉडल लागू किया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है?

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 2 और 3 |
| (c) केवल 1 और 3 | (d) 1, 2 और 3   |

(d) : 2024

**भारत: दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक**

**चर्चा में क्यों:** SIPRI की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत यूक्रेन के बाद विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक बन गया है। स्वदेशीकरण की दिशा में प्रयासों के बावजूद, भारत अपनी रक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए हथियारों के आयात पर बहुत अधिक निर्भर है।

**रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:**

- **आयात पर भारत की निर्भरता:** हथियारों के आयात के मामले में भारत यूक्रेन के बाद दूसरे स्थान पर है। विविधीकरण के प्रयासों के बावजूद रूस भारत का शीर्ष हथियार आपूर्तिकर्ता बना हुआ है।
- **प्रमुख आयात स्रोत:** भारत का 31% आयात रूस से आता है, उसके बाद फ्रांस (29%) और अमेरिका (11%) का स्थान आता है।
- **आपूर्तिकर्ता गतिशीलता में बदलाव:** रूस भारत का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बना हुआ है, लेकिन फ्रांस और इज़राइल जैसे देशों में विविधता के कारण इसकी हिस्सेदारी में गिरावट आई है।
- **यूक्रेन संघर्ष प्रभाव:** यूक्रेन में चल रहे संघर्ष ने वैश्विक हथियारों के हस्तांतरण को काफी प्रभावित किया है, जिसमें यूक्रेन सबसे बड़ा आयातक बनकर उभरा है।
- **सैन्य आधुनिकीकरण में वृद्धि:** भारत अपने रक्षा बलों को आधुनिक बनाने के लिए राफेल लड़ाकू जेट और एस-400 मिसाइल सिस्टम जैसी परिष्कृत प्रणालियों का आयात जारी रखता है।
- **वैश्विक संदर्भ:** भारत रक्षा व्यय में वैश्विक स्तर पर पांचवें स्थान पर है, लेकिन अत्याधुनिक तकनीक के लिए आयात पर निर्भर है।

**हथियारों के आयात को कम करने के लिए भारत की पहल:**

- **आत्मनिर्भर भारत अभियान:** रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता हासिल करने के उद्देश्य से।
- **मेक इन इंडिया:** रक्षा उपकरणों के घरेलू विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा देता है।
- **रक्षा खरीद प्रक्रिया (DPP):** स्वदेशी स्रोतों से खरीद को प्राथमिकता देता है।

**वर्ल्ड ऑफ़ डेब्ट रिपोर्ट 2024**

**चर्चा में क्यों:** संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास द्वारा जारी वर्ल्ड ऑफ़ डेब्ट रिपोर्ट 2024 के अनुसार, वैश्विक सार्वजनिक ऋण 2023 में 97 ट्रिलियन डॉलर के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है।

**रिपोर्ट में उजागर किए गए मुद्दे**

- **वैश्विक सार्वजनिक ऋण में वृद्धि:**
  - **रिकॉर्ड ऋण स्तर:** वैश्विक सार्वजनिक ऋण 2023 में \$97 ट्रिलियन तक पहुंच गया, जो 2022 से \$5.6 ट्रिलियन की वृद्धि है। विकासशील देशों का ऋण विकसित देशों की तुलना में दोगुनी तेज़ी से बढ़ा।
  - **क्षेत्रीय असमानताएँ:**
    - ◆ अफ्रीका का औसत सार्वजनिक ऋण-से-जीडीपी अनुपात 2023 में बढ़कर 61.9% हो गया, जिसमें 46% अफ्रीकी देश 60% ऋण-से-जीडीपी से अधिक हैं।
    - ◆ एशिया और लैटिन अमेरिका में ऋण स्टॉक में वृद्धि देखी गई, लेकिन मुद्रास्फीति और जीडीपी वृद्धि के कारण ऋण-से-जीडीपी अनुपात में गिरावट आई।

- **असमान बोलचाल:** विकासशील देशों का वैश्विक ऋण में 30% हिस्सा है (2010 में 16% से ऊपर), जबकि एशिया (75%), लैटिन अमेरिका (17%) और अफ्रीका (7%) का हिस्सा असमान है।
- **बाहरी ऋण की उच्च लागत और जोखिम:**
  - **महंगा ऋण:** विकासशील देश विकसित देशों की तुलना में 2-12 गुना अधिक ब्याज दर का भुगतान करते हैं (उदाहरण के लिए, अफ्रीका के बॉन्ड की पैदावार जर्मनी की तुलना में 9.8 गुना अधिक है)।
  - **निजी लेनदारों पर निर्भरता:** विकासशील देशों में बाहरी ऋण का 61% निजी लेनदारों को दिया जाता है, जिससे पुनर्गठन जटिल और महंगा हो जाता है।
  - **मुद्रा और बाजार जोखिम:** मुद्रा अवमूल्यन और अस्थिर निवेशक व्यवहार पुनर्भुगतान चुनौतियों को बढ़ाते हैं।
- **सार्वजनिक सेवाओं और विकास पर प्रभाव:**
  - **डायवर्टेड संसाधन:** 54 विकासशील देशों (कुल का 38%) ने 2023 में ब्याज भुगतान के लिए सरकारी राजस्व का  $\geq 10\%$  आवंटित किया, जो 2010 से दोगुना है।
  - **जलवायु कार्रवाई कमजोर:** विकासशील देश जलवायु निवेश पर 2.1% की तुलना में ब्याज पर सकल घरेलू उत्पाद का 2.4% खर्च करते हैं।
- **अप्रभावी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना:**
  - **संकट सहायता का अभाव:** ऋण पुनर्गठन प्रक्रियाएँ धीमी हैं, 2020 के बाद के मामलों में पिछले दशकों की तुलना में अधिक समय लग रहा है।
  - **बहिष्करण शासन:** विकासशील देशों में वैश्विक वित्तीय निर्णय लेने में सार्थक भागीदारी का अभाव है।
  - **अपर्याप्त तरलता उपकरण:** आकस्मिक वित्त तक सीमित पहुँच देशों को अंतिम उपाय के रूप में ऋण लेने के लिए मजबूर करती है।
- **प्रभावी विकास सहायता में कमी:**
  - **संकुचित सहायता:** आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए) 2022 में घटकर 164 बिलियन डॉलर हो गई, तथा ऋण कुल सहायता का 34% हो जाएगा (2012 में यह 28% था)।
  - **उपेक्षित ऋण राहत:** ऋण राहत के लिए संसाधन 2012 में 4.1 बिलियन डॉलर से घटकर 2022 में 300 मिलियन डॉलर रह गए।

## आगे की राह

- **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार:**
  - **समावेशी शासन:** वैश्विक वित्तीय संस्थानों में विकासशील देशों की भागीदारी को बढ़ाना।
  - **प्रभावी ऋण समाधान तंत्र:**
    - ◆ स्वचालित ऋण सेवा निलंबन खंडों के साथ G20 सामान्य ढांचे को मजबूत करना।
    - ◆ बेहतर ऋणदाता समन्वय के माध्यम से ऋण पुनर्गठन समयसीमा में तेजी लाना।
- **ऋण लागत और जोखिम कम करना:**
  - **उधार लेने की लागत कम करना:** रियायती वित्तपोषण और बहुपक्षीय ऋण तक पहुँच का विस्तार करना।
  - **ऋण पारदर्शिता:** अस्थिर उधार को रोकने के लिए रिपोर्टिंग और जोखिम आकलन को मानकीकृत करना।
- **आकस्मिक वित्त का विस्तार करना:**
  - विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) आवंटन को मजबूत करना।

- आईएमएफ अधिभार को निलंबित करना और आपातकालीन वित्तपोषण कोटा बढ़ाना।
- **सतत वित्तपोषण को बढ़ावा देना:**
  - **जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करना:** \$100 बिलियन/वर्ष जलवायु वित्त प्रतिज्ञा को पूरा करना और पेरिस समझौते के लक्ष्यों के साथ निवेश को संरेखित करना।
  - **बहुपक्षीय विकास बैंकों (MDB) को बदलना:** SDG के लिए किफायती दीर्घकालिक वित्तपोषण को बढ़ावा देना।
- **विकास सहायता में सुधार करना:**
  - **ऋण से अनुदान की ओर बदलाव:** ऋण संचय को कम करने के लिए ODA में अनुदान को प्राथमिकता देना।
  - **ऋण राहत को बढ़ावा देना:** स्वैप, पुनर्गठन और राहत कार्यक्रमों के लिए संसाधन आवंटित करना।

## यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित में से किस संगठन ने विश्व ऋण रिपोर्ट 2024 प्रकाशित की?

- (a) विश्व बैंक (b) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष  
(c) संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास (d) विश्व आर्थिक मंच

(c) 2024

## राष्ट्रीय आवास बैंक रिपोर्ट

**चर्चा में क्यों:** राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट, “भारत में आवास के रुझान और प्रगति 2024” प्रकाशित की है, जो भारत में आवास क्षेत्र की वर्तमान स्थिति और भविष्य के दृष्टिकोण का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

### रिपोर्ट के मुख्य बिंदु

- **आवास ऋणों में वृद्धि:**
  - 30 सितंबर, 2024 तक, व्यक्तिगत आवास ऋणों का बकाया ₹33.53 लाख करोड़ तक पहुँच गया, जो वर्ष-दर-वर्ष 14% की वृद्धि दर्शाता है।
- **खंडवार ऋण वितरण:**
  - आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) और निम्न आय समूह (एलआईजी) बकाया व्यक्तिगत आवास ऋणों का 39% हिस्सा है।
  - मध्यम आय समूह (एमआईजी) की हिस्सेदारी 44% है।
  - उच्च आय समूह (एचआईजी) कुल का 17% हिस्सा है।
- **आवास मूल्य सूचकांक:**
  - एनएचबी-रेजिडेक्स ने सितंबर 2024 को समाप्त तिमाही के लिए वर्ष-दर-वर्ष 6.8% की वृद्धि दर्ज की, जो पिछले वर्ष 4.9% थी।
- **सरकारी पहल:**
  - रिपोर्ट में प्रमुख सरकारी कार्यक्रमों को शामिल किया गया है जैसे:
    - ◆ **प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी):** किफायती ग्रामीण आवास पर ध्यान केंद्रित करता है।
    - ◆ **प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (पीएमएवाई-यू):** शहरी क्षेत्रों में कम लागत वाली आवास परियोजनाओं का समर्थन करता है।

- ◆ शहरी बुनियादी ढांचा विकास निधि (यूआईडीएफ): किफायती आवास के लिए बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण को बढ़ाने का लक्ष्य रखता है।
- ◆ किफायती किराये के आवास परिसर (एआरएचसी): प्रवासी श्रमिकों और शहरी गरीबों के लिए आवास समाधान प्रदान करता है।

### आवास क्षेत्र में चुनौतियाँ

- ऋण प्रवाह में क्षेत्रीय असमानताएँ:
  - दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तरी राज्यों को आवास वित्त संवितरण का बहुमत (क्रमशः 35.02%, 30.14% और 28.73%) प्राप्त हुआ, जबकि पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्य 6.1% और 0.68% की हिस्सेदारी के साथ पीछे रह गए। यह असंतुलन अविकसित क्षेत्रों में आवास पहुँच को सीमित करता है।
- आवास वित्त कंपनियों (HFC) की सीमित पहुँच:
  - HFC लचीले ऋण विकल्प प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में उनकी उपस्थिति सीमित है, जिससे आवास वित्त अंतर को पाटने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है।
- हरित इमारतों को कम अपनाना:
  - भारत में केवल 5% इमारतों को 'हरित' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। चुनौतियों में उच्च प्रारंभिक निर्माण लागत, डेवलपर्स के लिए प्रोत्साहन की कमी और स्थिरता लाभों के बारे में सीमित जागरूकता शामिल है।

### आगे की राह

- क्षेत्रीय असमानताओं को संबोधित करना:
  - अविकसित क्षेत्रों में ऋण प्रवाह को बढ़ाने के लिए लक्षित नीतियों को लागू करना, सभी राज्यों में आवास वित्त तक समान पहुँच सुनिश्चित करना।
- एचएफसी आउटरीच का विस्तार करना:
  - एचएफसी को ग्रामीण क्षेत्रों में अपने शाखा नेटवर्क का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित करना, कुशल सेवाएं प्रदान करने और आवास वित्त अंतर को पाटने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना।
- ग्रीन बिल्डिंग को बढ़ावा देना:
  - पर्यावरण के अनुकूल निर्माण के लिए प्रोत्साहन देना, ग्रीन प्रमाणन प्रक्रियाओं को मानकीकृत करना और टिकाऊ आवास के दीर्घकालिक लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना:
  - निर्माण प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और आवास क्षेत्र में पारदर्शिता में सुधार करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), डेटा एनालिटिक्स, 3डी प्रिंटिंग और भूमि अभिलेखों के डिजिटलीकरण जैसी प्रगति का उपयोग करना।

### निष्कर्ष:

क्षेत्रीय असमानताएं, सीमित एचएफसी पहुँच और ग्रीन बिल्डिंग को कम अपनाने जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं। लक्षित नीतियों और तकनीकी एकीकरण के माध्यम से इन मुद्दों को संबोधित करना भारत के आवास क्षेत्र में सतत और समावेशी विकास के लिए आवश्यक है।

### राष्ट्रीय आवास बैंक के बारे में

- **स्थाना:** 1988, राष्ट्रीय आवास बैंक अधिनियम, 1987 के तहत।
- **उद्देश्य:** भारत में आवास वित्त बाजार को विनियमित, बढ़ावा देना और विकसित करना।

- **स्वामित्व:** भारत सरकार के पास 100% स्वामित्व।
- **विनियमन:** आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) की निगरानी करता है, आरबीआई प्राथमिक नियामक है।
- **कार्य:** मध्यम और निम्न आय वर्ग के लिए आवास ऋण तक पहुँच में सुधार करके वित्तीय समावेशन को बढ़ाता है।
- **मुख्यालय:** नई दिल्ली।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. भारत में आवास के रुझान और प्रगति 2024' रिपोर्ट में कौन सी सरकारी पहल शामिल नहीं है?

- प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) 110 रिपोर्ट
- प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (पीएमएवाई-यू)
- शहरी अवसंरचना विकास निधि (यूआईडीएफ)
- स्मार्ट सिटी मिशन

(P) : 25E

### संसदीय पैनल द्वारा कृषि व्यय बढ़ाने और मंत्रालय का नाम बदलने का आग्रह

**चर्चा में क्यों:** चरणजीत सिंह चन्नी की अध्यक्षता वाली एक संसदीय समिति ने सिफारिश की है कि केंद्रीय कृषि मंत्रालय का नाम बदलकर खेत मजदूरों की भूमिका को दर्शाया जाए और कृषि पर खर्च बढ़ाने का आग्रह किया जाए।

#### मुख्य विवरण:

- पैनल ने हाल के वर्षों में कृषि के लिए घटते बजट आवंटन पर प्रकाश डाला और इस प्रवृत्ति को उलटने का आह्वान किया ताकि भारत की 50% से अधिक आबादी जो कृषि पर निर्भर है, को सहायता मिल सके।

#### रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:

- **कृषि वित्त पोषण में गिरावट:** पैनल ने केंद्रीय योजना व्यय में मंत्रालय की हिस्सेदारी में लगातार गिरावट देखी, जो 2021-22 में 3.53% से गिरकर 2025-26 में 2.51% हो गई।
- **मंत्रालय का नाम बदलना:** रिपोर्ट में कृषि मंत्रालय का नाम बदलकर "कृषि, किसान और खेत मजदूर कल्याण विभाग" रखने का सुझाव दिया गया है, ताकि इस क्षेत्र में खेत मजदूरों, खासकर हाशिए के समुदायों के महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाया जा सके।
- **खेत मजदूरों के लिए मजदूरी आयोग:** इसने मजदूरी असमानताओं को दूर करने और इन श्रमिकों की जीवन स्थितियों में सुधार करने के लिए "खेत मजदूरों के लिए न्यूनतम जीवनयापन मजदूरी के लिए राष्ट्रीय आयोग" स्थापित करने की सिफारिश की।

- **अनिवार्य फसल बीमा योजना:** पैल ने दो हेक्टेयर तक की जोत वाले छोटे किसानों के लिए एक निःशुल्क और अनिवार्य फसल बीमा योजना का प्रस्ताव रखा। यह बीमा फसल नुकसान के खिलाफ सुरक्षा जाल प्रदान करेगा और अनौपचारिक उच्च ब्याज वाले ऋणों पर उनकी निर्भरता को कम करेगा।
- **जैविक फसलों के लिए एमएसपी:** इसने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) ढांचे का विस्तार करके जैविक फसलों को भी शामिल करने की सिफारिश की, जिसमें जैविक खेती में संक्रमण के दौरान कम पैदावार की भरपाई के लिए जैविक उत्पादों के लिए एमएसपी पारंपरिक फसलों की तुलना में अधिक निर्धारित किया गया।

#### महत्वपूर्ण सिफारिशें:

- **कृषि व्यय में वृद्धि:** सरकार से कृषि वित्त पोषण में गिरावट को रोकने और इस क्षेत्र को समर्थन देने के लिए केंद्रीय योजना व्यय का उच्च प्रतिशत आवंटित करने का आग्रह किया गया।
- **मंत्रालय का नाम बदलना:** मंत्रालय का नाम बदलने से कृषि नीतियों और योजनाओं में खेत मजदूरों की भूमिका को पहचानने में मदद मिलेगी।
- **अनिवार्य फसल बीमा:** प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की तर्ज पर छोटे किसानों के लिए एक निःशुल्क और अनिवार्य फसल बीमा योजना शुरू की जाए, ताकि फसल नुकसान के खिलाफ वित्तीय स्थिरता प्रदान की जा सके।
- **जैविक उत्पादों के लिए एमएसपी:** किसानों को जैविक कृषि की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए पारंपरिक फसलों की तुलना में उच्च दरों के साथ जैविक खेती के लिए एमएसपी का विस्तार किया जाए।
- **मजदूरों के लिए मजदूरी सहायता:** खेत मजदूरों के लिए न्यूनतम जीवन मजदूरी निर्धारित करने, असमानताओं को दूर करने और जीवन स्तर में सुधार करने के लिए एक राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की जाए।

#### निष्कर्ष:

संसदीय पैलन की रिपोर्ट में तत्काल सुधार, कृषि व्यय में वृद्धि और हाशिप पर पड़े खेतिहर मजदूरों और छोटे किसानों के लिए मजबूत समर्थन की मांग की गई है। अगर इन सिफारिशों को लागू किया जाता है, तो इससे कृषि उत्पादकता में बदलाव आ सकता है, आजीविका सुरक्षित हो सकती है और भारत की खाद्य सुरक्षा बढ़ सकती है।

#### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

##### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. कृषि पर संसदीय पैलन द्वारा निम्नलिखित में से कौन सी सिफारिशें की गई थीं?

1. कृषि के लिए बजटीय आवंटन में वृद्धि करना।
2. खेत मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी के लिए एक राष्ट्रीय आयोग की स्थापना करना।
3. दो हेक्टेयर तक की भूमि वाले किसानों के लिए अनिवार्य फसल बीमा लागू करना।
4. जैविक फसलों को शामिल करने के लिए MSP का विस्तार करना।

उपर्युक्त कथनों में से कितने कथन गलत हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

(p) : 25

## राज्य सड़क परिवहन उपक्रमों (SRTU) की कार्य निष्पादन रिपोर्ट: सड़क परिवहन मंत्रालय

#### रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:

- **वित्तीय घाटा:** MoRTH की 2024-25 की वार्षिक रिपोर्ट से पता चलता है कि कोविड-19 के बाद गति पकड़ने के बावजूद, वित्त वर्ष 22 में 58 SRTUs का शुद्ध घाटा 68% बढ़कर 30,191.93 करोड़ रुपये हो गया।
- वित्त वर्ष 21 में, 58 एसआरटीयू ने महामारी के कारण 29,000 करोड़ रुपये से अधिक का घाटा दर्ज किया।
- **चुनाव मुफ्तखोरी:** दिल्ली, कर्नाटक, तेलंगाना और तमिलनाडु जैसे राज्य महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा की पेशकश कर रहे हैं, लेकिन एसआरटीयू के लिए घाटा बढ़ सकता है जब तक कि राज्य सरकार सब्सिडी या अग्रिम बजटीय सहायता प्रदान नहीं करती।
- **कम बेड़े का उपयोग:** वित्त वर्ष 22 में, औसत बेड़े का उपयोग 72.29% था, जिसमें 1,06,293 बसें चालू थीं। इसी तरह, वित्त वर्ष 21, वित्त वर्ष 20 और वित्त वर्ष 19 में, बेड़े की उपयोग दर क्रमशः 62.54, 87.56 और 88.6 प्रतिशत थी।
- **अधिभोग अनुपात:** सरकारी बसों का अधिभोग अनुपात वित्त वर्ष 2020 में 74.03% से घटकर वित्त वर्ष 22 में 68.49% हो गया है, जिससे एसआरटीयू के लिए कम राजस्व प्राप्त हुआ है।
- **दिव्यांगजनों के लिए सुगम्यता:** 61 राज्य परिवहन उपक्रमों के आंकड़ों से पता चलता है कि कुल 97,165 अंतर-शहरी बसों और 48,325 शहरी परिचालन बसों में से केवल 356 और 10,517 बसों को ही "पूर्ण रूप से सुगम्य" बनाया गया है। अंतर-शहरी और शहरी परिचालनों के लिए सुगम्य बसों (व्हीलचेयर सुगम्यता के बिना) की संख्या क्रमशः 24,860 और 15,308 है।
- **प्रतिस्पर्धा:** निजी बस ऑपरेटर्स और परिवहन के अन्य साधनों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने एसआरटीयू के राजस्व को प्रभावित किया।
- **टिकट किराया:** एसआरटीयू ईंधन की कीमतों में वृद्धि और बसों के अधिभोग अनुपात में कमी के बराबर किराया नहीं बढ़ा पाने के कारण घाटे में हैं।
- **परिचालन व्यय:** एसआरटीयू को ईंधन, रखरखाव और कर्मचारियों के वेतन में बढ़ोतरी जैसे परिचालन व्यय में भी वृद्धि का सामना करना पड़ रहा है। 58 रिपोर्टिंग एसआरटीयू की संयुक्त कर्मचारी संख्या 6,45,954 थी और वित्त वर्ष 22 में कर्मचारी-से-बस अनुपात 4.39 था।

#### लैंग्वेज मैटर: बहुभाषी शिक्षा पर वैश्विक मार्गदर्शन रिपोर्ट

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में, यूनेस्को की वैश्विक शिक्षा निगरानी (जीईएम) टीम ने 'लैंग्वेज मैटर: बहुभाषी शिक्षा पर वैश्विक मार्गदर्शन' रिपोर्ट प्रकाशित की।

#### रिपोर्ट के मुख्य बिंदु:

- यूनेस्को की वैश्विक शिक्षा निगरानी (जीईएम) टीम का अनुमान है कि विश्व की लगभग 40% आबादी के पास ऐसी भाषा में शिक्षा तक पहुँच नहीं है जिसे वे समझ सकें या बोल सकें।
- कुछ निम्न और मध्यम आय वाले देशों में यह प्रतिशत बढ़कर 90% हो जाता है।
- सामुदायिक प्रतिरोध, घरेलू भाषाओं में संसाधनों की कमी और शिक्षकों की अपनी मातृभाषा बोलने की सीमित क्षमता जैसे मुद्दे छात्रों की अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।
- स्कूल में, 31 मिलियन से अधिक विस्थापित छात्रों को भाषाई बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

- उपनिवेशवाद के परिणामस्वरूप, स्थानीय निवासियों को भाषाएँ सीखने के लिए मजबूर किया गया, जिससे स्कूल में स्थानीय भाषाओं के उपयोग में बाधा उत्पन्न हुई और शैक्षिक असमानताएँ पैदा हुईं।
- दूसरी श्रेणी में, आप्रवासन अमीर देशों में कक्षाओं में नई भाषाओं को पेश करके भाषाई विविधता को बढ़ाता है, लेकिन यह शिक्षण और मूल्यांकन के लिए कठिनाइयाँ भी प्रस्तुत करता है।

### रिपोर्ट की संस्तुतियाँ:

- सभी छात्रों के लिए लाभकारी शैक्षिक प्रणाली बनाने के प्रयास में देशों में बहुभाषी शिक्षा नीतियों और प्रथाओं को पेश करना।
- शैक्षिक भाषा नीति में संदर्भ-विशिष्ट तकनीकों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, और भाषा संक्रमण को पाठ्यक्रम संशोधनों और ग्रेड-उपयुक्त शिक्षण और सीखने के संसाधनों द्वारा सुगम बनाया जाना चाहिए।
- “महत्वपूर्ण आप्रवासी आबादी वाले देशों में, नीतियों को प्रभावी ब्रिजिंग भाषा कार्यक्रमों, योग्य शिक्षकों के विकास और कार्यान्वयन का समर्थन करना चाहिए, और समावेशी सीखने के वातावरण का समर्थन करना चाहिए जो सभी की विविध भाषाई आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।”

### बहुभाषी शिक्षा (MLE):

- दुनिया भर में केवल 351 भाषाएँ ही शिक्षा की भाषा के रूप में पढ़ाई जाती हैं, हालाँकि 336 और भाषाएँ विषय के रूप में पढ़ाई जाती हैं।
- MLE को अधिक समावेशी शैक्षणिक संस्थानों को बढ़ावा देने और सतत विकास के पीछे एक प्रेरक शक्ति के रूप में एक आजमाई हुई और सच्ची विधि के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- **शिक्षा के परिणामों में वृद्धि:** MLE मौलिक पठन कौशल के विकास को बढ़ावा देता है, सामाजिक-भावनात्मक विकास को बढ़ावा देता है, अन्य भाषाओं के अधिग्रहण की सुविधा प्रदान करता है, और शिक्षार्थियों की मातृभाषाओं में साक्षरता को बढ़ावा देकर विज्ञान और गणित जैसे अन्य विषयों में प्रदर्शन में सुधार करता है।
- **पहुँच और समावेशन में सुधार:** हाशिए पर पड़े शिक्षार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करके, MLE शिक्षा तक पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकता है, क्योंकि दुनिया भर में 251 मिलियन बच्चे स्कूल से बाहर हैं।
- MLE से बच्चों के समाजीकरण और सीखने में सहायता मिल सकती है, जो उन्हें अपनी भावनाओं को सफलतापूर्वक नियंत्रित करने और संप्रेषित करने में भी मदद करता है।
- **सामाजिक सामंजस्य और समावेश को बढ़ावा देना:** प्रत्येक छात्र की भाषा और सांस्कृतिक विशिष्टता की सराहना करके, MLE एक समावेशी स्कूल वातावरण को बढ़ावा देता है। यह समावेशिता भाषा या जातीय मतभेदों के कारण बहिष्कार की संभावना को कम करती है और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती है।
- **सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखना:** MLE सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने, अल्पसंख्यक और स्वदेशी भाषाओं की रक्षा करने और समावेशी, सामंजस्यपूर्ण समुदायों का निर्माण करने के लिए आवश्यक है।
- **भाषाई पुनरोद्धार और विकास को बढ़ावा देना:** लेखन प्रणालियों के विकास के माध्यम से, MLE समुदायों के लिए अपनी मूल भाषाओं में पूरक पाठक और पाठ्यपुस्तकों जैसे लिखित उत्पाद तैयार करना संभव बनाता है।
- **पारंपरिक भाषा का संरक्षण:** स्वदेशी भाषाओं को कक्षा में एकीकृत करके,

MLE अमूल्य पारंपरिक ज्ञान की रक्षा करने और इसे मुख्यधारा की भाषा में अनुवाद करने में मदद करता है।

### अनुसंसित कार्यवाहियाँ:

- **स्थिति विश्लेषण:** कुशल नीति निर्माण और क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के साथ-साथ MLE कार्यक्रमों के लिए सर्वोत्तम संभव संसाधन आवंटन के लिए, सामाजिक भाषाई और शैक्षिक सेटिंग का स्थितिजन्य विश्लेषण किया जा सकता है।
- यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्रों को अपनी सांस्कृतिक और भाषाई उत्पत्ति के अनुरूप भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है, इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों, कानूनी ढाँचों और शिक्षा कानूनों के भीतर MLE के लिए राजनीतिक प्रतिबद्धताओं को औपचारिक रूप देने की आवश्यकता है।
- MLE को पाठ्यक्रम में पहली कक्षा से ही शामिल करें, मातृभाषा निर्देश को सर्वोच्च प्राथमिकता दें ताकि भाषा और साक्षरता के मूल सिद्धांतों को विकसित किया जा सके और साथ ही छात्रों की मूल भाषाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित किया जा सके।
- MLE में सुधार करने और कक्षा में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता और प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए, ऐसे शिक्षकों को नियुक्त करें जो शिक्षा की आधिकारिक भाषा और स्थानीय लोगों की मूल भाषा दोनों में कुशल हों।
- बहुभाषी वातावरण में पढ़ाने के लिए उन्हें बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए प्री और इन-सर्विस शिक्षकों के प्रशिक्षण को बेहतर बनाना, साथ ही यह सुनिश्चित करना कि स्कूल प्रशासक आकर्षक, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षण रणनीतियों के उपयोग को प्रोत्साहित करें।
- विभिन्न भाषा समूहों के लिए सीखने, उपस्थिति, प्रतिधारण और सामान्य शैक्षिक अनुभव पर MLE कार्यक्रमों के प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए, मजबूत निगरानी और मूल्यांकन विधियों को शामिल करें।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. यूनेस्को की हालिया रिपोर्ट ‘लैंग्वेज मैटर: बहुभाषी शिक्षा पर वैश्विक मार्गदर्शन’ के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. रिपोर्ट का अनुमान है कि कुछ निम्न और मध्यम आय वाले देशों में, समझने योग्य भाषा में शिक्षा तक पहुँच की कमी वाली आबादी का प्रतिशत 90% तक पहुँच सकता है।
2. रिपोर्ट भाषा परिवर्तन को सुविधाजनक बनाने के लिए पाठ्यक्रम संशोधनों की आवश्यकता पर जोर दिए बिना शैक्षिक भाषा नीति में संदर्भ-विशिष्ट तकनीकों को प्राथमिकता देने की सिफारिश करती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

(B) : 218

## समाचारों में चर्चित व्यक्तित्व

### चंद्रशेखर आज़ाद

**चर्चा में क्यों:** राष्ट्र ने महान स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आज़ाद को उनकी 89वीं पुण्यतिथि पर याद किया और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। केंद्रीय गृह मंत्री ने उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम का 'स्वर्णिम अध्याय' बताया।



#### चंद्रशेखर आज़ाद के बारे में:

- चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई, 1906 को अलीराजपुर (अब मध्य प्रदेश में) में हुआ था।
- आज़ाद की क्रांतिकारी भावना बनारस में असहयोग आंदोलन (1920-21) के दौरान प्रज्वलित हुई, जहाँ उन्होंने विदेशी वस्तुओं की बिक्री का सक्रिय रूप से विरोध किया।
- उन्हें 15 वर्ष की आयु में गिरफ्तार कर लिया गया और अदालत में उनकी साहसिक अवज्ञा प्रसिद्ध हो गई, जिससे उन्हें आज़ाद की उपाधि मिली।
- सशस्त्र प्रतिरोध: गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन को स्थगित करने से निराश होकर, आज़ाद ने सशस्त्र प्रतिरोध का रास्ता अपनाया।
- **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए):**
  - उन्हें सर्वसम्मति से एचएसआरए के कमांडर-इन-चीफ के रूप में मान्यता दी गई।
  - आज़ाद द्वारा किए गए प्रमुख ऑपरेशन:
    - ◆ लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेना: आज़ाद ने दिसंबर 1928 में ब्रिटिश अधिकारी जे.पी. सॉन्डर्स की हत्या की साजिश रची, जो राय की हत्या करने वाले क्रूर लाठीचार्ज का बदला था।
    - ◆ सेंट्रल असेंबली बम विस्फोट (1929): उन्होंने भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को विधान सभा में गैर-घातक बम विस्फोट करने के लिए प्रेरित किया, इस मुकदमे का इस्तेमाल क्रांतिकारी आदर्शों के प्रचार के लिए एक मंच के रूप में किया।
    - ◆ वायसराय की ट्रेन को उड़ाने का प्रयास (1929): इस साहसी कार्य ने ब्रिटिश सत्ता को अस्थिर करने के उनके अथक प्रयासों को रेखांकित किया।
- **शहादत:** एक सहयोगी द्वारा धोखा दिए जाने के बाद, आज़ाद को 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में ब्रिटिश पुलिस ने घेर लिया। आत्मसमर्पण करने से इनकार करते हुए, उन्होंने एक भीषण गोलीबारी में भाग लिया, अपनी अंतिम गोली का इस्तेमाल स्वयं को शहीद करने के लिए किया, और कभी भी पकड़े न जाने की अपनी प्रतिज्ञा को कायम रखा।

### आज़ाद के जीवन के महत्वपूर्ण पहलू

- पकड़े जाने से बचने और अपनी मृत्यु तक एक "स्वतंत्र" व्यक्ति बने रहने की उनकी क्षमता।
- वे एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे जो अपनी जाति या धार्मिक पहचान से ऊपर उठ गए थे।
- वे क्या कर रहे थे और वे स्वतंत्र भारत को कैसा बनाना चाहते थे, इसकी स्पष्ट दृष्टि रखते थे।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन सा स्वतंत्रता सेनानी हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) का पहला कमांडर-इन-चीफ था?

- (a) राम प्रसाद बिस्मिल (b) भगत सिंह  
(c) अशफाकउल्ला खान (d) चंद्रशेखर आज़ाद

(P) : 2022

### वीर सावरकर

**चर्चा में क्यों:** प्रधानमंत्री ने वीर सावरकर को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की है।



#### वीर सावरकर के बारे में

- विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 1883 में महाराष्ट्र के नासिक में हुआ था।
- 1906 में ग्रेज़ इन, लंदन में कानून की पढ़ाई करने के लिए इंग्लैंड गए।
- **अभिनव भारत:** इतालवी राष्ट्रवादी ग्यूसेपे माज़िनी से प्रेरित होकर लंदन में रहते हुए क्रांतिकारी संगठन अभिनव भारत (यंग इंडिया सोसाइटी) की स्थापना की।
- **उपनिवेशवाद विरोधी कार्य:**
  - सहयोगी मदनलाल ढींगरा के माध्यम से ब्रिटिश अधिकारी कर्जन वाइली (1909) की हत्या की साजिश रची।
  - सशस्त्र प्रतिरोध को बढ़ावा देने के लिए रूसी शून्यवादियों से आग्नेयास्त्रों और बम बनाने की पुस्तिकाओं की तस्करी की।
- **साहित्यिक योगदान:**
  - भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध लिखा (1909), 1857 के विद्रोह को

ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक एकीकृत हिंदू-मुस्लिम संघर्ष के रूप में पुनर्व्याख्यायित किया।

- ग्यूसेप मैत्सिनी की जीवनी लिखी, भारतीय युवाओं को क्रांतिकारी आदर्शों से प्रेरित किया।
- एसेशियल्स ऑफ हिंदुत्व (1923) लिखा, जिसमें हिंदुत्व को क्षेत्रीय राष्ट्रवाद से अलग हिंदुओं के लिए एक सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान के रूप में परिभाषित किया।
- सामाजिक सुधार:
  - जातिगत विभाजन का मुकाबला करने के लिए दलितों के लिए सह-भोज और मंदिर प्रवेश की वकालत की।
  - धार्मिक रूपांतरणों का मुकाबला करने के लिए शुद्धि (हिंदू धर्म में पुनः धर्मांतरण) को बढ़ावा दिया।

**समाज की सात बेड़ियाँ:** वीर सावरकर ने इन "सात स्वदेशी बेड़ियों" की निंदा की क्योंकि वे समाज को विभाजित कर रही थीं।

- सबसे पहले, कठोर जाति व्यवस्था, जिसे सावरकर के अनुसार, "इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिया जाना चाहिए"।
- दूसरा सुधार जो वीर सावरकर चाहते थे, वह था वैदिक साहित्य को सभी के बीच लोकप्रिय बनाना, न कि केवल एक विशेष जाति के बीच। उन्होंने वैदिक साहित्य को संपूर्ण मानव जाति के लिए सभ्यतागत ज्ञान और मानवता के लिए भारत का अनूठा उपहार कहा।
- तीसरा था जाति-आधारित व्यावसायिक कठोरता से अलग होना और लोगों को योग्यता और क्षमता के आधार पर अपनी पसंद का कोई भी पेशा अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना। प्रतिस्पर्धा की प्रेरणा के अभाव में, या योग्यता की कमी के कारण, सावरकर का मानना था, "सिर्फ अपने पिता के कार्यों का अनुसरण करने से व्यक्ति आत्मसंतुष्ट और अनुत्पादक दोनों बन जाएगा।"
- चौथा, सावरकर वैश्विक गतिशीलता में विश्वास करते थे और भारतीयों के लिए विदेशी भूमि पर जाने की आवश्यकता थी ताकि "दुनिया की सर्वश्रेष्ठ चीजें वापस लाई जा सकें और भारत और उसकी संस्कृति की खुशबू दुनिया के हर कोने में पहुंचाई जा सके।"
- पांचवां, सावरकर अंतरजातीय भोजन पर प्रतिबंध को खत्म करना चाहते थे। उन्होंने कहा था, "धर्म दिल, आत्मा और आत्मा में है, पेट में नहीं!"
- छठा अंतरजातीय विवाह को बढ़ावा देना था।
- सातवां पहलू, जिस पर वीर सावरकर ने जोर दिया, वह वैज्ञानिक सोच विकसित करने की आवश्यकता थी।

**यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न**

**प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:**

प्रश्न. 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम किसने कहा?

- (a) महात्मा गांधी (b) जवाहरलाल नेहरू  
(c) डॉ. बी.आर. अंबेडकर (d) वीर सावरकर

(P) : 211

## मोरारजी देसाई

**चर्चा में क्यों:** लोकसभा अध्यक्ष और संसद सदस्यों ने संसद में पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को उनकी जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की।

### मोरारजी देसाई के बारे में

#### • स्वतंत्रता-पूर्व:

- **सिविल सेवा:** 1918 में डिप्टी कलेक्टर के रूप में बॉम्बे प्रांतीय सिविल सेवा में शामिल हुए। स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए 1930 में इस्तीफा दे दिया।



#### ➤ स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका

- ◆ महात्मा गांधी के नेतृत्व में सक्रिय भागीदार।
- ◆ भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान लगभग तीन साल तक हिरासत में रहे।
- ◆ गुजरात प्रांतीय कांग्रेस समिति (1931) के सचिव के रूप में कार्य किया और अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (AICC) के लिए चुने गए।

#### • स्वतंत्रता के बाद:

#### ➤ बॉम्बे के मुख्यमंत्री के रूप में (1952-1956):

- ◆ एक विवाह और तलाक पर कानूनों की शुरुआत की (1947)।
- ◆ बॉम्बे में आपराधिक जनजाति अधिनियम को निरस्त किया, कुछ समुदायों के खिलाफ भेदभावपूर्ण प्रथाओं को समाप्त किया।

#### ➤ वित्त मंत्री के रूप में (1958-1963):

- ◆ राष्ट्रीय हितों से समझौता किए बिना घाटे के वित्तपोषण को कम किया और बाहरी सहायता को प्राथमिकता दी।
- ◆ दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान रक्षा और विकास के लिए संसाधन जुटाए।

#### ➤ प्रधानमंत्री के रूप में (1977-1979):

- ◆ ग्रामीण विकास पर जोर देते हुए विदेशी संस्थाओं के साथ निष्पक्ष आर्थिक सहयोग की वकालत की।
- ◆ प्रशासनिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कैबिनेट सचिव के लिए निश्चित कार्यकाल लागू किया।
- ◆ उपनिवेशवाद विरोधी को बढ़ावा दिया और एशिया और अफ्रीका में मुक्ति आंदोलनों का समर्थन किया।

#### ➤ प्रशासनिक सुधार आयोग की अध्यक्षता की (1966-1967), सिविल सेवाओं में निष्पक्षता और दक्षता की वकालत की।

#### ➤ पुस्तकें लिखीं: गीता पर प्रवचन, मेरे जीवन की कहानी, और प्राकृतिक चिकित्सा पर एक पुस्तक।

#### ➤ गुजरात विद्यापीठ के कुलाधिपति के रूप में कार्य किया।

#### • पुरस्कार और सम्मान:

#### ➤ भारत रत्न (1991) - भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार।

#### ➤ निशान-ए-पाकिस्तान (1990) - पाकिस्तान का सर्वोच्च नागरिक सम्मान।



## बीजू पटनायक

**चर्चा में क्यों:** हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 5 मार्च को ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बीजू पटनायक को उनकी जयंती पर याद किया।

### बीजू पटनायक

- एक प्रमुख भारतीय राष्ट्रवादी और पायलट बीजू पटनायक का जन्म 5 मार्च, 1916 को स्वतंत्रता सेनानियों और कार्यकर्ताओं के परिवार में हुआ था।
- कटक में पले-बढ़े, वे असहयोग आंदोलन के दौरान गांधी के विचारों की ओर आकर्षित हुए।
- रावेनशॉ कॉलेज में विज्ञान की शिक्षा पूरी करने के बाद, पटनायक रॉयल एयर फोर्स के लिए एक ट्रेकिंग पायलट बन गए और अरुणा आसफ अली, जयप्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया जैसे क्रांतिकारियों के नेतृत्व वाले भूमिगत आंदोलन में मदद की।
- भूमिगत आंदोलन के लिए पटनायक का समर्थन महत्वपूर्ण था, क्योंकि उन्होंने साथी पायलटों को संगठित किया और उन्हें अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्हें 1943 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के लिए गिरफ्तार किया गया था और दो साल जेल में बिताए थे।
- अपनी बीमारी के बावजूद, पटनायक ने ब्रिटिश शासन को खत्म करने के तरीकों के बारे में सोचना जारी रखा, एक कपड़ा मिल शुरू की और ब्रिटिश शासन को खत्म करने के लिए नकली मुद्रा छापी।
- 30 साल की उम्र में, पटनायक 1946 में ओडिशा विधान सभा के लिए चुने गए थे।
- नई दिल्ली में एशियाई संबंध सम्मेलन में भारत ने डचों के खिलाफ इंडोनेशिया के स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन करने पर सहमति जताई। डचों की धमकी के बावजूद, पटनायक, जिनके पास एक विमान था, ने इंडोनेशियाई नेताओं को दिल्ली लाने की योजना बनाई। दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू के एशियाई संबंध सम्मेलन में भाग लेने के लिए, पटनायक ने उपराष्ट्रपति डॉ. मुहम्मद हट्टा और इंडोनेशियाई प्रधानमंत्री सुल्तान सजहिर को सफलतापूर्वक विमान से भेजा। उनकी बहादुरी के सम्मान में, बीजू पटनायक को भूमि पुत्र पदक और इंडोनेशिया की मानद नागरिकता मिली। इसके अतिरिक्त, बीजू पटनायक को 1996 में इंडोनेशिया का सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान, बंटंग जसा उतामा मिला।
- भारत की स्वतंत्रता के बाद भी बीजू पटनायक राष्ट्रीय राजनीति में शामिल रहे और भारतीय क्षेत्रों को एकजुट करने के लिए नेहरू के साथ मिलकर काम किया। ओडिशा (पूर्व में उड़ीसा) के मुख्यमंत्री के रूप में, पटनायक को समकालीन ओडिशा के वास्तुकारों में से एक माना जाता है। उन्होंने औद्योगिकीकरण, गरीबों की उन्नति और आत्मनिर्भरता के गांधीवादी लक्ष्य की प्राप्ति की वकालत की। अपनी दृढ़ता, राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता और जनता के प्रति समर्पण के लिए जाने जाने वाले, वे एक सक्षम प्रशासक और नेता थे, जिनका साहस और दृढ़ विश्वास जीवन भर कभी कम नहीं हुआ। उन्होंने मुक्ति आंदोलन में भी योगदान दिया।

## लाला हरदयाल

- दिल्ली में कायस्थ माथुर परिवार की छठी संतान लाला हरदयाल का जन्म 14 अक्टूबर 1884 को भोली रानी और जिला न्यायालय रीडर गौरी दयाल माथुर के घर हुआ था।

- कार्ल मार्क्स, रूसी अराजकतावादी मिखाइल बाकुनिन और प्रसिद्ध इतालवी क्रांतिकारी नेता मैज़िनी आर्य समाज के सिद्धांतों के साथ-साथ उनकी अन्य प्रारंभिक प्रेरणाओं में से थे।
- इसके बाद उन्होंने सेंट स्टीफन से संस्कृत की डिग्री हासिल की और पंजाब विश्वविद्यालय में उसी विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। वह एक प्रतिभाशाली छात्र थे, जिन्होंने 1905 में ऑक्सफोर्ड से आगे संस्कृत अध्ययन करने के लिए दो छात्रवृत्तियाँ मिलीं।
- अराजकतावादी अवधारणाओं की उनकी खोज 1907 में शुरू हुई जब उन्होंने इंडियन सोशियोलॉजिस्ट को लिखा कि "हमारा उद्देश्य सरकार में सुधार करना नहीं है, बल्कि इसे सुधारना है, यदि आवश्यक हो, तो इसके अस्तित्व के केवल नाममात्र के निशान छोड़ना है।" पत्र के परिणामस्वरूप उन्हें पुलिस निगरानी में रखा गया।
- उन्होंने उस वर्ष बाद में प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड छात्रवृत्ति को त्याग दिया, यह घोषणा करते हुए कि "आईसीएस को नरक में भेजो," और 1908 में तपस्वी जीवन जीने के लिए भारत चले गए।
- हालांकि, उन्होंने भारत के शीर्ष समाचार पत्रों में आलोचनात्मक लेख लिखना भी शुरू कर दिया।
- जब ब्रिटिश प्रशासन ने उनके लेखन पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया, तो लाला लाजपत राय ने सुझाव दिया कि वे विदेश चले जाएं।
- उन्होंने गदर पार्टी के विद्रोही विचारों को बढ़ावा दिया और संयुक्त राज्य अमेरिका में गदर आंदोलन को संगठित करने में सहायता की। उन्होंने विदेशों में रहने वाले भारतीयों को संगठित करके उन्हें मुक्ति अभियान में शामिल होने के लिए भी प्रेरित किया।
- ब्रिटिश सरकार ने कठिनाइयों को भांपते हुए अमेरिकी सरकार पर उन्हें हिरासत में लेने का दबाव डाला। परिणामस्वरूप, वे जर्मनी चले गए, फिर स्वीडन और इंग्लैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका लौटने से पहले, जहाँ 4 मार्च, 1943 को उनकी मृत्यु हो गई।
- "शिक्षा में विचार" के अलावा, उन्होंने "हिंदू जाति की सामाजिक विजय", "जर्मनी और तुर्की में चालीस-चार महीने", "स्व-संस्कृति के लिए संकेत", और "बोधिसत्व सिद्धांत" भी लिखे।



### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. पुस्तिका 'हिंदू जाति की सामाजिक विजय' किसके द्वारा लिखी गई थी?

- (a) लाला लाजपत राय      (b) लाला हरदयाल  
(c) बिपिन चंद्र पाल      (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(9) :225

## नानाजी देशमुख

**चर्चा में क्यों:** केंद्रीय गृह मंत्री ने मध्य प्रदेश में भारत रत्न नानाजी देशमुख की 15वीं पुण्यतिथि पर स्मृति दिवस समारोह को संबोधित किया।

### नानाजी देशमुख के बारे में

- नानाजी देशमुख एक सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण स्वावलंबन के क्षेत्र में काम किया।
- उन्हें 2019 में सामाजिक कार्यों के लिए भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
- वे लोकमान्य तिलक और उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित हुए और डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और दीनदयाल उपाध्याय जैसे नेताओं के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे।
- **राजनीतिक योगदान**
  - नानाजी देशमुख को उत्तर प्रदेश में भारतीय जनसंघ का महासचिव बनाया गया।
  - देशमुख के जमीनी कार्य ने जमीनी स्तर पर भारतीय जनसंघ (बीजेएस) को मजबूत करने में बहुत मदद की।
  - 1957 तक बीजेएस ने उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में अपनी इकाइयाँ स्थापित कर ली थीं और इसका श्रेय नानाजी को जाता है जिन्होंने पूरे राज्य में व्यापक यात्रा की और कड़ी मेहनत की।
  - नानाजी देशमुख 1977 में उत्तर प्रदेश के बलरामपुर लोकसभा क्षेत्र से चुने गए थे। उन्हें कैबिनेट मंत्री का पद दिया गया था, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया।



- राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं के सम्मान में उन्हें वर्ष 1999 में राज्यसभा के लिए मनोनीत किया गया।
- नानाजी देशमुख ने विनोबा भावे द्वारा शुरू किए गए भूदान आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने विनोबा के साथ दो महीने बिताए और आंदोलन की सफलता और अपील से बहुत प्रेरित हुए।
- बाद में, जब जयप्रकाश नारायण ने "संपूर्ण क्रांति" का आह्वान किया, तो नानाजी ने इस आंदोलन को पूर्ण समर्थन देकर प्रतिक्रिया व्यक्त की।
- **सामाजिक योगदान:**
  - 1980 में, जब वे 60 वर्ष के हुए, तो उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया और स्वयं को पूरी तरह से सामाजिक और रचनात्मक कार्यों के लिए समर्पित कर दिया, आश्रमों में रहने लगे और कम प्रोफाइल बनाए रखा।
  - उन्होंने गरीबी उन्मूलन और न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम की दिशा में अग्रणी कार्य किया।
  - उनके कार्य के अन्य क्षेत्र कृषि और कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य और शिक्षा थे।
  - नानाजी ने दीनदयाल शोध संस्थान (डीआरआई) की अध्यक्षता संभाली, जिसकी स्थापना उन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद के दर्शन को मान्य करने के लिए 1972 में की थी।
  - नानाजी ने एकात्म मानववाद के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए एक मॉडल प्रस्तुत किया।
  - उन्होंने उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश दोनों के 500 से अधिक गांवों में सामाजिक पुनर्गठन कार्यक्रम चलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल

'इंडियन एक्सप्रेस' का एडिटरियल एनालिसिस

क्यू आर कोड स्कैन करें



## भारत में राजकोषीय संघवाद: 2025-26 के केंद्रीय बजट की भूमिका

### परिचय

राजकोषीय संघवाद, संघीय व्यवस्था में सरकार के विभिन्न स्तरों के बीच वित्तीय संबंधों को संदर्भित करता है। इसमें संघ और राज्य सरकारों के बीच वित्तीय संसाधनों और जिम्मेदारियों का आवंटन शामिल है, यह सुनिश्चित करते हुए कि संसाधनों का समान और कुशलतापूर्वक वितरण किया जाए। यह शब्द जर्मन अर्थशास्त्री रिचर्ड मुसग्रेव द्वारा गढ़ा गया था और भारत के आर्थिक शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

केंद्रीय बजट 2025-26 "विकसित भारत" (विकसित भारत) के विजन को साकार करने में राजकोषीय संघवाद के महत्व को रेखांकित करता है। बजट वित्तीय संसाधनों के बढ़े हुए हस्तांतरण, पूंजी निवेश सहायता, अनुदान सहायता और राज्यों के लिए उधार प्रावधानों के माध्यम से आर्थिक विकास के लिए एक रोडमैप तैयार करता है।

### भारत में राजकोषीय संघवाद: संवैधानिक ढांचा

भारतीय संविधान संघ और राज्य सरकारों की वित्तीय भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है:

#### (i) सातवीं अनुसूची:

- संघ सूची - वे विषय जिन पर केवल केंद्र ही कानून बना सकता है और कर लगा सकता है (जैसे, रक्षा, विदेशी मामले, आयकर)।

- राज्य सूची - वे विषय जिन पर राज्यों के पास विशेष शक्तियाँ हैं (जैसे, पुलिस, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कृषि)।
- समवर्ती सूची - केंद्र और राज्य दोनों कानून बना सकते हैं, लेकिन टकराव की स्थिति में, केंद्रीय कानून लागू होते हैं (जैसे, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण)।

#### (ii) वित्त आयोग (अनुच्छेद 280):

- यह निर्धारित करता है कि संघ द्वारा एकल किए गए करों को राज्यों के साथ कैसे साझा किया जाए।
- 14वें वित्त आयोग ने केंद्रीय करों में राज्यों की हिस्सेदारी 32% से बढ़ाकर 42% कर दी (बाद में जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन के कारण 15वें वित्त आयोग द्वारा इसे घटाकर 41% कर दिया गया)।

#### (iii) राजस्व वितरण तंत्र:

- कर हस्तांतरण (राज्यों को कर राजस्व का प्रत्यक्ष हस्तांतरण)।
- अनुदान सहायता (आपदा राहत, सामाजिक क्षेत्र की योजनाओं जैसे विशिष्ट उद्देश्यों के लिए)।
- ऋण और उधार (राज्यों को विकास परियोजनाओं के वित्तपोषण में मदद करने के लिए)।

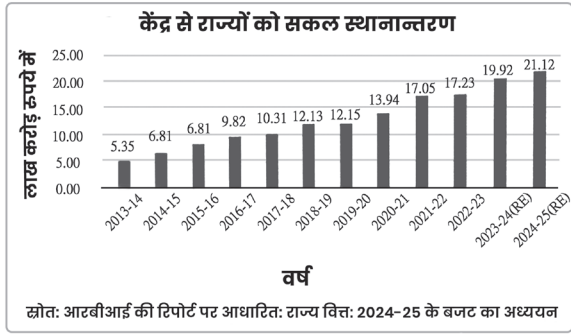
## भारत में राजकोषीय संघवाद से संबंधित संवैधानिक प्रावधान

- अनुच्छेद 270:** संघ और राज्यों के बीच लगाए गए और वितरित करों से संबंधित है।
- अनुच्छेद 275:** संघ द्वारा राज्यों को अनुदान से संबंधित है।
- अनुच्छेद 279A:** जीएसटी परिषद के गठन का प्रावधान करता है। जीएसटी परिषद वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) से संबंधित मामलों पर केंद्र और राज्य सरकारों को सिफारिशें प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है।
- अनुच्छेद 280:** संघ और राज्यों के बीच कर आय के वितरण, राज्यों को अनुदान और राज्य और स्थानीय सरकार के कोष में वृद्धि के उपायों की सिफारिश करने के लिए हर 5 साल में वित्त आयोग के गठन से संबंधित है।
- अनुच्छेद 282:** इसमें उल्लेख किया गया है कि संघ और राज्य किसी भी विशिष्ट उद्देश्य के लिए अनुदान दे सकते हैं, भले ही वह संसद/राज्य विधानमंडल द्वारा बनाए गए कानूनों के दायरे में न हो। यह विधायी प्राधिकार की परवाह किए बिना विभिन्न परियोजनाओं के वित्तपोषण में लचीलापन प्रदान करता है।
- अनुच्छेद 293:** राज्यों को राज्य विधानमंडल द्वारा निर्धारित सीमा के भीतर धन उधार लेने की कार्यकारी शक्ति देता है, जो कुछ मामलों में भारत सरकार की सहमति के अधीन है।

### राजकोषीय संघवाद को मजबूत करना: प्रगति का एक दशक

पिछले एक दशक में, भारत ने केंद्र से राज्यों को वित्तीय हस्तांतरण में पर्याप्त वृद्धि

देखी है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि राज्यों के पास विकास को आगे बढ़ाने के लिए संसाधन हैं।



**राजकोषीय संघवाद में प्रमुख रुझान (2013-2025):**

वर्ष	केंद्र से राज्यों को सकल स्थानान्तरण (लाख करोड़ रुपये में)
2013-14	5.35
2024-25	21.12
2025-26	25.59

यह चार गुना वृद्धि सहकारी संघवाद और संतुलित क्षेत्रीय विकास के प्रति केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

**केंद्रीय बजट 2025-26**  
केंद्रीय सरकार का व्यय 2025-26 के लिए बजट अनुमान (करोड़ में)

**कुल: 50,65,345**

ब्याज	12,76,338
यातायात	5,48,649
रक्षा	4,91,732
प्रमुख मन्त्रिणी	3,83,407
पेंशन	2,76,618
ग्रामीण विकास	2,66,817
गृह मंत्रालय (संघ शासित प्रदेशों सहित)	2,33,211
कर प्रशासन	1,86,632
कृषि एवं संबद्ध गतिविधियाँ	1,71,437
शिक्षा	1,28,650
स्वास्थ्य	98,311
शहरी विकास	96,777
आईटी और दूरसंचार	95,298
ऊर्जा	81,174
वाणिज्य और उद्योग	65,553
वित्त	62,924
समाज कल्याण	60,052
वैज्ञानिक विभाग	55,679
विदेश मामले	20,517
पूर्वोत्तर का विकास	5,915
अन्य	4,82,653

**केंद्रीय बजट 2025-26: राजकोषीय संघवाद का चार-स्तंभ मॉडल**

केंद्रीय बजट 2025-26 राजकोषीय संघवाद को मजबूत करने और राज्यों को सशक्त बनाने के लिए चार-स्तंभ मॉडल पर आधारित है:

**i. केंद्रीय करों और शुल्कों का उच्च हस्तांतरण**

- कर हस्तांतरण अनुच्छेद 280 के तहत वित्त आयोग की अनुशंसाओं पर आधारित है।
- 14वें वित्त आयोग ने राज्यों की हिस्सेदारी 31% से बढ़ाकर 42% कर दी, और 15वें वित्त आयोग ने 41% बरकरार रखा।
- बजट 2025-26 करों और शुल्कों के कुल हस्तांतरण को बढ़ाकर 14.22 लाख करोड़ रुपये कर देता है, जो पिछले वर्ष (2024-25 में 12.47 लाख करोड़ रुपये) से 14.01% अधिक है।

**200%+**  
**महिला कल्याण बजट में वृद्धि**

महिलाओं के कल्याण और सशक्तिकरण के लिए बजट

0.97 लाख करोड़ (वित्त वर्ष 14) → 3.10 लाख करोड़ (वित्त वर्ष 25)

**ii. पूंजी निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता**

- पूंजीगत व्यय आर्थिक उत्पादकता और दीर्घकालिक विकास को बढ़ाता है।
- बजट 2025-26 में विशेष सहायता योजना के तहत 1.5 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।
- इस योजना के मुख्य लाभ:
  - राज्यों को 50 साल का ब्याज मुक्त ऋण।
  - पूंजी निवेश में लचीलापन प्रदान करने वाली असंबद्ध निधि।
  - शहरी नियोजन, भूमि अभिलेख आधुनिकीकरण, किसानों की रजिस्ट्री और वाहन कबाड़ कार्यक्रमों के लिए प्रोत्साहन।

**छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों को बड़ा प्रोत्साहन**

केंद्रीय बजट 2025-26 में अनुसंधान एवं विकास के लिए ₹20,000 करोड़ आवंटित

2033 तक कम से कम 5 स्वदेशी रूप से विकसित एसएमआर को डिजाइन और संचालित करने का लक्ष्य

**iii. केंद्र प्रायोजित योजनाओं (सीएसएस) के लिए अनुदान सहायता में वृद्धि**

केंद्र उन योजनाओं के लिए अनुदान सहायता प्रदान करता है जिनके लिए राज्यों

द्वारा संयुक्त कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है। केंद्रीय बजट 2025-26 में ऐसी योजनाओं के लिए 5.41 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

### सीएसएस (CSS) के तहत प्रमुख पहल:

#### (i) कृषि क्षेत्र:-

- पीएम धन-धान्य कृषि योजना: 100 कृषि जिलों पर ध्यान केंद्रित करती है, उत्पादकता और सिंचाई बढ़ाती है।
- दलहन में आत्मनिर्भरता: घरेलू दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए छह वर्ष का मिशन।
- व्यापक सब्जियां और फल कार्यक्रम: उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला और प्रसंस्करण को मजबूत करना।
- कपास उत्पादकता के लिए मिशन: कपड़ा विकास के लिए उच्च उपज वाली कपास किस्मों को बढ़ावा देता है।

#### (ii) ग्रामीण विकास:-

- ग्रामीण समृद्धि और लचीलापन कार्यक्रम: कौशल विकास के माध्यम से ग्रामीण बेरोजगारी को कम करने का लक्ष्य।
- जल जीवन मिशन विस्तार (2028 तक): जन भागीदारी के तहत 100% ग्रामीण नल जल कनेक्शन सुनिश्चित करता है।

#### (iii) शहरी विकास:-

- पीएम स्वनिधि: सूक्ष्म वित्त पोषण के माध्यम से 68 लाख स्ट्रीट वेंडरों के लिए बढ़ाया गया समर्थन।
- शहरी चुनौती निधि (1 लाख करोड़ रुपये): शहरी पुनर्विकास, स्वच्छता और बुनियादी ढांचे का समर्थन करता है।
- गिग वर्कर्स के लिए सामाजिक सुरक्षा: पीएम जन आरोग्य योजना के तहत हेल्थकेयर के साथ ई-श्रम पोर्टल पर 1 करोड़ श्रमिकों को पंजीकृत किया जाएगा।

#### (iv) शिक्षा क्षेत्र:-

- नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सरकारी स्कूलों में 50,000 अटल टिकरिंग लैब।
- भारतनेट के तहत सभी माध्यमिक विद्यालयों के लिए ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी।
- शिक्षा के लिए एआई में उत्कृष्टता केंद्र (500 करोड़ रुपए का आवंटन)।

#### (v) बढ़ी हुई उधारी के माध्यम से राज्य वित्त को मजबूत करना

- राज्यों के लिए सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के 0.5% की अतिरिक्त लिंद ऋण सीमा।
- राज्य सरकारों के लिए 2 लाख करोड़ रुपए का वित्तपोषण।
- बिजली क्षेत्र के सुधारों से जुड़ा, डिस्कॉम की वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना।

### केंद्रीय क्षेत्रों की योजनाओं के माध्यम से विकास को बढ़ावा देना

बजट में प्रमुख क्षेत्रों में केंद्र के नेतृत्व वाले रणनीतिक निवेश पर भी जोर दिया गया है, जिसमें आवंटन 63,614 करोड़ रुपये (2024-25) से बढ़कर 76,758 करोड़ रुपये (2025-26) हो गया है।

#### मुख्य पहल:

- प्रौद्योगिकी और नवाचार: निजी क्षेत्र के अनुसंधान एवं विकास के लिए 20,000 करोड़ रुपये का कोष।
- अगली पीढ़ी के स्टार्टअप को समर्थन देने के लिए डीप टेक फंड ऑफ फंड्स।

- क्षेत्रीय संपर्क योजना (आरसीएस) - उद्दान 2.0: 120 नए हवाई अड्डे जोड़े जाएंगे, जिससे 10 वर्षों में 4 करोड़ यात्रियों को लाभ होगा।
- समुद्री विकास निधि: आर्थिक विस्तार के लिए जहाज निर्माण और बंदरगाह बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देगा।



### निष्कर्ष

केंद्रीय बजट 2025-26 भारत के विकास मॉडल की नींव के रूप में राजकोषीय संघवाद को मजबूत करता है। राज्यों के लिए कर हस्तांतरण, पूंजी सहायता, अनुदान सहायता और ऋण लेने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि करके, बजट सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद को मजबूत करता है। चार-स्तंभ मॉडल यह सुनिश्चित करता है कि राज्यों के पास राजकोषीय अनुशासन बनाए रखते हुए क्षेत्र-विशिष्ट नीतियों को लागू करने की वित्तीय स्वायत्तता हो। "विकसित भारत" के महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण के साथ, केंद्र सरकार का लक्ष्य एक मजबूत, आत्मनिर्भर और समावेशी अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है, जहाँ केंद्र और राज्य दोनों समान विकास की दिशा में सामंजस्य के साथ काम करें।

### विकसित भारत@2047 के लिए रोडमैप

#### परिचय

विकसित भारत@2047 विजन भारत की आजादी की शताब्दी तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में मार्ग को रेखांकित करता है। यह विजन आर्थिक लचीलापन, नवाचार, स्थिरता और समावेशिता से प्रेरित है। 1991 के आर्थिक सुधारों ने संरक्षणवादी नीतियों को खत्म करके और राष्ट्र को वैश्विक बाजारों में एकीकृत करके भारत के तेजी से विकास की नींव रखी। हालांकि, संरक्षणवाद, भू-राजनीतिक तनाव और आपूर्ति श्रृंखला पुनर्गठन के कारण विश्व अर्थव्यवस्था एक संरचनात्मक बदलाव से गुजर रही है। भारत को उच्च विकास को बनाए रखने, रोजगार पैदा करने और जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संक्रमण जैसी चुनौतियों का समाधान करते हुए एक मजबूत औद्योगिक और तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए अपनी आर्थिक रणनीतियों को फिर से तैयार करना चाहिए।

## विकसित भारत@2047 के लिए मुख्य स्तंभ

विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चार प्रमुख प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक आत्मनिर्भर विकास मॉडल की आवश्यकता है:

- व्यापक-आधारित विनियमन
- एक मजबूत विनिर्माण आधार का निर्माण
- एक स्थायी और व्यावहारिक ऊर्जा संक्रमण
- सरकार, निजी क्षेत्र और शिक्षाविदों के बीच एक लिपक्षीय समझौता

ये प्राथमिकताएँ भारत को अपनी ताकत का लाभ उठाने और बदलती वैश्विक व्यवस्था में चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाएंगी।

### स्तंभ 1: विकास के लिए विनियमन हटाना

#### (i) विनियमन हटाने का महत्व

- 1991 के सुधारों का प्रभाव: लाइसेंस राज को हटाने और व्यापार उदारीकरण से तीव्र आर्थिक विकास हुआ।
- हाल ही में विनियमन हटाने के प्रयास: 2014 से, सरकार ने व्यापक विनियामक सरलीकरण किए हैं:
  - 20,000 से अधिक अनुपालनों को युक्तिसंगत बनाया और 300 से अधिक कानूनों को सरल बनाया।
  - जीएसटी और दिवाला एवं दिवालियापन संहिता (आईबीसी): सुव्यवस्थित कर संरचना और कॉर्पोरेट पुनर्गठन।
  - रियल एस्टेट विनियमन अधिनियम (रेरा): रियल एस्टेट बाजारों को साफ किया।
  - इंडिया स्टैक (यूआईडी-यूपीआई-डीबीटी): डिजिटल शासन में सुधार और अक्षमताओं में कमी।

#### (ii) निरंतर विनियमन की आवश्यकता

- आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 अंतर्दृष्टि:
  - एसएमई कठोर भवन संहिताओं के कारण 50% औद्योगिक भूखंड खो देते हैं।
  - कठोर श्रम कानून लचीले कार्य घंटों को रोकते हैं, जिससे व्यवसायों को नुकसान होता है।
  - शिक्षा क्षेत्र की अड़चनें (यूजीसी और एआईसीटीई विनियम) गतिशील पाठ्यक्रम अनुकूलन में बाधा डालती हैं।

### आगे की राह

- राज्य-स्तरीय विनियमन: उच्च व्यापार सुगमता स्कोर वाले राज्यों ने उच्च औद्योगिक गतिविधि दिखाई है।
- निवेश नीतियों में सुधार:-
  - सरलीकृत आयकर अधिनियम और निवेशक-अनुकूल द्विपक्षीय संधियाँ।
  - गैर-वित्तीय विनियमनों का आकलन करने के लिए विनियामक सुधारों के लिए उच्च-स्तरीय समिति।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता: विनियामक लचीलापन विदेशी निवेश को आकर्षित करेगा, घरेलू उद्योगों को मजबूत करेगा और रोजगार सृजन सुनिश्चित करेगा।

**केंद्रीय बजट 2025-26**

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एफडीआई

**वित्तीय क्षेत्र में सुधार और विकास**

- ▶ वीमा क्षेत्र में एफडीआई सीमा 74% से बढ़ाकर 100% की जाएगी
- ▶ पेंशन उत्पादों के विनियामक समन्वय और विकास के लिए फोरम की स्थापना की जाएगी
- ▶ केवाईसी प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए 2025 में संशोधित केंद्रीय केवाईसी रजिस्ट्री शुरू की जाएगी

### स्तंभ 2: बल गुणक के रूप में विनिर्माण

#### (i) विनिर्माण का ऐतिहासिक महत्व

- वैश्विक सबक:
  - औद्योगिक क्रांति (यू.के., 19वीं शताब्दी) → बड़े पैमाने पर रोजगार का सृजन।
  - पूर्वी एशियाई चमत्कार (1970-2000 के दशक) → चीन और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने विनिर्माण का उपयोग करके लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला।
- चीन का विनिर्माण प्रभुत्व:
  - 2000: वैश्विक विनिर्माण में 6% हिस्सेदारी।
  - 2024: 45% हिस्सेदारी, जो अमेरिका और उसके सहयोगियों से आगे है।

#### (ii) भारत की विनिर्माण रणनीति

- रोजगार सृजन: भारत को 2036 तक सालाना 8 मिलियन गैर-कृषि रोजगार सृजित करने की आवश्यकता है।
- प्रमुख विनिर्माण चालक:-
  - उत्पादन-लिंक प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाएँ:
    - श्वेत वस्तुएँ: एक आत्मनिर्भर एयर कंडीशनर मूल्य श्रृंखला विकसित की गई।
    - दूरसंचार क्षेत्र: 60% आयात प्रतिस्थापन हासिल किया गया।
    - हरित ऊर्जा विनिर्माण: सौर, बैटरी भंडारण, ईवी।
  - एमएसएमई सुदृढीकरण:
    - व्यापार प्राप्य छूट प्रणाली (टीआरडीएस) ने वित्तपोषण में ₹1.38 लाख करोड़ की सुविधा प्रदान की।
    - पारस्परिक ऋण गारंटी योजना: मशीनरी खरीदने वाले एमएसएमई के लिए 60% ऋण गारंटी।

### (iii) श्रम और प्रौद्योगिकी-गहन विकास में संतुलन

- श्रम-गहन विकास: बड़े पैमाने पर रोजगार के लिए आवश्यक।
- प्रौद्योगिकी-गहन विकास: दीर्घकालिक उत्पादकता के लिए आवश्यक।
- परिणाम: एक संतुलित दृष्टिकोण वैश्विक प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करते हुए, भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश को अधिकतम करेगा।

### स्तंभ 3: आर्थिक स्थिरता के लिए ऊर्जा संक्रमण

#### (i) वैश्विक ऊर्जा संक्रमण चुनौतियाँ

- पश्चिमी देशों की गलतियाँ:
  - नवीकरणीय ऊर्जा सब्सिडी पर अत्यधिक निर्भरता के कारण ऊर्जा लागत में वृद्धि हुई और औद्योगिकीकरण में कमी आई।
  - यूरोप के ऊर्जा संकट ने जीवाश्म ईंधन के समय से पहले चरणबद्ध तरीके से उपयोग बंद करने के जोखिमों को उजागर किया।

## इन्फ्रा को इस बजट में +10000 से अधिक आभा मिली!

जल जीवन मिशन: 2028 तक 100% जलापूर्ति कवरेज!

उड़ान योजना का विस्तार, 10 वर्षों में 120 नए गंतव्यों और 4 करोड़ यात्रियों को जोड़ेगा!

जल एवं स्वच्छता पर ध्यान केन्द्रित करते हुए शहरों को विकास केन्द्रों के रूप में पुनर्विकसित करने के लिए 1 लाख करोड़ का अर्बन चैलेंज फंड



### प्रभाव

मजबूत सार्वजनिक बुनियादी ढांचा, बेहतर स्वास्थ्य सेवा और बढ़ता वैश्विक निवेश!

#### (ii) भारत की अनूठी ऊर्जा आवश्यकताएँ

- ऊर्जा सुरक्षा और विकास: भारत के औद्योगिकीकरण के लिए लागत प्रभावी और प्रचुर ऊर्जा की आवश्यकता है।
- वर्तमान ऊर्जा संक्रमण लक्ष्य:-
  - 2070 तक चरणबद्ध डीकार्बोनाइजेशन के साथ नेट-जीरो।
  - परमाणु ऊर्जा विस्तार: 2047 तक 100 गीगावाट क्षमता का लक्ष्य।
  - नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार: सौर, पवन और हरित हाइड्रोजन पर ध्यान।
- सरकारी पहल:
  - परमाणु ऊर्जा में निजी क्षेत्र की भागीदारी।

- विदेशी प्रौद्योगिकी भागीदारी के लिए परमाणु कानूनों में संशोधन।
- LiFE (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) आंदोलन स्थायी उपभोग को बढ़ावा देता है ॥

#### (iii) व्यावहारिक संक्रमण सुनिश्चित करना

- जीवाश्म ईंधन को जल्दबाजी में चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने से बचना: ऊर्जा सुरक्षा को बाधित किए बिना नवीकरणीय ऊर्जा की ओर क्रमिक बदलाव।
- हरित अवसंरचना में निवेश: ऊर्जा कुशल सार्वजनिक परिवहन और परिपल अर्थव्यवस्था मॉडल को बढ़ावा देना।

### स्तंभ 4: नवाचार और विकास के लिए त्रिपक्षीय समझौता

#### (i) सरकार-उद्योग-अकादमिक सहयोग का महत्व

एक सतत विकास मॉडल के लिए सरकार, निजी क्षेत्र और अकादमिक जगत के बीच एक मजबूत साझेदारी की आवश्यकता होती है ताकि निम्नलिखित को आगे बढ़ाया जा सके:

- नीति नवाचार: विनियामक चपलता और व्यापार अनुकूल नीतियाँ।
- कौशल विकास: उद्योग-उन्मुख शैक्षिक सुधार।
- अनुसंधान और विकास निवेश: प्रौद्योगिकी और एआई-संचालित औद्योगिक विस्तार।

#### (ii) वैश्विक मॉडल और भारत का मार्ग

- दक्षिण कोरिया का नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र: तकनीकी विकास में सरकार-उद्योग के बीच घनिष्ठ संबंध।
- जर्मनी का व्यावसायिक प्रशिक्षण मॉडल: उद्योग-संचालित शिक्षा पर जोर।
- भारत का दृष्टिकोण:
  - स्टार्टअप इंडिया और अटल इनोवेशन मिशन उद्यमिता को बढ़ावा दे रहे हैं।
  - अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) को मजबूत बनाना।
  - सहयोगी विश्वविद्यालय-उद्योग अनुसंधान परियोजनाएँ।

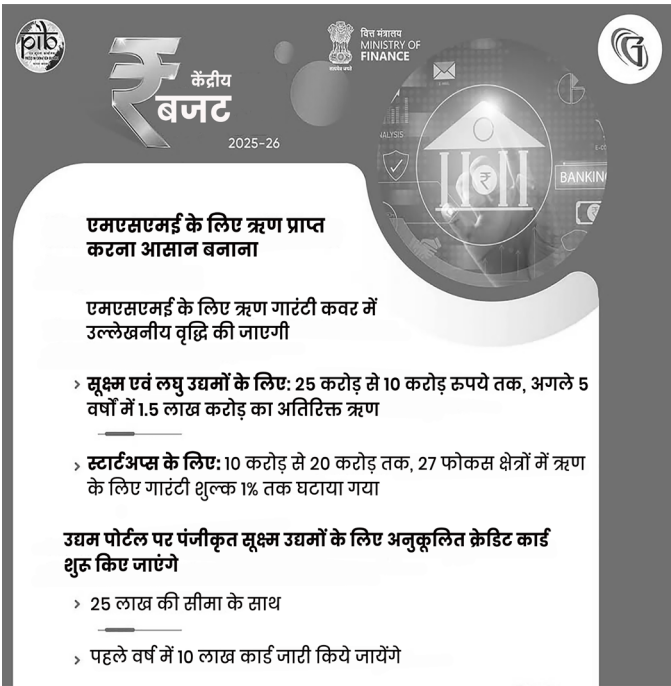
### निष्कर्ष

विकसित भारत@2047 के लिए भारत का रोडमैप आर्थिक लचीलापन, विनिर्माण शक्ति, रणनीतिक ऊर्जा परिवर्तन और नवाचार-आधारित विकास पर आधारित है। देश को अपनी आर्थिक रणनीतियों को फिर से बनाना होगा, घरेलू उद्योगों को मजबूत करना होगा और वैश्विक परिवर्तनों के अनुकूल होना होगा। चार-आयामी दृष्टिकोण - विनियमन, विनिर्माण विस्तार, व्यावहारिक ऊर्जा नीतियाँ और त्रिपक्षीय सहयोग - भारत के एक विकसित, आत्मनिर्भर और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को सुनिश्चित करेगा।

## आय और खपत बढ़ाते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की पहल

### परिचय

भारत मुख्य रूप से उपभोग आधारित अर्थव्यवस्था है, इसलिए मांग, निवेश और ग्रामीण आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। केंद्रीय बजट 2025-26 में, राजकोषीय संतुलन बनाए रखते हुए ग्रामीण आय बढ़ाने, कृषि उत्पादकता में सुधार और ग्रामीण बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए कई पहल प्रस्तावित की गई हैं। यह लेख ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने, आय बढ़ाने और खपत को प्रोत्साहित करने के लिए बजट में पेश किए गए विभिन्न उपायों की पड़ताल करता है।



### 1. वर्तमान आर्थिक परिदृश्य और वृद्धि की आवश्यकता

#### (i) राजकोषीय लक्ष्य और वृद्धि प्रक्षेपण

- राजस्व सृजन लक्ष्य:
  - सरकार का लक्ष्य वित्त वर्ष 2025-26 के लिए ₹42.70 लाख करोड़ राजस्व एकत्र करना है, जो वित्त वर्ष 2024-25 के लिए ₹38.53 लाख करोड़ लक्ष्य से 11% अधिक है।
  - प्रत्यक्ष कर संग्रह लक्ष्य: ₹25.20 लाख करोड़ (↑ 14.4%)।
  - अप्रत्यक्ष कर संग्रह लक्ष्य: ₹17.50 लाख करोड़ (↑ 10.4%)।

#### जीडीपी वृद्धि अनुमान:

- पहला अग्रिम अनुमान (2024-25): 6.4% जीडीपी वृद्धि।
- आरबीआई प्रक्षेपण (2024-25): 6.6% वृद्धि।
- अनुमानित जीडीपी वृद्धि (2025-26): 6.7%।

#### (ii) वृद्धि को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ

##### वैश्विक कारक:

- टैरिफ परिवर्तन, संरक्षणवादी नीतियाँ और अमेरिकी फेडरल रिजर्व ब्याज दरें वैश्विक बाजारों को प्रभावित कर रही हैं।

##### घरेलू कारक:

- जीडीपी वृद्धि में गिरावट (2024-25 की दूसरी तिमाही में 5.4%)।
- खपत, निवेश और निर्यात को बढ़ावा देने की आवश्यकता।

### ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए बजट पहल

#### (i) कृषि और ग्रामीण विकास निवेश

- किसानों के लिए कुल आवंटन: ₹2.66 लाख करोड़ (पिछले वर्ष से ↑ ₹1,000 करोड़)।
- उर्वरक सब्सिडी: ₹1.67 लाख करोड़ (↑ ₹3,000 करोड़)।
- कृषि विकास योजना: ₹8,500 करोड़ (↑ ₹947 करोड़)।
- पशुपालन और डेयरी: ₹1,050 करोड़ (↑ ₹369 करोड़ से)।

#### (ii) किसानों की आय में वृद्धि

##### (a) किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) ऋण सीमा में वृद्धि

- ऋण सीमा ₹3 लाख से बढ़ाकर ₹5 लाख की गई।
- ब्याज सब्सिडी:
  - 2% सामान्य सब्सिडी।
  - समय पर पुनर्भुगतान के लिए 3% अतिरिक्त सब्सिडी (प्रभावी ब्याज दर 4%)।
- लाभार्थी: 7.75 करोड़ किसान।



## मत्स्य पालन का सतत उपयोग

समुद्री क्षेत्र की अप्रयुक्त संभावनाओं को उजागर करना

- भारत के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र और उच्च सागर से मत्स्य पालन के सतत दोहन के लिए सक्षम ढांचा

- अंडमान एवं निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीपसमूह पर विशेष ध्यान

### (b) प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना

- कम उपज वाले 100 जिलों पर ध्यान केंद्रित करना।
- सिंचाई, भंडारण और उन्नत बीजों के लिए वित्तीय सहायता।
- अनुमानित लाभार्थी: 1.7 करोड़ किसान।

### (c) कृषि विकास के लिए पांच वर्षीय मिशन

- कपास प्रौद्योगिकी मिशन
  - लंबे रेशे वाली कपास किस्मों को बढ़ावा देना।
  - कपास की गुणवत्ता और प्रसंस्करण में सुधार करना।
- दलहन आत्मनिर्भरता मिशन
  - अरहर, काली मसूर और अन्य दालों पर ध्यान केंद्रित करना।
  - नैफेड (NAFED) और एनसीसीएफ (NCCE) द्वारा किसानों के लिए 100% खरीद का आश्वासन।

### मत्स्य पालन और कृषि में आत्मनिर्भरता:-

#### (i) मत्स्य पालन के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)

- भारत का समुद्री खाद्य उद्योग ₹60,000 करोड़ का है।
- मत्स्य पालन के लिए SEZ जलीय कृषि और रोजगार को बढ़ावा देंगे (जिससे 2.8 करोड़ मछुआरों को लाभ होगा)।

#### (ii) यूरिया उत्पादन में आत्मनिर्भरता

- असम के नामरूप में नया यूरिया संयंत्र (12.7 लाख मीट्रिक टन/वर्ष क्षमता)।
- आयात निर्भरता में कमी।

**कर सुधारों से कारोबार करने में आसानी बढ़ेगी**

- ▶ तीन वर्ष की ब्लॉक अवधि के लिए अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन की निकटतम कीमत निर्धारित करने के लिए योजना शुरू की जाएगी
- ▶ मुकदमेबाजी को कम करने और अंतर्राष्ट्रीय कराधान में निश्चितता प्रदान करने के लिए सुदक्षित बंदरगाह नियमों का दायरा बढ़ाया जाएगा
- ▶ 29 अगस्त 2024 को या उसके बाद राष्ट्रीय बचत योजना से व्यक्तियों द्वारा की गई निकासी पर कर छूट प्रदान की जाएगी

### ग्रामीण रोजगार और उपभोग को बढ़ावा देना

#### (i) महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण

- एससी/एसटी महिला उद्यमियों के लिए टर्म लोन: 5 लाख महिला उद्यमियों के लिए ₹2 करोड़ ऋण सीमा।
- सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 मिशन: ₹21,960 करोड़ (↑ ₹1,889 करोड़)।
- मिशन वात्सल्य: महिला कल्याण कार्यक्रमों के लिए ₹1,500 करोड़।

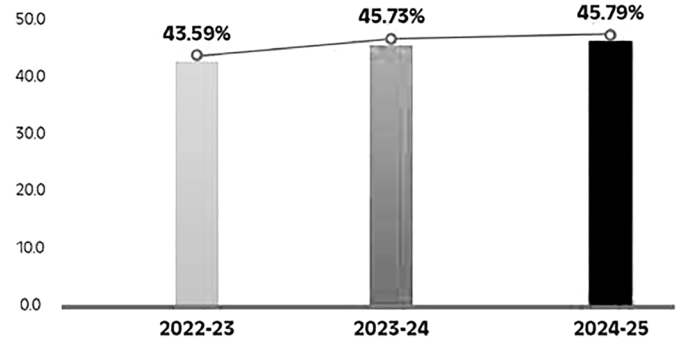
#### (ii) छोटे व्यवसायों और स्ट्रीट वेंडर्स के लिए सहायता

- पीएम स्वनिधि योजना का विस्तार
  - स्ट्रीट वेंडर्स के लिए उच्च ऋण सीमा।
  - वित्तीय समावेशन और व्यवसायों के औपचारिकीकरण को प्रोत्साहित करना।

#### (iii) बुनियादी ढांचा और रसद विकास

- 1.5 लाख ग्रामीण डाकघरों को रसद केंद्रों में बदलना।
- एमएसएमई और किसानों के लिए लागत प्रभावी ग्रामीण आपूर्ति श्रृंखला समाधान।
- राज्यों को बुनियादी ढांचे के लिए 1.5 लाख करोड़ रुपये का ब्याज मुक्त ऋण।

### अखिल भारतीय निर्यात में एमएसएमई से संबंधित उत्पादों के निर्यात का हिस्सा



### ग्रामीण विकास के लिए औद्योगिक और एमएसएमई विकास

#### (i) एमएसएमई क्षेत्र सुधार

- संशोधित एमएसएमई वर्गीकरण:

वर्ग	पिछली निवेश सीमा	नई निवेश सीमा	पिछली टर्नओवर सीमा	नई टर्नओवर सीमा
सूक्ष्म	₹1 करोड़	₹22.5 करोड़	₹10 करोड़	₹25 करोड़
लघु	₹10 करोड़	₹225 करोड़	₹100 करोड़	₹250 करोड़
मध्यम	₹250 करोड़	₹125 करोड़ (संभवतः टाइपो)	₹250 करोड़	₹500 करोड़

- क्रेडिट गारंटी कवर: ₹10 करोड़ (पहले ₹5 करोड़)।
- सूक्ष्म उद्यमों के लिए 10 लाख क्रेडिट कार्ड।



(ii) राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन

- फोकस:
  - व्यापार करने में आसानी।
  - कार्यबल कौशल विकास।
  - प्रौद्योगिकी-संचालित गुणवत्ता वाले उत्पाद।
- निर्यात में एमएसएमई का योगदान:
  - कुल निर्यात का 45%।
  - विनिर्माण में 36% योगदान।
  - 7.5 करोड़ लोगों को रोजगार।

(iii) ₹10,000 करोड़ का स्टार्टअप फंड

- नवाचार, उद्यमिता और आसान ऋण पहुंच के लिए समर्थन।
- भारतीय स्टार्टअप की घरेलू और वैश्विक उपस्थिति को बढ़ावा देना।

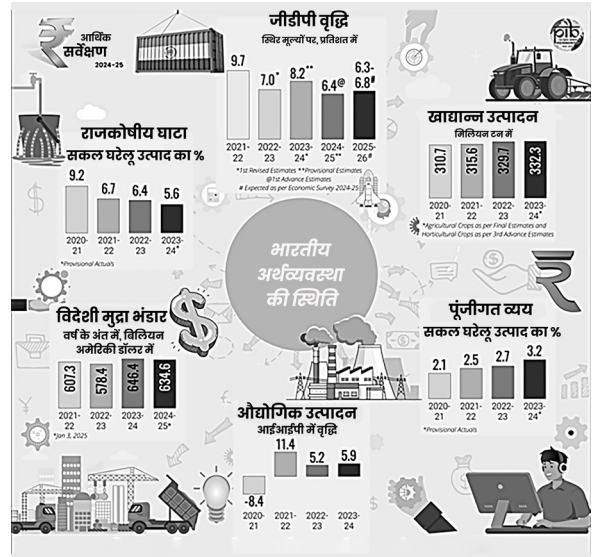
निष्कर्ष

केंद्रीय बजट 2025-26 में ग्रामीण आर्थिक विकास को गति देने, किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए साहसिक कदम उठाए गए हैं। कृषि में अधिक निवेश, एमएसएमई सुधारों और महिला सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान देने के साथ सरकार सतत विकास को बढ़ावा देते हुए प्रमुख आर्थिक चुनौतियों का समाधान कर रही है। यदि सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जाता है, तो ये पहल समावेशी विकास को बढ़ावा दे सकती हैं और 2047 तक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत कर सकती हैं।

**केंद्रीय बजट 2025-26: विकास आयाम**

केंद्रीय बजट 2025-26 भारत के आर्थिक रोडमैप में एक महत्वपूर्ण कदम है, विशेष रूप से ग्रामीण विकास, बुनियादी ढांचे, रोजगार सृजन और सामाजिक कल्याण को आगे बढ़ाने में। बजट कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कौशल विकास, एमएसएमई और बुनियादी ढांचे जैसे प्रमुख क्षेत्रों में निवेश को प्राथमिकता देकर विकास भारत@2047 के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के अनुरूप है।

आर्थिक संदर्भ: आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 से अंतर्दृष्टि



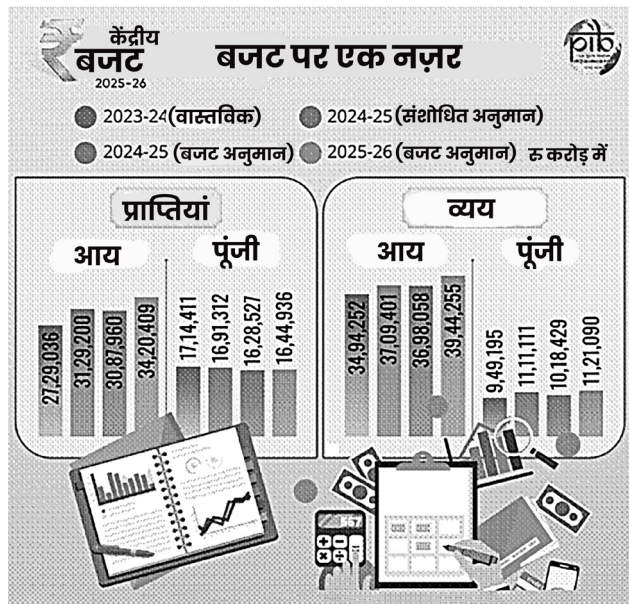
31 जनवरी 2025 को संसद में पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 में वैश्विक चुनौतियों के बीच भारत की लचीली आर्थिक वृद्धि पर प्रकाश डाला गया। सर्वेक्षण में उल्लेख किया गया:

- आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और यूरोप और एशिया से कमजोर मांग के कारण वैश्विक विनिर्माण में मंदी।
- मांग और आपूर्ति तंत्र को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में भारत का प्रतिस्पर्धात्मक लाभ।
- खाद्य मुद्रास्फीति नियंत्रण और वृहद आर्थिक स्थिरता से ग्रामीण मांग और कृषि उत्पादकता में सुधार।

नागरिकों की बजट-पूर्व अपेक्षाएँ:

- आय और रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
- मजबूत अवसरचना ढाँचा विकास।
- सामाजिक कल्याण और व्यापार-अनुकूल नीतियों के लिए अधिक आवंटन।

बजट की मुख्य विशेषताएँ: आवंटन और विकास को बढ़ावा



**मुख्य वित्तीय आंकड़े:** बजट का उद्देश्य आर्थिक विकास में तेजी लाना, बुनियादी ढांचे को बढ़ाना और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देना है।

- **कुल व्यय:** ₹50.65 लाख करोड़ (2024-25 में ₹47.16 लाख करोड़ के मुकाबले)।
- **प्रभावी पूंजीगत व्यय:** ₹15.48 लाख करोड़ (2024-25 में ₹10.18 लाख करोड़ के मुकाबले)।
- **प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अधिक आवंटन:** कृषि, एमएसएमई, ग्रामीण रोजगार, बुनियादी ढांचा।

### 2047 में विकसित भारत के लिए विजन

- आर्थिक समृद्धि के साथ एक विकसित और आत्मनिर्भर भारत।
- नवाचार, प्रौद्योगिकी, पर्यावरणीय स्थिरता और शासन पर ध्यान केंद्रित।
- ग्रामीण विकास विभाग को ₹1.87 लाख करोड़ के आवंटन के साथ ग्रामीण विकास को बढ़ावा दिया जाएगा (2024-25 से +5.75%)।

### क्षेत्रवार विश्लेषण

### (i) कृषि और किसान कल्याण

- **प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना:** मौजूदा कृषि योजनाओं को एकीकृत करने के लिए 100 जिलों में शुरू की गई।
- **मुख्य फोकस क्षेत्र:**
  - संधारणीय कृषि पद्धतियाँ (जैविक खेती, कृषि वानिकी)।
  - प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) (₹8,260 करोड़) के माध्यम से सिंचाई और जल प्रबंधन में सुधार।
  - कटाई के बाद के अवसंरचना (कोल्ड स्टोरेज, लॉजिस्टिक्स) में अधिक निवेश।
  - पीएम-किसान सम्मान निधि को मजबूत करना।
- **उर्वरक सब्सिडी में बदलाव:**
  - पोषण आधारित सब्सिडी के पक्ष में यूरिया सब्सिडी में कमी।
  - मिट्टी अपरदन को कम करने के लिए जैव उर्वरकों और परिशुद्ध कृषि पर जोर।

### (ii) खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

- पीएम सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का औपचारिकीकरण (पीएमएफएमई) में आवंटन में 4.8% की वृद्धि देखी गई।
- **ध्यान केंद्रित:**
  - प्रौद्योगिकी उन्नयन और आधुनिक प्रसंस्करण इकाइयाँ।
  - बेहतर उत्पाद गुणवत्ता और व्यावसायिक मापनीयता।

### (iii) ग्रामीण रोजगार: मनरेगा और एनआरएलएम

- **मनरेगा आवंटन:** ₹86,000 करोड़ (2024-25 के समान)।
- **दीनदयाल अंत्योदय योजना - एनआरएलएम (डीएवाई-एनआरएलएम):**
  - आवंटन में 26.3% की वृद्धि (₹15,047 करोड़ से ₹19,005 करोड़)।
  - महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास और उद्यमिता पर ध्यान केंद्रित।
- **चुनौतियाँ और सुधार:**
  - बेहतर नियोजन, क्रियान्वयन और परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता।
  - स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम।

### (iv) ग्रामीण आवास और कनेक्टिविटी

- **पीएम आवास योजना - ग्रामीण (पीएमएवाई-जी):** ₹54,832 करोड़ (2024-25 से +0.6%)।
  - अनुसूचित जातियों, जनजातियों और महिला प्रधान परिवारों के लिए किफायती ग्रामीण आवास पर ध्यान केंद्रित करना।
- **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई):** 19,000 करोड़ रुपये।
  - सम्पर्कता, व्यापार और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए ग्रामीण सड़क अवसंरचना में तेजी लाना।

(v) डेयरी और मत्स्य पालन विकास

- डेयरी क्षेत्र की प्राथमिकताएँ: दूध उत्पादन और ग्रामीण डेयरी खेती को बढ़ावा देना।
- कोल्ड स्टोरेज और सहकारी मॉडल (जैसे, अमूल) में निवेश।
- पीएम मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई): आवंटन में 5.7% की वृद्धि।
- आधुनिक जलीय कृषि, कोल्ड स्टोरेज और मछुआरों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना।

(vi) कौशल विकास और शिक्षा

- **समग्र शिक्षा:** प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए ₹41,250 करोड़ का आवंटन।
  - डिजिटल शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण और समावेशी शिक्षा पर जोर।
- **पीएम विश्वकर्मा योजना:**
  - ग्रामीण कारीगरों और शिल्पकारों को सशक्त बनाना।
  - आधुनिक उपकरणों, वित्तीय सहायता और बाजार एकीकरण पर ध्यान केंद्रित करना।

(vii) एमएसएमई और ग्रामीण उद्यम

- **संशोधित एमएसएमई परिभाषा:** सरकारी सहायता के लिए पात्रता का विस्तार करती है।
- **लाभ:**
  - वित्त, प्रौद्योगिकी और बाजारों तक आसान पहुंच।
  - कृषि व्यवसाय, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प में वृद्धि।
- स्थानीय रोजगार सृजन करके ग्रामीण से शहरी प्रवास में कमी लाना।

विकास प्रभाव और भविष्य की संभावनाएँ

- आर्थिक विकास में तेजी: अवसंरचना, कृषि और रोजगार में उच्च निवेश।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना: कृषि उत्पादकता, डेयरी और मत्स्य पालन विकास में वृद्धि।
- रोजगार सृजन और कौशल विकास: बेहतर (MSME), ग्रामीण उद्यम और तकनीकी शिक्षा में अवसर।
- सामाजिक समावेशिता: एससी, एसटी, महिलाओं और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए बढ़ा हुआ समर्थन।

चुनौतियाँ और आगे की राह

चुनौतियाँ	प्रस्तावित समाधान
बेहतर ग्रामीण रोजगार कार्यान्वयन की आवश्यकता	मनरेगा (MGNREGA) और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) की निगरानी, योजना और क्रियान्वयन को मजबूत करना
उर्वरक सब्सिडी को तर्कसंगत बनाने से किसानों पर असर पड़ सकता है	जैव उर्वरकों को बढ़ावा देना एवं संघारणीय खेती को प्रोत्साहित करना
बुनियादी ढांचे में शहरी-ग्रामीण असमानता	ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक्स में निवेश बढ़ाना
कौशल और नौकरी के बीच बेमेल	उद्योग-उन्मुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना

निष्कर्ष

केंद्रीय बजट 2025-26 आर्थिक और ग्रामीण विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो कि विकासशील भारत@2047 के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ संरेखित है। कृषि, रोजगार, अवसंरचना, एमएसएमई और शिक्षा में उच्च आवंटन के साथ, बजट का उद्देश्य आर्थिक विकास में तेजी लाना, रोजगार सर्जित करना और सामाजिक कल्याण को बढ़ाना है। हालाँकि, चुनौती कुशल कार्यान्वयन और यह सुनिश्चित करने में है कि बजटीय प्रावधान लोगों के लिए ठोस लाभ में तब्दील हो।

## ‘डाउन टू अर्थ’ से महत्वपूर्ण आलेख (मार्च 2025)

### जलवायु परिवर्तन के कारण मृदा अपरदन और लवणता में वृद्धि होगी

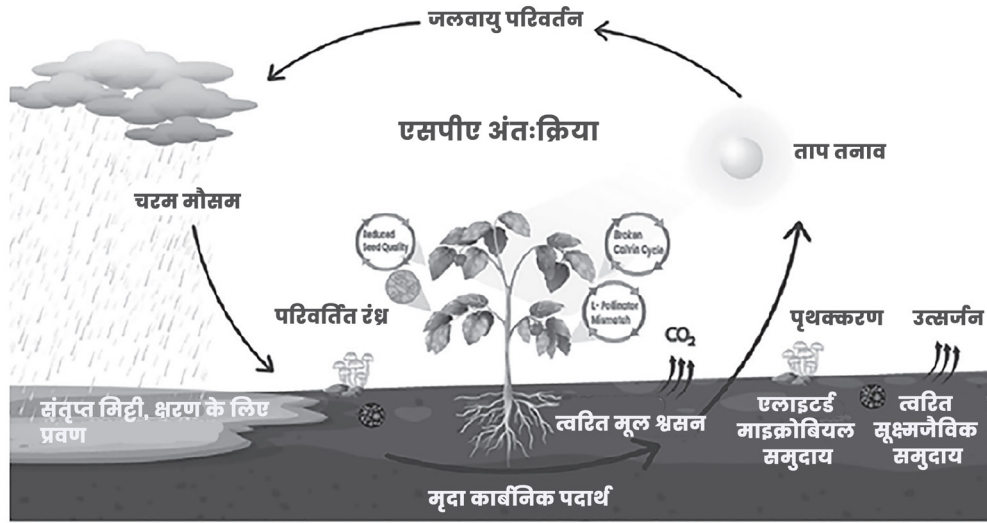
**परिचय:** कृषि मंत्री के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाले वर्षों में खरीफ और रबी दोनों ही मौसमों में वर्षा में वृद्धि होने की संभावना है, जिससे मृदा अपरदन की दर में वृद्धि होगी।

#### भविष्य के लिए पूर्वानुमान

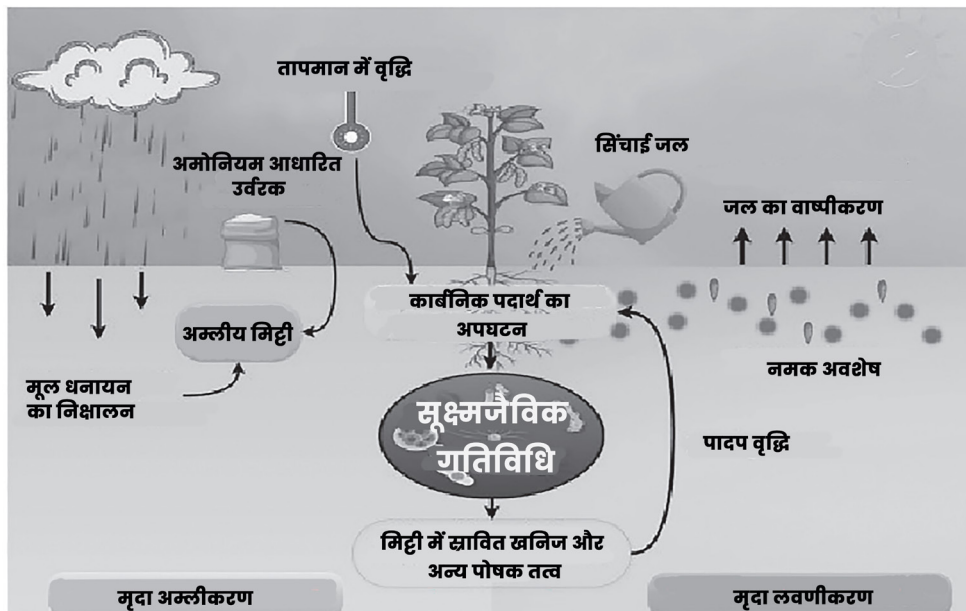
- 2050 और 2080 तक खरीफ की बारिश में क्रमशः 4.9-10.1 प्रतिशत और

5.5-18.9 प्रतिशत की वृद्धि होने की संभावना है।

- 2050 और 2080 तक रबी की बारिश में क्रमशः 12-17 प्रतिशत और 13-26 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है।
- वर्षा में इस वृद्धि के कारण 2050 तक कृषि भूमि से प्रति वर्ष 10 टन मिट्टी अपरदन हो सकता है।
- लवणता से प्रभावित क्षेत्र भी 2030 तक 6.7 मिलियन हेक्टेयर से बढ़कर 11 मिलियन हेक्टेयर होने की संभावना है।



### जलवायु परिवर्तन का मृदा पर प्रभाव



- पारिस्थितिकी तंत्र को कमजोर करता है: जलवायु परिवर्तन मृदा-पादप वातावरण (एसपीए) के बीच संबंधों को बाधित करता है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र कमजोर होता है।
- पौधों की वृद्धि को प्रभावित करता है: चरम मौसम मृदा संरचना, पोषक चक्रण और पौधों की वृद्धि की गतिशीलता को बदल देता है।
- मृदा और वनस्पति के बीच अंतर्संबंध: फीडबैक लूप एसपीए में मृदा, वनस्पति और पर्यावरणीय कारकों को जोड़ते हैं।
- पोषण सीमा: उच्च CO<sub>2</sub> प्रकाश संश्लेषण को बढ़ावा देता है, लेकिन पोषक तत्व सीमा और फेनोलॉजिकल बदलाव का कारण बनता है।
- नकदी फसलों पर प्रभाव: नकदी और मुख्य फसलें जलवायु परिवर्तन और चरम मौसम से बहुत प्रभावित होती हैं।

### आगे की राह

- मृदा संरक्षण उपाय: कंट्रोल खेती, कवर क्रॉपिंग और कृषि वानिकी को प्रोत्साहित करने से कटाव को कम करने में मदद मिल सकती है।
- नमक-सहिष्णु फसल किस्मों को शामिल करना: ऐसी फसलें विकसित और उगाना जो मिट्टी की बढ़ती लवणता की स्थिति का सामना कर सकें।
- जल प्रबंधन प्रथाएँ: वर्षा परिवर्तनशीलता का प्रबंधन करने के लिए वर्षा जल संचयन और सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को बढ़ावा देना।
- जलवायु-लचीली कृषि: किसानों को उनकी प्रथाओं को अनुकूलित करने में मदद करने के लिए जलवायु मॉडलिंग और सलाहकार सेवाओं को एकीकृत करें।

### यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न. जलवायु परिवर्तन मिट्टी की प्रकृति को कैसे प्रभावित कर सकता है और मिट्टी अपरदन को बढ़ा सकता है। इसके प्रभाव को कम करने के उपाय बताएँ। [10 अंक, 150 शब्द]

### भारत का तटीय संकट

**संदर्भ:** भारत की 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा - जैव विविधता से समृद्ध और लाखों मछुआरों का घर - एक गैरकानूनी मछली पकड़ने की प्रथा से बढ़ते खतरे में है जो बिना किसी दंड के जारी है: लाइट फिशिंग।

### लाइट फिशिंग के बारे में

- लाइट फिशिंग में पानी के ऊपर संरचनाओं से जुड़ी रोशनी या पानी के नीचे लटकी रोशनी का उपयोग शामिल है, ताकि मछलियों को विशिष्ट क्षेत्रों में आकर्षित किया जा सके और फसल की कटाई में आसानी हो।
- यह विधि आज विश्व में मत्स्य पालन में इस्तेमाल किए जाने वाले सबसे उन्नत और सफल साधनों में से एक है।
- यह ऑप्टिकल चारा का एक रूप है जिसका उपयोग मछलियों को एक स्थान पर आकर्षित करने और केंद्रित करने के लिए किया जाता है।
- कई वाणिज्यिक, पारंपरिक और मनोरंजक मछुआरे रात में अपनी नावों के आसपास मछलियों को आकर्षित करने के लिए नाव पर रोशनी डालते देखे जाते हैं।

### भारत में लाइट फिशिंग को लेकर चिंताएँ

- **कमजोर कानून प्रवर्तन:**
  - भारत के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में 2017 से प्रतिबंधित है, फिर भी प्रवर्तन असंगत है।
  - महाराष्ट्र, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में, प्रादेशिक जल में लाइट फिशिंग पूरी तरह से प्रतिबंधित नहीं है और जहाँ नियम मौजूद हैं, वहाँ प्रवर्तन कमजोर है।
- **पारिस्थितिकीय परिणाम:** अध्ययनों में गंभीर पारिस्थितिकीय परिणामों की चेतावनी दी गई है - फिशरीज जर्नल में 2016 के एक शोधपत्र में इस तकनीक के प्रभावों के रूप में अत्यधिक मछली पकड़ना, युवा स्टॉक की कमी और कोरल रीफ क्षरण को शामिल किया गया है।
- **सामाजिक परिणाम:** छोटे पैमाने पर, हाथ से चलने वाले जाल और देशी नावों का उपयोग करने वाले पारंपरिक मछुआरे स्वयं को शक्तिशाली रोशनी से सुसज्जित मशीनीकृत जहाजों की तुलना में बहुत कमजोर पाते हैं।
- **खंडित रूपरेखा:** राष्ट्रीय ईईजेड प्रतिबंधों के साथ-साथ विभिन्न राज्य स्तरीय नियमों के साथ भारत की खंडित रूपरेखा अपर्याप्त है।

### आगे की राह

- **एक समान प्रतिबंध की आवश्यकता:** देश भर में पूर्णतः लागू गतिबंध से प्रतिस्पर्धा का स्तर समान हो जाएंगे और हमारे मछली भंडार की सुरक्षा होगी
- **एक समान नीति की आवश्यकता:** एक समान नीति संयुक्त राष्ट्र द्वारा अनिवार्य सतत विकास लक्ष्य 14 के साथ भी संरेखित होगी, जो महासागर संरक्षण और समुद्री संसाधनों तक समान पहुंच पर केंद्रित है।

### अनसुलझी बचत और निवेश संबंधी बाधाएं

**संदर्भ:** राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा 2023-24 के लिए हाल ही में जारी बचत और निवेश के आंकड़े।

#### बचत और निवेश प्रवृत्तियों का अवलोकन

- **सकल बचत दर:** सकल घरेलू उत्पाद (2023-24) के 30.7% पर स्थिर, 2011-12 के 34.6% के शिखर से 3.9 प्रतिशत अंक नीचे।
- **सकल पूंजी निर्माण (निवेश):** 2023-24 में सकल घरेलू उत्पाद के 31.4% तक गिर गया, जो 2011-12 के 39% के शिखर से 7.5 प्रतिशत अंक कम है।
- **वैश्विक तुलना**
  - भारत की बचत और निवेश दरें अन्य मध्यम आय वाले देशों की तुलना में पीछे हैं।
  - वैश्विक बचत सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 26% (2011-2023) पर स्थिर हो गई है, जबकि निवेश सकल घरेलू उत्पाद के 27.5% तक बढ़ गया है।

#### बचत का विवरण: सकल बचत के उप-खंड

- **घरेलू बचत**
  - सकल घरेलू उत्पाद के 18.1% पर 5.5 प्रतिशत अंकों की तीव्र गिरावट (2023-24 बनाम 2011-12)।
  - कुल बचत का 50% से अधिक हिस्सा है। यह गिरावट अन्य जगहों पर लाभ की भरपाई करने के लिए बहुत बड़ी है।
- **सार्वजनिक निगम:** 0.9 प्रतिशत अंकों की गिरावट के साथ सकल घरेलू उत्पाद का 2.9% रह गए।
- **निजी निगम:** 1 प्रतिशत अंकों की मामूली वृद्धि के साथ सकल घरेलू उत्पाद का 10.7% रह गए।
- **सरकारी बचत:** मामूली सुधारों के बावजूद नकारात्मक बनी रही।

#### निवेश का विवरण: सकल पूंजी निर्माण के उप-खंड

- **घरेलू निवेश:** 3.1 प्रतिशत अंक गिरकर सकल घरेलू उत्पाद का 12.8% हो गया, जो भौतिक परिसंपत्ति बचत में कमी के कारण हुआ।
- **सार्वजनिक कॉर्पोरेट निवेश:** मामूली गिरावट के साथ सकल घरेलू उत्पाद का 3.9% हो गया।
- **निजी कॉर्पोरेट निवेश:** 2 प्रतिशत अंक गिरकर सकल घरेलू उत्पाद का 11.2% हो गया।
- **सामान्य सरकारी निवेश:** एकमात्र खंड जहाँ निवेश दर में सुधार हुआ है। दरें 2023-24 तक सकल घरेलू उत्पाद के 4% तक एक प्रतिशत से भी कम बढ़कर हो गई हैं।

#### निवेश प्रवृत्तियों का क्षेत्रीय विश्लेषण

- **कृषि क्षेत्र:** 2011-12 और 2023-24 के बीच निवेश दर लगभग एक-छठे हिस्से से गिरकर सकल घरेलू उत्पाद का 2.6% हो गई।

#### औद्योगिक क्षेत्र

- औद्योगिक क्षेत्र में निवेश में मंदी सबसे खराब थी, जिसकी दरें 2023-24 तक घटकर सकल घरेलू उत्पाद का 10% रह गया
- उद्योग में निवेश में गिरावट इसके चार खंडों में तेजी से भिन्न हुई।
  - ◆ **विनिर्माण और खनन:** लगभग 33% घटकर सकल घरेलू उत्पाद का 5% और 0.4% हो गया।
  - ◆ **बिजली:** सकल घरेलू उत्पाद का आधा होकर 2% हो गया।
  - ◆ **निर्माण:** सकल घरेलू उत्पाद के 2.6% पर स्थिर।

#### सेवा क्षेत्र

- **कुल मिलाकर:** सकल घरेलू उत्पाद के 18.8% पर 0.3 प्रतिशत अंकों की न्यूनतम गिरावट।
- सेवा क्षेत्र के विभिन्न खंडों में रुझान अलग-अलग थे, छह में से चार खंडों में सुधार दर्ज किया गया जबकि अन्य दो में गिरावट दर्ज की गई।
  - ◆ **लोक प्रशासन और रक्षा:** सकल घरेलू उत्पाद का 2.6% (50% की वृद्धि) हो गया।
  - ◆ **परिवहन/भंडारण/संचार:** सकल घरेलू उत्पाद का 4% (33% की वृद्धि) हो गया।
  - ◆ **रियल एस्टेट और व्यावसायिक सेवाएँ:** लगभग 33% की गिरावट के साथ सकल घरेलू उत्पाद का 6.7% हो गया।
  - ◆ **वित्तीय सेवाएँ:** सकल घरेलू उत्पाद का 0.3% तक गिर गया।

#### प्रमुख चुनौतियाँ और निहितार्थ

- **संरचनात्मक मुद्दे:** कर कटौती के बावजूद गिरावट जारी है, जो आपूर्ति-मांग असंतुलन (जैसे कम आय/उपभोग) को दर्शाता है।
- **घरेलू क्षेत्र का तनाव:** घरेलू बचत/निवेश में तीव्र गिरावट वित्तीय तनाव को उजागर करती है।
- **औद्योगिक गिरावट:** बिजली और विनिर्माण क्षेत्रों में तत्काल नीति हस्तक्षेप की आवश्यकता है।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता:** अन्य मध्यम आय वाले देशों के साथ अंतर बढ़ने से दीर्घकालिक आर्थिक विकास को खतरा है।

#### आगे की राह

- **घरेलू बचत को पुनर्जीवित करना**
  - **वित्तीय प्रोत्साहन:** निम्न और मध्यम आय समूहों के लिए कर-मुक्त बचत योजनाएँ (जैसे विस्तारित पीपीएफ, सावधि जमा) शुरू करना।
  - **आय वृद्धि:** श्रम प्रधान क्षेत्रों (जैसे कपड़ा, पर्यटन) में रोजगार सृजन पर ध्यान केन्द्रित करना। न्यूनतम वेतन संशोधन और कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू करना।
  - **वित्तीय साक्षरता:** अनुशासित बचत और निवेश की आदतों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू करना।

**औद्योगिक और अवसंरचना में निवेश को बढ़ावा देना।**

- **विनिर्माण:** एसएमई के लिए उत्पादन-लिंक प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं का विस्तार करना और अनुपालन बोझ को कम करना।
- **बिजली:** सब्सिडी और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के साथ नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं (सौर, पवन) में तेजी लाना।
- **अवसंरचना का विकास:** निजी पूंजी को आकर्षित करने के लिए उच्च प्रभाव वाली परियोजनाओं (जैसे लॉजिस्टिक्स कॉरिडोर, स्मार्ट सिटी) को प्राथमिकता देना। तेजी से निष्पादन के लिए भूमि अधिग्रहण और पर्यावरणीय मंजूरी को सुव्यवस्थित करना।

**कृषि उत्पादकता में वृद्धि**

- **प्रौद्योगिकी अपनाना**
  - ◆ ड्रिप सिंचाई, परिशुध कृषि और जलवायु-अनुकूल फसलों को बढ़ावा देना।
  - ◆ छोटे किसानों के लिए कम ब्याज दरों के साथ किसान क्रेडिट कार्ड योजनाओं का विस्तार करना।
- **जोखिम शमन:** फसल बीमा कवरेज को मजबूत करना (जैसे PMFBY) और मूल्य स्थिरीकरण कोष स्थापित करना।
- **सेवा क्षेत्र को पुनः से सक्रिय करना**
  - **रियल एस्टेट और वित्तीय सेवाएँ**
    - ◆ किफायती आवास प्रोत्साहन और जीएसटी दरों में ढील के माध्यम से आवास की मांग को स्थिर करना।
    - ◆ निवेशकों का विश्वास बहाल करने के लिए NBFC के लिए विनियामक ढांचे को मजबूत करना।
  - **उभरते क्षेत्र:** निर्यात प्रोत्साहन और FDI छूट के माध्यम से IT, पर्यटन और स्वास्थ्य सेवाओं को प्रोत्साहित करना।

**निष्कर्ष:**

भारत की बचत और निवेश में ठहराव प्रणालीगत चुनौतियों को दर्शाता है, खास तौर पर घरेलू वित्त और औद्योगिक उत्पादकता में। आय बढ़ाने, कॉर्पोरेट निवेश को प्रोत्साहित करने और विनिर्माण और ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के लिए लक्षित सुधार इस प्रवृत्ति को उलटने के लिए आवश्यक हैं।

**भेदभाव के विरुद्ध शक्तिहीन एवं अप्रभावी दिशा-निर्देश**

**संदर्भ:** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने हितधारकों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए मसौदा यूजीसी (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देना) विनियम, 2025 (मसौदा विनियम) को सार्वजनिक डोमेन में जारी किया।

**पृष्ठभूमि**

- **विनियामक समीक्षा को प्रेरित करने वाली घटनाएँ**
  - रोहित वेमुला की आत्महत्या (2016) और पायल तड़वी की मौत (2019) ने उच्च शिक्षा संस्थानों (HEI) में प्रणालीगत जाति-आधारित भेदभाव को उजागर किया।
  - शीर्ष HEI (2014-2021) में 122 छात्रों की आत्महत्या की सूचना मिली, जिनमें 24 SC, 41 OBC, 3 ST और 3 अल्पसंख्यक छात्र शामिल हैं।
- **सार्वजनिक मांग:** जाति-आधारित भेदभाव को अपराध घोषित करने और संस्थागत सुरक्षा उपाय स्थापित करने के लिए रोहित अधिनियम की मांग की गई।

**2025 के मसौदा विनियमों में मुख्य परिवर्तन**

- **भेदभाव की संकुचित परिभाषा**
  - **2012 विनियम:** जाति, पंथ, धर्म, जातीयता, लिंग, विकलांगता आदि के आधार पर भेदभाव को व्यापक रूप से परिभाषित किया गया है।
  - **2025 का मसौदा:** यह जाति-आधारित भेदभाव को केवल एससी/एसटी समुदायों तक सीमित करता है, ओबीसी को छोड़कर और भेदभाव की अंतर-विषयक प्रकृति का खंडन करता है (उदाहरण के लिए वेमुला की विवादित जाति पहचान)।
- **संस्थागत तंत्र**
  - **समान अवसर केंद्र (ईओसी):** भेदभाव को संबोधित करने के लिए प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान में अनिवार्य समिति
    - ◆ संस्थागत प्रमुख (पदेन अध्यक्ष) की अध्यक्षता में।
    - ◆ संस्थागत प्रमुख द्वारा नामित सदस्य, जिसमें शैक्षणिक योग्यता या खेल उत्कृष्टता के माध्यम से चुने गए छात्र प्रतिनिधि शामिल हैं।
    - ◆ निष्पक्षता के बारे में चिंताएँ उठाता है, विशेष रूप से संस्थागत प्रमुख से जुड़े मामलों में।
- **झूठी शिकायतों के लिए दंड**
  - झूठी शिकायतें दर्ज करने वाले शिकायतकर्ताओं के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई।
  - **आलोचना:** इससे डर पैदा होता है, जिससे हाशिप पर पड़े समूह भेदभाव की शिकायत करने से कतराने लगते हैं।

**मसौदा विनियमों से जुड़ी आलोचनाएँ और चिंताएँ**

- **बहिष्करण ढाँचा**
  - ओबीसी और अल्पसंख्यक समुदायों को जाति-आधारित भेदभाव की परिभाषा से बाहर रखा गया है।
  - कानूनी खामियाँ संस्थाओं को मामलों को खारिज करने की अनुमति देती हैं (उदाहरण के लिए वेमुला की जाति को पूर्वव्यापी रूप से ओबीसी के रूप में वर्गीकृत किया जाना)।
- **शिकायत निवारण में संरचनात्मक पूर्वाग्रह**
  - संस्थागत प्रमुख के प्रभाव के कारण इक्विटी समितियों में स्वतंत्रता का अभाव है।
  - नामांकन-आधारित छात्र प्रतिनिधित्व समावेशीपन को कमज़ोर करता है।
- **सार से ज़्यादा धारणा पर ध्यान केंद्रित करना**
  - मसौदा प्रणालीगत असमानता को संबोधित करने के बजाय भेदभाव की धारणा को खत्म करने को प्राथमिकता देता है
  - यह 2012 के नियमों के विपरीत है, जिसमें मानवीय गरिमा और व्यापक भेदभाव विरोधी सिद्धांतों पर जोर दिया गया था।
- **कानूनी और नैतिक कमियाँ**
  - मसौदा समानता और गरिमा की संवैधानिक गारंटी के साथ संरेखित करने में विफल रहता है।
  - यह भेदभाव को एक संरचनात्मक मुद्दे के बजाय एक विचलन के रूप में मानता है।

**निहितार्थ**

- **असमानता का स्थायीकरण:** संकीर्ण परिभाषाएँ और पक्षपातपूर्ण समितियाँ सामाजिक बहिष्कार को मजबूत करने का जोखिम उठाती हैं।
- **विश्वास का क्षरण:** हाशिप पर पड़े समूह संस्थागत तंत्रों में विश्वास खो सकते हैं।

- **विनियामक अप्रभावीता:** मसौदा विनियमों में प्रवर्तन की कमी है, जिससे वे परिवर्तनकारी होने के बजाय प्रतीकात्मक बन जाते हैं।

### आगे की राह

- **परिभाषाओं का विस्तार करके भेदभाव विरोधी उपायों के दायरे को व्यापक बनाना**
  - जाति-आधारित भेदभाव की परिभाषा को संशोधित करना ताकि इसमें स्पष्ट रूप से ओबीसी, अल्पसंख्यक और अन्य हाशिफ पर पड़े समूहों को शामिल किया जा सके।
  - अतिव्यापी पहचानों (जैसे जाति, लिंग, धर्म) को संबोधित करने के लिए एक अंतर-विषयक दृष्टिकोण अपनाना।
- **शिकायत निवारण तंत्र में सुधार करना**
  - **समानता समितियों का पुनर्गठन करना**
    - ◆ **स्वतंत्रता सुनिश्चित करना:** संस्थागत प्रमुखों को निर्वाचित या बाहरी निष्पक्ष अध्यक्षों (जैसे सेवानिवृत्त न्यायाधीश, नागरिक समाज के प्रतिनिधि) से बदलें।
    - ◆ **सदस्यता में विविधता लाना:** हाशिफ पर पड़े समुदायों, संकाय और बाहरी विशेषज्ञों से चुने गए छात्र प्रतिनिधियों को शामिल करना।
  - **प्रक्रिया में पारदर्शिता**
    - ◆ भेदभाव के मामलों पर समिति के निर्णयों और वार्षिक रिपोर्टों का सार्वजनिक प्रकटीकरण अनिवार्य करना।
    - ◆ देरी को रोकने के लिए शिकायतों के समाधान के लिए समयसीमा निर्धारित करना।

- **शिकायतकर्ताओं के लिए जवाबदेही और सुरक्षा को संतुलित करना**
  - **प्रतिशोध के विरुद्ध सुरक्षा:** जब तक कि कठोर, निष्पक्ष जांच के माध्यम से झूठी शिकायतें साबित न हो जाएं, तब तक शिकायतकर्ताओं को दंडित करने पर रोक लगाना।
  - वास्तविक शिकायतों पर कार्रवाई करने में विफल रहने वाले संस्थानों के लिए दंड लागू करना।
  - **सहायता प्रणालियाँ:** कार्यवाही के दौरान शिकायतकर्ताओं को कानूनी सहायता और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करना।
- **प्रणालीगत असमानता को संबोधित करना**
  - **अनिवार्य प्रशिक्षण और जागरूकता:** संकाय, कर्मचारियों और छात्रों के लिए जाति संवेदनशीलता, भेदभाव विरोधी कानूनों और समावेशी प्रथाओं पर कार्यशालाएँ आयोजित करना। पाठ्यक्रम में समानता और विविधता मॉड्यूल को एकीकृत करना।
  - **संस्थागत ऑडिट:** प्रवेश, ग्रेडिंग और परिसर जीवन में जाति-आधारित असमानताओं का आकलन करने के लिए वार्षिक ऑडिट आयोजित करना।

### निष्कर्ष:

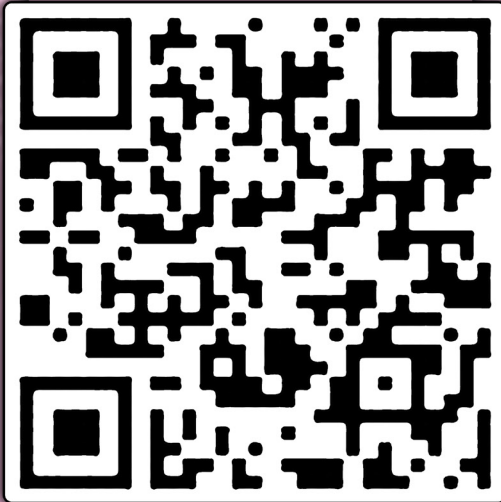
2025 के मसौदा नियम 2012 के ढांचे से एक प्रतिगामी बदलाव को दर्शाते हैं, जो मूल समानता पर नौकरशाही दृष्टिकोण को प्राथमिकता देता है। परिभाषाओं को सीमित करके, संस्थागत शक्ति को केंद्रीकृत करके और शिकायतकर्ताओं को दंडित करके, यूजीसी प्रणालीगत भेदभाव को खत्म करने के बजाय उसे मजबूत करने का जोखिम उठाता है। मसौदे के विरोधाभास भेदभाव को एक संरचनात्मक मुद्दे के रूप में समझने की एक बुनियादी गलतफहमी को उजागर करते हैं, जो हाशिफ पर पड़े छात्रों के अधिकारों की रक्षा करने की इसकी क्षमता को कमजोर करता है।

## चहल एकेडमी द्वारा निःशुल्क पहल



'इंडियन एक्सप्रेस' में क्या पढ़ें?

क्यू आर कोड स्कैन करें



## त्वरित पुनरीक्षण (क्विक रिवीजन)

### मार्च माह के महत्वपूर्ण दिवस

दिनांक	दिवस	महत्त्व / टिप्पणी / विवरण
1 मार्च	शून्य भेदभाव दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>सभी को पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने का अधिकार है तथा यह गरिमा के साथ जीने का उत्सव है।</li> <li>विषय 2025: वी स्टैन्ड टुगेदर</li> </ul>
1 मार्च	विश्व सागरी घास दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>मई 2022 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1 मार्च को विश्व सागरी घास दिवस घोषित किया।</li> <li>सागरी घासों समुद्री पुष्पीय पौधे होती हैं जो उथले जल क्षेत्रों में पाई जाती हैं — उष्ण कटिबंध से लेकर आर्कटिक वृत्त तक।</li> <li>ये व्यापक रूप से पानी के नीचे मैदानों का निर्माण करती हैं, जो जटिल, अत्यंत उत्पादक और जैविक रूप से समृद्ध पर्यावास बनाते हैं।</li> </ul>
3 मार्च	विश्व वन्यजीव दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>20 दिसंबर 2013 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा के 68वें सत्र में 3 मार्च को संयुक्त राष्ट्र विश्व वन्यजीव दिवस घोषित किया गया।</li> <li>यह दिन 1973 में 'लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन' (CITES) के हस्ताक्षर दिवस के रूप में महत्वपूर्ण है।</li> <li>विषय 2025: वन्यजीव संरक्षण वित्त: लोगों और पृथ्वी में निवेश</li> </ul>
4-10 मार्च	राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह	<ul style="list-style-type: none"> <li>4 मार्च – राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस</li> <li>भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह का उद्देश्य जीवन के सभी क्षेत्रों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। यह 4 मार्च को शुरू होता है, जिसे राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है, और 10 मार्च तक चलता है।</li> <li>विषय 2025: विकसित भारत के लिए सुरक्षा और कल्याण अनिवार्य हैं</li> </ul>
5 मार्च	अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण एवं अप्रसार जागरूकता दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>इस दिवस का उद्देश्य विशेष रूप से युवाओं में, निरस्त्रीकरण मुद्दों के प्रति बेहतर जागरूकता और समझ को बढ़ावा देना है।</li> </ul>
8 मार्च	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>विषय 2025: सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए: अधिकार, समानता, सशक्तिकरण</li> </ul>
10 मार्च	महिला न्यायधीशों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>यद्यपि न्यायपालिका में समानता ऐतिहासिक रूप से असमान रही है, परंतु इसे सुधारने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसका प्रमाण संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 मार्च को महिला न्यायधीशों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित करना है।</li> </ul>
12 मार्च	दांडी मार्च दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>12 मार्च वह तिथि थी जिस दिन महात्मा गांधी द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ किया गया दांडी मार्च शुरू हुआ था – जो एक अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन था।</li> <li>यह यात्रा 240 मील (390 किमी) लंबी थी, जो साबरमती आश्रम से दांडी तक की गई थी, जिसे उस समय नवसारी कहा जाता था (अब गुजरात राज्य में स्थित है)।</li> </ul>

15 मार्च	विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस प्रतिवर्ष 15 मार्च को मनाया जाता है, जो उपभोक्ता अधिकारों और उनके संरक्षण की आवश्यकता की एक महत्वपूर्ण याद दिलाता है।</li> <li>यह दिन सभी उपभोक्ताओं के मूलभूत अधिकारों को बढ़ावा देने और उन अधिकारों के सम्मान व संरक्षण को प्रोत्साहित करने का एक अवसर है। इसे पहली बार वर्ष 1983 में मनाया गया था।</li> <li>यह तिथि अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी के 15 मार्च 1962 को अमेरिकी कांग्रेस को संबोधन की स्मृति में चुनी गई थी, जिसमें उन्होंने उपभोक्ता अधिकारों को औपचारिक रूप से मान्यता देने वाले पहले विश्व नेता बने।</li> <li><b>वर्ष 2025 की थीम:</b> सतत जीवनशैली की ओर न्यायसंगत संक्रमण</li> </ul>
15 मार्च	इस्लामोफोबिया से लड़ने का अंतर्राष्ट्रीय दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>इस्लामोफोबिया मुसलमानों के प्रति डर, पूर्वाग्रह और घृणा है, जो उकसावे, शत्रुता और असहिष्णुता का रूप ले लेता है, जिससे ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही दुनिया में मुसलमानों और गैर-मुसलमानों को धमकी, उत्पीड़न, दुर्व्यवहार, भड़कावे और डराने-धमकाने का सामना करना पड़ता है।</li> </ul>
16 मार्च	राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>भारत में पल्स पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम की सफल शुरुआत की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 16 मार्च को राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस मनाया जाता है।</li> </ul>
20 मार्च	अंतर्राष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 20 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस घोषित किया, यह मान्यता देते हुए कि प्रसन्नता और भलाई मानव जीवन के सार्वभौमिक लक्ष्य और आकांक्षाएं हैं, और इन्हें सार्वजनिक नीति उद्देश्यों में शामिल किया जाना चाहिए।</li> </ul>
21 मार्च	विश्व हिमनद दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>हिमनद पृथ्वी की पारिस्थितिकी के लिए आवश्यक हैं, वे मीठे जल के महत्वपूर्ण भंडार होते हैं और ग्रह के स्वास्थ्य के संकेतक के रूप में कार्य करते हैं। ये लाखों लोगों को जल प्रदान करते हैं, समुद्र स्तर को नियंत्रित करते हैं और जैव विविधता का समर्थन करते हैं।</li> </ul>
21 मार्च	नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन हेतु अंतर्राष्ट्रीय दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li><b>वर्ष 2025 का विषय:</b> नस्लीय भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय (ICERD) की 60वीं वर्षगांठ</li> <li>21 दिसंबर 1965 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने नस्लीय भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय को अपनाया था।</li> <li>यह दिवस शार्पविल, दक्षिण अफ्रीका में 1960 में रंगभेद के “पास कानूनों” के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रदर्शन में पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में 69 लोगों की मृत्यु की स्मृति में मनाया जाता है।</li> </ul>
21 मार्च	अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li><b>वर्ष 2025 का विषय:</b> वन और भोजन</li> <li>वन वैश्विक खाद्य सुरक्षा और पोषण के स्तंभ हैं, जो लाखों परिवारों की आजीविका का स्रोत हैं। ये फल, बीज, कंद और वन्य मांस जैसे आवश्यक खाद्य पदार्थ प्रदान करते हैं, जो विशेष रूप से आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।</li> </ul>
21 मार्च	विश्व कविता दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>प्रत्येक वर्ष 21 मार्च को मनाया जाने वाला यह दिवस मानवता की सबसे मूल्यवान सांस्कृतिक और भाषाई अभिव्यक्तियों में से एक — कविता — का उत्सव है।</li> <li>यूनेस्को ने 1999 में पेरिस में अपनी 30वीं महासभा के दौरान इस दिन को अपनाया था, जिसका उद्देश्य कविता के माध्यम से भाषाई विविधता को बढ़ावा देना और संकटग्रस्त भाषाओं को अभिव्यक्ति का अवसर देना था।</li> </ul>
21 मार्च	अंतर्राष्ट्रीय नौरोज दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>नौरोज की जड़ें 3000 वर्षों से अधिक पुरानी पारसी धर्म की परंपराओं से जुड़ी हैं। यह वसंत के आगमन का संकेत देता है और सामान्यतः 20 या 21 मार्च को वसंत विषुव के दिन मनाया जाता है।</li> <li>"नौरोज" का अर्थ फारसी में "नया दिन" होता है, और यह केवल नए वर्ष की शुरुआत नहीं है, बल्कि यह जीवन, पुनर्जन्म और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्राचीन उत्सव है।</li> </ul>
21 मार्च	विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>डाउन सिंड्रोम तब होता है जब किसी व्यक्ति में गुणसूत्र 21 की एक अतिरिक्त आंशिक (या पूर्ण) प्रति होती है।</li> <li>दिसंबर 2011 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 मार्च को विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस घोषित किया।</li> </ul>
21 मार्च	विश्व कठपुतली दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>इस कला रूप का उत्सव मनाने के लिए और इसकी सार्वभौमिकता का आनंद लेने के लिए, जिससे यह सभी राजनीतिक, सांस्कृतिक और जातीय बाधाओं को पार करते हुए लोगों को एक साथ लाता है।</li> </ul>

22 मार्च	विश्व जल दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>वर्ष 2025 का विषय: हिमनद संरक्षण</li> </ul>
23 मार्च	विश्व मौसम विज्ञान दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>प्रत्येक वर्ष 23 मार्च को विश्व मौसम विज्ञान संगठन 23 मार्च 1950 को इस संगठन की स्थापना के लिए अभिसमय के लागू होने की स्मृति में यह दिवस मनाता है।</li> <li>वर्ष 2025 की थीम: मिलकर प्रारंभिक चेतावनी अंतर को पाटना</li> </ul>
23 मार्च	शहीद दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>शहीद दिवस उन भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की वीरता और समर्पण को श्रद्धांजलि है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।</li> <li>23 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को लाहौर जेल में फांसी दी गई थी।</li> <li>इन तीनों क्रांतिकारियों को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों द्वारा मृत्युदंड दिया गया था।</li> </ul>
24 मार्च	विश्व तपेदिक दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>हर वर्ष यह दिवस तपेदिक (टीबी) की भयावह स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के प्रति जन जागरूकता बढ़ाने और इस वैश्विक महामारी को समाप्त करने के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है।</li> <li>इस तिथि को इसलिए चुना गया क्योंकि 24 मार्च 1882 को डॉ. रॉबर्ट कोच ने टीबी के जीवाणु की खोज की घोषणा की थी, जिससे इस रोग के निदान और उपचार का मार्ग प्रशस्त हुआ।</li> </ul>
24 मार्च	सत्य के अधिकार और मानवाधिकार हनन के शिकार लोगों की गरिमा के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>24 मार्च को प्रतिवर्ष यह दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य गंभीर मानवाधिकार उल्लंघनों और पीड़ितों की गरिमा के संबंध में सत्य के अधिकार को बढ़ावा देना है।</li> <li>यह दिन मोनसिन्योर ऑस्कर अर्नुल्फो रोमेरो की स्मृति को समर्पित है, जिनकी 24 मार्च 1980 को हत्या कर दी गई थी।</li> <li>रोमेरो अल सल्वाडोर में सबसे कमजोर लोगों के मानवाधिकारों के उल्लंघन की मुखर आलोचना करते थे।</li> </ul>
25 मार्च	दासता और ट्रांसअटलांटिक दास व्यापार के शिकार लोगों की स्मृति का अंतर्राष्ट्रीय दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>2006 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने माना कि "दास व्यापार और गुलामी मानवता के इतिहास में मानवाधिकारों के सबसे बुरे उल्लंघनों में से हैं, खासकर उनके पैमाने और अवधि को ध्यान में रखते हुए" और 25 मार्च 2007 को ट्रांसअटलांटिक दास व्यापार के उन्मूलन की दो सौवर्षीय वर्षगांठ के स्मरणोत्सव के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में नामित किया।</li> <li>गुलामी और ट्रांसअटलांटिक दास व्यापार के पीड़ितों की याद का अंतर्राष्ट्रीय दिवस चिंतन का समय है। लेकिन यह शिक्षा का भी समय है।</li> </ul>
25 मार्च	बंदी और लापता कर्मियों के साथ एकजुटता का अंतर्राष्ट्रीय दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>यह दिवस हर वर्ष 1985 में एलेक कोलेट के अपहरण की वर्षगांठ पर मनाया जाता है। वे एक पूर्व पत्रकार थे जो फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (UNRWA) के लिए कार्यरत थे। उन्हें सशस्त्र बंदूकधारियों द्वारा अगवा कर लिया गया था और 2009 में उनका शव लेबनान की बेका घाटी में मिला।</li> </ul>
27 मार्च	विश्व रंगमंच दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>यह एक वार्षिक उत्सव है जो पूरे इतिहास में मनोरंजन के एक रूप के रूप में रंगमंच के महत्व को उजागर करता है। आधुनिक समय में, यह इससे कहीं अधिक बन गया है।</li> </ul>
30 मार्च	शून्य अपशिष्ट का अंतर्राष्ट्रीय दिवस	<ul style="list-style-type: none"> <li>वर्ष 2025 का विषय: फैशन और वस्त्रों में शून्य अपशिष्ट की ओर</li> <li>14 दिसंबर 2022 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अपनी 77वीं सत्र के दौरान 30 मार्च को प्रतिवर्ष शून्य अपशिष्ट का अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया।</li> <li>इस दिवस को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) और संयुक्त राष्ट्र मानव बस्तियों कार्यक्रम (UN-Habitat) द्वारा संयुक्त रूप से मनाया जाता है।</li> </ul>

### समाचारों में महत्वपूर्ण शिखर सम्मेलन

	सम्मेलन	विवरण
1	वेक्स इंडिया: एक विहंगम दृश्य चुनौती	<ul style="list-style-type: none"> <li>यह क्रिएट इन इंडिया चुनौतियों के तहत एक पहल है, जिसका उद्देश्य हवाई छायांकन के माध्यम से भारत की सुंदरता और विविधता को प्रदर्शित करना है।</li> <li>आयोजक: ब्राडकास्ट इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स इंडिया लिमिटेड (BECIL) एवं सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।</li> </ul>
2	मोबाइल वर्ल्ड कांग्रेस (MWC) 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने स्पेन के बार्सिलोना में आयोजित एमडब्ल्यूसी 2025 में भारत का प्रतिनिधित्व किया।</li> <li>थीम: कवरेज, कनेक्ट, क्रीएट</li> </ul>

3	विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन (WSDS) 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने नई दिल्ली में विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन (डब्ल्यूएसडीएस) 2025 का उद्घाटन किया।</li> <li>ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (टेरी) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सतत विकास और जलवायु समाधान में तेजी लाने के लिए वैश्विक साझेदारी को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।</li> </ul>
4	ग्रिडकॉन 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>केंद्रीय विद्युत और आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री मनोहर लाल ने ग्रिडकॉन 2025 - अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सह प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।</li> <li>यह कार्यक्रम आईआईसीसी, यशोभूमि, द्वारका, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था।</li> <li>इसका आयोजन पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड) द्वारा विद्युत मंत्रालय के संरक्षण में और सीआईजीआईआई इंडिया के सहयोग से किया गया था।</li> </ul>
5	जल स्थिरता सम्मेलन 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>इसका आयोजन जल शक्ति मंत्रालय के राष्ट्रीय जल मिशन (एनडब्ल्यूएम) के अंतर्गत जल उपयोग दक्षता ब्यूरो (बीडब्ल्यूयूई) द्वारा ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (टेरी) के सहयोग से किया गया।</li> </ul>
6	आतंक के लिए धन नहीं (NMFT) सम्मेलन	<ul style="list-style-type: none"> <li>म्युनिख में चौथा 'नो मनी फॉर टेरर' (एनएमएफटी) सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें आतंकवाद के वित्तपोषण से निपटने के वैश्विक प्रयासों पर प्रकाश डाला गया।</li> <li>भारत, जो 2018 से इसमें प्रमुख भागीदार है, ने आतंकवाद से लड़ने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।</li> </ul>
7	महिलाओं की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र आयोग का 69वां सत्र (UNCSCW)	<ul style="list-style-type: none"> <li>केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयॉर्क में आयोजित इस सत्र में भाग लिया।</li> <li><b>फोकस:</b> लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण, समावेशी नीतियाँ और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।</li> </ul>
8	रायसीना डायलॉग 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>रायसीना डायलॉग भारत का भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र पर प्रमुख सम्मेलन है, जो कुछ सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए समर्पित है।</li> <li>नई दिल्ली में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला यह संवाद विश्व के नेताओं, नीति निर्माताओं, उद्योग विशेषज्ञों और विद्वानों को अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने वाली चर्चाओं में शामिल होने के लिए एक साथ लाता है।</li> <li>रायसीना डायलॉग का 10वां संस्करण 17 मार्च से 19 मार्च, 2025 तक चला।</li> <li><b>थीम:</b> कालचक्र - लोग, शांति और ग्रह</li> </ul>
9	वेवएक्स 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (MIB) ने मीडिया और मनोरंजन स्टार्टअप को फंडिंग, मेंटरशिप और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए वेवएक्स 2025 नामक एक अभूतपूर्व पहल की शुरुआत की है।</li> <li>स्थान: जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर, मुंबई</li> <li>तिथि: 1-4 मई, 2025</li> </ul>
10	सोर्सएक्स इंडिया 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के सहयोग से फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन (FIEO) द्वारा आयोजित सोर्सएक्स इंडिया 2025 का तीसरा संस्करण यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।</li> <li>यह कार्यक्रम मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और पीएलआई योजना जैसी भारत की पहलों के साथ संरेखित है, जो इसकी विनिर्माण प्रतिस्पर्धात्मकता और वैश्विक व्यापार पदचिह्न को मजबूत करता है।</li> </ul>
11	नैनो इलेक्ट्रॉनिक्स रोड शो	<ul style="list-style-type: none"> <li>इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने IISc बेंगलुरु, IIT बॉम्बे, IIT मद्रास, IIT दिल्ली, IIT खड़गपुर और IIT गुवाहाटी के सहयोग से IISc बैंगलोर के राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी परिसर में भारत के पहले नैनो इलेक्ट्रॉनिक्स रोड शो की सफलतापूर्वक मेजबानी की।</li> </ul>
12	अंतर्राष्ट्रीय रामायण कॉन्क्लेव	<ul style="list-style-type: none"> <li>अंतर्राष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान ने कोलंबो स्थित स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र में रामायण सम्मेलन का आयोजन किया।</li> <li>भारत और श्रीलंका के प्रख्यात विद्वानों और धार्मिक नेताओं ने भगवान राम के व्यक्तित्व के वैश्विक प्रभाव और श्रीलंका में रामायण से संबंधित स्थलों के ऐतिहासिक महत्व पर चर्चा में भाग लिया।</li> </ul>

13	पर्यावरण पर राष्ट्रीय सम्मेलन 2025	<ul style="list-style-type: none"> <li>राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पर्यावरण पर राष्ट्रीय सम्मेलन - 2025 का उद्घाटन किया।</li> <li>आयोजक: राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी)</li> </ul>
----	------------------------------------	--

### समाचारों में चर्चित पुरस्कार

	पुरस्कार	विजेता	विवरण
1	97वां अकादमी पुरस्कार (ऑस्कर 2025)		<ul style="list-style-type: none"> <li>सर्वश्रेष्ठ फिल्म – <i>Anora</i></li> <li>सर्वश्रेष्ठ निर्देशक – <i>Sean Baker (Anora)</i></li> <li>प्रमुख अभिनेता – <i>Adrien Brody (The Brutalist)</i></li> <li>प्रमुख अभिनेत्री – <i>Mikey Madison (Anora)</i></li> <li>सर्वश्रेष्ठ एनिमेटेड फीचर फिल्म – <i>Flow</i></li> <li>सर्वश्रेष्ठ एनिमेटेड लघु फिल्म – <i>In the Shadow of the Cypress</i></li> </ul>
2	ऑनरेरी ऑर्डर ऑफ फ्रीडम ऑफ बारबाडोस	नरेंद्र मोदी	<ul style="list-style-type: none"> <li>प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कोविड-19 महामारी के दौरान उनके रणनीतिक नेतृत्व और सहायता को मान्यता देते हुए प्रतिष्ठित पुरस्कार 'बारबाडोस के मानद आदेश' से सम्मानित किया गया है।</li> </ul>
3	IIFA पुरस्कार 2025		<ul style="list-style-type: none"> <li>सर्वश्रेष्ठ फिल्म – लापता लेडीज़</li> <li>सर्वश्रेष्ठ निर्देशक – किरण राव (लापता लेडीज़)</li> <li>प्रमुख अभिनेता – कार्तिक आर्यन (भूल भुलैया 3)</li> <li>प्रमुख अभिनेत्री – नितांशी गोयल (लापता लेडीज़)</li> </ul>
4	रामसर पुरस्कार	जयश्री वेंकटेशन	<ul style="list-style-type: none"> <li>जयश्री वेंकटेशन चेन्नई स्थित केयर अर्थ ट्रस्ट की सह-संस्थापक हैं।</li> <li>वे 'वेटलैंड वाइज यूज' के लिए रामसर पुरस्कार से सम्मानित होने वाली पहली भारतीय बन गई हैं, जो आर्द्रभूमि के सतत प्रबंधन में योगदान के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त सम्मान है।</li> <li>इस पुरस्कार की घोषणा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2024 की पूर्व संध्या पर जिनेवा में रामसर सचिवालय द्वारा की गई।</li> </ul>
5	यू.के. सरकार का लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड	चिरंजीवी	<ul style="list-style-type: none"> <li>तेलुगु सिनेमा के दिग्गज सुपरस्टार चिरंजीवी को भारतीय सिनेमा, सांस्कृतिक प्रभाव और सार्वजनिक सेवा में उनके अपार योगदान के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।</li> <li>यह पुरस्कार लंदन स्थित थिंक टैंक ब्रिज इंडिया द्वारा ब्रिटेन की संसद के प्रतिष्ठित हाउस ऑफ कॉमन्स में प्रदान किया गया।</li> </ul>
6	महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार	राम सुतार	<ul style="list-style-type: none"> <li>स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को डिजाइन करने के लिए मशहूर मूर्तिकार राम सुतार को महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।</li> <li>महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार महाराष्ट्र का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है।</li> <li>यह महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।</li> </ul>
7	डैनब्रॉग ऑर्डर का नाइट क्रॉस	विजय शंकर	<ul style="list-style-type: none"> <li>दक्षिणी भारत के लिए डेनमार्क के मानद महावाणिज्यदूत और सनमार समूह के अध्यक्ष विजय शंकर को डेनमार्क के राजा द्वारा नाइट क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ डैनब्रोग से सम्मानित किया गया है।</li> </ul>
8	स्टॉकहोम जल पुरस्कार 2025	गुंटर ब्लॉशल	<ul style="list-style-type: none"> <li>वियना यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर गुंटर ब्लॉशल ने 2025 का स्टॉकहोम जल पुरस्कार जीता।</li> <li>यह पुरस्कार बाढ़ जोखिम विश्लेषण और जलवायु परिवर्तन अनुसंधान में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए दिया गया।</li> <li>स्टॉकहोम जल पुरस्कार दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित जल पुरस्कार है।</li> <li>1991 से, स्टॉकहोम जल पुरस्कार असाधारण जल-संबंधी उपलब्धियों के लिए लोगों और संगठनों को दिया जाता रहा है।</li> </ul>
9	59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार	विनोद कुमार शुक्ल	<ul style="list-style-type: none"> <li>प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार; भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान</li> </ul>

10	संगीता कलानिधि अवार्ड	आर के श्रीरामकुमार	• प्रसिद्ध वायलिन वादक; संगीत अकादमी द्वारा 2025 का प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया।
11	एबेल पुरस्कार 2025	मसाकी काशीवारा	• जापानी गणितज्ञ; बीजगणितीय विश्लेषण और प्रतिनिधित्व सिद्धांत में योगदान के लिए सम्मानित; गणित का नोबेल कहा जाता है।
12	होल्बर्ग पुरस्कार 2025	गायली चक्रवर्ती स्पीवाक	• प्रसिद्ध उत्तर-औपनिवेशिक विद्वान और साहित्यिक आलोचक; मानविकी व सामाजिक विज्ञान में उल्लेखनीय कार्य के लिए।

### समाचारों में महत्वपूर्ण शब्दावली

	चर्चित शब्दावली	अर्थ एवं विवरण
1	कोअलिशन ऑफ द विलिंग	• यह एक तदर्थ गठबंधन है, जिसमें विभिन्न देश किसी साझा उद्देश्य (अक्सर सैन्य अभियान) को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं। इसमें कोई स्थायी या औपचारिक संधि नहीं होती, बल्कि आवश्यकता अनुसार सहयोग होता है।
2	हंटावायरस पल्मोनरी सिंड्रोम (HPS)	• यह एक गंभीर श्वसन संबंधी रोग है, जो हंटावायरस नामक कृतक-जनित विषाणुओं के कारण होता है। • यह वायरस संक्रमित कृतकों के मूत्र, मल और लार के माध्यम से फैलता है। • एचपीएस मुख्यतः पश्चिमी गोलार्ध में पाया जाता है। हिरण चूहा इसका प्रमुख वाहक है। • इस रोग के लिए कोई ज्ञात इलाज या टीका नहीं है।
3	पिग बुचरिंग स्कैम	• यह एक वित्तीय घोटाले की तकनीक है, जिसमें निवेशकों को झूठे लाभ दिखाकर लगातार निवेश करने को प्रोत्साहित किया जाता है। • स्कैमर उपयोगकर्ता को विश्वास में लेकर उसे अधिक पैसा लगाने के लिए प्रेरित करते हैं, और जब बड़ा निवेश हो जाता है, तो पैसे लेकर गायब हो जाते हैं।
4	ऑटोओपन	• यह एक यांत्रिक उपकरण होता है, जो किसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की हूबहू नकल वास्तविक स्याही से करता है। • इसका उपयोग तब होता है जब अधिकारी स्वयं हस्ताक्षर करने में असमर्थ हो या अनुपस्थित हो। यह मशीन एक प्रोग्राम की गई बाहु के माध्यम से कार्य करती है।
5	मुज़हरा	• यह पंजाब में 1930 के दशक में शुरू हुआ एक प्रमुख किसान संघर्ष था। • भूमिहीन कृषक, जिन्हें 'मुज़हरा' कहा जाता था, उन ज़मीनों पर मालिकाना हक की मांग कर रहे थे जिन पर वे पीढ़ियों से खेती कर रहे थे। • यह आंदोलन बाद में 'PEPSU मुज़हरा आंदोलन' के नाम से जाना गया। • अंग्रेजी शासन ने कुछ किसानों को जबरन उनकी ज़मीनें छोड़ने और किरायेदार बनने के लिए मजबूर किया था। 19 मार्च को इसकी वर्षगांठ मनाई जाती है।

### समाचारों में प्रमुख व्यक्तियों का निधन

	व्यक्ति	महत्वपूर्ण जानकारी
1.	गरिमेला बालकृष्ण प्रसाद	• वह एक प्रसिद्ध कर्नाटिक शास्त्रीय गायक और तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (TTD) के पूर्व अष्टान विद्वान (दरबारी संगीतज्ञ) थे। उन्होंने भक्ति संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।
2.	रमाकांत रथ	• वे एक प्रतिष्ठित ओड़िया कवि और पूर्व IAS अधिकारी थे। उन्होंने आधुनिक ओड़िया कविता में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया।
3.	डॉ. सेंकालोंग (सेनक) यादेन	• वे एक प्रसिद्ध नागा वैज्ञानिक और शिक्षाविद् थे। उन्हें व्यापक रूप से "संयुक्त नागालैंड के विज्ञान पुरुष" (Man of Science of Nagaland) के रूप में जाना जाता था।

### दैनिक वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में मंत्रिपरिषद् के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है:

1. मंत्रिपरिषद् का नेतृत्व प्रधानमंत्री करते हैं और इसमें कैबिनेट मंत्री, राज्य मंत्री और उप मंत्री शामिल होते हैं।
2. संवैधानिक संशोधन के अनुसार नए मंत्रिमंडल में मंत्रियों की कुल संख्या 65 तक सीमित है।
3. राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की सलाह के आधार पर मंत्रिपरिषद् के सदस्यों की नियुक्ति करते हैं।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके उत्तर चुनें:

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 2 और 3 |
| (c) केवल 1 और 3 | (d) 1, 2 और 3   |

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(2) के तहत उचित प्रतिबंध लगाने का आधार नहीं है?

- (a) भारत की संप्रभुता और अखंडता
- (b) विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध
- (c) सार्वजनिक व्यवस्था
- (d) धार्मिक विश्वास

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से कौन भारतीय संविधान के अनुच्छेद 101 के तहत संसद के किसी सदन में किसी व्यक्ति की सदस्यता के प्रश्न का निर्धारण करता है?

- (a) भारत का सर्वोच्च न्यायालय
- (b) भारत का चुनाव आयोग
- (c) भारत का राष्ट्रपति
- (d) वह सदन जिसमें व्यक्ति निर्वाचित होता है

प्रश्न 4. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. AI सिस्टम स्पष्ट मानवीय हस्तक्षेप के बिना प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, छवि पहचान और निर्णय लेने जैसे कार्य कर सकते हैं।

2. मशीन लर्निंग, जो AI का एक उपसमूह है, पूरी तरह से पर्यवेक्षित शिक्षण पर निर्भर करता है और इसमें अपर्यवेक्षित या सुदृढ़ीकरण शिक्षण तकनीक शामिल नहीं है।

3. AI से जुड़ी नैतिक चिंताओं में पूर्वाग्रह, गोपनीयता और विभिन्न उद्योगों में नौकरी के विस्थापन की संभावना से जुड़े मुद्दे शामिल हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- |                   |                       |
|-------------------|-----------------------|
| (a) केवल एक       | (b) केवल दो           |
| (c) उपर्युक्त सभी | (d) इनमें से कोई नहीं |

प्रश्न 5. सार्वजनिक व्यय सूचकांक की गुणवत्ता किसके द्वारा जारी की जाती है?

- |                       |                        |
|-----------------------|------------------------|
| (a) नीति आयोग         | (b) भारतीय रिजर्व बैंक |
| (c) प्रवर्तन निदेशालय | (d) वाणिज्य मंत्रालय   |

प्रश्न 6. ग्रुप ऑफ सेवन (G7) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. G7 देशों का एक समूह है जिसमें दुनिया की कुछ सबसे बड़ी उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ शामिल हैं।
2. G7 की औपचारिक स्थापना 1975 में छह सदस्यों के साथ हुई थी और 1997 में रूस के शामिल होने के बाद यह सात हो गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- |                  |                      |
|------------------|----------------------|
| (a) केवल 1       | (b) केवल 2           |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1 और न ही 2 |

प्रश्न 7. विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA), 1999 के तहत विनियमित लेनदेन के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. माल का आयात और निर्यात
2. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)
3. बाहरी वाणिज्यिक उधार (ECB)

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- |                   |                       |
|-------------------|-----------------------|
| (a) केवल एक       | (b) केवल दो           |
| (c) उपर्युक्त सभी | (d) इनमें से कोई नहीं |

प्रश्न 8. उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में नियुक्त होने के लिए न्यूनतम योग्यता क्या है?

- किसी भी न्यायालय में कम से कम 7 वर्ष न्यायाधीश के रूप में सेवा की हो
- उच्च न्यायालय में कम से कम 10 वर्ष अधिवक्ता के रूप में कार्य किया हो
- वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश हो
- नियुक्ति से पहले राज्यपाल रह चुके हों

प्रश्न 9. समुद्री पानी के तापीय विस्तार के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पानी गर्म होने पर फैलता है।
- यह वैश्विक समुद्र तल में वृद्धि का जिम्मेदार है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- केवल 1
- केवल 2
- 1 और 2 दोनों
- न तो 1 न ही 2

प्रश्न 10. मानव इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस (HIV) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- HIV शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली पर आक्रमण करता है।
- इसे प्रबंधित नहीं किया जा सकता और यह निश्चित रूप से AIDS की ओर ले जाता है।
- भारत में नागालैंड में HIV का प्रचलन सबसे अधिक है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- केवल एक
- केवल दो
- उपर्युक्त सभी
- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 11. 'गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल' के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

- अब्राहम संधियों (Abraham Accords) के अंतर्गत इसराइल को औपचारिक रूप से मान्यता देने वाला आखिरी GCC देश सऊदी अरब था।
- GCC शिखर सम्मेलन हर दो वर्षों में आयोजित होता है।
- कतर प्राकृतिक गैस का अकेला सबसे बड़ा उत्पादक नहीं है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- केवल एक
- केवल दो
- उपर्युक्त सभी
- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 12. वित्त आयोग के प्रमुख कार्यों के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

- शेयर बाजारों का नियमन करना
- केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय वितरण की सिफारिश करना
- सहयोगात्मक संघवाद (Cooperative federalism) को सुनिश्चित करना
- मौद्रिक नीति तैयार करना

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- केवल एक
- केवल दो
- केवल तीन
- उपर्युक्त सभी

प्रश्न 13. ऐतिहासिक 'टी हॉर्स रोड' निम्नलिखित को जोड़ता था:

- भारत और मध्य एशिया
- भारत और पश्चिम एशिया
- भारत और चीन
- भारत और पूर्वी एशिया

प्रश्न 14. उर्वरकों (Fertilisers) के लिए नाइट्रोजन-फॉस्फोरस-पोटेशियम (NPK) का आदर्श औसत अनुपात है:

- 1:2:3
- 3:2:1
- 4:2:1
- 1:2:4

प्रश्न 15. स्पीकर के अधिकारों के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

- बराबरी की स्थिति में निर्णयात्मक वोट देना
- यह निर्णय करना कि कौन-सा विधेयक धन विधेयक (Money Bill) है
- दुराचार (अनुशासनहीन व्यवहार) करने वाले सांसदों को निलंबित करना

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- केवल एक
- केवल दो
- उपर्युक्त सभी
- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 16. महासभा (General Assembly) द्वारा न किए जाने वाले निम्नलिखित कार्यों के संदर्भ में विचार करें:

- UN का बजट अनुमोदित करना
- सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य चुनना
- सभी सदस्य-राष्ट्रों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी प्रस्ताव पारित करना
- सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर महासचिव (Secretary-General) की नियुक्ति करना

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न17. रिस्डिप्लम (Risdiplam) नामक दवा का उपयोग निम्नलिखित में से किसके उपचार के लिए किया जाता है?

- (a) डाउन सिंड्रोम (b) सिकल सेल एनीमिया  
(c) थैलेसीमिया (d) स्पाइनल मस्क्युलर एट्रोफी

प्रश्न18. शहरी बस्तियों का नेशनल जियोस्पेशल नॉलेज-आधारित लैंड सर्वे (NAKSHA) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड्स मॉडर्नाइजेशन प्रोग्राम (DILRMP) के तहत एक शहर सर्वेक्षण और मानचित्रण पहल है।
2. इसे ग्रामीण विकास मंत्रालय के भूसंसाधन विभाग (DoLR) द्वारा संचालित किया जाता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

प्रश्न19. “अनुराधा भासिन बनाम भारत संघ” के मामले में मुख्य प्रश्न क्या था?

- (a) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन  
(b) निजता के अधिकार का उल्लंघन  
(c) संपत्ति के अधिकार का उल्लंघन  
(d) सूचना के अधिकार का उल्लंघन

प्रश्न20. उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO) के प्राथमिक लक्ष्य के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. सदस्य-राष्ट्रों के बीच आर्थिक सहयोग
2. अपने सदस्यों की रक्षा और सुरक्षा
3. राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान
4. यूरोप में राजनीतिक एकता

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न21. निम्नलिखित में से किसने ब्रह्मांड की उत्पत्ति को बेहतर समझने के लिए SPHEREx टेलीस्कोप विकसित किया है?

- (a) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)  
(b) यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA)  
(c) राष्ट्रिय वैमानिकी एवं अंतरिक्ष प्रशासन (NASA)  
(d) जापान एयरोस्पेस अन्वेषण एजेंसी (JAXA)

प्रश्न22. घड़ियालों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. घड़ियाल लंबे नाक वाले, मछली-खाने वाले मगरमच्छीय प्राणी हैं जो केवल भारत में पाए जाते हैं।
2. वे संकटग्रस्त प्रजाति हैं और केवल मध्यप्रदेश के चंबल नदी तक ही उनका वितरण सीमित है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

प्रश्न23. मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 के तहत प्रदान किए जाने वाले लाभों के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. वेतन भत्तापूर्ण मातृत्व अवकाश
2. चिकित्सीय बोनस
3. नवजात शिशुओं के लिए निःशुल्क बाल देखभाल सेवाएं
4. गर्भावस्था के दौरान बर्खास्तगी से सुरक्षा

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न24. नई शिक्षा नीति (NEP) में प्रारंभिक बचपन शिक्षा के लिए जिन प्रमुख क्षेत्रों पर जोर दिया गया है, उनके संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. आंगनवाड़ी और प्री-प्राइमरी शिक्षा
2. सीधे प्रथम कक्षा से आरंभ करना
3. बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देना
4. विद्यालय शिक्षा की अवधि को घटाना

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न25. संयुक्त संसदीय समिति (JPC) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एक संयुक्त संसदीय समिति (JPC) एक एडहॉक निकाय है जिसमें संसद के दोनों सदनों के सदस्य शामिल होते हैं।
2. JPC में ट्रेजरी (सरकार) और विपक्ष का प्रतिनिधित्व अनुपात 2:1 होता है।
- 3 JPC गठित करने का प्रस्ताव केवल लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न26. राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (NGT), केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) से कैसे भिन्न है?

1. NGT एक अधिनियम द्वारा स्थापित है जबकि CPCB सरकार के कार्यकारी आदेश द्वारा बनाया गया था।
2. NGT पर्यावरणीय न्याय प्रदान करता है और उच्च न्यायालयों के मुकदमों का बोझ कम करता है, जबकि CPCB नदियों और कुओं की स्वच्छता बढ़ाता है और देश में वायु गुणवत्ता में सुधार का प्रयत्न करता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

प्रश्न27. निम्नलिखित में से निर्वाचन सीमांकन आयोग (Delimitation Commission) के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?

- (a) यह एक स्वतंत्र निकाय है  
(b) यह निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएँ समायोजित करने के लिए उत्तरदायी है  
(c) इसके आदेशों को न्यायालय में चुनौती दी जा सकती है  
(d) यह भारत निर्वाचन आयोग के परामर्श से कार्य करता है

प्रश्न28. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) द्वारा ऑडिट किए जाने वाले निम्नलिखित मदों के संदर्भ में विचार करें:

1. राज्य सरकार के खाते
2. केंद्र सरकार के खाते
3. सरकार द्वारा संचालित निगम
4. निजी कंपनियाँ सीधे
5. राजनीतिक दलों के चुनाव व्यय

उपर्युक्त में से कितने मदों का ऑडिट CAG करता है?

- (a) केवल दो (b) केवल तीन  
(c) केवल चार (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न29. सौर प्रज्वाल (Solar Flares) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सौर प्रज्वाल, सूर्य की सतह और वायुमंडल से अचानक, तीव्र ऊर्जा और विकिरण के उत्सर्जन होते हैं।
2. सौर प्रज्वाल, पृथ्वी पर संचार प्रणाली और नेविगेशन सिग्नलों को प्रभावित कर सकते हैं।
3. पृथ्वी पर ऑरोरा (ध्रुवीय प्रभा) का एकमात्र स्रोत सौर प्रज्वाल हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न30. FAO का 'Codex Alimentarius' किससे संबंधित है?

- (a) जलवायु अनुकूलन नीतियाँ (b) कृषि सब्सिडी  
(c) वनों की कटाई नियम (d) अंतर्राष्ट्रीय खाद्य मानक

प्रश्न31. कुर्दिस्तान वर्क्स पार्टी (PKK) एक विद्रोही समूह है:

- (a) ईरान में (b) इराक में  
(c) सीरिया में (d) तुर्की में

प्रश्न32. एवियन फ्लू (Avian Flu) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह इन्फ्लुएंजा वायरस के कारण होता है।
2. इसे बर्ड फ्लू भी कहा जाता है और यह केवल पक्षियों और उनके अंडों तक सीमित है।
3. H5N1 बर्ड फ्लू का सबसे सामान्य सबटाइप है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न33. अबखाज़िया किस दो देशों के बीच विवादित क्षेत्र है?

- (a) रूस और यूक्रेन (b) जॉर्जिया और आर्मेनिया  
(c) जॉर्जिया और रूस (d) तुर्की और अज़रबैजान

प्रश्न34. भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रवर्तित निम्नलिखित अधिनियमों के संदर्भ में विचार करें:

1. नाकॉटिक ड्रग्स और साइकोट्रोपिक सबस्टेंस एक्ट, 1985

2. बेनामी लेन-देन (प्रतिषेध) अधिनियम, 1988

3. विदेशी विनिमय प्रबंधन अधिनियम (FEMA), 1999

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न35. वार्षिक मधि यात्रा किस राज्य में आयोजित की जाती है?

- (a) गुजरात (b) मध्य प्रदेश  
(c) महाराष्ट्र (d) उत्तर प्रदेश

प्रश्न36. राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (NBWL) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह वन संरक्षण अधिनियम, 1980 के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है।
2. यह संरक्षित क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले विकास परियोजनाओं का मूल्यांकन और अनुमोदन करता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

प्रश्न37. भारत का कौन सा राज्य मखाना (फॉक्सनट) का सबसे बड़ा उत्पादक है?

- (a) उत्तर प्रदेश (b) मध्य प्रदेश  
(c) ओडिशा (d) बिहार

प्रश्न38. निम्नलिखित प्रजातियों पर विचार करें:

1. चीता
2. तेंदुआ
3. बादली तेंदुआ
4. हिम तेंदुआ

उपर्युक्त में से कितनी प्रजातियाँ अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट अलायंस (IBCA) में शामिल हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न39. स्वर्ण (सोना) जैसी परिसंपत्तियों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा 'स्वर्ण मुद्रा योजना' का लाभ नहीं है?

- (a) जमाकर्ता निष्क्रिय सोने पर ब्याज अर्जित करते हैं  
(b) सोने का आयात कम होता है

(c) सोने के पुनर्चक्रण में मदद मिलती है

(d) कर-मुक्त सोने की खरीद की सुविधा मिलती है

प्रश्न40. 'गुजरात में गिर वन्यजीव अभयारण्य' के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. साबरमती नदी, गिर वन्यजीव अभयारण्य से होकर बहती है।
2. गिर वन्यजीव अभयारण्य में शुष्क पर्णपाती वन प्रकार का पारिस्थितिकी तंत्र पाया जाता है।
3. गिर के समीप रहने वाले बिश्रोई समुदाय ने शेरों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उपर्युक्त में से कितने कथन गलत हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न41. मुख्य निर्वाचन अधिकारी (CEO) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-से सही हैं:

1. CEO भारत निर्वाचन आयोग और जिला निर्वाचन अधिकारियों के बीच कड़ी का कार्य करता है।
2. CEO राज्य स्तर पर चुनावी प्रक्रिया की निगरानी करता है और चुनाव कानूनों का पालन सुनिश्चित करता है।
3. CEO के पास राज्य स्तर पर चुनाव विवादों पर अंतिम निर्णय लेने का अधिकार है।

नीचे दिए कोड का उपयोग करके उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न42. खैबर पख्तूनख्वा (Khyber Pakhtunkhwa) का पूर्व नाम क्या था?

- (a) नॉर्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्रांत (NWFP)  
(b) संघीय रूप से प्रशासित जनजातीय क्षेत्र (FATA)  
(c) गिलगित-बाल्टिस्तान  
(d) बलूचिस्तान एजेंसी

प्रश्न43. Proba 3 के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह सूर्य का कोरोना (corona) अध्ययन करने के लिए NASA का नवीनतम मिशन है।
2. इस मिशन में पहली बार उच्च-सटीक फॉर्मेशन फ्लाइंग का प्रयास किया जाएगा, जहाँ दो उपग्रह एक साथ उड़ेंगे और अंतरिक्ष में एक निश्चित विन्यास बनाए रखेंगे।

3. इसे SpaceX के हैवी फ़ाल्कन रॉकेट द्वारा लॉन्च किया गया था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न44. भारत में जनगणना (Census) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- 1881 से यह प्रत्येक 10 वर्ष में होती आ रही है लेकिन 2021 में नहीं हुई।
- यह सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अंतर्गत जनगणना जनरल और जनगणना आयुक्त द्वारा संचालित की जाती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

प्रश्न45. निम्नलिखित पर विचार कीजिये:

- प्रदूषण
- नदी तल का उत्खनन
- अत्यधिक बाँध निर्माण
- आवासीय विनाश

उपर्युक्त में से कौन-से भारत में नदी डॉल्फिन की आबादी के लिए खतरा हैं?

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2, 3 और 4  
(c) केवल 3 और 4 (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न46. Starlink परियोजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- यह दूरदराज के क्षेत्रों में विशेष रूप से उच्च गति वाले ब्रॉडबैंड इंटरनेट प्रदान करने के लिए SpaceX द्वारा विकसित एक उपग्रह इंटरनेट नक्षत्र (constellation) परियोजना है।
- Starlink उपग्रह एक भू-स्थिर (geosynchronous) कक्षा में संचार उपग्रह हैं।
- ये उपग्रह खगोलविदों के कार्य को रेडियो शोर पैदा करके बाधित कर रहे हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न47. 'हेमकुंड साहिब' के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

- हेमकुंड साहिब हिमाचल प्रदेश राज्य में स्थित है।
- वैली ऑफ़ फ्लावर राष्ट्रीय उद्यान हेमकुंड साहिब के पास स्थित है।

3. प्रसिद्ध अलकनंदा नदी हेमकुंड साहिब से उत्पन्न होती है।

उपर्युक्त में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न48. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- शहरी स्वास्थ्य देखभाल ढांचे को सशक्त बनाना
- मुफ्त चिकित्सा शिक्षा प्रदान करना
- मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करना और ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल में सुधार करना
- ग्रामीण क्षेत्रों में निजी अस्पतालों का विस्तार करना

प्रश्न49. 'शिवाजी महाराज' के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

- 1665 में शिवाजी महाराज और मुगलों के बीच पुरंदर संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- प्रतापगढ़ का युद्ध, शिवाजी महाराज द्वारा अफजल खान की पराजय के लिए प्रसिद्ध है।
- शिवाजी महाराज ने अपने राज्य में जमींदारी व्यवस्था की शुरुआत की थी।
- शिवाजी महाराज द्वारा जकात कर प्रणाली की शुरुआत की गई, जो सैन्य कर के रूप में थी।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 50. राज्य बजट सत्र के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

- राज्य का बजट राज्यपाल द्वारा विधानसभा में प्रतिवर्ष प्रस्तुत किया जाता है।
- विधान परिषद (जहां लागू हो) को बजट पारित करने का उतना ही अधिकार है जितना विधान सभा को।
- यदि बजट पारित नहीं होता है, तो सरकार को तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए।
- लेखानुदान सरकार को आवश्यक व्यय के लिए धन निकालने की अनुमति देता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 51. अंतर-सरकारी पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC) के संदर्भ में निम्नलिखित कथन पर विचार करें:

1. IPCC एक अंतरराष्ट्रीय निकाय है जो जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक जानकारी का मूल्यांकन करने और नवीनतम जलवायु विज्ञान के आधार पर नीति निर्माताओं को नियमित मूल्यांकनों की आपूर्ति करने के लिए स्थापित किया गया था।
2. IPCC अंतरराष्ट्रीय जलवायु नीतियों को लागू करने, उन देशों पर प्रतिबंध लगाने के लिए जिम्मेदार है जो उत्सर्जन लक्ष्यों को पूरा नहीं करते।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 52. पर्यावरण से संबंधित निम्नलिखित वैश्विक संधियों पर विचार करें:

1. ओजोन परत की रक्षा के लिए वियना संधि
2. जैव विविधता पर संधि
3. मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र संधि
4. जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क संधि

1992 के रियो पृथ्वी सम्मेलन से इनमें से कितनी संधियाँ हुईं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 53. बद्रीनाथ मंदिर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा गलत है:

1. यह उत्तराखंड में मंदाकिनी नदी के किनारे स्थित है।
2. यह मंदिर वास्तुकला के द्रविड़ शैली का अनुसरण करता है।
3. यह भगवान विष्णु को समर्पित है और चार धाम तीर्थस्थलों में से एक है।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 54. भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) के अध्यक्ष की नियुक्ति कौन करता है?

- (a) भारत सरकार (b) भारतीय रिज़र्व बैंक  
(c) भारत के प्रधान मंत्री (d) भारत के राष्ट्रपति

प्रश्न 55. लॉस एंज डैमेज फंड के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. इसे UNFCCC के तहत औपचारिक रूप से स्थापित किया गया था, ताकि संवेदनशील विकासशील देशों में अपरिवर्तनीय जलवायु प्रभावों का समाधान किया जा सके।
2. यह फंड आर्थिक हानियों की भरपाई पर केंद्रित है, जिसमें सांस्कृतिक धरोहर या जैव विविधता जैसी गैर-आर्थिक हानियाँ शामिल नहीं हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 56. रूमेटॉयड आर्थ्राइटिस (RA) के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. रूमेटॉयड आर्थ्राइटिस एक ऑटोइम्यून बीमारी है जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से जोड़ों की परत पर हमला करती है, जिससे सूजन और क्षति होती है।
2. यह मुख्य रूप से बड़ी जोड़ों जैसे हिप्स और घुटनों को प्रभावित करता है, और हाथों और पैरों के छोटे जोड़ों को प्रभावित नहीं करता।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 57. अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है:

1. अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार, एक देश की आधार रेखा से अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) की अधिकतम सीमा 200 समुद्री मील है।
2. हेग अभिसमय, अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) की अवधारणा को शासित करता है।
3. एक देश के अधिकारों में इसके EEZ में निम्नलिखित सभी शामिल हैं, सिवाय इसके कि विदेशी जहाजों की पारगमन को विनियमित करने का अधिकार नहीं है।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 58. नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) देशों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है:

1. यदि एक नाटो देश अनुच्छेद 5 का हवाला देता है, तो इसका अर्थ है कि वह देश व्यापार प्रतिबंध लगा रहा है।

2. तुर्की के पास नाटो में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरा सबसे बड़ा सैन्य बल है।

3. नाटो का आधिकारिक मुख्यालय ब्रुसेल्स, बेल्जियम में स्थित है।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 59. संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA) किससे संबंधित है?

- (a) अंतर्राष्ट्रीय हथियारों के व्यापार को नियंत्रित करना  
(b) उत्तर कोरिया पर सामूहिक विनाश के हथियारों के लिए प्रतिबंध लगाना  
(c) ईरान की परमाणु कार्यक्रम को सीमित करना  
(d) वैश्विक साइबर सुरक्षा मानक

प्रश्न 60. लताकिया शहर कहाँ स्थित है?

- (a) इज़राइल (b) रूस  
(c) यूक्रेन (d) सीरिया

प्रश्न 61. टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौते (GATT) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है:

1. इसे 1947 में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को विनियमित करने के लिए एक बहुपक्षीय समझौते के रूप में स्थापित किया गया था।  
2. इसे बाद में 1995 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।  
3. GATT का मुख्य ध्यान सदस्य देशों के बीच शुल्क और व्यापार बाधाओं को कम करना था।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 62. निम्नलिखित में से कौन सी झील, जो पूर्वोत्तर भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है, इम्फाल घाटी में स्थित है?

- (a) लोकतक झील (b) चिलिका झील  
(c) डल झील (d) वुलर झील

प्रश्न 63. स्वाइन फ्लू के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. स्वाइन फ्लू इन्फ्लूएंजा बी वायरस के एक संस्करण द्वारा होता है, जो मुख्य रूप से सूअरों से उत्पन्न होता है।

2. स्वाइन फ्लू के लक्षण सामान्यतः मौसमी इन्फ्लूएंजा जैसे होते हैं, जिसमें बुखार, खांसी और शरीर में दर्द शामिल हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 64. निम्नलिखित में से कौन फल की पकने के लिए जिम्मेदार है?

- (a) ऑक्सीटोसिन (b) फ्रुक्टोज  
(c) एथिलीन (d) इंसुलिन

प्रश्न 65. विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट किसके द्वारा तैयार की जाती है?

- (a) अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN)  
(b) अंतर-सरकारी पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC)  
(c) विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO)  
(d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 66. संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. 1992 में स्थापित, UNFCCC उपयुक्त जलवायु समझौतों जैसे कि क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौते के लिए बुनियादी ढांचा प्रदान करता है।  
2. यह अपने हस्ताक्षरकर्ता देशों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी उत्सर्जन कमी लक्ष्यों को लागू करता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न 67. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. "दया और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल" रिपोर्ट को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी किया गया है।  
2. यह स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की गुणवत्ता और इसके प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल से जुड़ाव पर विशेष ध्यान देती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न68. 'Trichophyton indotineae' शब्द, जो हाल ही में समाचारों में देखा गया, किसे संदर्भित करता है?

- (a) त्वचा संक्रमण करने वाला बैक्टीरिया जनक रोगाणु
- (b) श्वसन रोगों के लिए जिम्मेदार एक विषाणु जनक एजेंट
- (c) एक फफूंदी जाति जो डर्माटोफाइटोसिस का कारण बनती है
- (d) आंतों में संक्रमण करने वाला परजीवी कीट

प्रश्न69. चागोस द्वीपसमूह के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह भारतीय महासागर में स्थित द्वीपों का एक समूह है जो मालदीव से संबंधित है।
2. डिएगो गार्सिया, द्वीपसमूह का सबसे बड़ा द्वीप है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न70. उमटू नदी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह मेघालय में उत्पन्न होती है, बांग्लादेश में प्रवेश करती है और ब्रह्मपुत्र से मिलती है।
2. यह बायर्नीहाट औद्योगिक शहर से गुजरती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न71. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. मानव विकास सूचकांक (HDI) एक देश के विकास स्तर की गणना करते समय आय असमानता को ध्यान में रखता है।
2. निम्न HDI रैंकिंग वाले देशों में सामान्यतः उच्च साक्षरता दर और जीवन प्रत्याशा होती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न72. निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE) में वृद्धि होने वाले कारणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. घरेलू आय में वृद्धि
2. ऋणों पर उच्च ब्याज दरें
3. उच्च मुद्रास्फीति जो क्रय शक्ति को कम करती है

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) उपर्युक्त सभी
- (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न73. राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (NBWL) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह 1980 के वन संरक्षण अधिनियम के तहत स्थापित एक वैधानिक निकाय है।
2. यह विकास परियोजनाओं का मूल्यांकन और अनुमोदन करता है जो संरक्षित क्षेत्रों में आती हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न74. एंडीज पर्वत श्रृंखला के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एंडीज पर्वत श्रृंखला, दुनिया की सबसे लंबी महाद्वीपीय पर्वत श्रृंखला है।
2. यह दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ सात देशों से होकर गुजरती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न75. राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (Nप्रश्नM) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत पहला देश है जिसने एक समर्पित क्वांटम मिशन शुरू किया है।
2. यह मिशन इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा लागू किया जाता है।
3. इसका उद्देश्य 50-1000 क्वांटम बिट्स (क्यूबिट्स) के साथ मध्य-स्तरीय क्वांटम कंप्यूटर विकसित करना है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) उपर्युक्त सभी
- (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न76. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यदि सरकार अपनी राजस्व आय से कम खर्च करती है, तो इसे संतुलित बजट कहा जाता है।
2. यदि संसद में बजट पारित नहीं होता, तो बजट को संशोधित कर पुनः प्रस्तुत किया जाता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न77. बलूचिस्तान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. बलूचिस्तान पश्चिम में ईरान और उत्तर में अफगानिस्तान के साथ सीमा साझा करता है।
2. बलूचिस्तान में ग्वादर बंदरगाह चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) का एक प्रमुख हिस्सा है।
3. बलूचिस्तान को कोयला, तांबा और सोने जैसे प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध माना जाता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न78. चंद्रयान-2 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है:

1. यह भारत का दूसरा चंद्र अन्वेषण मिशन था, जिसे ISRO द्वारा विकसित किया गया था।
2. लैंडर (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान) मिशन का हिस्सा थे, लेकिन लैंडर कोमल लैंडिंग करने में विफल रहा।
3. मिशन का उद्देश्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र का अन्वेषण करना था।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके उत्तर चुनें:

- (a) 1 और 2 केवल (b) 2 और 3 केवल  
(c) 1 और 3 केवल (d) 1, 2 और 3

प्रश्न79. निम्नलिखित देशों पर विचार करें:

1. USA
2. फ्रांस
3. UK
4. जर्मनी

निम्नलिखित देशों में से कितने देश "फाइव आईज इंटेलिजेंस एलायंस" के सदस्य हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न80. "मेनहिर" जो हाल ही में चर्चा में था, है:

- (a) प्रागैतिहासिक भूमिगत कब्र  
(b) गुफा चित्रों की एक प्रकार  
(c) परंपराओं में इस्तेमाल की जाने वाली गोल पत्थरों की व्यवस्था  
(d) प्राचीन समय से एक बड़ा खड़ा हुआ पत्थर

प्रश्न81. भारत में सिविल डिस्ऑबेडियंस मूवमेंट (CDM) की शुरुआत किस घटना/आंदोलन से हुई थी?

- (a) प्रथम विश्व युद्ध (b) द्वितीय विश्व युद्ध  
(c) नमक सत्याग्रह (d) रॉलेट सत्याग्रह

प्रश्न82. निम्नलिखित अधिनियमों पर विचार करें:

1. मनी लॉन्ड्रिंग (रोकथाम) अधिनियम, 2002 (PMLA)
2. विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999 (FEMA)
3. भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 (FEOA)

प्रवर्तन निदेशालय को उपरोक्त में से किस अधिनियम को लागू करने का वैधानिक अधिकार है?

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3  
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

प्रश्न83. भारतीय संसद में निम्नलिखित में से कौन-कौन सी संस्थाएं हैं?

- (a) लोक सभा और राज्य सभा  
(b) प्रधानमंत्री, लोक सभा, और राज्य सभा  
(c) लोक सभा, राज्य सभा, और राष्ट्रपति  
(d) लोक सभा, राज्य सभा, और उच्चतम न्यायालय

प्रश्न84. 'गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (UAPA), 1967' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह अधिनियम केंद्रीय सरकार को किसी व्यक्ति या संगठन को आतंकवादी घोषित करने का अधिकार प्रदान करता है।
2. UAPA के तहत, आरोपी पर यह आरोप साबित करने की जिम्मेदारी होती है कि वह निर्दोष है।
3. यह कानून संगठनों को प्रतिबंधित करने का प्रावधान करता है, लेकिन व्यक्तियों को आतंकवादी घोषित करने की अनुमति नहीं देता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न85. छत्रपति संभाजी के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

1. वह छत्रपति शिवाजी के बड़े पुत्र थे और उन्होंने मराठा साम्राज्य के दूसरे शासक के रूप में उनका उत्तराधिकार किया।
2. उन्हें 1689 में संगमेश्वर के पास मुगल सेनाओं द्वारा धोखा देकर पकड़ लिया गया था।
3. उनकी फांसी ने मराठा सेनाओं को हतोत्साहित कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप साम्राज्य का तत्काल पतन हो गया।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके उत्तर चुनें:

- (a) 1 और 2 केवल (b) 2 और 3 केवल  
(c) 1 और 3 केवल (d) 1, 2 और 3

प्रश्न86. बोइंग के स्टारलाइनर मिशन के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार करें:

1. स्टारलाइनर को नासा के वाणिज्यिक कू कार्यक्रम के तहत अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के लिए और उससे अंतरिक्ष यात्रियों को परिवहन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

2. 2019 में स्टारलाइनर की पहली बिना चालक दल वाली परीक्षण उड़ान ने सफलतापूर्वक ISS के साथ डॉक किया।
3. स्टारलाइनर पृथ्वी पर लौटने पर नियंत्रित लैंडिंग के लिए पैराशूट और एयरबैग्स का उपयोग करता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) उपर्युक्त सभी (d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 87. हौदी (Houthi) विद्रोही किस देश में एक मिलिशिया समूह हैं?

- (a) ईरान (b) सीरिया

- (c) लेबनान (d) यमन

प्रश्न 88. निम्नलिखित देशों पर विचार करें:

1. ब्राजील 2. संयुक्त राज्य अमेरिका  
3. अर्जेंटीना 4. मेक्सिको

उपर्युक्त में से कितने देश मर्कोसुर के सदस्य हैं?

- (a) केवल एक (b) केवल दो  
(c) केवल तीन (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर कुंजी

प्रश्न 1	c	प्रश्न 2	d	प्रश्न 3	d	प्रश्न 4	b	प्रश्न 5	b
प्रश्न 6	a	प्रश्न 7	c	प्रश्न 8	b	प्रश्न 9	c	प्रश्न 10	a
प्रश्न 11	a	प्रश्न 12	b	प्रश्न 13	c	प्रश्न 14	c	प्रश्न 15	c
प्रश्न 16	a	प्रश्न 17	d	प्रश्न 18	c	प्रश्न 19	a	प्रश्न 20	a
प्रश्न 21	c	प्रश्न 22	d	प्रश्न 23	c	प्रश्न 24	b	प्रश्न 25	a
प्रश्न 26	b	प्रश्न 27	c	प्रश्न 28	b	प्रश्न 29	b	प्रश्न 30	d
प्रश्न 31	d	प्रश्न 32	b	प्रश्न 33	c	प्रश्न 34	d	प्रश्न 35	c
प्रश्न 36	b	प्रश्न 37	d	प्रश्न 38	c	प्रश्न 39	d	प्रश्न 40	b
प्रश्न 41	a	प्रश्न 42	a	प्रश्न 43	a	प्रश्न 44	a	प्रश्न 45	d
प्रश्न 46	b	प्रश्न 47	a	प्रश्न 48	c	प्रश्न 49	b	प्रश्न 50	a
प्रश्न 51	a	प्रश्न 52	c	प्रश्न 53	a	प्रश्न 54	a	प्रश्न 55	a
प्रश्न 56	a	प्रश्न 57	c	प्रश्न 58	b	प्रश्न 59	c	प्रश्न 60	d
प्रश्न 61	d	प्रश्न 62	a	प्रश्न 63	b	प्रश्न 64	c	प्रश्न 65	d
प्रश्न 66	a	प्रश्न 67	b	प्रश्न 68	c	प्रश्न 69	b	प्रश्न 70	b
प्रश्न 71	d	प्रश्न 72	a	प्रश्न 73	b	प्रश्न 74	c	प्रश्न 75	b
प्रश्न 76	d	प्रश्न 77	c	प्रश्न 78	d	प्रश्न 79	b	प्रश्न 80	d
प्रश्न 81	c	प्रश्न 82	d	प्रश्न 83	c	प्रश्न 84	b	प्रश्न 85	a
प्रश्न 86	b	प्रश्न 87	d	प्रश्न 88	b				



दैनिक उत्तर-लेखन अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत वैश्विक दक्षिण की आवाज के रूप में उभर रहा है। वैश्विक दक्षिण के उत्थान से विश्व व्यवस्था में कैसे परिवर्तन आ रहा है, स्पष्ट कीजिए। (सामान्य अध्ययन 2, 15 अंक, 250 शब्द)

प्रश्न 2. समुद्री ऊष्मा तरंगों का समुद्री पारितंत्र, जलवायु प्रतिरूपों और वैश्विक मौसमीय घटनाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है? इन प्रभावों को कम करने के लिए संभावित उपाय सुझाइए। (सामान्य अध्ययन 1 और 3, 15 अंक, 250 शब्द)

- प्रश्न3. विश्वभर में बढ़ते संरक्षणवाद और भू-आर्थिक अस्थिरता के बीच, भारत की यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (EFTA) के साथ भागीदारी आर्थिक विविधीकरण और विकास का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करती है। टिप्पणी कीजिए। (सामान्य अध्ययन 2 और 3, 10 अंक, 150 शब्द)
- प्रश्न4. ग्रीनलैंड में अमेरिका की बढ़ती रुचि और आर्कटिक क्षेत्र में चीन की सक्रियता की पृष्ठभूमि में चर्चा कीजिए कि आर्कटिक क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों से भारत पर क्या प्रभाव पड़ सकते हैं और भारत अपने हितों की रक्षा कैसे कर सकता है। (सामान्य अध्ययन 2, 15 अंक, 250 शब्द)
- प्रश्न5. विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में उपयुक्त संशोधन एक संतुलित, विश्वसनीय और प्रमाणिक ऐतिहासिक विवरण प्रदान करने हेतु अत्यंत आवश्यक हैं। टिप्पणी कीजिए। (सामान्य अध्ययन 1, 15 अंक, 250 शब्द)
- प्रश्न6. भारत और कतर के व्यापारिक संबंधों की आधारशिला ऊर्जा क्षेत्र है। भारत की ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास की दृष्टि से कतर से तरल प्राकृतिक गैस (LNG) आयात के महत्व पर चर्चा कीजिए। (सामान्य अध्ययन 2, 15 अंक, 250 शब्द)
- प्रश्न7. दुर्लभ रोग क्या होते हैं? भारत में दुर्लभ रोगों की पहचान और उपचार से संबंधित चुनौतियों पर चर्चा कीजिए। भारत अपनी प्रतिक्रिया को बेहतर बनाने के लिए क्या कदम उठा सकता है? (सामान्य अध्ययन 3, 15 अंक, 250 शब्द)
- प्रश्न8. विश्वभर में समुद्र स्तर तेजी से बढ़ रहा है। समुद्र स्तर में वृद्धि के कारणों की चर्चा कीजिए तथा इस समस्या से निपटने के उपायों पर प्रकाश डालिए। (सामान्य अध्ययन 1 और 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न9. भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ की एक नई लहर हिमालय और उत्तर भारत में वर्षा और हिमपात लाएगी। भारत में शीत ऋतु की वर्षा को आकार देने में पश्चिमी विक्षोभ की क्या भूमिका है? भारत पर इसके प्रभाव पर एक टिप्पणी लिखिए। (सामान्य अध्ययन 1; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न10. लघु उद्योग क्षेत्र ने देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। रोजगार सृजन और आर्थिक वृद्धि में लघु उद्योगों का क्या महत्व है? इनकी वृद्धि में आने वाली चुनौतियों की भी चर्चा कीजिए। (सामान्य अध्ययन 3; 10 अंक; 150 शब्द)
- प्रश्न11. स्वास्थ्य क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का एकीकरण 'कहीं भी, कभी भी' देखभाल को संभव बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण होता जा रहा है। भारत में स्वास्थ्य सेवा में AI के सफल क्रियान्वयन से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजिए। इन चुनौतियों का समाधान कैसे किया जा सकता है? (सामान्य अध्ययन 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न12. हिमालय क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में भूटान के प्रति भारत के निरंतर रणनीतिक समर्थन के भू-राजनीतिक प्रभावों की चर्चा कीजिए। (सामान्य अध्ययन 2; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न13. भारत, गहन समुद्र मिशन के तहत बहुधात्विक नोड्यूलस की खोज हेतु महासागर तल का अन्वेषण करना चाहता है। बहुधात्विक नोड्यूलस क्या होते हैं? गहन समुद्र खनन की आर्थिक व्यवहार्यता और संभावित पर्यावरणीय प्रभावों का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। (सामान्य अध्ययन 1 और 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न14. महिलाओं के सशक्तिकरण के संदर्भ में महात्मा गांधी की दृष्टि की चर्चा कीजिए, जिसमें पारंपरिक स्त्री मूल्यों और आधुनिक नारीवादी विचारों के बीच संतुलन साधने का प्रयास किया गया। भारतीय समाज के विकासशील संदर्भ में उनके दृष्टिकोण की सीमाओं की भी चर्चा कीजिए। (सामान्य अध्ययन 1; 10 अंक; 150 शब्द)

- प्रश्न15. प्रतिजैविक प्रतिरोधकता (AMR) एक गंभीर चिंता का विषय क्यों है? भारत में इसके बढ़ते मामलों के कारणों की चर्चा कीजिए तथा इस चुनौती से निपटने के लिए उठाए जाने वाले कदमों को स्पष्ट कीजिए। (सामान्य अध्ययन 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न16. भारत-अमेरिका द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन से व्यापार एवं निवेश, रक्षा, प्रौद्योगिकी तथा ऊर्जा क्षेत्र में हुई प्रमुख उपलब्धियों या विकासों की चर्चा कीजिए। (सामान्य अध्ययन 2; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न17. संरचनात्मक और घर्षणात्मक बेरोजगारी में क्या अंतर है? भारत में संरचनात्मक बेरोजगारी की चुनौतियों की चर्चा कीजिए तथा इसे दूर करने की रणनीतियों का वर्णन कीजिए। (सामान्य अध्ययन 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न18. भारत में नदियों के प्रदूषण के मुख्य कारण क्या हैं? भारतीय नदियों में प्रदूषण पर काबू पाने हेतु कानूनी प्रावधानों और नीति-गत प्रयासों की चर्चा कीजिए। (सामान्य अध्ययन 1 और 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न19. भारत में जनगणना के विकास की चर्चा कीजिए। जनगणना का महत्व और जनगणना आंकड़ों व परिसीमन के बीच संबंध को स्पष्ट कीजिए। (सामान्य अध्ययन 2; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न20. भारत सरकार द्वारा अपने नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लागू की गई प्रमुख योजनाओं और पहलों की चर्चा कीजिए। नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने में भारत की प्रगति को रेखांकित कीजिए। (सामान्य अध्ययन 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न21. ऊर्जा हेतु कचरा (Waste to Energy) प्रौद्योगिकियों का उद्देश्य क्या है? इस क्षेत्र में प्रयुक्त विभिन्न रूपांतरण प्रक्रियाओं की चर्चा कीजिए। भारत में 'कचरे से ऊर्जा' संयंत्रों के समक्ष चुनौतियों पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए। (सामान्य अध्ययन 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न22. आर्थिक सर्वेक्षण क्या होता है? आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 द्वारा उठाए गए मुख्य सरोकारों तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए इसकी प्रमुख सिफारिशों की चर्चा कीजिए। (सामान्य अध्ययन 3; 15 अंक; 250 शब्द)
- प्रश्न23. नगरीय स्थानीय स्वशासन संस्थाएं (ULSG) नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। राज्य सरकारें 74वें संविधान संशोधन अधिनियम की प्रभावशीलता सुनिश्चित कर सशक्त ULSG के निर्माण में किस प्रकार योगदान कर सकती हैं? (सामान्य अध्ययन 2; 10 अंक; 150 शब्द)



# नोट



